ॐश्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः ॐ नमः सरस्वत्यै ॥
ॐ नत्वोमाशिवावानादिं सूर्यादिग्रहमण्डलं रचि
तारिं सर्वलोकानां दत्तिणीकुलदेवताम् १ समस्तो
गुणोपेतं कृपागाराममनुपालितं सर्वशास्त्रमताभिज्ञं म
हस्तीपंडितेश्वरं २ देवीसहायपितरं विद्याभाग्यसम ।
न्वितं श्रीकणाभिधान्मान्यान्गुरून्पितॄन्समन ।
न् ३ द्व्यकाष्टनवेलाभिर्गते विक्रमवत्सरे माघम ।
सासिते पत्ते दशम्यां भृगुवासरे ४ लघुसिद्धान्तके
मुद्याः स्वयाभावबोधिनी क्रियते रूपचन्द्रेण ।
स्त्रानां बोधहेतवे पायेनायं द्विजाः सर्वेन भाषाद ॥
लौकिक तथापि क्रियते भाषादीनानामपूर्वपालया
नियोगार्थ दयाद्दिरत्ननिलयं धर्मार्थयोनान्वितं दैत ।
नाथं नन्दनमातवसमं विद्वज्जनानंददं जीवानन्दवरं ५
तेषां ... यं जातोऽयतनस्तद्धियः तेषामाज्ञिरिजाय
तिः सानन्दनं नारायणोऽपि स्वयम् ॥ ६ ॥
श्रनम्य स्वप्रबुद्धेभ्यः बालेभ्यो मे परिश्रमः विद्ध...

दासोस्मिधीराणांगुणग्राहिणाम् ८ पंडितेनासहसेनाथाहसमस्यथी।
मतः व्याकरणप्रकाशोयंमुद्रितःस्वस्वयनावधिः १० अथटीका· अहंव
रदराजःलघुसिद्धान्तकौमुदींकरोमिकिंकृत्वासरस्वतींदेवींनत्वाकथंभू।
तांसरस्वतींदेवींशुद्धां पुनःकथंभूतांसरस्वतींदेवींगुणा कस्मैप्रयोजना
य पाणिनीयप्रवेशाय इत्यन्वयः अर्थः अहंकैसेमयवरदराजलघुसिद्धां
तकौमुदीनूकरोमिव्याकरदाहूं किंकृत्वाव्याकरके स्वतीदेवीनत्वा
सरस्वतीदेवीनूनमस्कारकरकेकथंभूतांसरस्वतीदेवीं द्धांकैसीसरस्व

नत्वासरस्वतींदेवींशुद्धांगुण्यांकरोम्य
हं पाणिनीयप्रवेशायलघुसिद्धान्त
कौमुदीम् १

तीदेवीहैसरांशुद्धहै पुनःकथंभूतांफेरकैसीसरस्वती तीहैगुण्यांश्रे
ष्ठगुणवाली है कस्मैप्रयोजनाय किसप्रयोजनवास्तेकौमु नूकरदाहूं
पाणिनीयप्रवेशाय पाणिनीयविवेकव्याव्याकरणशास्त्र प्रवेशवास्ते
सिद्धान्तानां कौमुदीइवकौमुदी लघ्वीचासौसिद्धान्तकौमु लघुसिद्धान्त
कौमुदीतां पणस्तु तौ धातुः पणते पणः पणःस्तुतिर पाणिनियपाणि।
अपत्य तस्यापत्यंपाणिनिः पाणिनाप्रोक्तंपाणिनीयंशास्त्र प्रवेश्यवामे
पाणिकुमुदश्चंद्रस्तस्येयंकौमुदी १ इसश्लोककरकेमंगलाचरणकी
लघुकरणोरासिद्धांतव्याविष्णयकीनाजोअर्थहय की कौमुदी

व्याप्रकाशकरणेवालीहै जेकोई प्रश्नकरेयेचतुर्दशसूत्रआदिविषे
किसवास्तेपावेहै औरकोईसूत्रपाठनाथानवउत्तरदेवनायेकमहेश्व
रचतुर्दशसूत्रसमस्तशास्त्रकाकारणहैं इसवास्तेआदिविषेपावेहैं ॥
जेकोईप्रश्नकरेकिप्रकारकासूत्रहै यहकौनसूत्रहैतबकहिना आदिसं
ज्ञेनमहेतातइससूत्रनाम्नमिलकेसंज्ञासूत्रकहातेहैं जोकोईपूछेरना
दिखेसंधिकैमेनहीभयी तबकहिनाप्रत्याहारसंज्ञाहोनेतेग्रथवासंहि

अइउण् ऋऌक् एओङ् ऐऔच् ह
यवरट् लण् ञमङणनम् झभ
ञ् घढधष् जबगडदश् खफछ
ठथ चटतव् कपय् शषसर् हल् इ ॥
तिमाहेश्वराणिसूत्राण्यणादिसंज्ञार्थानि ॥ १ ॥

ताकेअभावतेसंधिनहीभयी अव्ययत्वहोनेतेविभक्तिलोपभयाबाहुल
कतेकारप्रत्ययनहीभयाजोकोईकहैयेसूत्रअप्रमाणहै इनकाकर्त्ताको
ईनहीतबकहिना इतिपूर्वोक्तानिचतुर्दशसूत्राणिमाहेश्वराणिमहेश्वर
णानानिकर्थभूतानिसूत्राण्यणादिसंज्ञार्थानि अणादिसंज्ञार्थः इमानि
हाअणादिसंज्ञाः अर्थः प्रयोजनंयेषांतानि: अर्थः यहचतुर्दशसूत्रमाहे
श्वरहैशिवांनेआयेहैकैसेसूत्रहैअणआदिकअच्हलादिकसंज्ञावालेहैजोको
ईप्रश्नकरेमहेश्वरनेकिसरीतिसेसूत्रआयेहैं तबकहिनानन्दकेउपरान्तचतुर्दशवारडमरूबजायाआप
सनकादिकाकेपापकेछुडानेवास्तेन ॥ ८ ॥

ये चवदै शसूत्र शिवके डौरूते उत्पन्न भये वे सो आये हैं इनके पढ़नेकी नया
चारवेदके पाठकाफल होताहै जोकोई कहै अइउण् ईहां एकवारी अ
कारका उपदेश भयाहै फेर हकारादिक वर्णोंके मध्य अकार किस वास्ते
रख्याहै तव कहिना हकारादिक वर्णों विषे जो अकार है सो उच्चारणवा
स्ते है अचू विना व्यंजनोंका उच्चारण नहीं होताहै जो हलू संज्ञा विषे अ
कारतोऽयोगेन वणमः ईहां संयोगांतलोपः लगेगा तउनः लणसूत्रके
मध्य विषे जो अकार है सो इत्संज्ञक है लणसूत्र अकार अनंत्य है इसनेर अ

१ वाम व्या सूतः हकारादिष्वकारोच्चारणार्थः लणमध्ये त्वित्संज्ञकः ॥१ हलन्त्यं उपदेशेंऽन्त्यं हलित् स्यात् ॥

त्याहार होताहै अनुनासिकत्वप्रतिज्ञाते ९१ हलन्त्यं सूत्रके दो पद हैं एक पद
मे योगेन वअन्त्यशब्दको विशेषण होनेनेह दव निपातन होवेगा इसने एक
पद नहीं कर्मधारय योग पदोंको किदरेक समासाभाव होनेने उपदेशवि
विषे जो अन्त्य हल् है सो इत्संज्ञक हो उपदेश पद नहीं कथन करीये जौ नव
अथिविन इहां अन्त्य हल् नकारकी इत्संज्ञा होवेगी यह उपदेशविषे नहीं
तक विधान अगन्त्य ईहां चरितार्थ है अन्त्य पद नहीं दीजीये तव विश्व ईहां
उपदेशविषे हल् मकार है सो इत् होवेगा परन्तु मकार अन्त्य नहीं हलू पद न
हीं दीजीये तव चिनिनिर्दृ ईहां उपदेशविषे अन्त्य रकार भी इत् होवेगा येह न

नहीहल्अन्त्यहारहैहयवरट्तेलेकरहल्सूत्रपर्यंतउपदेशक्याकहीयेतबा
कहिनाउपदेशनंउपदेशः आद्योच्चारणंआदिहीजोउच्चारणहैसोउपदेशक
हैदाहै सोआदिउच्चारनक्याहैतबकहिनाशेषरसंप्रदायसेरनकानामउपदेश
हैयातसूत्रगणोणादिवाक्यलिंगानुशासनंआगमाः प्रत्ययादेशाउपदेशाःप्र
कीर्त्तिताः १ जेकोईप्रश्नकरेसूत्रोपात्तान्येवपदानिखलुविज्ञीयन्ते सूत्रोंविवे
जेरेपदसुनहैसोईव्याख्यानकरीदेहै हलंत्यं ईहांउपदेशपदऔररत्नपदक
हांसेआयेहैतबकहिनासूत्रोविवेजोअष्टपदहैनहीदेषयापदसोऔरनांसूत्रा
अनुवृत्तिकरणेयोग्यहैसर्वऔररसनेउपदेशेजबनासिकरनुरससूत्रसेउपदेश
पदऔररतनपदहलंत्यंईहांअनुवृत्तिसेआयेहै जोकोईकहैईहांअन्योन्याश्रया

उपदेशआद्योच्चारणं सूत्रेष्वदृष्टंपदं
सूत्रांतरादनुवर्तनीयंसर्वत्र ॥ अद
र्शनंलोपः प्रसक्तस्यादर्शनंलोपसं
ज्ञस्यात् तस्यलोपः तस्येनोलोपः

वताहैतबकहिनाधाराप्रवाहन्यायकरकेपाणिनीयहल्पदार्थज्ञानसेअप
वाभावीहल्पदार्थज्ञानसेअग्रणवातंत्रा दिकासेआदिरंत्येनसहेताअन्योन्या
श्रयभीहलंत्यकादूरहोजाताहै ॥ प्रसक्तकाक्याविद्यमानकाजोअदर्शनहैसो
लोपसंज्ञकहो कोईप्रश्नकरेप्रसक्तपदकहांसेआयातबकहिनायेनविनायदनु
पपन्नंतत्तेनाक्षिप्यते जिसवारलोपदसेविनासूत्रस्थपदनहीबनेतिससूत्रके
पदकाकेवारलेपदकाग्रहणकरणाअवदर्शनतेविनाअदर्शननहीहोताहै
अदर्शनपदतेविद्यमानकालाभभया अथवास्थानेपदकीअनुवृत्तिकरणी
जेप्रसक्तपदनहीगावीयेनबदथिईहांकिपूर्वकाअदर्शनदृष्टप्रत्ययलोपेकःकेनु
कूआवेगारसवास्तेप्रसक्तपददेना याणासंज्ञासासाफलवतीजोजोसंज्ञाहै ॥

सो सो फलवाली होती है इत्संज्ञा का क्या फल है तब कहिना जिसकी इत्संज्ञा है तिसका
लोप होइ तू पद अनंतर जिसे आया है तस्य ग्रहण संस्वर्ण लोपवास्ते है नहीं तो इतः इस सूत्र
से आदि र्णिट् टु वः ईहां अंत्य का लोप होना इ नंदति रूप होना सो इस वास्ते तस्य पद दिया
है ॥ अइउण् इत्यादिका विवे णकारादिक वर्ण किस वास्ते है तब कहिना णकारा-
दिक वर्ण अण् अक् इत्यादिक संज्ञा वास्ते है ॥ अंते भवः अंत्यः तेन अंत्येन अंत विसे
नो इत् है तिस साथ जो आदि वर्ण है सो मध्य वर्णों की संज्ञा होवे उनः स्वस्य आप-
की संज्ञा हो कोई प्रश्न करे मध्य पद और स्व पद कहां से आये तब उत्तर देना मध्य ते वि-
ना आदि अंत किसी वस्तु का होना नहीं इसते आदि अंत पदाते मध्य का आक्षेप भया
अनु तपदानुवर्तन मात्रे पः स्वरूपं सूत्र तें स्व पद का लाभ भया सं पद आदिवाचक

स्यात् । तादृयोगाग्रहणात् आदिरंत्ये
नसहेता अंत्येनेतासहितआदिर्मध्य
गानांस्वस्यच संज्ञास्यात् यथाऽणिति
अइउवर्णानांसंज्ञा एवमच्हलित्यादयः

है यथा नत्व ते जो कोई प्रश्न करे आदि पद से अंत्य का आक्षेप होवेगा अंत्य पद से आ-
दि का आक्षेप होवेगा सूत्र विवे आदि अंत्य पद किस वास्ते दिये हैं तब कहिना यस्मा
त्पूर्वो नास्ति सा आदिः यस्मात्परो नास्ति सः अंत्यः इस विशेषार्थ लाभ वास्ते आदि अं-
त्य पद रखे है तिसकर रकार इक् आदिक संज्ञा विवे आदि का र अंत्य ङकारादि
क नहीं ग्रहण होने जो कोई प्रश्न करे जो अंत्य है सो इत् ही होता है फेर इत् ग्रहण कि
स वास्ते है तब कहिना लण् सूत्र के अकार न इत् सो अर प्रत्याहार वास्ते इत् पद है
अण् अक संज्ञा प्रति वर्ण होती है तस्मादिति उत्तरस्य ईहां उकार अच् परे होयां
यण् विधान ते अण् अक् संज्ञा दीर्घों की भी होती है तूष्मादिभ्यः ईहां दीर्घ को यण्
होने ते नहीं तो उच्चारितः शब्दः प्रत्यायको नानुच्चारितः इस भाष्य से इत् ग्रहण करिये
ग्रहण होना इस सूत्र कर कर चतुर्दश सूत्रा विवे प्रत्याहार सिद्ध करने जैसे आ-
ण् ईहां अंत्य इत् णकार है तिस साथ आदि वर्ण अकार है सो मध्य वर्णों को इका

र उकार और् आप अकार इनकी संज्ञा भयी इसी प्रकार अच् हल् अल् इत्यादिक भी जानने
प्रत्याहारों में इनो का ग्रहण नहीं इको यणचि ईहां ककार ये ऊंदया रकार को यण न
हीं भया इसते ॥ ऊऊऊ३ पद कहीये वः वां कालः इनके उच्चारण काल के तुल्य उच्चारण
काल है जिस अच् का सो अच् क्रम ते ह्रस्व दीर्घ प्लुत संज्ञक हो ॥ ऊकाल पद ते अर्थ ज्ञा
न नहीं भया इसते ऊकाल शब्द की स्वोच्चारण काल तुल्यता विषे लक्षणा करणी
जैसे सिंहो माणवकः ईहां सिंह पद की शूरता विषे लक्षणा करीदी है ॥ ह्रस्व अ
दीर्घ अ प्लुत अ एषां समाहारो ह्रस्वदीर्घप्लुतः सो द्वंद्वं संज्ञ अचौ द्वंद्वे एवं विधेय भावे लिं
ग वचन मतंत्र जे कोई अ अकोय कार को त्याग के उकार किस वास्ते इस सूत्र में राख्या है तब
ऊ हि ना उकार स्वार से ऊ ऊ३ ने ह्रस्व दीर्घ क्रम नाल शब्द की या सा इस सूत्र के रचन समे इस
वास्ते उकार राख्या है ॥ ह्रस्वादिक क्या कैये एक मात्रो भवेद्ध्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते त्रि

ऊकालोऽज्ह्रस्वदीर्घप्लुतः उश्च ऊश्च ऊ३श्च वः वां
कालइव कालो यस्य सोऽच् क्रमाद्ध्रस्वदीर्घप्लु:१
सं सू: तः स्यात् स प्रत्येकमुदात्तादिभेदेन त्रिधा ॥

मात्रस्तु भवेत्प्लुतः व्यंजनं चार्द्धमात्रकं ॥ एका मात्रा उच्चारण कालो यस्य सः एकमात्रः
द्वे मात्रे उच्चारण कालो यस्य सः द्विमात्रः तिस्रः मात्राः उच्चारण कालो यस्य सः त्रिमात्रः
अक्षि स्पंद कालः मात्रा उच्यते ॥ अच् पद किस वास्ते है तब कहि ना ग्रहण दुई हां ककार
रकार की भी ह्रस्व संज्ञा होवेगी ह्रस्वस्य पिति कार के तक् आवेगा आवना नहीं ॥ सो अ
च् प्रत्येक के कैसे एक एक प्रति उदात्त अनुदात्त स्वरित भेद कर के तीन प्रकार का है जै
से अकार ह्रस्व उदात्त है अकार ह्रस्व अनुदात्त है अकार ह्रस्व स्वरित है आकार दीर्घ उदा
त्त है आकार दीर्घ अनुदात्त है आकार दीर्घ स्वरित है आकार प्लुत उदात्त है आकार प्लुत अ
नुदात्त है आकार प्लुत स्वरित है ये नव भेद अकार के है ऐसे इकारादिका के भेद जान
ने ॥ उदात्तादिक क्या कहीये ॥ उच्चस्थान विषे जो प्राप्त होवे सो उदात्त है उच्चैस्तरा
कार का प्राप्त होवे अर्थ नहीं कारण उच्चैः पद ते ईहां भी उदात्त संज्ञा होवेगी और होनी न
हीं ॥ ताल्वादिक सभाग स्थानो विषे जो ऊर्द्ध भाग है तिस विषे प्राप्त होया जो अच् है

सोउदात्तसंज्ञक होय जैसे ईहां आकार और ऐकार उदात्त है नीचे स्थान विषे जो भाग हो
वे सो अनुदात्त कथन करीता है ताल्वादिक सभाग स्थानो विषे जो अधो भाग है तिस
विषे जो भाग हुवा अच् है सो अनुदात्त संज्ञक होय अर्वाङ् ईहां अच् अनुदात्त है उदात्तत्व
और अनुदात्तत्व जो वर्ण धर्म है सो एकत्र करीये जिस विषे सो अच् स्वरित संज्ञक हो
क वोक्षा ईहां क विषे अकार स्वरित है ॥ समाहरणं समाहारः ॥ स्वर वैदिकी की
रीति सूची प्रयत्न भेद वास्ते ईहां लिखी है और प्रयोजन न कछु नहीं इसवास्ते केव
ट मे लिखिया है वाह्य प्रयत्न अष्ट प्रकार का है ॥ सो नव प्रकार का भी अच प्रत्येक
कहीये एक एक प्रति अनुनासिकत्व अननुनासिकत्व भेद कर कर दो प्रकार है ॥
ह्रस्वोदात्तानुनासिक ह्रस्वोदात्ताननुनासिक ह्रस्वानुदात्तानुनासिक ह्रस्वानुदा

उच्चैरुदात्तः ताल्वादिषु सभागस्थानेषूर्ध्व।
भागे निष्पन्नोऽजुदात्तसंज्ञः स्यात् नीचैरनु
दात्तः अन्वर्थसंज्ञे समाहारः स्वरितः उदात्त
त्वानुदात्तत्वे वर्णधर्मौ समाह्रियेते यस्मिन्
सोऽच् स्वरितसंज्ञः स्यात् ॥ स नवविधोऽपि

त्तानुनासिक ह्रस्वस्वरितानुनासिक ह्रस्वस्वरिताननुनासिक दीर्घोदात्तानुनासि॰
क दीर्घोदात्ताननुनासिक दीर्घानुदात्तानुनासिक दीर्घानुदात्ताननुनासिक दी॰
र्घस्वरितानुनासिक दीर्घस्वरिताननुनासिक प्लुतोदात्तानुनासिक प्लुतोदात्ता
ननुनासिक प्लुतानुदात्तानुनासिक प्लुतानुदात्ताननुनासिक प्लुतस्वरितानु
नासिक प्लुतस्वरिताननुनासिक ये अठारा भेद है ॥ अनुनासिक क्या कहीये न
क करि ना मुखसहित नासिका कर कर उच्चार्यमान जो वर्ण है सो अनुनासिक सं
ज्ञक होय मुखेन सहिता नासिका मुखनासिका मुखनासिकया उच्चार्यते इति मुख
नासिकावचनः मुखं च नासिका च मुखनासिकं मुखनासिकेनाभ्यां उच्चार्यते इति मु॰
खनासिकावचनः एभी समास होता है मुखनासिकाभ्यां इस भाष्योक्ति से नासि
का लनयोः इस पाणिनि सूत्र हं द अष्ट प्राणिनूं से नांगा नो इस सूत्र को अनित्य।

है मुखग्रहणनहीकरीयेतवयमअनुस्वारकीअनुनासिकसंज्ञानहीहोवेगी केवलमुखग्रहणकीतयाकवरतपरनकीअनुनासिकसंज्ञाहोजायेगी उदाहरणअ अँ आ आँ यः तन् कहीयेतिसहवोंऊरीतिसे इत्यं कहीये इस प्रकार अकार इकार उकार ऋकार इनोके प्रत्येकं कहीये एक एक प्रति अष्टादश भेद है अर्थात् १८ भेद है जाविपतमेलृकारके विहतके द्वादश भेद है तिसलृकारकोदीर्घकेअभावते ईषत्स्पृष्टलृकारदीर्घहोताहै भेदोंकाप्रयोजनयेहै किदरेकयथासंख्यासेइनकोकार्यनहीहोता॥ ॥ एचोंकेभीद्वादशभेदहैं तिनाएचोंकोंह्रस्वकेअभावते एचूत्याकहीये एओऐऔच ताल्वादिकस्थानवप्रयत्नःआभ्यंतरप्रयत्नएहदोवे जिसवर्णके जिसवर्णके जिसवर्णसोतुल्यहै सोदोवेवर्णमिथःकहीयेपरस्परकापवीचसवर्णसंज्ञकहैं इहअर्थसमा

प्रत्येकमननुनासिकाननुनासिकत्वाभ्यां द्विधा। मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः। मुखसहितनासिकयोच्चार्यमाणो वर्णोऽनुनासिकः स्यात्। तदित्थम् अ इ उ ऋ एषां प्रत्येकमष्टादश भेदाः। लृवर्णस्य द्वादश तस्य दीर्घाभावात्॥ एचामपि द्वादश तेषां ह्रस्वाभावात्। तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्। ताल्वादि

स्थानेउत्पत्तिभया अस्येनेतिवर्णायत्र तत्रआसंमुखेआसेभवं ताल्वादिस्थानप्रकृष्टोयत्नःप्रयत्नःआभ्यंतरःआस्यंचप्रयत्नश्चआस्यप्रयत्नौतुल्यावास्यप्रयत्नौयस्यतत्तुल्यास्यप्रयत्नंसवर्णं आचआचइतिरत्नौतौचतौवर्णौइतिऋलृवर्णौतयोः ऋवर्णकाऔर लृवर्णकामिथःकहीयेआपमेसावर्ण्यवक्तव्यहै ऋलृवर्णयोःईहांऋत्यकःकाकेप्रकृतिभावहै॥ अबपाणिनीयशिक्षानुसारकेआदिकस्थानकथनकरतेहैं अकुहविसर्जनीयाइतिअकुहविसर्जनीयाःतेषांअकुहविसर्जनीयानांकंठस्थानंभवतिअकाराकवर्गकहीयेकखगघङहकारविसर्गइनोवर्णोकाकंठस्थानहैइचुयशानांतालुइचुयशाःवर्णाउपलभ्यंतेतेनस्थानंहै इकारचुकहीयेचछजझञयकारशकारइनोवर्णोकातालुस्थानहै ऋटुरषाणांमूर्धा ऋकारटुकहीयेटठडढणरेफषकारइनोवर्णोकामूर्धस्थानहै

लृकारलृकहीयेतथदंतलकारसकारइनोवर्णोंकादंतस्थानहै उकारउकहीयेपफ
प २ बभमउपध्मानीयकहीयेपकारफकारकेपूर्वअर्द्धविसर्गइनोवर्णोंकाओष्ठस्थानहै ञमङ
णनइनोवर्णोंकानासिकास्थानहै चकारतेकंठादिकस्थानभीहै एतुऐऐतुकाकंठतालुस्थानहै ओतुऔऔतुकाकंठओरओष्ठस्थानहै वकारकादंतओरओष्ठस्थानहै ईहांतक
प्रकरणग्रसंदेहवालेहैइसतेस्तुनएकार काभीयहीस्थानहै जिह्वामूलीयकाजि

स्थानमाभ्यंतरप्रयत्नश्चेत्येतद्द्वयंयस्ययेन
तुल्यंतन्मिथःसवर्णसंज्ञंस्यात् ऋलृवर्ण
योर्मिथःसावर्ण्यंवाच्यम् ॥ अकुहविस
र्जनीयानांकंठः इचुयशानांतालुः ऋटु
रषाणांमूर्द्धा लृतुलसानांदंताः उपूप
ध्मानीयानामोष्ठौ ञमङणनानांनासि
काच एदैतोःकंठतालु ओदौतोःकंठो
ष्ठंवकारस्यदंतोष्ठंजिह्वामूलीयस्यजि
ह्वामूलं नासिकानुस्वारस्ययत्नोद्विधा
आभ्यंतरोबाह्यश्चआद्यःपंचधास्पृष्टेष
त्स्पृष्टेषद्विवृतविवृतसंवृतभेदात्

ह्वामूलस्थानहै अनुस्वारकाहै एकआभ्यंतरयत्नहै एकबाह्यपत्नहैयत्नपदकीऔरप्र
यत्नपदकीपर्यायताहै इसीवास्तेयत्नोद्विधाकहाहै एकस्पृष्टप्रयत्नहै एकईषत्स्पृष्ट
प्रयत्नहै एकईषद्विवृतहै एकविवृतहै एकसंवृतहै उत्पत्तिकेपूर्वतात्वादिकस्थानमे
जिह्वाकास्पर्शभलीतराकरणतवस्पृष्टयत्नकहानाहै थोरास्पर्शकरणतवईषत्स्पृ
ष्टहोताहै थोराहरखहिनतवईषद्विवृतहै बहुतहरवर्णरहितनतवविवृतहैसमीप
रहिनतवसंवृतनामहै ॥ ॥ ॥ तत्रपंचानांमध्येस्पर्शानांस्पृष्टंप्रयत्नंभवति
तत्रकैपेपंचप्रयत्नाकेमध्यविविस्पर्शोकास्पृष्टप्रयत्नहै ककारादिकमकारपर्य्यंतस्य

र्शसंज्ञकहै ५ वर्ग कखगघङ चछजझञ टठडढण तथदधन पफबभम येस्पर्शसंज्ञकहैं अंतस्थोंकाईषत्स्पृष्टप्रयत्नहै यणकेये यवरल हैं यण अंतस्थसंज्ञकहैं ऊष्माणोंकाईषद्विवृतप्रयत्न है शलकेयेशषसह हैं शल ऊष्माणसंज्ञकहैं स्वरोंकाविवृतप्रयत्नहै अच् स्वरसंज्ञकहैं ह्रस्वअकारका किंतुप्रयोगविषेसंवृतप्रयत्नहै प्रक्रियादशाविषे विसर्गादिदशाविषेविवृतहीहै जैसेदंडः अत्र ढकारे है अकार अकार दोनों पूर्वविवृत हैं फिरअपरह्रस्वअकारकोसंवृतकारणेलगा सोन अकः सव र्णेदीर्घः इससेहोगयादोनोंविवृतदीर्घभयेदंडाढकंसिद्धभया ॥ तत्र बाह्यप्रयत्न एकाद शप्रकारकेहै विवारसंवारश्वासनाद घोषअघोष अल्पप्राणमहाप्राणउदात्तअनुदात्तस्वरितइसमें

तत्रस्पृष्टंप्रयत्नंस्पर्शानांकादयोमावसानाःस्पर्शाः ईषत्स्पृष्टमंतस्थानां यणोंतस्थाः ईषद्विवृतमूष्मणांशल ऊष्माणः विवृतंस्वराणां अचःस्वराः ह्रस्वस्यावर्णस्यप्रयोगेसंवृतं प्रक्रियादशायांतुविवृतमेव बाह्यप्रयत्नस्त्वेकादशधा विवारःसंवारःश्वासोनादो घोषोऽघोषोऽल्पप्राणोमहाप्राणउदात्तोऽनु

इनमेंखरकाविवारप्रयत्नहैश्वासप्रयत्नहैचपुनःअघोषप्रयत्नहै खफछठथचटतकप शषसर् इनवर्णोंकीखरसंज्ञाहैहशकासंवारनादवपुनःघोषप्रयत्नहै हयवरट लण् ञमङणनम् झभञ् घढधष् जबगडदश् इनवर्णोंकीहशसंज्ञाहै कखगघङ इत्यादि कुचुटुतुपु पंचवर्णोंकावर्गनामहै वर्गोंकाप्रथमवर्णतृतीयवर्णपंचमवर्णयणकेयेयवर लयेहवर्णअल्पप्राणसंज्ञकहै वर्गोंकाद्वितीयवर्णऔरचतुर्थवर्णशलकेयेशषसह

क≍ ये हवर्णमहाप्राणसंज्ञकहै प्रयत्नमेलनेमेयेकार्यआवेगे ॥ ≍क ≍ख इसस्वरूपक खकेककारखकारकेपूर्वअर्द्धविसर्गकेतुल्यजोहैसोजिह्वामूलीयसंज्ञकहै ≍प ≍फ इसस्व रूपकरकेजोपकारफकारकेऔपकाररफकारकेपूर्वअर्द्धविसर्गकेतुल्यहैसोउपध्मानीय संज्ञकहै अं अः इसस्वरूपकरकेजोअच्केपरेहैसोअनुस्वारविसर्गसंज्ञकहै अं अः एह्रस्वकारा ≍क दिकाकाउपलक्षणहै एककाग्रहणअन्यसजातीयकाउपलक्षण एकदेशकथनकियाऔरकोजो

जनावेंगे सो उपलक्षण कहीदा है अविधीयमान जो अण है च उनः उदित है सो सवर्णकी संज्ञा होय प्रतीयते विधीयते इति प्रत्ययः न प्रत्ययः अप्रत्ययः अविधीयमान इत्यर्थः इहमइशर्दहां इश् सवर्णानूं नहीं ग्रहण करदा इणा विधीयमान है आणुणः ईहां अकार अविधीयमान है अविधीयमान पदका संबंध आण विषै करणा उदित विषै नहीं करणा कहो कुः कारके क वर्गको विधीयमान चवर्ग नहीं होवेगा सिद्धांत विषै होता है जगाद जघे ईहां ईसीवास्ते

दात्तः स्वरितश्चेति खरो विवाराः श्वासा अघोष
श्च हशः संवारा नादा घोषाश्च वर्गाणां प्रथम
तृतीयपंचमा यणश्चाल्पप्राणाः वर्गाणां द्वि
तीयचतुर्थौ शलश्च महाप्राणाः ≍क≍ख इति
कखाभ्यां प्रागर्धविसर्गसदृशो जिह्वामूलीयः
≍प≍फ इति पफाभ्यां प्रागर्धविसर्गसदृश उ
पध्मानीयः अं अः इत्यचः परावनुस्वारविस
र्गौ अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः अविधीयमा
नोऽणुदिच्च सवर्णस्य संज्ञा स्यात् ॥
अत्रैवाण् परेण णकारेण कु चु टु तु पु एते उ
त दितः तदेवम् अ इत्यष्टादशानां संज्ञा तथेका
२। रोकारौ ऋकारस्त्रिंशतः एवं लृकारोपि एचो द्वादशानां

कहा है भाष्यमाणोऽप्युकारः सवर्णान् गृह्णाति ॥ इस सूत्र विषै अण संज्ञा लणके णकार साथ है इस विषै उकार नहीं इन् सूत्र विषै न परकार ग्रहण सा है कै सेयची आनतु रे ईहां दीर्घ ऋकार रको ह्रस्व ऋकारको इकार करना है जे कर अण संज्ञा चुरले णकार साथ है ऋकार अण ने वार है या सवर्णका बोध नहीं करेगा न परत्वार्थ भयो सो क्या जनों दा है अण परले णकार साथ है इण संज्ञा भी परले णकार साथ है हलि सर्वेषां ईस सूत्र विषै जो सर्वेषां ईहां इण ते परे ग्रहण भया है अस्य च्वौ इत्यादि विषै विषै सवर्णकी विधि करदा है ये सूत्र व्याक्तिपक्ष वि

विजातिपक्षविषिमन्याख्यानहै जैसेस्थूलकृशादिवक्ति विषेगोत्वजातितुल्यहै ऊऊऊ ऋऋऋ ऌऌऌ एऐ ओऔ इनहै पंचपंचवर्गोंकाबोधकरानेहै अकारान्तंचमोवर्णःसमाङ्गःपंचकाग्रहे तन्नकैयेतिसनेएवंकैयेइसप्रकारअकारअष्टादशोंकीसंज्ञाहै एक जैसेइकारऔरउकार अष्टादशोंकीसंज्ञाहै ऋकारत्रिंशत्कीसंज्ञाहैऌकारसाधसवर्णानानेइसप्रकारऌकार भीत्रिंशत्कीसंज्ञाहैएचूकैयेएओऐऔचूद्वादशाकीसंज्ञाहै अननासिकअननुनासि

अनुनासिकाननुनासिकभेदेनयवलाःद्विधाप
रःसन्निकर्षःसंहितावर्णानामतिशयितःसन्नि
धिः संहितासंज्ञास्यात् हलोनन्तराःसंयोगः
अज्भिरव्यवहिताःहलःसंयोगसंज्ञास्युः सु
प्तिङन्तंपदं ॥ ॥ ॥ ॥

कभेदकरकरयवलदोप्रकारकाहै तिसकरकेअननुनासिकयवलदोदोकीसंज्ञाहै शास्त्र शास्त्रविषेवर्णोंकोंप्रधानताहैइसवास्तेकथनकरतेहै वर्णोंकीअतिशयकरकरजोसन्नि धिहै निकटताहैसोसंहितासंज्ञाहो अनरविजातियासेहोताहैहलोंकेविजातीयपक्षहैइ सवास्तेअर्थकरतेहै अचोंकरकरव्यवधानरहितजोहल्हैसोसंयोगसंज्ञकहोन संयोगप दसेभीयेअर्थनिकलताहैसंयुज्यन्तेवर्णाःअस्मिन्समुदायेरतिसंयोगःएतदर्थमहासं ज्ञासमुदायेव्याकपरिसमाप्तिगर्गाःशतदंड्यतांयथातिसनेएकवर्णकीसंयोगसंज्ञ

नहीहोनीहयत्नकरोतिईहां संयोगांतसकारकेनकारलोपनहीभया संयोगोअंत्ययस्य
स संयोगांतः इसविग्रहसेभीएकवर्णकालोपनहीहोना हल्लूपदनहीराखीयेनवच
नेंतरअचोंकीभीसंयोगसंज्ञाहोवेगी तितउभयांईहां उकारलोपहोजायेगा अनंतरप
दनहीराखीयेनवपनसंईहांसकारमकारकीसंयोगसंज्ञाहोजायेगीअंतरभदंभीन
वस्कोःसंयोगाद्योःकाकेसकारकालोपहोवेगा ॥ सुपंतजोहैचपुनःतिङंतजोहै
सोपदसंज्ञकहो सुप्चतिङ्चइतिसुप्तिङौहंदांतेश्रूयमाणं पदं प्रत्येकमभिसंबध्यते
इंदसमासकेअंतजोपदहैसोएकएकपदसेसंबंधकरताहै जोकोईप्रश्नकरेप्रत्य
यकेग्रहणभयेंप्रत्ययांतग्रहणहोनाहैफेरसूत्रमेंअंतग्रहणकिसवास्तेहै तवउ
त्तरदेनासंज्ञाविधौप्रत्ययग्रहणेतदंत ग्रहणंनास्तिसंज्ञाविधिविषेप्र
त्ययग्रहणविषेतदंतग्रहणनहीहोनाईहांसंज्ञाविधिहैतदंतग्रहणनहीहोना
थीइसवास्तेअंतग्रहणकीयाहैयेअंतग्रहणइसीपरिभाषाकेविज्ञापकहैतिसतेकु

सुबंतंतिङंतंचपदसंज्ञंस्यात् इतिसंज्ञाप्र॰ कु

मारीअगारं ईहां ईहदेहि वचनेकरकेप्रकृतिभावनहीभयाप्रगृह्यसंज्ञाविषेहिव॰
चनेपदकाहिवचनांतअर्थनहीकीयाकुमारीद्विवचनांतहै अंतपदकीअनहिनस
मासात्ईहांअनहत्निनहीजानीकिसतेनहीजानीनहांअर्थवत्पदकीअनहत्तिसे
तकालाभहोवेगा कोईप्रश्नकरेराजन्ईहांइदन्लोपभयाव्यतिसे॰ ईहांअस
कालोपभया इनकोकैसेपदत्वहैनहीहिनाव्यपदेशवद्भावकरकेमुख्यपदताकीन्याई
कि ५ पदत्वहै ॥ तिप्रत्याहारकरकेतिवंतन्यासनहीकरनाव्याख्यानगौरवनेफलाभा
वनेपाणिनीयसूत्रोंकोऐहिकपारलौकिकफलदातृत्वहै येप्रणमग्रथ्यायकी
उपयोगिनीसंज्ञोंकाप्रकरणसमाप्तभया ॥ सम्यक्ज्ञापनेप्रधानविहितंका
र्यययासासंज्ञा ॥ इतिव्याकरणप्रकाशेसंज्ञाप्रकरणसमाप्तम् ॥

इतिसंज्ञाप्रकरणं ॥

इकोयणचि इकके स्थान विषे यण होय अच् परे हुं दया संहिता विषय हि विषे विधेय सूत्रमेंहे इस निर्दे
यनिमित्त क्रम है इउण् ऋलृक् इनकी इक संज्ञा है यवरट् लण् इनकी यण संज्ञा है अइउण् ऋलृ
क् एओङ् ऐऔच् इनकी अच् संज्ञा संहिता पद की अधिकार है षष्ठी स्थानेयोगा करके स्थाने पद आवता है
एक इकोयणचि करके ही अनेक प्रयोगों विषे यण कार्य होता है और सूत्र सर्व पदों के निष्पत्ति वाले हैं
सुधी अ येउपास्यः इहां प्रथम इकोयणचि सूत्र की प्रवृत्ति भयी अच् परे उकार है इक धकार में ईकार है
तिसको यण पायासी जे कोई प्रश्न करे इक में ह्रस्व इकार है सुधी में दीर्घ है तिसको यण कैसे होवेगा
तब कहिना अण् दित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः करके त्वादिभ्यः निर्देश करके दीर्घों को भी यण् आदि कार्य
होते हैं इसते ईकार को यण पायासी तब शंका भयी सकार को उकार को यण किस वास्ते नहीं
होवे अच् परे धकार में ईकार है अथवा अच् सर्वे स तिपरस्य इकः यण कथं नस्यात् अच् पूर्व हो
या इस्ले इक को यण किस वास्ते नहीं होवे तब उत्तर देना अनियमे नियमकारिणी परिभाषा
अनियम विषे जो नियम करे सो परिभाषा कहीये इहां नियम नहीं इस वास्ते परिभाषा सूत्र है न

इकोयणचि इकः स्थाने यण स्यादचि संहितायां
विषये तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य सप्तमी निर्देशे
न विधीयमानं कार्यं वर्णान्तरेणाव्यवहितस्य पूर्वं

स्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य सप्तम्यंते उच्चारिते सति पूर्वस्यैव कार्यं इति सूत्रार्थः इहां व्यवधान वा
ले इक को भी यण पाया अव्यवधान वाले इक को भी यण पाया न हो अव्यवधान वाले को हो पूर्व
को भी पाया पर को भी पाया इस अनियम विषे पूर्व को ही कार्य हो सप्तमी निर्देश करके विधीय
मान जो कार्य है सो और वर्ण करके व्यवधान रहित पूर्व को ही जानना इसी वास्ते अच् परे हुं दया
अर्थ करीदा है अचि सप्तमी है अच् परे नहीं मन्नीयेन वदर्थिपपर्द इहां पकार परे हुं दया भी यकार
८ होवेगा इस वास्ते अच् पदना सकार में उकार पूर्व तो है परंतु धकार करके अंतर है उपास्य वाला
उकार पूर्व नहीं ऐसे धकार में ईकार ही पूर्व है जो कोई प्रश्न करे अनियम विषे नियम तो भ
याई कार को यण हो परंतु यण चार है यवरल इन विषे को न होवे तब उत्तर देना स्थानेंतरतमः
प्रसंग होये याँ सदृशतम आदेश होवे अनिश्चय करके रलत्व आदेश होय प्रसंग वा कहीये ना
व कहिना एकान्तरे बहूनां प्रवृत्तिः प्रसंगः एक अक्षर विषे बहुत वर्णों की जो प्रवृत्ति होवे सो
प्रसंग कहीदा है स्थान अर्थ गुण प्रमाण इस भेद से तुल्यता अनेक प्रकार की होती है इहां कोन

सीतुल्यताग्रहणकरणीतवा।कहिनाजहांअनेकप्रकारकीतुल्यताहोवेतहांस्थानेन्तरतम॥
ल्यतावलीहैषष्ठीस्थानेसूत्रतेस्थानपदआवतासीफेरस्थानेन्तरतमःसूत्रमेस्थानपदइसमे ने
प्रमाणहै आदेशकास्थानीकास्थानदेषणजैसेइकुयणचानांनाल्वः इसविधिवेइकारभीआ
याहैयकारभीआयाहैः बकाररेफलकारनहीआयेइसतेईकारकोतुल्ययकारभयाय॥
थासंरव्यनहींइकछिसठहैयणरचारहै सुध्यपुउपास्यःभयाअदेतदनंतरअनचिचलग
अचोरहाभ्यांसूत्रतेअनुपदहैपदअनुवृत्तिभयेयरोनुनासिकेनुनासिकोवाअपदआयानबअर्थ भ॰
या अचूतेपरेयरकोद्वित्वहोविकल्पकरके अचुपरेऊंदयानहीहोईहांअचूसकारमेंकार

स्थानेन्तरतमः प्रसंगैसतिसदृशतमआदेशःस्या
त् यत्रानेकविधमांतर्यंतत्रस्थानतआंतर्यंबली॥
यः अनचिच अचःपरस्ययरोद्वेवास्तोनत्वचि ॥
झलांजश्झशि झलांजशःस्युःझशि संयोगांत॥
नस्यलोपः संयोगांतंयत्पदंतस्यलोपः अलोः॥

स्यात्

हैतिसपूर्परेयकारहैतिसकोहसहयकारद्वित्वभयापरेअचूनहीपरेव्यंजनयकारहै
स्थानवद्भावनहीहोताईहांअल्विधिहैफेरद्वित्वनहीहोता एक स्थानकोलक्षणसहोदे
वषवर्न्नते अथवाअनवस्थाहोनेते अनचिचसूत्रविधिप्रसज्यनञ् हैपर्युदासनञनही
जेपर्युदासहोता अचूभिन्नेअचूसदृशेऐसाअर्थहोतानवद्दालिवन्यासकरणहीऐसेन्या
सनहीहोनेतेवाकईहांअवसानविधेभीद्वित्वभयासध्युध्यु उपास्यः सुध्युध्य उपास्याः ऐ
सेभयाफेरझलांजश्झशिलगाझलांकोजश्होझश्परेऊंदया कश्परेपरलायकारहै
झल्धउरलायकारहैतिसकोजश्भया दकारलगतलसानांदूं नार्फेरसंयोगांतस्यलोपः॥
लगाषष्ठीनिर्दिष्टजोआदेशहैसोअंत्यअलूकेस्थानविधिहो संयोगांतजोपदहैतिसका
लोपहो व्यंजनवर्णोकासमुदायसंयोगकहीदाहै ईहांदकारधकारयकारकालोपणा
याथातबअलोत्यस्यलगासंयोगांतकोहरकारकेअंत्यकायकारकालोपकरणेलगापणा
कात्यायनऋषिनेइतनेमेंवार्त्तिककहायणकालोपसंयोगमेंप्रतिषेधहै यणःप्रतिषेधोवाच्यः

तबवार्तिककेलयायणकेलोपकानिषेधवक्तव्यहैइसनेकिसीकालोपनहीभयातबसाभ
याश्रवोंकारकारजोहीनहैसोपरसाथजोडनेयोग्यहै इसीकानामसंधिहैपूर्वपरपदमेलनसं
धिःजोडया सुद्ध्युपास्यः सुध्युपास्यःसिद्धभयेसुधीभिःउपासितुंयोग्यः सुध्युपास्यःवरेउनम
कानामहैमधोःअरिः मध्वरिः विस्तुःअवकथनकरदाहै सुधीउपास्यः ईहांभीइकोयणाविक
रकेयकारमात्रकीनयारूपसिद्धहोताहै मधु अरिः ईहांअचुपरेअकारहैइक उकारहैतिसको
उपध्मानीयानामोदौकरकेउकारभीओष्ठस्थानहैवकारभीओष्ठहैइसनेउकारकोवकारभयाहि
त्वादिकमयेपरेमिलयामध्वरिः सिद्धभयाधातृअंशः ईहांअचुपरेअकारहैइक ऋकारहैतिसको
ऋदुरषाणांमूर्द्धांकरकेरेफभयाधात्रंशः सिद्धभयाधातुःअंशः धात्रंशः लृवनू आकृतिर्यस्या
लृआकृतिईहांलृतुलसानांकरकेलृकोलकारभयालाकृतिः सिद्धभयाकोईप्रश्नकरेसुधीउ
पास्यः ईहांयणनहीहोनाइकोसवर्णोकरकेप्रकृतिभाववविकल्पहोताहीनभूसुधियोःकरको

इतिप्रासे

न्यस्य षष्टीनिर्दिष्टों न्यस्यआदेशः यणःप्रतिषे
धोवाच्यः अक्षीनपरेणसंयोज्यं सुध्युपास्यः म
ध्वरिः धात्रंशः लाकृतिः ॥ ॥

स्यात

यणनिषेधहोताहैतबकहिनानसमासेसूत्रकरकेइकोसवर्णेनहीलगताहै ईहांसमासहैनभू
सुधियोःअचुसुपरेईंदयानिषेधकरदाहैजोकोईप्रश्नकरेइकोयणचिसूत्रवितेइकग्रहणनहीक
रणातबकहिनाषट्अत्रईहांअचुपरेईंदयाचंजनकोयणहोवेगाइसवास्तेइकपदरावनाफेरप्र
श्नकरणाडकारविधानतेयणनहीहोवेगाअथवाङमोह्रस्वांपदकीदीर्घीतस्तूचनेदीर्घपदकीअ
नुवृत्तिकीनयाह्रस्वदीर्घयोःर्यणस्यात् ऐसेअर्थकीनयाषडमेदोबहूरभयाफेरइकपदकिस
वास्तेहैतबउत्तरदेनाइकोयणचीसूत्रकेपूर्वपदांताहाअचवर्तिनपूर्वसूत्रहैउसकीभीअ
नुवृत्तिहोवेगीतबपदांतयोह्रस्वदीर्घयोयणयेअर्थहोवेगातबगौरीऔ ईहांगौरीमेअपदां
तईहांकारहैतिसकोयणनहीहोवेगागौर्यौरूपनहीसिद्धहोवेगाह्रस्वदीर्घकीअनुवृत्तिक
रणीपदांताकीनहीकरणीइसमेप्रमाणकाअभावहैइसवास्तेइकग्रहकरणा कोईप्रश्नक
रेइदेःयणचिईहांङमोह्रस्वात्करकेणकारकेपरेणउट्किसवास्तेनहीआवेतबकहिनाछं
दोवत्सूत्राणिभवंतिछंदसिविधयोविकल्पंतेकोईकहिनेहैअकोयणाविसूत्रकरणाअकः

सवर्णेदीर्घः ईहां उक्तीतेश्च ऋऌअचूपदश्च नुहन्निकारणेस्त्र सवर्णेदीर्घः करणलाग
वनेसूवचहै जेकोईप्रश्नकरे अर्थवद्ग्रहणेनानर्थकस्य अर्थवान्‌केग्रहणभयान
नर्थकाग्रहणनहीहोनाइसने प्रस्यादेभ्यंरः स्त्रीवेत्‌ ईहांटादिकपरेकुंदपाअर्थवा
न्‌विधियणहोसुधीमेईकारअनर्थकहैतिसकीयणनहीहो जिसनेसमुदायअ
र्थवान्‌होनाहै एकदेशअनर्थकहोनाहैनवकहिनानस्मादितिउत्तरस्यईहां एकदेश
विधियणकरणेसेपपरिभाषाअनित्यहै॥एचूकोक्रमनेअयूअवूआयूआव् आदेशहो
नअचूपरेहंस्या एचूक्याकहियेएओऐऔकानामहैनवकहिनाएओऐऔकोईप्रश्नकरे
किसरीतिसेहोनतवकहिनानल्पसंबंधीजोविधिहेसोयथासंख्यहोजिसनेस्थानीहै
तिननेआदेशहोवनएकारकोअयूहोओकारकोअवूहोऐकारकोआयूहोऔकारकोआ॰

एचोऽयवायावः एचः क्रमात्‌ अय्‌ अव्‌ आय्‌
आव्‌ एतेस्युरचि यथासंख्यमनुदेशः समानां
समसंबंधीविधिर्यथासंख्यंस्यात्‌ ॥ ॥

हरेहो हरेए ईहांअचूपरेएकारहै एचूरेफमेएकारहै तिसकोअयमकोम यथसंअयू भया॰
एकारकंठनालूहै अणभीकंठनालूहै इसनेयकारपरेएकार रमेमिलया हरयेसिद्धभ
याकोईप्रश्नकरेअयूअवूकेयकारवकारकीहल्‌स्यंकारकेइन्तेनाकि सवानेन ही भयी॰
तवउत्तरदेनाययोहलिइत्यादिकाविधिउच्चारणसामर्थ्यनेइत्संज्ञानहीभयीविष्णोएई॰
होअचूपरेएकारहैएचूविस्नोमेओकारहैतिसकोयथासंख्यसेअवूभयाआदेश॥
संयोज्यसंहरणिपंचसंधिमेहोनागयावारंवारनहीलिषणाजांदासअकारमे॰ लाउको
रएकारमेमिलाविस्नवेसिद्धभयानैअकः ईहांअचूपरेअकारहैएचूनकारमेऐकारहै
तिसकोगिणनीसेआयूभयानकारआकारमेमिलयायकारअकारमेमिल॰
कःसिद्धभयाअयतिसेनांइतिनायकः पौअकः ईहांअचूपरे॰कारहै
एचूपकारमेऔकारहैतिसकोआवभयायकारकाआकारमेयोगभयावकारअकार
मेयोगभयापावकः सिद्धआओदौनोरीतिवकव्यंरमवार्तिकलेओनूओनूएदत्यायेऔम्‌

औतन्‌कंठोष्ठहैतिनकोअवृआवभीकंठोष्ठहोतेहैं यकारादिकप्रत्ययपरेहुंदयाओतऔतनको
वांतादेशहोक्याओकारकोअवृहोऔकारकोआवृहो गोर्यंईहांयकारादिकप्रत्ययपरेयत्‌प्रत्य
यहैगकारमेओकारकोअवृभयागकारकाअकारमेयोगभयावकारयकारमेयुक्तभयाग
व्यंसिद्धभयागोर्विकारःगव्यंनौर्यंईहांयादिकप्रत्ययपरेहै यत्‌प्रत्ययनकारमेऔकारकौ
आवृभयानकारआकारमेमिलयावकारयकारमेयुक्तभयानाव्यंसिद्धभयानावानार्यंना॰
वानार्यंनाव्यं कोईप्रश्नकरैलोपःशाकल्यस्यकरकेवकारकेवकारकालोपकिसवास्ते॰
नहीभयातबउत्तरदेनाअवृआवृकोभसंज्ञकहोनेतेअथवावांतोयिसूत्रमेवकारकेग्र॰
र्हलोपोव्योःकरकेलब्धवकारकेप्रश्लेषसामर्थ्यसेवकारलोपनहीहोता जोकोईकहै

वांतोयिप्रत्यये यादौप्रत्ययेपरेओदौतोः।
वावौस्तः।गोर्विकारःगव्यं नावानार्यंनाव्यं
गोर्यूतौछंदस्युपख्यानं गव्यूतिःअध्वपरि
सं

वकारपरेहुंदयावकारकालोपनहीहोतानहिकार्यीनिमित्ततयाश्रीयतेकार्यीनिमि
त्तनहीहोता ईहांवकारकार्यीहैवकारनिमित्तहैतबउत्तरदेनायेपरिभाषाअनित्य
है लोपोव्योर्वलिसूत्रमेवलग्रहणप्रमाणहैवकारनिमित्तकरकेवकारलोपकथनकी॰
ताहैइसतेपरिभाषाअनित्यहै कोईप्रश्नकरैयादौप्रत्ययेअर्थकहांसेभयातबकहि॰
नायेनविधिस्तदंतस्यकरकेतदंततनपायीसीतबअपवादभूतयस्मिन्विधिस्तदादवल्
ग्रहणेपरिभाषाकरकेयादौअर्थभयासमस्तविशेष्यविशेषणभावविवेआदिग्रहण
होताहैयादिकनहीकहीयेतबगोभ्यांईहांओकारकोअवृहोवेगाहोतानहीप्रत्ययपदक
हीदेवीयेतबगोयानेईहांअवृहोवेगाहोतानही गोशब्दकोवांतादेशहोयूतिशब्दपरे॰
हुंदयावेदविषेगोयूतिःईहांवेदविषेयूतिपरेहैओकारकोअवभया गव्यूतिः सिद्धभ॰
याअध्वनःअध्वपरिमाणविषेयूतिशब्दपरेहुंदयागोशब्दकोवांतादेशहोयेसूत्रलोकवा

स्ते है ईहां भी अलौं त्यसूत्र करके गकार विषे ओकार को अव् भया गव्यूतिः सिद्ध भया गव्यूतिः कोशयुगम् चार कोश का नाम है गो के मिश्रीभाव अर्थ विषे गोयूतिः ऐसा ही रहा शक्यार्थ्य र विषे क्षय्य जय्य निपातन करीरे है क्षेयं ईहां शक्यार्थ विषे एकार को अय् भया क्षय्यं सिद्ध भया जेयं ईहां शक्यार्थ विषे एकार को अय् भया जय्यं सिद्ध भया कोई प्रश्न करे शक्यार्थ कि सवास्ते कहा ही न अकहिना शक्यार्थ नहीं कहो ये न व क्षेयं पापं जेयं मनः ईहां योग्यार्थ विषे भी अय् होना था होना नहीं इसी भेद वास्ते वो नो विसूत्र नेये भिन्न सूत्र कीना है अनूचउनः पङ् कै ये एओं ङ् गुण संज्ञक हो कोई प्रश्न करे अनूकर के अन्त्य प्रत्याहार लेना के अकारमात्र लेना न वकहिना तपर जो है और तकार ने परे जो है उच्चार्यमान वर्ण सो समकाल की संज्ञा हो अन्त तपर है इस ने अकारमात्र का ग्रहण भया स हि व हो रो द वर्ण स्य ईहां तकार ने परे अवर्ण है एक आदेश हो पूर्व पर के स्थान विषे इस पद का अधिकार है अधिकार क्या कहीये न वकहि।

क्षेतुं शक्यं क्षय्यं
जेतुं शक्यं जय्यं २

माणोच गवां मिश्रीभावे गोयूतिः क्षय्यजय्यौ शक्यार्थे शक्यार्थे किं क्षेयं पापं जेयं मनः अदेङ् गुणः अदेङ् च गुणसंज्ञः तपरस्तत्कालस्य तपरस्तात्परो वा उच्चार्यमाणो वर्णः समकालस्यैव संज्ञः स्यात् ॥ एकः पूर्वपरयोरित्यधिकृत्य आद्गुणः अवर्णादचि परे पूर्वपरयो ॥ ॥

नाउनरोन्नरसंबंधः अधिकारः आगे आगे जो पद का संबंध है सो अधिकार है गुणसंज्ञा क्या फल है न वकहिना अवर्ण ते अच् परे हुं दया पूर्व पर के स्थान विषे एक गुण आदेश हो उप इंद्रः ईहां अच् प्र परे इकार है अवर्ण ते एकार मे है पूर्व अकार पर इकार दोनो के स्थान विषे एक एकार गुण भया अकार कंद है इकार नाल है तिनको एकार भी कंदनाल भया उपेन्द्रः सिद्ध भया वामन का नाम है॥ रमा ईशः ईहां अवर्ण मकार विषे है अच् परे ईकार है पूर्व आकार पर ईकार दोने के स्थान मे एकार गुण भया रमेशः सिद्ध भया रमा का जो ईश हो वे सो रमेश के हीये विष्णु का नाम है गंगा उदः॥ कं ईहां अवर्ण गकार मे है अच् परे उकार है पूर्व आकार है पर उकार है दोने के स्था ॥ ॥ ॥

नमेंऊकारगुणभया उपेन्द्रः सिद्धभया गंगाकाजलगंगोदककहीयेउपदेशविषेजोअनुना
सिकअच्हैसोइत्संज्ञकहो अभ्रआँअपः ईहांउपदेशविषेअनुनासिकअच्नहीईहांइत्संज्ञाहु
नहीभयी ॥ पाणिनीयाप्रतिज्ञानुनासिकाः भवंतिप्रतिज्ञाअनुनासिक्यपेषांतेप्रतिज्ञानुना-
सिक्याः पाणिनीयप्रतिज्ञानुनासिक्यहैंप्रतिज्ञाअनुनासिकहैजिन्हकीजहाँप्रतिज्ञाहैतहांमहा
अनुनासिकजानना लँणँ नम्ँलणसूत्रेलणसूत्रेतिहनीतिलणसूत्रस्थः लणसूत्रस
स्थासोअवर्णः लणसूत्रस्थावर्णः तेनसलिणसूत्रस्थावर्णेनइसकायेसमासहैलणसूत्रवि
षेस्थितजोअवर्णहैतिससाथउच्चार्यमानजोरेफहैसोरकारलकारकीसंज्ञाहो अनेन
इत्लणसूत्रमेआकारहैतिससाथआदिवर्णरेफहैसोअंमेलकारकीउरआपनीसंज्ञाभ-
यारप्रत्याहारभया ऋकारत्रिंशतकीसंज्ञाकहाहैतिसकेस्थानविषेजोअण्हैसोरपर

रेकोगुणादेशः स्यात् उपेन्द्रः रमेशः गंगोदकम्
उपदेशेऽजनुनासिक इत् उपदेशेऽनुनासिकोऽजित्संज्ञः
प्रतिज्ञानुनासिक्याः पाणिनीयाः लणसूत्रस्थावर्णे
न सहोच्चार्यमानो रेफो रलयोः संज्ञा उरण्रपरः ऋ
इति त्रिंशतः संज्ञेत्युक्तं तत्स्थाने योऽण् स रपरः सन्ने
व प्रवर्तते कृष्णऋद्धिः कृष्णर्द्धिः तवऌकारः तवल्का

ह्वाप्रवर्तै रेफसेलकारकाभीग्रहणहोताहैऋपदनहीरखीयेतवदेयंईहांयकाररप
परहोवेगाजेअण्पदनहींराखीयेरीइ-अनःऋकेस्थानरीइ-भीरपरहोवेगा कृष्णऋद्धिः॥
ईहांआद्गुणःकरकेगुणभयाअवर्णकृष्णमेंअकारहैअचुपरेऋकारहैपूर्वअकारहैपर
ऋकारहैदोकोस्थानएकपरिशेषतेअकारगुणभयासोअकारऋकारकेस्थानविषेहै
सोउरणरपरःकरकेरपरकरणोसेअर्गुणभयाजलतंविकास्यायकररेफथकःरऊप
रगयाकृष्णअकारमेमिलाकृष्ण र्द्धिः सिद्धभयातवल्कारः ईहांअकारवकारमे
हैअचुपरेलृकारहैदोनोकेस्थानेअकारभयापरंतुलपरभयापरीमिलातवल्कारः
सिद्धभया ॥ यवयोर्लोपःकथंभूतयोःयवयोःअवर्णपूर्वयोःउनःकथंभूतयोः
पदांतयोःकिसतिअशिपरेसतिअर्थः अशपरेऽवर्णदयायकारवकारकाविकल्पकर

केल्लोपहोपहोवेंफेरकैसेहोवेपदांतहोवें वाअवर्णपूर्वकजोपदांतयकारवकारहैंतिनका
लोपअशपरेहुंदयाविकल्पकरकेअवर्णपूर्वयोः किंदथ्यत्रईहांअवर्णपूर्वनहीं पूर्वत्रासिद्धं
पूर्वासिन्कर्त्तव्येपरंअसिद्धं ईहांपूर्वशब्देनेपरकाआलेपहोनाहैसपादसप्ताध्यायीप्रतित्रिपा
दीअसिद्धहैत्रिपादीविषेपूर्वसूत्रप्रतिपरशास्त्रअसिद्धहैं इससूत्रकरकेशास्त्रअसिद्धहोनाहैका
सिद्धत्वपत्तनहींकिसनेजानकार्यस्थवांधायोगात्हेयेकार्यकीवाधानहीं दोनोंपदेनस
वर्न्नेइतिसपादसपादावासोसप्ताध्यायीचइतिसपादसप्ताध्यायीतांसपादसप्ताध्यायी इस
सूत्रमेपूर्वत्रनपेसाव्यासनहींकरणा किसनेनलोपःसुपस्वरसंज्ञातुग्विधिषु इससूत्रविषे
असिद्धकीअनुवृत्तिआवनीहै अवनकारकीअनुवृत्तिहोवेगीनवराजभ्यांइत्यादिकाविवेदीई
करदयानलोपअसिद्धहोनासीअवनलोपकानिषेधहोवेगाइसतेमरणानृईहांनलोपकरदयामो

लोपः शाकल्यस्य अवर्णपूर्वयोः पदान्तयोर्वा
पो २ कारयकारयोर्लोपोऽशि परे पूर्वत्रासिद्धं सपाद
सप्ताध्यायीप्रतित्रिपाद्यसिद्धा त्रिपाद्यामपिपूर्वं
प्रतिपरंशास्त्रमसिद्धं अधिकारोऽयं ॥ ॥

नोधामोः त्रिपादीकापरशास्त्रअसिद्धहोनाहैहरेइहईहांएचोऽयवायावः करकेएकारकोअयभयाहर
परहभयानदनंनरलोपः शाकल्यस्यकरकेविकल्पनेयकारलोपभया नबहर इह हरविह
सिद्धभया जोकोईकहैहरइहहईहांआद्गुणः करकेगुणकिसवास्तेनहींहोना मवकहिनाएऽ
पूर्वत्रासिद्ध करकेआद्गुणःकीदृष्टिमेलोपः शाकल्यस्यअसिद्ध होनाहैआद्गुणःसपादस
माध्यायीकासूत्रहैलोपःशाकल्यत्रिपादीहै मनोमध्यमेयकारआनाताहैइसवास्तेगुणनहीं
होनाहै विलोइहईहांएचोऽयवायावः करकेओकारकोअवूभयानदनंनरलोपः शाकल्यस्य
करकेअवर्णपूर्वकपदांतवकारकाविकल्पनालसोपभयाविसइह विसविहसिद्धभया
विसइहईहांगुणनहींहोना आद्गुणःसूत्रकीदृष्टिमेलोपः शाकल्यस्यअसिद्धहोनाहै ॥
श्रियैउद्यतः ईहांएचोऽयवायावः करकेऐकारकोआयभयानदनंनरलोपः शाकल्यकरके
विकल्पनेयकारलोपभयानबश्रियाउद्यतः श्रियाउद्युतः सि ॥ ॥

ह भया श्रियाउद्यतः इहां गुणनहीहोनाथा इकोगः सूत्रकी टेमेलोपः शाकल्यस्य सूत्र
कोअसिद्धहोनेसे गुरौउत्कः इहां ओवोअवावः करकेऔकारकोआव् भया गुराव्
उत्काभयातदनंतरलोपःशाकल्यस्य करकेविकल्पसेवकारलोपभया गुराउत्कः गुरा
वुत्कः सिद्धभया गुराउत्कः इहां गुणनहीहोनाथा इकोगः सूत्रकेपहलेविकालविधिलोपः
शाकल्यस्य सूत्रकोअसिद्धहोनेमे अ आकारएच् कैएऐओऔ वृद्धिसंज्ञकहो आद्वैए
च्‌इत्यादिवोर्द्धदसत्वसेविभक्तिलोपभया अथवासमाहारद्वंद्वजाननाकोईप्रश्न १७
करैहंदाद्युपदहांनाटचू स्तूकरकेवकारनेपरैएच् कि सवास्तेनहीहोवेतबकहिनासमा
सांतविधिरनित्यहै इसमेप्रमाणहैं श्वादिगणविषेप्रतिराजनूराहकापाठचुप है ८
दहंनान्करकेप्रतिराजं इहां टच्‌आवनासीफेरश्वादिगणविषेप्रतिराजनकापा
ठव्यर्थहै सोव्यर्थहोकेजनाताहैसमासांतविधिरनित्यहै कोईप्रश्नकरेवोक्तःकरके।

हरेऽव हरयिहरएव विष्णोऽव विष्णविह
विष्णवह श्रियैउद्यतः श्रियाउद्यतः श्रियायु
द्यतः गुरौउत्कः गुराउत्कः गुरावुत्कः वृद्धि
रादेच् आदैच् वृद्धिसंज्ञः स्यात् ॥ ॥ ॥ ॥

कुत्वकिसवास्तेनहीहोता तबकहिनाअयस्मयादीनिछंदसिकरकेइहांभीभसंज्ञाहै
स्तूत्रांकोछांदसत्वसेइसतेकुत्वनहीभया कोईप्रश्नकरेवद्धिरादैजदेङ्‌गुणः इहांसंहि
सू १ तापाठविविकैसेजरहोथाहै तबकहिनाउभयसंज्ञानीतिवक्तव्येदोवेसंज्ञाहैं तब
सेकुत्वनहीभयाथदत्वतेजरत्वभयाजैसेसवदृश्माद्‌कानागऐनइहांवद्धिशब्दकासर्व
पारमंगलार्थहै कोईप्रश्नकरेआदेचुमात्रकीवृद्धिसंज्ञाहै अथवासंभाविनाकैवृद्धि
संज्ञाहै जेसंभाविनाकैंतोवृद्धिसंज्ञासर्वकमूनीपमानोकेवृद्धिसंज्ञाहैतबआम्रमयं
शालमयं इहांआम्रशालकेवृद्धिलक्षणमयटनहीआवेगाशालीयःमालीयः इहां
वृद्धिनेछप्रत्ययनहीआवेगा जोकहीयेआदेचुमात्रकीवृद्धिसंज्ञाहैतबकहिना उपरा
पदवृद्धोसर्ववरसत्तूचकरकेसर्वभावः इहां विपरीतस्वरहोवेगातावद्वार्यः इहां
वृद्धिनिमित्तस्यकरकेपुवद्भावनिषेधहोवेगा तदकहिनाउत्तरपदवृद्धौइहांविहि
तविशेषणदेनाउत्तरपदकोवृद्धिइहांविहितनहीं. वृद्धिनिमित्तस्यइहांसमासांतरक

र्णा इ है निमित्त णकारककारादिकं यस्मिन् ईहां णकारादिक परे न होवें वृद्धादि निषेध नहीं हो
ता इस ने संभावित असंभावित दोनों की वृद्धिसंज्ञा है भाष्य में स्पष्ट है ॥ वृद्धिसंज्ञा का क्या फल
है नवकहिना अवर्ण ने एच् परे हुंदयाइर्द पर के स्थान विचे वृद्धि एकादेश हो इस सूत्र के प्रयो
जन हैन कृष्ण एकत्वं ईहां अवर्ण कृष्ण में अकार है एच् परे एकार है पूर्व अकार है पर है एकार है दो
नो के स्थान में ऐकार वृद्धि भयी अवृद्धि न परे मिल दा गया कृष्णैकत्वं सिद्ध भया इसी प्रकार औ
र भी जानने गंगा ओघः ईहां अवर्ण गंगा में आकार है एच् परे ओकार है दोनो के स्थान में औकार वृद्धि
भयी गंगौघः सिद्ध भया देव ऐश्वर्यं ईहां अवर्ण देव में अकार है एच् परे ऐकार है दोनों के स्थान ऐ
ऐकार वृद्धि भयी देवैश्वर्यं सिद्ध है कृष्ण औत्कंठ्यं ईहां अकार कृष्ण मे है एच् परे औकार है दोनो के स्था
न औकार वृद्धि भयी कृष्णौत्कंठ्यं सिद्ध भया है कृष्ण एकत्व है अथवा कृष्ण का एकत्व है गंगा
का प्रवाह है देव की ऐश्वर्य है कृष्ण की उत्कंठा रहना है ऐसा अर्थ इन प्रयोगों के यद्यपि जो कोई कहै कृष्ण

वृद्धिरेचि आदेचि वृद्धिरेकादेशः गुणापवा
दः कृष्णैकत्वं गंगौघः देवैश्वर्यं कृष्णौत्कंठ्यं

का एकत्व है ईहां षष्ठी समास का निषेध है पूरणगुण सुहितार्थ सदव्यय तव्य समानाधिकरणे
इस सूत्र कर के ईहां एकत्व संख्या गुण है नवकहिना ये सूत्र अनित्य है संज्ञाप्रमाणत्वात् सं
ज्ञाप्रमाणत्वात् इस भाष्य से ईहां प्रमाण गुण साथ षष्ठी समास कीया है जे कोई प्रश्न करे कि वृद्धि को
विधेयाद्गुणः सूत्र से गुण किस वास्ते न भया नवकहिना वृद्धिरेचि सूत्र आद्गुणः सूत्र का अप
वाद है वचन प्रामाण्यते अपवाद क्या निरवकाशो विधिरपवादः निरवकाश जो विधि है सो अप
वाद है उत्सर्ग विधि की अपवाद विधि बाधक होती है उत्सर्ग सामान्य शास्त्र का नाम है प्रवृत्ति निरो
धो बाधः प्रवृत्ति का रोकना बाधक होता है जैसे न हिंस्यात्सर्वभूतानि इस सामान्य हिंसा निषेध
की अग्नीषोमीयं पशुमालभेत ये एक त्वं गवे धी हिंसा बाधा करती है जैसे ब्राह्मणेभ्यो दधि दीयतां त
क्रं कौंडिन्याय कौंडिन्यस्य तक्र दान ने दधि दानस्य निवृत्ति रहित तक्र कौंडिन्य न्याय कर के सामान्य शा
स्त्र गुण की प्रवृत्ति भयी थी एच् परे वृद्धि याह वृद्धि ने बाधा करी है इसी वास्ते लिखा है येन नाप्राप्ते
यो विधिरारभ्यते स तस्य बाधको भवति जे कोई प्रश्न करे एको सूत्रो विधेय एकः पूर्वपरयो जो
का संबंध किस वास्ते है नवकहिना जे एकः पूर्वपरयोः नहीं संबंध करीये तब एचि इस सप्त

मीनि है एाकारके पूर्वको ही वृद्ध्यादिक होवनगे दोनोंके स्थानमें नहीं होवनगे इसवास्ते एकः पूर्व परयोः कारण जे कोई कहे इनो सूत्रोंमें सह पद दिया पूर्व परके स्थानमें ही कार्य होवेगा सवर्ण अधि कारसूत्र नहीं कारणा संयोग विविलनीया नहीं होती उपपद विभक्तेः कारक विभक्तिर्बलीयसी इ सपरिभाषाने सह योग तृतीया उपपद विभक्ति है सप्तमी कारक विभक्ति है सो बली है ॥ एतिश्च एधतिश्च ऊठ च इति एत्येधत्यूठः तेषु एत्येधत्यूठ्सु अवर्णाने एजादिक एति एधति परे ऊठ दयाव पुनः ऊठ परे ऊठ दया पूर्व परके स्थान विषे वृद्धि रेकादेश होय एजादिक ति एधति का वि शेषण है किस वास्ते संभव व्यभिचाराभ्यां स्याद्विशेषणमर्थवत् संभव व्यभिचार दोनों जहां होवे सो विशेषण अर्थवान् है एति एधति एकारादिक भी है और इकारादिक भी है ऊठ एजा क नहीं उपपति ईहां अवर्ण उपमें अकार है एकारादिक एति परे है पूर्व अकार पर एकार दोने

एत्येधत्यूठ्सु अवर्णादेजाद्योरेत्येधत्योरूठि च
परे वृद्धिरेकादेशः। उपैति उपैधते प्रष्ठौहः एजाद्योः
किं। उपेतः मा भवान् प्रेदिधत् ॥

के स्थानमें ऐकार वृद्धि भयी उपैति सिद्ध भया उपएधते ईहां अवर्ण उपमें है एजादिक एधति परे है दोनोंके स्थान ऐकार वृद्धि भयी उपैधते सिद्ध भया प्रष्ठऊहः ईहां अवर्णाने ऊठ परे है पूर्व परके स्थानमें औकार वृद्धि भयी प्रष्ठौहः एजादिक विशेषण किस वास्ते है तब कहि ना एजादिक विशेषण नहीं देते तब उपइतः प्रइदिधत् ईहां भी एति एध ति परे है वृद्धि हो जावेगी होती नहीं एह एजादिक नहीं इकारादिक धातु है इ सवास्ते एजादिक कहा है गुण भया ॥ अक्षशब्दने ऊहिनी शब्द परे ऊठ दया पूर्व परके स्था न विषे वृद्धि एकादेश का उपसंख्यान है वृद्धि परिगणना है अक्ष ऊहिनी ईहां अक्षशब्दने ऊहिनी परे है अकार ऊकारके स्थानमें औकार वृद्धि भयी अक्षौहिनी सिद्ध भया से

नाकानामहै अक्षाणांऊहिनी इति विग्रहः स्वशब्दसे ईर ईरिण परेहुंदयापूर्वपर।
केस्थानविषेवृद्धिएकादेशहोगुणकाबाधावास्ते सूत्रहै स्वैरः ईहांस्वशब्दसे ईरपरेहै
दोनोकेस्थानऐकारवृद्धिभयी स्वैरःसिद्धभया स्वैरिणी ईहांस्वशब्दसे ईरिणपरेहै
दोनोकेस्थानऐकारवृद्धिभयी स्वैरिणीसिद्धभया कोईप्रश्नकरेसूत्रमेईरिणशब्दहै
ईरिणीकाकैसेग्रहणभया नवकहिना प्रातिपदिकग्रहणेलिंगविशिष्टस्यापिग्रहणं
पुंलिंगकेग्रहणहोया स्त्रीलिंगोकाभीग्रहणकिदरेकहोनाहै स्वैरिणीव्यभिचारिणी
कानामहै अक्षौहिणीनपरेणसेयोज्यंसमझौरकरण॥ प्रशब्दसेऊहऊढऊढिएषएष्य

अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानं अक्षौहिणीसेनास्वा
दीरेरिणोः स्वैरः स्वैरिणी प्रादूहोढोढ्येषैष्ये
षु प्रौहः प्रौढः प्रौढिः प्रैषः प्रैष्यः ऋते
चतृतीयासमासे अर्णेनाहतेनतृतीयासमा।
सेवृद्धिरेकादेशः सुखेनऋतः सुखार्तः तृती

परेहुंदयापूर्वपरकेस्थानविषेवृद्धिएकादेशहो प्रऊहः ईहांप्रशब्दसेपरेऊहहैदोनोके
स्थानमेंऔकारवृद्धिभयी प्रौहः सिद्धभया वहतर्ककानामहै प्रऊढः ईहांप्रशब्दसे
ऊढपरेहैदोनोकेस्थानमेंऔकारवृद्धिभयी प्रौढः सिद्धभया प्रऊढिः ईहांअकारऊका
रकेस्थानमेंऔकारवृद्धिभयी प्रौढिः सिद्धभया प्रएषः ईहांप्रशब्दसेएषपरेहैदोनोकेस्था
नऐकारवृद्धिभयी प्रैषः सिद्धभया प्रएष्यः ईहांदोनोकेस्थानऐकारवृद्धिभयी प्रैष्यः
सिद्धभया यारूपकाऔरगुणकाअपवादहै ॥ अर्णनतेऋतशब्दपरेहुंदयातृ
तीयासमासविषेवृद्धिएकादेशहोसुखेनऋतः ईहांगुणयायासीनवकहातृतीया

समासविषेऋतपरेहोयावृद्धिहोतृतीयासमासतेभिन्नस्थानविषेऋतपरेहुंद
यागुणहो सुखऋतः ईहांअवर्णसुखविषेहैऋतपरेहैतृतीयासमासभीहै अ
कारऋकारकेस्थानमेंआकारवृद्धिभयीफेरउरणरपरःकरके आकारकेपरेरे
फभयाआरवृद्धिभयीकिंयांअङ्गीनेपरेणत्वोत्वं सुखार्त्तः सिद्धभयातृतीयासमास
वृद्धि नहीकहीयेतबपरमश्चासौऋतःपरमर्त्तः ईहांभीवृद्धिहोजातीईहांपरमऋतः
आद्गुणःकरकेअकारऋकारमिलकेअरगुणभयापरमर्त्तः सिद्धभया प्रशब्दनेवा॥
त्सशब्दतेवत्सतरशब्दनेकंबलशब्दनेवसनशब्दनेऋणशब्दनेदशशब्दने

येतिकिंपरमर्त्तः प्रवत्सवत्सतरकंबलवसना
र्णदशानामृणे प्रार्णमित्यादि उपसर्गाः क्रि
यायोगे क्रियायोगेप्रादयः उपसर्गसंज्ञास्युः

ऋणशब्दपरेहुंदयाएवंपरकेस्थानवृद्धिरेकादेशहोयऋणंईहांप्रशब्दनेऋणपरे
हैदोनोकेस्थानआरवृद्धिभयीप्रार्णसिद्धभयावत्सऋणंईहांभीअकारऋकारके
स्थानआरवृद्धिभयीवत्सार्णसिद्धभयावत्सतरऋणंईहांवत्सतरनेऋणपरेहैदो
नोकेस्थानेमेंआकारवृद्धिभयीफेरउरणरपरःकरकेरपरहोनागयावत्सतरार्णं
सिद्धभयाकंबलऋणंईहांभीआरवृद्धिभयीकंबलार्णसिद्धभयावसनऋणंईहांआ
रवृद्धिभयीवसनार्णसिद्धभयाऋणऋणंईहांआरवृद्धिभयीऋणार्णसिद्धभयादश
ऋणंईहांआरवृद्धिभयी दशार्णसिद्धभया॥ क्रियायोगेविषेजोप्रादिकहैंसोउ
पसर्गसंज्ञकहोवनसूत्रविषेभयराकीआदिलेकरनेरहैंसोप्रादिकहैक्रियायोगक्या
क्रियासाथसंबंधक्रियापदकरकेधातुकासिद्धप्रयोगग्रहणकरणाधातुक्याकहीये

नहीं कहिनी भू सत्तायामित्यादि भ्वादि गणः आदि पदके ग्रहणसे भ्वादि दशों गण लेना इतने भूवा दयः भू प्रभृतयो वा सदृशाः सादृश्यं च क्रियावाचित्वेन अत आह क्रियावाचका भ्वादिक है सो धातु संज्ञक होंय क्रियावाची पदके ग्रहण करनेसे कहा है नवक हिना क्रियावाची पद नहीं कहीये तब याः पश्यसि इहां या पदकी भी धातु संज्ञा होवेगी सर्व दिगणमें भ्वादि गणके अन्तर्गत है धातु संज्ञा के भये आतो धातोः करके आकार लोप होवेगा इसवास्ते क्रियावाची पद देना या पद क्रियावाची नहीं भ्वादयः पदके इसवास्ते दिना है तब कहिना शिष्ट पद क्रियावाची है इहां भी धातु संज्ञा होवेगी तब आदेशरूपदे

प्र परा उप सम अनु अव निस् निर् दुस् दुर्
वि आङ् नि अधि अपि अति सु उत् अभि प्र
ति परि उप एते प्रादयः भूवादयो धातवः क्रि
यावाचिनो भ्वादयो धातु संज्ञाः स्युः ॥ उपसर्गाः

उपदेशोऽशि ति करके णकारको आकार होवेगा इसवास्ते भ्वादयः पद देना ये भ्वादि न हीं हैं आणयति वदयति इनोंका साधु प्रयोगको भी धातु संज्ञा निषेध वास्ते हो वा करोति इहां विकल्प है वांवा शब्दकी धातु संज्ञा होवेगी तब तिङ् तिङ् करके निषान
कौमुदी ८ स्वर नहीं होवेगा उपसर्ग संज्ञाका और धातु संज्ञाका कीफल है तब कहिना अवती न उपसर्गने अकारादिक धातु परे है दयाएवं पर के स्थान वृद्धि एकादेश हो प्रअवति इहां प्र उपसर्ग है अवति नहीं है अकारादिक अक धातु परे है दीनोंके स्थान आर वृद्धि भयी परे मिलयामा वैतिसिद्ध भया उपसर्गा किं स्वर छति इहां उपसर्ग नहीं अति किं उपे नः इहां अकारादिक धातु परे नहीं धातौ किं उपकारः इहां धातु परे नहीं धातु विना उपस॰

गिकचीनहीहोगा फेरधातुग्रहणकरन्यकःकी अग्रहणनिवारत्तेहै अवर्णान्तउपसर्गतेएङादि
कधातुपरेहूंदयाथपररूपएकादेशहोयप्रजतेईहां अवर्णान्तउपसर्गप्रहैएङादिकधातु
एजपरेहैतहांप्रप्रकारमेअकारहै प्रेजतेसिद्धभया उपओषतईहांउपअवर्णान्तउपस
र्गहैएङादिकधातुओषपरेहैउपकारअकारओकारकोरूपभयाउपोषतेसिद्धभया ए
ङोदू.सिद्धहैरूपरपदंउन्नतार्थं आचाजातिविवेपकवचनहै अचोंकेमध्यविषेजोअंत्य
अच्हैसोहैआदिजिसकेसोटिसंज्ञकहोशकंधादिकोंविषेपररूपवक्तव्यहैसोपररू
पटिसंज्ञकहोशकअंधुःईहांअचोंकेमध्यविषेअंत्यककारमेअकारहैसोईआदिहै

तियातौ अवर्णादुपसर्गादेकारादौ धातौ परे वृद्धिरे
कादेशः स्यादिति एङि पररूपं एङादौ धातौ पररू
पमेकादेशः प्रेजते उपोषते अचोन्त्यादिटि अचां
मध्ये योन्त्यः स आदिर्यस्य तट्टिसंज्ञं स्यात् शकंध्वा
दिषु पररूपं वाच्यं तच्च टेः शकंधुः कर्कंधुः ॥
कुलटा मनीषा पतंजलिः सीमंतः केशवेशः।

सोईअंत्यहैजैसेदेवदत्तकाशब्दएकहैसोईअंत्यहैसोईमध्यमसोईकनिष्ठअथवानादेः
जैसेयेअकारभीजाननाअकारकीटिसंज्ञाभयी परेअकारकारूपभयाशकंधुःसिद्धभ
याकर्कअंधुःईहांककारमेअकारटिसंज्ञकपररूपभयाकर्कंधुसिद्धभया देशकाल
पहेरानेकारूपहै ॥ कुलअटाईहांअचोंकेमध्यअंत्यअकुलकारमेअकारहैसोटिसंज्ञ
कहोकेपररूपभयाकुलटासिद्धभयाकुलेकुलेअटतीतिकुलटा मनस्ईषाईहांअन्य
अनकारमेअकारहैसोटिसंज्ञाकिहैरसतेअस्कीटिसंज्ञाभयीसोअस्ईषाकेईकार
कारूपभयामनीषासिद्धभया तानाममनकीईषाकातार्दईहै ॥ पतत्अंजलिः ॥ ईहांअ

त्यअत्तनकारमेअकारहै नकारकेआदिहैअन्‌की टिसंज्ञाभयी सोअन्‌पररूपभयापतंजलि।
सिद्धभयापतंतिअंजलयोयस्मिन्सः पतंजलिः॥ सीमन्‌अंतः ईहांअंत्यअचमकारमें।
अकारहैनकारकेआदिहैअन्‌की टिसंज्ञाभयी अन्‌पररूपभयासीमंतः सिद्धभया के
शावेशाअर्धविवेदोरअर्धविवेदीर्घभयासीमांतः सिद्धभयापशुपतीअर्थविवेसारं
गः पररूपभयाहोरथेसारंगः दीर्घभयाअग्रंयेआकृतिगणः आकृत्यास्वरूपेणगणोने
इतिआकृतिगणः पररूपकेप्रयोगस्वरूपसेपहचाननेमार्त अंडः ईहांअकारअंडः।
मेमिलामार्तण्डः सिद्धभया अकःसवर्णेअचपरेइंदयादीर्घएकादेशहो दैत्यअरिः ईहां

अन्यसीमंतः सारंगः पशुपतीगणः सारंगः आकृ = अन्यः
तिगणोयंमार्तण्डः अकःसवर्णेदीर्घः अकःसव
र्णेचिदीर्घएकादेशः दैत्यारिः श्रीईशः श्रीशः
विष्णुउदयः विष्णूदयः होतृऋकारः होतॄकारः
ओमाङोश्च अवर्णास्योमिआङिचपरेपररूपंपाशी।

इतिअच्संधिः

दैत्यारिः ३

अकदैत्यमेअकारहै सवर्णअकारभीपरेहै दोनोमिलाणालकेदीर्घभयादैत्यारिः सिद्धभया।
श्रीईशः ईहांश्कोयणविभीयायासीपरंतुअएकादेनेदीर्घभया दोनोईकारमिलकेई।
कारदीर्घभयाश्रीशः सिद्धभया विष्णुकानामहै विष्णुउदयः ईहांअकविष्णुमेउका
रहैअचपरेउदयकाउकारहैदोनोमिलकेऊकारदीर्घभयाविष्णूदयः सिद्धभया होतृ
ऋकारः ईहांदोनोकोऋकारमिलकेदीर्घऋकारभया होतॄकारः सिद्धभया होतृलृकार ईहांऋका
रलृकारसवर्णेमिलकेईषन्सदृदीर्घलृकारभयाहोत्लृकारः सिद्धभया होआउआगिनः
लृकारः होतॢकारः अवर्णानेओमचपुनःआङ्‌परेइंदयापररूपहो शिवायओंनमः ई
हांपररूपभया शिवायोंनमः शिवआहिजेकोईकहै ईहांदीचीनेतरगणहोयांशिवाहि।

सिद्ध होवगा सूत्र कि सवास्ते है नवक हिना एवं यथानुरूप सर्गला गुण्यने पश्चान्मायनेन रस्पर्श
माषाकारके धातुका उपसर्गका कार्यअंतरंग है यावहि यापीसी तिसकी वाधा हालेसूत्र है ॥
स्तीत २ ः नेमत्रूप ईद याएवं रूप हो हरेअव ईहांपदांत एङ् हर विखे एकार है अन् परे व
नका अकार है सो पूर्व का एकार का रूप भया हरेव सिद्ध भया है इतिनु मरलाकरो ये अर्थ भया
विस्लोअव ईहां पदांत एङ् विस्लोमे ओकार है अन् परे अव है सो एवं रूप भया विस्लोव सिद्ध भ
या ३.सि. सो श्रुत्र समित्र सूत्र कारोंने पदांत विषयता विखेही अर्थ है तिसूत्र पद निर्दोष होवेगा
कि रपदांत ग्रहणउ नार्थ है अथवा सुप्सं वंधि निअन्परे एवं रूप चेतन हि ३.सि. सोरेन रस
यमने हूरे नस्र हरयः ईहां भीपङो ति करके एवं रूप हो पकादेश होवेगा इसवास्ते पदांत या

एङः पदान्तादति पदांतादेङोति परे पूर्वरूपमेका
देशः स्यात् हरेव विस्लोव सर्वत्रविभाषागोः
लोकेवेदेचैङंतस्य गोरतिवा प्रकृतिभावः पदांते =
गोअग्रं गोग्रं एङंतस्य किं चित्रग्वग्रं पदांते किं । ग्वि

दहैहेऽपदांतनहीएङः किंदथ्य ईहांएङ् उरेन ही पदांतात् किं चेअनेचयने ईहांएकारपदांतन
हीअति किं हरे ई इ ईहां अत्परे नही तपरः किं वायो आया हि वायवाया दि ईहां आकारपरे है
लोकविखेच छन्दः वेदविखे एङंतगोशब्दको अत्परे हुवेतो विकल्प प्रकृतिभाव होप्रकृ
तिभावः संधिविकार नहीहोय प्रकृतीरगोअग्रं वैसाहीरहा एङंतगोशब्द है अत्परे है प्रकृ
तिभाव भया पक्षदीर एङः पदांतादति करके अकार पूर्वरूप भया गोग्रं सिद्ध भया प्रकृत्यां
तःपदां ईहांने प्रकृति नेकोई एव्याकरेगोशब्द मे एङंत विशेषणताकि सवास्ते दिनादेनवकहि
कसे एङंत पदतहोदेवीयेतव चित्रगुअग्रं ईहांभी उकारान्त गुशब्दको अवङ् होवेगा दिनग्व
ग्रं ऐसा असिद्ध प्रयोग होवेगा इसवास्ते एङंत पद देनाजे पदांत पदनही देवीयेतब गो अ
सूर्य ईहां भी अपदांत गोशब्दको अवङ् होजावेगा सोनहीहोवे इसवास्ते पदांत पद देनाप्रहुएदां

अनेकाल्‌आदेशऔरशित्‌आदेशसंपूर्णकोहोहि.तोअनेकाल्‌अंतकोंहीहो पदांनविषेएङ्.
न्तगोशब्दकोअवङ्‌होविकल्पकरकेअच्‌परेहुंदयास्फोटायनकेमतविषेगोअग्रंईहांअच्‌परेआ
कारहैपदांनविषेएङ्‌न्तगोशब्दहैतिसकोअवङ्‌पायानरअप्रकरणासलोंत्यस्यकरकेअवङ्‌।
ओकारकोहोवेअनेकाल्‌शित्सर्वस्यकरकेसंपूर्णगोशब्दकोहोवेतबकहिनाअलोंत्यस्यकाबा
धकअनेकाल्शित्सर्वस्यहैइसकाबाधकङिच्चहैइसकरकेअन्त्यकोअवङ्‌भयाहलंत्या।
करकेङकारइतभयाफेरसवर्णदीर्घःभयागवाग्रंसिद्धभया दूसरेगोअएङः पदान्तादतिकरके
पूर्वरूपभयागोग्रंसिद्धभयालोकविषेसूत्रविषेपदांतपदनहींदेवीयेनवगोङि.ईहांभी

अनेकालशित्सर्वस्य ङिच्च ङिदनेकालोप्यंत
स्यैवस्यात् अवङ्‌स्फोटायनस्य पदांतेएङ्‌न्त
स्यगोरवङ्‌विवा गवाग्रं पदांतेकिं गवि इन्द्रे
चगोरवङ्‌ इन्द्रे गवेंद्रः चाद्भवातः दूराद्धूतेच
दूरात्संबोधनेवाक्यस्यटेःप्लुतोवाप्लुतप्रगृह्या
अचिनित्यंआगच्छकृष्णअत्र गौश्चरति ॥

अपदांतगोकेओकारकोअवङ्‌होवेगाम्याकृणाः लगकेगहेअनिष्टप्रयोगहोवेगागविहोनाहैर
सवाल्तेपदांतपदेदेनागोशब्दकोअवङ्‌होइन्द्रशब्दपरेहुंदयाचकारनेअतशब्दपरेहुंदयाभीगो
इन्द्रः ईहांओकारकोअवङ्‌भयाइन्द्रपरेहैकेरआद्गुणःकरकेगुणभयागवेन्द्रःसिद्धभयानित्यता
वास्तेईहेचसूत्रदे गोअतः ईहींअवङ्‌भयाफेरदीर्घभयागवातःसिद्धभयादूरतेसंबोधन।
विषेवाक्यकीजोटिहैतिसकीप्लुतसंज्ञाहोप्लुतसंज्ञाकाक्याफलहैप्लुतप्रगृह्यअचिपरेहुंदया
नित्यप्रकृतिभावहोनजैसेहैतेसेहीरहे आगच्छकृष्णअत्रईहांदूरतेसंबोधनकृष्णपदहै आ
बोंत्यादिटिकरकेकृष्णकाअकारटिसंज्ञकहैकेरप्लुतभयाअअकीअकारपरेहुंदयाप्रकृति

यहाँ परांतमानके पडःपदांतादति सूत्रकर अकोपूर्वरूपन ५५
अकःसवर्णेदीर्घःसूत्र करदीर्घ एकादेशानहुवा ५८

भावभयाऋवर्णोंदीर्घः नहीभया ॥ ईदंतऊदंतएदंतजोद्विवचनहैसोप्रगृह्यसंज्ञकहोवहरीए
तोईहांहरीईदंतद्विवचनहैइसकीप्रगृह्यसंज्ञाभयीप्लुतप्रगृह्याअचिनित्यंकारकेप्रकृतिभाव
भया इकोयणचिकरकेयणनहीभया विष्णूइमोईहांऊदंतद्विवचनविष्णुहैईहांभीप्रकृ
तिभावभयायणनहीभया गंगेअमूईहांगंगेएदंतद्विवचनहैईहांभीप्रकृतिभावभयाअ
यूअर्थपकारकेअयूनहीभया इससूत्रविषेसंज्ञाविधिविषेद्विवचनांतअर्थनहीभयाक
पीछेकहाहै मणीवादीनांप्रतिषेधोवक्तव्यः मणीवादिकाकोद्विवचनकानिषेधवक्तव्य
हैअदसप्राह्केमकारनेपरेजोईतऊतहैसोप्रगृह्यसंज्ञकहोनअमीईशः ईहांअदसप्राह्
केमकारनेपरेईत्हैसोप्रगृह्यसंज्ञकभयाप्रकृतिभावभयोयणनहीहूवा रामकृष्णावमू

ईदूदेद्द्विवचनंप्रगृह्यं ईदूदेदंतंद्विवचनंप्रगृह्यंस्या
त् हरीएतौ विष्णूइमौ गंगेअमू अदसोमात् अ॰ ॥
स्मात्परावीदूतौप्रगृह्योस्तः अमीईशाः रामकृष्णा
वमूआसाते माकिंअमुकेत्र तनिमाद्दहणोपकारो
व्यनुवर्त्तनचादयोऽसत्वे अद्रव्यार्थाश्चादयोनिपा ॥

आसातेईहांभीअदसप्राह्केमकारनेपरेऊतहैसोप्रगृह्यसंज्ञकहोप्रकृतिभावभयायणन
भयाअमूपदकीउत्थिनिमें जनिनेवास्तेरामकृष्णसौ सर्वरव्याहीअदसकिसवास्तेकहाहैनव
कहिनाअमुत्रईहांप्रकृतिभावहोजानाजेअदस्पदनहीकहिनेयेअदसकामकारनही।
मकारकिसवास्तेकहाहैनवकहिनाजेमात्नहीकहिनेतवअमुकेत्रईहां ईहांप्रकृति
भावहोजानाइसवास्तेमात्ग्रहणसामर्थ्यसेप्रकृतिभावनहीहोनामात्ग्रहणकरणाअद
व्यार्थजोचादिकहैसोप्रकृतिभावसंज्ञकहोनलिंगसंख्यानितंद्रव्यंलिंगसंख्याकारकर
कोजोहैसोद्रव्यहैतिससेभिन्नअद्रव्यहै ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

एहआदिकभीनिपातसंज्ञकहोन निपातआसंज्ञाकाफलकहिनाहै एकओसेोअच् एका
च् एकअच् निपातआङ्वर्जितप्रगृह्यसंज्ञकहो इ इन्नुः ईहांअच्इकोनिपातहैतिसकीप्रगृह्य २२
संज्ञाभयीइकारउरलापरेहोयांपूर्वेतिभावभयासवर्णेदीर्घः नहीभया उउमेशः ईहांभीउरलेउकार इकार
कीप्रगृह्यसंज्ञाभयीसवर्णेदीर्घः नहीभया आकारकीप्रगृह्यसंज्ञाहोनीनोहैपरंतुआकारदोप्रका
रकाहैएकअङित्है एकेङित्हैवाक्यस्मरणअर्थविषेअङित्है ॥ ईषत्क्रियायोरेअर्थविषे
क्रियायोगविषेमर्यादाविषेअभिविधिविषेआकारङित्हैआ एवंमन्यसेईहांवाक्यविषेआका

अन्वयः एतेपिनणानिपातएकाजनाङ् ए
कोज्निपातआङ्वर्जःप्रगृह्यः इश्नुः उउमेशः
ईषदर्थेक्रियायोगेमर्यादाभिविधौचयः एतमा
तंङितंविद्याद्वाक्यस्मरणयोरङित् आएवंय
न्यसेआएवंकिलतत् आउष्णं ओष्णं ॥

अङित्है आङ्वर्जितहैआकारकीप्रगृह्यसंज्ञाभयीवृद्धिनहीभयी आएवंमन्यसेएवंनुम
नहीमन्नदाथाअवमन्नदेहोनुमनिपातः किंअननेईः स्तुककारकेअन्तनेङ्आयाटेः करकेअन्
तोपभयाअरहाअअवईहांयेमियाननही आएवंकिलतत्ईहांस्मरणअर्थविषेआकारआङ्
वर्जितहैप्रगृह्यसंज्ञाभयीवृद्धिनहीभयी इसप्रकारसेनिश्चयकरहैयेअर्थभया आउष्णंईहांआ
कारईषत्अर्थविषेङित्है ईहांसेप्रगृह्यसंज्ञानहीभयीगुणभया ओष्णंसिद्धभयाथोरा
गरम हैअर्थहै ॥ ~ ॥ ~ ॥ ~ ॥ ~ ॥ ~ ॥

~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~

ओदन्त जो निपात है सो प्रगृह्यसंज्ञक हो अहो ईशाः यहां ओकारांत निपात अहो है सो प्रगृह्य भया सूत्र
प्रगृह्य करके प्रकृतिभाव भया अव् नहीं भया संबुद्धिनिमित्तक जो ओकार है सो प्रगृह्यसंज्ञक हो विक
ल्प करके अवैदिक इति परे हुए यथा विष्णो इति यहां विष्णु विषे ओकार संबुद्धिनिमित्तक होया है तिसकी प्र
गृह्यसंज्ञा भयी अवैदिक इति परे हुए प्रकृतिभाव भया पक्षे अयवायावः पक्षे वोरलगावेर लोपःशा
कल्यस्य लगा तीन रूप भये विष्णो इति यहां संधि नहीं भयी विष्ण इति यहां वकार लोप भया विष्णवि
ति मयप्रत्याहार ते परे उञ् को वकार विकल्प करके हो अच् परे हुए यथा किमु उक्तं यहां मय ते परे उका
र की वकार भया परे उकार मे मिला किम्वुक्तं सिद्ध भया पक्षे प्रकृतिभाव भया किमु उक्तं ऐसा ॥

ओत् ॥ ओदन्तो निपातः प्रगृह्यः । अहो ईशाः । संबुद्धौ शाक
ल्यस्येतावनार्षे ॥ संबुद्धिनिमित्तक ओकारो वा प्रगृह्योऽवैदि
के इतौ । विष्णो इति विष्ण इति विष्णविति । मय उञो वो वा ॥ म
यः परस्य उञो वो वाचि । किम्वुक्तं किमु उक्तं । इकोऽसवर्णे शा
कल्यस्य ह्रस्वश्च ॥ पदांता इकोऽह्रस्वा वा स्युः असवर्णेऽचि । ह्रस्व
विधिसामर्थ्यान्न संधिः । चक्रि अत्र चक्र्यत्र । पदान्ताः किं । गौ
र्यौ । न समासे । वाप्यश्वः । ऋत्यकः ॥ ऋति परे पदान्ता अकः प्र
कृत्या वा । ब्रह्म ऋषिः ब्रह्मर्षिः । पदान्ताः किं । आर्च्छत् । इति स्वरसं
धिः ॥

भया पदांत इक् को ह्रस्व हो विकल्प करके असवर्ण अच् परे हुए यथा चक्री अत्र यहां पदांत इक् चक्री मे ई
कार है तिसको पक्ष में ह्रस्व भया असवर्ण अच् अकार परे है चक्रि अत्र भया पक्षे यण् यहां नहीं
होता ह्रस्वविधानसामर्थ्य ते ह्रस्व कीतयां नहीं कीनया भी यण् पायी दा है ह्रस्वविधान व्यर्थ हो
ता है पक्षे यण् भया चक्र्यत्र सिद्ध भया पदांत पद नहीं देवीये न व गौरी औ यहां भी गौरी के ईका
र को प्रकृतिभाव हो जायेगा इसवास्ते पदांत पद देना ऋत् परे हुए यथा पदांत अक् विकल्प कर
के ह्रस्व हो अरु प्रकृतिभाव हो ब्रह्म ऋषिः यहां ऋकार परे है ब्रह्म के अकार के ह्रस्व भया
ब्रह्म ऋषिः भया पक्षे गुण भया ब्रह्मर्षिः सिद्ध भया आर्च्छत् यहां पदांत अक् नहीं आ
ट् अकार के वृद्धि भयी आर्च्छत् सिद्ध हुआ वृद्धसंधिः ॥ इति स्वरसंधिः ॥

सचनुश्च अनयोः समाहारः इति स्नुः तस्य स्नोः सौत्रं पुंस्त्वं ईहां नुम् नहीं आया आगम को अनित्य होने
से आगमन मनित्यमित्युक्तेः कोई कहै अनित्यता विषे की प्रमाण है तव कहिना आनि लोट् सूत्र वि
षे आड्ग्रहणं अनित्यता विषे प्रमाण है कैसे कि लोट् सूत्र की नया पदागमस्तद्गुणीभूतः जो
आगम है तिसी का अवयव है इस रीति से आड् निका अवयव ग्रहण होवेगा फेर आड्ग्रहण व्यर्थ हो
के जनाना है आगम ज मनित्य इसी वास्ते जन्ममास भति यो करग्रहः ईहां समाहार विषे नुम नहीं आ
या पदा सकारेण सहितः तुः श्चुः इति स्नुः तस्य स्नोः सकारतवर्गयोः शकारचवर्गौ स्तः क्व सति शका
रचवर्गाभ्यां योगे सति अर्थः सकार तवर्ग को शकार चवर्ग होन शकार चवर्ग साथ योग होयतो यो॰

स्तोः श्चुना श्चुः स्तोः सकारतवर्गयोः शकारचवर्गा
भ्यां योगे शकारचवर्गौ स्तः हरिश्शेते रामश्चिनो ६८
सच्चित् शार्ङ्गिञ्जय शान्त् शात्परस्योक्तेन विश्नः प्रश्नः
न ?

गः सामीप्यसंबंधः निसचितें ईहां तवर्ग को चवर्ग नहीं भया योग नहीं स्थान कार को शकार होन वर्ग
को चवर्ग हो ईहां स्थानी आदेश का यथासंख्या है निमित्त का कार्य प्रयासंख्य नहीं इसमें नशान्तु॰
सूत्र प्रमाण है ने कर सकार का शकार साथ योग होया तवर्ग का चवर्ग साथ योग होया कार्य होवे तव टीका २
विश्नः प्रश्नः ईहां तवर्ग का चवर्ग साथ योग नहीं चवर्ग नहीं होवेगा फेर नशान्तु निषेध व्यर्थ॰
है सो जनाना है निमित्त कार्यी का यथासंख्य नहीं हरिश्शेते ईहां सकार को शकार साथ योग॰
है सकार को शकार भया हरिश्शेते सिद्ध भया रामश्चिनोति ईहां सकार को चवर्ग साथ योग है
सकार को शकार भया रामश्चिनोति सिद्ध भया सच्चित् ईहां तवर्ग को चवर्ग साथ योग है तवर्ग॰
को चवर्ग भया यथासंख्य नाल तथदधन पंचवर्ण तवर्ग है चछजझञ पंचवर्ण चवर्ग है ईहां त
कार को चकार भया सच्चित् सिद्ध भया शार्ङ्गिन् जय ईहां तवर्ग को चवर्ग साथ योग है नकार को
ञकार चवर्ग भया शार्ङ्गिञ्जय सिद्ध भया शकार ते सकार तवर्ग को शकार चवर्ग नहीं होन वि प २
श्नः प्रश्नः ईहां शकार ते परे नकार को चवर्ग ञकार नहीं भया ॥ सकार तवर्ग को शकार॰

टवर्गहोनषकारटवर्गसाथयोगहैसियां रामस्षष्टः ईहांसकारकोषकारसाथयोगहैसकारा
कोषकारभयारामष्षष्टःसिद्धभया रामस्टीकतेईहांसकारकोटवर्गसाथयोगहैसकारकोष
कारभयापरेमिलारामष्टीकतेसिद्धभया तन्टीकाईहांतवर्गकोटवर्गसाथयोगहैनकारा
कोटवर्गटकारभयातट्टीकासिद्धभया चक्रिन्ढौकसेईहांनवर्गणकोटवर्गसाथयोगहैना
वर्गकोटवर्गणकारभयाचक्रिण्ढौकसेसिद्धभया पदांतटवर्गतेपरेसकारतवर्गकोषकार
टवर्गनहीहोननाम्विनाषट्संतः ईहांपदंतवर्गतेपरेसकारकोषकारनहीहोया ॥ षट्नेईं
हांपदंतटवर्गतेपरेतवर्गकेनकारकोटवर्गकाटकोरनहीभया ॥ उग्रहणकिसवास्तेहैष
ष्ठसूत्रनष्टुपिकीअनुहत्तिआवेगीतवकहिना ॥ उग्रहणनहीकरीयेनवसर्पिष्टमंईहांप

ष्टुनाष्टुः स्तोःष्टुनायोगेष्टुःरामष्षष्टः रामष्टीक
ते नहीकाचक्रिण्ढौकसेनपदांताट्टोरनाम्प
दांताट्टवर्गात्परस्यस्तोःष्टुनाषट्संतेषट्ते टोः
किंसर्पिष्टमं अनाम्नवतिनगरीणामितिवाच्यं
षण्णां षण्णवतिः षण्णगर्यः तोःषि नषः।

टोनषकारनेपरेभीनकारकोटकारनहीहोवेगाहोनाहैजेकोईप्रश्नकरेषकारकोजस्त्वकि
सवास्तेनहीभयातवकहिनाजस्त्वकरदयांहुस्वान्नादोसस्यषःसूत्रअसिद्धहोनाहै स्तव
र्गकोनभवनहीहोषकारपरेहोयां सन्षष्टः ईहांनकारकोचवर्गभकारनहीभयाषकार
परेहोया नामनवतिनगरीस्नाशब्दाकोपदांतटवर्गतेपरेष्टुत्वकानिषेधनहीवक्तव्यहै ३
नाकोष्टुत्वहो षट्नाम ईहांपदांतटवर्गतेपरेनकारकोष्टुत्वनिषेधयोपासीकेरवार्त्तिकवा
लसेनकारकोटवर्गणकारभया टकारकोपरोनुनासिकेकरकेणकारभयाषण्णांसिद्ध
भया अथवानकारकेआश्रयजोभयाषकारहैसोनकारप्रतिसंनिपातहै सोषकारनका।

रकाविघातनहींकरेगाजुपदस्यार्थहैसोसंनिपातकीअनित्यताजनातीहै सूत्रसेवार्त्तिकब
लीहैवार्त्तिकसेभाष्यबलीहै उक्तंचयथोत्तरंमुनीनांप्रामाण्यं पदांतविवेफलांकोजश्हो
नवाकईशाः ईहांपदांतकलककारहै तिसकोजश्गकारभयाअरुहकारकेतुल्यस्थानहैवा
गीशःसिद्धभयाविद्रूपंईहांपदांतकलतकारहै तिसकोतुल्लसानांकरकेदकारभया।
विद्रूपंसिद्धभयापदांतपरकोअनुनासिकविकल्पकरकेहो अनुनासिकपरेहुंदया एतन्
मुरारिःईहांपदांतपरतकारहै तिसकोअनुनासिकनकारभयाअनुनासिकपरेमकारहै ह
जेकोरएतद्मुरारिःजस्त्वभया पदांतस्यकिंवेद्मिईहांपदांतनहीं ॥ प्रत्ययपरेहुंदयां।

यषकारेपरेनहत्वे सनूषष्टः फलांजशोंनेपदां
तेफलांजशःस्युः वागीशः विद्रूपं परोनुनासि
केनुनासिकोवापरः पदांतस्यानुनासिकेनुनासि
कोवाएतन्मुरारिएतद्मुरारिः प्रत्ययेभाषायां।
न **नित्यंन्मात्रं चिन्मयं तोलिनवर्गस्यलकारेपरे।**

पदांतपरकोनित्यअनुनासिकहोभाषाविषेतन्मात्रंईहांमात्रच्प्रत्ययपरेहैपदांतपर
नकारहै तिसकोअनुनासिकनकारभयातन्मात्रंसिद्धभया चिन्मयंईहांमयट्प्रत्यय
परेहैतकारकोअनुनासिकनकारभया चिन्मयंसिद्धभयातवर्गकोपरसवर्णहोलकार
परेहुंदया तन्लयंईहांलकारपरेहैतवर्गकोपरसवर्णपायाकोनपरसवर्णहोवेतव
कहिनाल्तुल्लसानांदंताःकरकेलकारकेसवर्णसभपायेहैतेवारंवारसूत्रकीप्रवृत्ति
होवेगीरसनेपरिशेषतेलकारकासवर्णलकारतकारकोभयातल्लयःसिद्धभया
विद्वान्लिखतिईहांनकारकोअनुनासिकलकारभया विद्वाँल्लिखतिसिद्धभया ॥ ॥

उइ् तेपरेजोस्थानस्त्नभहैतिनकोपूर्वसवर्णहो उइ्स्थानं ईह्ां उद्ंपरेस्थाहैतिसकोपूर्वोने
कादकारकासवर्णीपायासोसकारकोहोवे उइ्स्तंभनंईह्ांउद्ंपरेस्तंभहैतिसकोपूर्वकाद ने
कारकासवर्णीपायासोसकारकोहोवेनकारकोहोवेइसवास्तेकहाहैपंचमीनिर्देशकरकेरवि
धीयमानजोकार्यहैसोवर्णांतरकरकरअव्यवहितजोपरहैतिसकोजाननाउइ्स्थानंईह्ांअव्य
वधानरहितथकारहैतिसकोपूर्वसवर्णपाया उइ्स्तंभनंईह्ांनकारकोपूर्वसवर्णपायान
वकहावैपरकोजोकहाहैसोतिसकेआदिकोजाननाइसकरकेदोनोंरूपोंमेसकारकोपूर्वसव

सवर्णः उदः स्थास्तंभोः पूर्वस्य उदः परयोः स्थास्तं
भोः पूर्वसवर्णः तस्मादित्युत्तरस्य पंचमीनिर्देशे
न विधीयमानं कार्यं वर्णांतरेणाव्यवहितस्य परस्य
बोध्यं आदेः परस्य परस्य यद्विहितं तत्तस्यादेर्बोध्यं इति
सस्य थः झरो झरि सवर्णे हलः परस्य झरो वा लोपः
सवर्णे झरि खरि च खरि च खरि चर्त्वं स्यात् रस्य दोर्दस्य
तः उत्थानं उत्तंभनं स्थाने उत्तंभनं ॥ ॥

र्णनिणयदयनरनमेकोनहोवेलनलसानांकरकेसभयायेनवखरोविवारः वर्गाणांद्वि
तीयचतुर्थौकरकेउइ्स्थानं ईह्ांसकारकोथकारभयाउइ्स्तंभनंईह्ांभीसकारकोथ
कारभयाउइ्थ्थानंभयाउइ्थ्तंभनंभया तदनंतरहलन्तेपरेझरकालोपहोसवर्णेझरपरे
हुंदयाविकल्पकरकेहलन्तदकारहैतिसतेपरेथकारकाविकल्पनेलोपभयासवर्णेझरपरप
त्तायकारतकारपरेहै तदनंतरखरपरेहुंदयाझलांकोचरहोनेइसकरकेदकारकोतकार
भयादोनोंठौरथकारकोचरनहींहोनाचरकरदयाथकारकोअसिद्धहोनेतेउत्थानंउत्थानं

सिद्धं उन्नं भनं उन्नं भनं सिद्धं ॥ झयसे परे जो हकार है तिसको पूर्वसवर्ण विकल्प करके होता है घोष
महाप्राण प्रयत्नवाला जो हकार है तिसको तैसा वर्ग का चतुर्थ होता है झय सूत्र में झ से लेकर पय पर्यन्त झय संज्ञा है
वाग्घरिः ईहां झय गकार है तिससे परे हकार है तिससे परे हकार है तिस हकार को पूर्व का गकार का स
वर्ण हो तौ न हो वे तब प्रथम कंठ वर्ण का स्थान है घोष आ कुह विसर्जनीयानां कंठः इस करके हकार
को गकार के सवर्ण सम भया पे से सम होने न होन ब प्रयत्न मे तु स्वर्ण है घोष हशः संवारो नादो घो
ष इस करके हश मे हकार को घकार गकार वर्ण पे से न हंन तर वर्गाणां द्वितीय चतुर्थौ कर के हकार
को महाप्राण प्रयत्न वाला घकार भया गकार को जश्त्व भया वाग्घरिः सिद्ध भया विकल्प के रूप मे क॥
लो जश्त्व नेकर के गकार भया वाग्हरिः सिद्धं पदान्त झय से परे जो शकार है तिसको छकार होता अट परे
हुंदया अ इ उ ण से लेकर ह य व र ट पर्यन्त अट् संज्ञा है तच्छिवः ईहां पदान्त झय तकार है तिससे प
रे शकार को छकार भया अट् परे शकार वीच इकार है तदनंतर स्तोः श्चुना करके तकार को चकार भया

झयो होऽन्यतरस्यां झयः परस्य हस्य वा पूर्वसवर्णो ना
दस्य घोषस्य संवारस्य महाप्राणस्य तादृशो वर्गचतुर्थः
वाग्घरिः वाग्हरिः शश्छोऽटि पदान्ताज्झयः परस्य श
स्य छो वाटि तच्छिवः तच्शिवः पदान्तात्किं विरप्शं

तच्छिवः सिद्ध भया पदान्त झय से परे अम परे हुं दयां भी शकार को छकार वक्तव्य है तन् श्लोके
न ईहां पदान्त झय मे तकार है तिससे परे शकार को छकार भया अम परे लकार है तच्छ्लोके न सिद्धं प
दान्त पद विरप्शं ईहां छत्व नहि होता है विरप्श पद पदान्त नहीं मांन पद को अनुस्वार हो हल परे
हुंदया हरिं वंदे ईहां हल परे वकार है मकार अंत वाला हरिम् पद है तिसको अनुस्वार भया मो
ऽनुस्वार करके मकार को अनुस्वार भया हरिं वंदे सिद्ध भया जे को ईक है मे इस स्वरूप से विंदु का
बोध होवेगा अनुस्वार पद किस वास्ते है न वकार हि नायर्थ्यो यवा व का नाश हाना लघु गुरु च वीना
रूपते इस विषे प्रमाण है संस संज्ञा पूर्व को विधि र निमित्तः इस विषे भी प्रमाण है पद को कि
स वास्ते कहा है संज्ञा पूर्व गम्यते ईहां मांत पद नहीं अपदान्त नकार को च श न अपदान्त मा
कार को अनुस्वार हो झल परे हुंदया यशांसि ईहां अपदान्त नकार है तिसको अनुस्वार भया

ल्परेसकारहैकमभ्रनेलेकारहत्त्वसूत्रनीकरकल्नुहै यशांसिसिद्धभयाआक्रंस्यते इहांअ
पदांतमकारहैतिसकोअनुस्वारभया झल्परेसकारहैआक्रंस्यतेसिद्धभया झल्परेकिमथा
तेमन्यतेहैतबकहिनाझल्परेनहोमधीयतदमन्यतेइहांभीयकारपरेहैधीनकारकोअनु॰
स्वारहोजायेगादोजानहीयझकारझल्मेनही ॥ अनुस्वारकोपरसवर्णहोययपरेहुंदयायवरा॰
हनेलेकरकेपययर्यंतययप्रत्याहै शांतः इहांययपरेतकारहैअनुस्वारकोपरकातनकारकासवर्णी
नकारभया शान्तः सिद्धभया पदांतअनुस्वारकोययपरेहोयपरसवर्णविकल्पकरकेहोतंवकरो
षिइहांपदांतअनुस्वारहैययपरेककारहैयकठौरविंदुहीरहायकठौरपरकाभ्रकारकासवर्णीअनु॰
स्वारकोङकारकभया त्वङ्करोषिसिद्धभयाक्विपअन्यंतराजधातुपरेहुंदयासमकेमकारहीहो
सम्राट्सिद्धभया सम्यक्प्रराजतेइतिसम्राट्चक्रवर्तिकानामहै मपरोयस्मात्‌इतिमपरःमपि

ब्रुमनीतिवाच्यम् । तच्छ्लोकेन मोऽनुस्वारः । मान्तस्य
पदस्यानुस्वारो हलि । हरिं वन्दे । नश्चापदान्तस्य झलि । न
स्य मस्य चापदान्तस्य झल्यनुस्वारः । यशांसि आक्रंस्यते । झलि
किं मन्यते । मूलं अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः । शान्तः । वा
पदान्तस्य । पदान्तस्यानुस्वारस्य ययि परसवर्णो वा स्यात् । त्वं
करोषि त्वङ्करोषि । मो राजि समः क्वौ । क्विबन्ते राजतौ परे
समो मस्य म एव स्यात् । किम्ह्वलयति किंह्वलयति । य

वृमपरे मकारहैपरेजिसकेऐसाहकारपरेहुंदयामकारकोमकारविकल्पकिम्ह्वलयतिइहां
मकारपरेजिसकेहैऐसाहकारपरेहैयकठौरमकारकोमकारहीहुवायकठौरमोनुस्वारःकरके॰
विंदुभयाकिंह्वलयतिसिद्धभया ह्वलह्वलयानचलनेअर्थविषैहै यवलाःपराःयस्मात्‌॰
सःयवलपरःतस्मिन्‌यवलपरेहकारेमस्यवलाःवास्युःयकारवकारलकारपरेहैजिसकेऐसा
हकारपरेहुंदयामकारकोयवलविकल्पकरकेहो किम्ह्यःइहांयकारपरकहकारपरेहैयकठौ
रमकारकोअनुस्वारभयाकिंह्यःसिद्धभया एकठौरमकारकोयकारभयाकिय्ह्यःकिम्ह्वलयति
इहांमरओवकारभयाविकल्पनालकिंह्वलयतिकिम्ह्लादयतिइहांमकारकोलकोसकारभ
या किल्ह्लादयति नःपरोयस्मात्सःनपरस्तस्मिन्नपरेनकारहैपरेजिसकेऐसाहकारपरे

इयाम कार कोन कार विकल्प करके हो किम्ह्नुते ईहां नकार परे जिसके ऐसा हकार परे है मका
र कोनकार भया एकठौर अनुस्वार भया किंह्नुते सिद्ध भया किंन्ह्नुते सिद्ध भया ङः पंचमी सिसम
मी धुट् प्रथमा ङकार ते परे सकार को धुट् का आगम विकल्प करके हो इस सूत्र विषे सि सप्तमी
षष्ठी अर्थ वोधिका है षड्संतः ईहां ङकार ते परे सकार है तिसको धुट् पाया। सीसँ वैश्रा वेके परे श्रा
वे तब कहि ना हि ॰ तकित् जिसको कहे है तिसके अंत मते आदि ग्रंनके अवयव होय टकार जिस
का इत है सो टित् है सो आदि श्रावे ककार जिसका इत है सो कित् है ॥ ॥ सोग्रंतमे श्रावे धुट्
सकार के आदि श्राया षड्धुट्संतः भया हलंत्य करके सभ ठौर टकार इत भया उपदेशेज नुनासि
के करके उकार इत भया तस्य लोपः करके लोप भया खरिच करके धकार को चर्त्वकार भया य

ला॰ १ वलपरे यवलावा किम्ह्यः किंह्यः किंवॢह्लयति किं
ह्वलयति किंल्ह्लादयति किंह्लादयति नपरेनः न
परे हकारे परे मस्यनो वा किंह्नुते किंन्ह्नुते ङःसिधुट्
ङान्त रस्य सस्य धुट् वा आद्यंतौ टकितौ टित्कितौ यस्यो क्तौ
तस्य क्रमादाद्यंतावयवौ स्तः षट्त्संतः षट्संतः ॥ न
श्च नांतात्परस्य सस्य धुट् वा सन्त्सः सन्सः शितुक्
पदांतस्य नस्य शे परे तुग्वा सञ्छंभुः सञ्शंभुः ङःमो

सा॰ कौ॰ स॰ भा॰ ८

कार नकार का एकस्थान है ङकार ईहां को खरिच करके टकार भया षट्त्संतः सिद्ध भया ङ॰का
र णकार को कुक् टुक् आगम होवन शर परे ईदया प्राङ्॰ षष्ठः ईहां षकार परे षकार है ङ॰कार के
परे कुक् आया ककार इत भया प्राङ्॰ क्षष्ठः सिद्ध भया सुगण्ट्षष्ठः ईहां णकार ते परे टुक् आया
उकार इत भया सुगण्ट्षष्ठः सिद्ध भया नांत पद ते परे सकार को धुट् हो विकल्प करके सन्॰
१ सः ईहां नांत पद सन् है तिसते परे सकार है तिसको पूर्व धुट् आया धुट् को इत होने ते लोप भया
खरिच करके धकार को तकार व हुभया सन्त्सः सिद्ध भया शकार परे हुं दया पदांत नकार को
तुक का आगम विकल्प करके हो सन् शंभुः ईहां सन् के परे तुक् आया शकार परे है उकार इत
भया एक ठौर सन्त् शंभुः एक ठौर सन् शंभुः भया दोनो ठौर शश्छोटि सूत्र करके विकल्प ना

लशाकारकोलुकारभया ल्लोपश्चुनाश्चुः करकेनकारकोञकारभयानकारकोणकारभया॥
तवसम्भ्रुंभुः सम्भ्रांभुः सब्रुंभुः सम्भ्रांभुः ऐसेभयेनदनंनरफदोफरिकरकेचकारको
लोपभयाईहांहलमेञकारहैतिसनेफर्परेचकारहैस्थानकारकेसावर्णिकर्परेशकार
कारहैचलोपभयांभीरूपवारेहीरहैलोपकाविशेषफलऔरकुछनहीं ह्रस्वनेपरेजोङ
महैसोहैअंतजिसकेऐसाजोपदहैतिसनेपरेजोअचहैतिसकोनित्यङमुट्काआगमहो॥
ङणनमइनोवर्णोंकीङमसंज्ञाहैङुट्णुट्नुट्इनकाङमुट्नामहै संज्ञायांचक्र
न्नरित्वसंज्ञाभिः सद्भसंबध्यतेइसप्रक्रियते प्रत्यङ्ङात्माईहांह्रस्वप्रत्यमेंअकारहैङ्म
परेङकारहैऐसाङकारांतपदप्रत्यङ्पदहैतिसनेअच्परेआत्माकाआकारहैतिसकोङुट

ह्रस्वादचिङमुणिनित्यं ह्रस्वात्परोयोङम् तदंतंपदं
तस्मात्परस्याचोनित्यंङमुडागमः स्यात् प्रत्यङ्ङात्मा॥
ण्णा सुगण्णीशः सन्नच्युतः समः सुटि समोरुः स्यात्सु
टि समोरुः सुटि समोरुः स्यात्सुटि अत्रानुनासिकः
पूर्वस्यतुवा अत्ररुप्रकरणेरोः पूर्वस्यानुनासिकोवा

आयाङुट्इत्भयादोवेङकारपरेआकारमेमिलेप्रत्यङ्ङात्मासिद्धं इसीप्रकारसुगण्णीशः
ईहांह्रस्वनेपरेङमंतसुगणपदहैतिसनेपरेअच्ईकारहैतिसकेपूर्वणुट्आयाउट्इत्भ
याईकारमेदोवेणकारमिलेसुगण्णीशः सिद्धं सन्नच्युतः ईहांह्रस्वनेपरेङमंतसन्पद
हैतिसनेअच्परेअकारहैतिसनेपूर्वनुट्आयासन्नच्युतः सिद्धं कोईप्रश्नकरेपरमोटंडों।
विद्यनेअनच्छोरितिपरमदंडितिनोईहांग्रनरवर्णिनीविभक्तिनुआगमपकरकेदंडिन्औई
हो। हांनुट्किसवास्तेनहींता नबकहिनाउत्तरपदत्वेपदांतविधिनिषेधः ईहांदंडिन्उत्तरप
दहैपदांतविधिनहींहोती इसीप्रकारपरमवाचौईहांकत्वनहींभयागोडहोईहांच
त्वनहींभया॥ समकेमकारकोरुहोसुट्परेईहंदयासूत्रप्रकरणविवेहकेपूर्वजोहै

तिसको अनुनासिक विकल्प करके हुआ अनुनासिक नहीं छोड़कर रु के जो पूर्व है तिस ने परे अनुस्वार का
आगम हुआ खर परे हुए दयाचपुनः अवसान विषे पदांत रेफ को विसर्ग हुआ सं के विसर्ग को पुं के विसर्ग
को कान् के विसर्ग को सकार वक्तव्य है अवसान नहीं है सम् स्कर्ता ईहां सम् के मकार को रु भया उत्व
भया सुट् परे हैं कर्ता एवं सकार है संपरिष्वंक रोने: सुट् इस सूत्र करके सुट् आया है सम् स्कर्ता
या फेर रु के पूर्व रकार उपर अनुनासिक भया अर्द्ध बिंदु भया विकल्प के पक्ष विषे रु के पूर्व ने परे अनु
स्वार भया फेर खर परे सकार है रेफ को विसर्ग भया फेर सं पुं कानां कर के विसर्ग को दोनों और सका

अनुनासिकात्परोऽनुस्वारः अनुनासिकं विहाय रोः पू
र्वस्मात्परोऽनुस्वारागमः खरवसानयोर्विसर्जनीयः
च खरि अवसाने पदान्तस्य रेफस्य विसर्जनीयः स्यात् संपुं
कानां सो वक्तव्यः सँस्स्कर्ता संस्स्कर्ता पुमः खय्य
म्परे अम्परे खयि पुमो रुः पुँस्कोकिलः पुंस्कोकि[illegible]ः

र है रेफ को विसर्ग भया फेर सं पुं कानां कर के विसर्ग को दोनों ओर सकार भया सँस्स्कर्ता सिद्ध भया अ
नुनासिकः पूर्वस्य तु वा इस सूत्र विषे अधिकार पक्ष विषे अपद व्यर्थ है अधिकार ने रु प्रकरण
का लाभ होने ने अनुनासिकात् पंचमी ल्यप्लोप विषे है इसी ने अनुनासिकं विहाय अर्थ करी दा
है संभावित अनुनासिकत्व धर्म वाले ने अनुस्वार होना है संयोग की न्यायी विप्रयोग को भी वि
शेषण गति होने ने मैसे अवसाये नुरानीयता किसे कहा तो भी संभावित वत्स्याः गुहणां भ
वति मैसे अम् है परे जिसके ऐसा खय् परे हुए दया पुम् को रु हुआ पुम्कोकिलः ईहां अम् परे क का
रमे को कार है खय् परे ककार है तिसके परे हुए दया पुम् के मकार को रु भया तदनंतर पकटो र।

अनुनासिकभया एकठौर रुकेपूर्वअनुस्वारभया रेफकोविसर्गभयासेपुंकानांकरकेसकारभ॰
याउँस्कोकिलः पुंस्कोकिलः सिद्धभया अम्हैपरेजिसकेऐसाछवृपरेरहेंदयानांनपदकोहदो
प्रशान्केनकारकोरुनहीहोछवठथचटतवृयेछवृसंज्ञाहै विसर्गकोसकारहोखर्परेरहेंदया
चक्रिंस्त्राय खरईहांअम्परेत्राकेमेरेफहैऐसाछवृपरेनकारहैनांतपदचक्रिन्हैतिसकेनकारको
रुभयाउरनुभयानदनंतरसरेफकेपूर्वअनुनासिकभयाहसरेरूपमेअनुस्वारभयानदनंतरख
रपरेरहेंदयारेफकोविसर्गभयाविसर्गकोविसर्जनीयस्यसःकरकेसकारभया चक्रिंस्त्रायस्वचक्रिं

लः नश्छव्यप्रशान् अम्परेछविनान्तस्यपदस्यरुः विसर्ज
नीयस्यसः खरि चक्रिँस्त्रायस्वचक्रिंस्त्रायस्व अप्रशान्
किंप्रशान्तनोति पदान्तस्यकिंहन्ति नॄन्पेनॄनित्यस्यरु
र्वापेपरे कुप्वोः≍क≍पौच कवर्गेपवर्गेचपरेविसर्गस्य≍क≍
पौस्तश्चाद्विसर्गः नॄँ≍पाहिनॄं≍पाहि नॄँःपाहि नॄंःपाहि

स्त्रायस्वसिद्धभया अप्रशान्किसवास्तेकहाहैप्रशान्नहीकहीनेतवप्रशान्तनोतिईहां
भीनकारकोरुहोनाना पदांतस्यनहीकहिनेतवहन्तिईहांभीनकारकोरुहोना ॥ ॥
नॄन्पेअवहीहैनॄन्इसकोरुहोपकारपरेरहेंदयाविकल्पकरकेनॄन्पाहिईहांपकारपरेहैनॄन्के
नकारकोरुभया उरनुभयानॄँपाहिभयाईहांएकठौरअनुनासिकभया एकठौरअनुस्वारभया
रेफकोविसर्गभया नॄंपाहि नॄँःपाहि ऐसाभया नदनंतरकवर्गपरेहोयांचतुनःपवर्गपरेहोयां
विसर्गको≍क≍पहोन चकारतेविसर्गहोयएकठौरसेगीभयादोरूपमेहमरांविसर्गभया नॄँ≍पा॰
हि नॄं≍पाहि नॄँःपाहि नॄंःपाहि नॄन्पाहि पंचरूपसिद्धभये नन्नेसूत्रसेपकारमेअकारउच्चा

रणार्थ है तिसलेनॄंः पुं नाति ईहांभी नकारकोरूभयाकोई प्रश्नकरेकि घोकी विसर्गकहां गयीतवकहि
नाथई विसर्गकोरत्व मनके रेफकोविसर्गभया वापाणिकरके विसर्गलोपभया आदेशप्रत्ययों विक
कारपकार उच्चारणार्थ कहै हैं इसीवास्ते अई विसर्गहोताहैयोवारीजोकथनकीयाहै तिसकापरा
लारूप आम्रेडित संज्ञक हो आम्रेडितसंज्ञाकाकीफलहै कान् केनकारकोरुहो आम्रेडितपरेहुंए
आर इत्यादि फलहै कान् ईहां आम्रेडित दूसराकान् परेहै उरलेकानकेनकारकोरुभयाऊकार इतभ
यारेफकेपूर्वपक्षमें अनुनासिकभयापक्षमें अनुस्वारभयाखरवसानयोः करकेरेफकोविा
सर्गभया संपुंकानांकरके विसर्गकोसकारभया काँस्कान् कांस्कान् परेहोयांकामकोई प्रश्न

नॄन्पाहि तस्यपरमाम्रेडितं द्विरुक्तस्यपरंरूपंआम्रेडित
संज्ञंस्यात् कानाम्रेडिते कान्नकारस्यरुःस्यादाम्रेडि।
तेपरे काँस्कान्कांस्कान् कस्कादिषुच एष्विणउत्तरस्य
५ विसर्गस्यषःसर्पिष्कुण्डिका धनुष्कपालं छेच ह्रस्वस्यछेतुक्
शिवच्छाया पदान्ताद्वा आङ्माङोश्च तुक्स्यात् आच्छादयति ८।

काकाना, डितेसूत्रकेस्थानकान्कान् सूत्रकरणायाकान् परेहोयांकामकोरुहो आम्रेडि
त नचाहांकिसवास्ते हैतवकहिनाजहांपाहकोद्विरुक्ति होवेतहांरुहोइसवास्ते आम्रेडित
परेहै तिसनेकान् कान् एष्पसिं ईहांरुनहीहोयाईहांकान् काकुत्सितस्थर्थहै कस्कादिषुप
इ इत्याविसर्गकोषकार होहोय ऐसकार होसर्पिः कुंडिका ईहां विसर्गकोषकारभयासर्पिष्कु
ण्डिकासिद्धभयाएवंधनुष्कपालम् कः कः ईहां विसर्गकोसकारभयाकस्कः सिद्धभया ह्र
स्वकार के होडे कारपरेहुंए इत्याआच्छाई ईहां छकारपरेहै सकारनेपरेतुक्आयाउकइत्भया
स्तोश्चुनाश्चुः करकेतकारः कोचकारभया छकारमेअकारउच्चारणार्थ है तिसिंविच्छि। ते

आङ्‌माङ्‌कोनुक्‌आगमहोछकारपरेहुंदयाआच्छादयति माच्छिदत्‌ईहांछकारकेपूर्वआङ्‌माङ्‌कोनुक्‌
आयाउकारत्‌भयाश्चुनाश्चुःकरकेतकारकोचकारभयाआच्छादयतिमाच्छिदत्‌सिद्धभया दीर्घते
परेतुक्‌होछकारपरेहुंदयाह्रीच्छतिईहांभीतुक्‌आयाह्रीच्छतिसिद्धभयापदान्तदीर्घतेतुक्‌होछ
कारपरेहोयांलक्ष्मीछायाईहांभीतुक्‌आयालक्ष्मीच्छायासिद्धभया इतिहल्सन्धिः विसर्गको
सकारहोखरपरेहुंदयाविष्णुत्राताईहांखरयपरेतकारहैविसर्गकोसकारहोयाविष्णुस्त्रातासिद्धभ
या परे शरपरेहुंदयाविसर्गकोविसर्गहोविकल्पकरकेहरिःशेतेईहांशरपरेशकारहैएकतोर।

माच्छिदत्‌ दीर्घात्‌नकचेवा ह्रीच्छति ह्रीछति पदा
न्ताद्वा दीर्घात्‌पदान्ताच्छेतुग्वालक्ष्मीच्छायालक्ष्मीछा
या इतिहल्सन्धिः विसर्जनीयस्यसः खरि विष्णुस्त्रा
ता शर्परेविसर्जनीयः शर्परेखरिविसर्जनीयस्यविसर्गो

विसर्गकोविसर्गहीभयाएकठोरविसर्जनीयस्यसकारकेविसर्गकोसकारभया स्तोःश्चुनाश्चुः
करकेसकारकोशकारभया हरिश्शेते हरिःशेतेसिद्धभये शर्‌हैपरेजिसकेऐसाखरपरेहुं
दयाविसर्गकोविसर्गहो अन्यत्‌नहीहोकःत्सरुःईहांशर्‌परेसकारहैऐसाखर्‌परेतकारहै।
विसर्गकोविसर्गहीभया कःत्सरुःसिद्धभया शिवमर्च्यःईहांअर्च्यपदकोभावीसंबंधज्ञानके
अवुसानभंगहोयांपूर्वहीसकारकोरुत्वनहीहोया अवरुहोयापदान्तसकारकोचपुनःससजु।
षोरुःकोरुहोयाशिवस्‌पदान्तसकारहैतिसकोरुभयानदनंतरउत्वभयाअत्‌अत्‌नेपरेरुको।
उकारहोअल्‌अत्‌परेहुंदया शिवमेवकाअल्‌अत्‌हैपरेरुकोउकारभयाअल्‌अत्‌परेअर्च्य

वाल्अकारहै शिवउअर्च्यः भयातदनंतरआद्गुणः करकेगुणभयाशिवोअर्च्यः भया ॥ तदनंतरएङःपदांतादति करकेअर्थी वाल्अकारओकारकारूपभयाशिवोर्च्यः सिद्धभया अस्तुतअन्यपरेरुकोउकारहोइहशिवर्वंद्य नेद्याशिवस्वंद्यः ईहांससजुषोरुः करकेसकारकोरुभयातदनंतरअस्तुतअनुशिवमेअवद्यहै तिसतेप रेरेफकोउकारभयाहशपरेवंकारहैतदनंतरआद्गुणः करकेगुणभयाशिवोवंद्यः सिद्धभया भोभगोअ घोअकारहैएवंजिसकेपेसाजोरुहैतिसकोयकारादेशहोअशपरेऊंदयादेवास्तरहईहांससजुषोरुः करके सकारकोरुभयातदनंतरभोभगोअघोअपूर्वस्यस्तकरकेरेफकोयकारभयादेवायुरह भयातदनंतर रलोपः शाकल्यनालयकाररलोपभयादेवायिहदेवारहसिद्धभये ॥ भोसभगोसअ घोसइहा

नत्वन्यत् कःत्सरुः वाशरि शरिविसर्गस्यवि सर्गोवा हरिःशेते हरिश्शेते ससजुषोरुः पदांतस्यसस्यसजुषश्चरुःस्यात् अतोरोरप्लु तादप्लुतेतिअप्लुतादतःपरस्यरोरुःस्यादप्लुते । तिशिवोर्च्यः हशिचतथाशिवोवंद्यः भोभगोअ घोअपूर्वस्ययोशिएतत्पूर्वस्यरोर्यादेशोशिदेवा।

सकारांतनिपातहैइनकेसकारकोससजुषोरुः करकेरुः भयारुकोभोभगो इत्यादिकेयकारभयात दनंतरपदांतजोयकारवकारहै तिनकोलघूच्चारणयकारवकारहोवनशाकटायनमतमेंलघु जि सकेउच्चारणकीयाजिह्वाकेअग्रमध्यमूलकोशिथिलताहोवेसोलघूच्चारणकहीताहै जोकार ते परेपदांतअलघुप्रयत्नजोयकारहैतिसकानित्यलोपहोभोसअस्तुनईहांसकारकोरेफभयारे फकोयकारभया भोयअस्तुनईहांअवर्णपूर्वपदहै लघूच्चारणपक्षविषेयकारकोयकारहोभया अलघुप्रयत्नपक्षविषेउकारतेपरेयकारकालोपभयाभोयस्तुनभोअस्तुनसिद्धभया पदांतकिं स्वकिंतोयंईहांपदांतयकारनही भोसदेवाः ईहांसकारकोरेफभयारेफकोयकारभया। तदनंतर

ऽभोः भगोः अघोः य कार मिलके पूर्व है ऐसे यकारका लोप होता हल् परे हुए दया इस कारके यकार
लोप भया भो देवा सिद्ध भया भगो रु नमस्ते इहां सकारको रु भया रु को भो भगो कर के यकार भया
तदनंतर हल् परे हुए दया यकारका लोप भया भगो नमस्ते सिद्ध भया अघो रु याहि इहां सकारको रेफ
भया रेफको यकार भया हल् परे हुए दया यकारका लोप भया अघो याहि सिद्ध भया अहन् को रेफ हो
सुप् परे हुए दया न हीं होय अहन् अहः इहां अलोंत्यस्य करके अहन् के नकारको रेफ भया अहर
हः सिद्ध भया अहन् गणाः इहां भी अलोंत्यस्य करके नकारको रेफ भया अहर्गणः सिद्ध भया ॥
सुप् परे न होवे किस वास्ते कहा होय अहोभ्यां इहां सुप् परे है इहां अहन् न के कारके रेफ भया है रेफका अ

भोस् भगोस् अघोस् इति सान्ता निपाताः। तेषां रुत्वे कृते। व्योर्लघुप्रयत्नतरः शाकटायनस्य। पदान्तयोर्वयोर्लघूच्चारणो वा स्यात् अशि। ओतो गार्ग्यस्य। ओकारात् परस्य पदान्तस्य लघुप्रयत्नस्य यस्य नित्यं लोपः स्यात्। भो अत्र। लघुप्रयत्नपक्षे भो यत्र। पदान्तस्य किं। तोयं। हलि सर्वेषां। भोभगोअघोअपूर्वस्य यस्य लोपः हलि। भो देवाः। भगो नमस्ते। अघो याहि। देवा नम्याः। रोऽसुपि। अह्नो रेफादेशो न तु सुपि। अहरहः।

लोप हो रेफ परे हुए दया लोपके निमित्त ढकार रेफ परे हुए दया पूर्व अण को दीर्घ होय उनद्र रमने इहां रेफ परे
है उरले रेफका लोप भया तदनंतर लोप निमित्त रेफ परे है पूर्व अण नकार में अकार है तिसको दीर्घ भ
या ऊनार मने सिद्ध भया पूर्व को दीर्घ होय ऐसा कहिना था अण पद किस वास्ते है नव कहिना अण पद नहीं
है वेये तव लढः लीढः इहां अकारको ढो वेगा और होना नहीं अकार अण नहीं है नहीं कोई प्रश्न करे इहां
उत्तर पद का अधिकार है उत्तर पद परे हो पूर्व को दीर्घ होवेगा के र पूर्व पद किस वास्ते है नब कहि
ना अनुत्तर पद विषे भी दीर्घ वास्ते पूर्व पदका अनजर्धमन स्तरण इहां सकारको ससजुषो रुः करके रेफ भया

रेफकी नया होरि सूत्रकरके रेफलोपपायापासी हशिचसूत्रकरके रेफको उत्वपायादोनो विधिकौनहोवे नवतिसपरनियमहसूत्रहै ॥ ॥ विप्रतिषेधविधिक्यातुल्यबल विरोधविधिपरकार्यहोतुल्यबलवि रोधक्याकहीयेनवकहिनापरस्परलग्या वकाशयोरेकत्रसमावेशः तुल्यबलविरोधः जौनसूत्रअ
१ पनेप्रयोगोविधिप्रवृत्तिहोरहैं एकप्रयोगविधिदोनोप्रवृत्तिहोनसोतुल्यबलविरोधकहीदाहै जै
से हशिवसूत्र शिवोवंद्यः इहांउत्वकार्यकरवैगाहै रोरिसूत्रपुनारमनेईहांरेफलोपरूपकार्यनिर्भयीक रवैगाहै मनरथईहांहशिचसूत्रकीभीप्रवृत्तिभयीरोरिसूत्रकीभीप्रवृत्तिभयीयेतुल्यबलोविरोधहै॥
इसमेपरकार्यहोयरकार्यरोरिसूत्रकीभीप्रह करकेरकारलोपपायापासीतबपूर्वत्रासिद्धंकरकेहशिवा सूत्रकीदृष्टिमेरोरिसूत्रअसिद्धभया तबहशिचकरकेउरलेरकारकोउकारभयातदनंतरआद्गुणःक

विप्रतिषेधेपरंकार्यंतुल्यबलविरोधेपरंकार्यंस्या
त् इतिलोपेप्राप्ते पूर्वत्रासिद्धमितिरोरीत्यस्या
सिद्धत्वादुत्वमेवमनोरथः एतत्तदोःसुलोपोकोर
नञ्समासेहलि अककारयोरेतत्तदोर्यःसुस्त
स्यलोपोहलिनतुनञ्समासेनएषविष्णुःसशंभुःअकोः
किंएषकोरुद्रःअनञ्समासेकिंअसःशिवःहलिकिं
एषोत्र सोचिलोपेचेत्पादपूरणं सइत्यस्यसोर्लोपःस्या
दचिपादश्चेल्लोपेसत्येवपूर्येत सेमामविड्ढिप्रभृतिं
सैषदाशरथीरामः बहुलमेतन्निदर्शनात्हल्लो
पेनसोहमाजन्मशुद्धानां इतिस्वादिसंधिः ५

रकेगुणभयामनोरथःसिद्धभया ॥ ककारहीनजोएतत्ततनतूशब्दहैतिनकाजोसुहैतिसकालोपहोइ हलपरेहूंदयानञ्समासविधिनहीहो एषस्तूविष्णुःईहांककारहीनएतत्शब्दहैतिसतेपरेसकौलोप भा १ याहलपरेवकारहैएषविष्णुःसिद्धभया सशंभुःईहांककारहीनतततूशब्दकासकारहीहैतिसतेपरेसुका लोपभयादलपरेशकारहैसशंभुःसिद्धभया ककारहीनएतत्ततततूकिसवास्तेकहाहैनवकहिनाएष

करुरुदः पदककारहीनपतन् शब्द नहीं ईहांसुलोपनहीभयासकारकोरेफ भयारेफकोउत्वभयागुण
भयाएवकोरुदः सिद्धभयाअनन्नपदाकि सवास्ते है अतः शिवः ईहांसप्प अहैसुलोपनहीभया हल्
पदएवोत्रईहांसुलोपनिहन्निवास्ते है सइसकेसकारकालोपहोअच्परेहूंइया
लोपभयाजहांपादपूरण होवेसस इमामविधिप्रभृतिं ईहांअच्परेहैसकारते
परेसकारकालोपभयाफेरआद्गुणः भयासेमामविद्धिप्रभृतिंपादपूरणभया
ससूषधटाँसिद्धं किंदोएक वद्भलपदकीअनुवृत्तिकरणतेसुलोपनहीभीहोता
सोहमप्तन्मशुद्धानोईहांसुलोपनहीभया इतिश्रीपंडितहजारीरामात्मजपं
डितदेवीसहायसुतमहूलेपवंशोद्भवरूपचंद्रकृतेव्याकरणप्रकाशेपंचसं
धिप्रकरणम्समाप्तम् ॥ ५ ॥ स्वादिविधिविवक्षेप्रातिपदिककाअधिकारहै
इसवास्तेअव्युत्पन्नपक्षविषेसंज्ञाशब्दोंकीप्रातिपदिकसंज्ञाकरीदीहैअर्थवत्
सूत्रकरकेप्रकृतिप्रत्ययोगं विनाशब्दसाधनंअव्युत्पन्नपक्षः प्रकृतिप्रत्ययसंबंधतेवि
नाजोशब्दसाधनहै सोअव्युत्पन्नपक्षकहिएहै सिद्धेशब्देअर्थसंबंधेवयेभाष्यहैशब्दऔरशब्दांके
अर्थअनादिहैनप्रकृतिप्रत्ययकल्पनाबालबोधवास्तेहै अर्थवत्शब्दरूपंप्रातिपदिकसं
ज्ञंस्यात् किंकृत्वाधातुंप्रत्ययंप्रत्ययांतेवर्जयित्वाअर्थवान्जोशब्दरूपहैसोप्रातिपदिकसं
ज्ञकहोवेक्याकरकेधातुप्रत्ययप्रत्ययांतत्यागकरके कृदंततद्धितांतवउनःसमास
प्रातिपदिकसंज्ञकहो प्रकृतिप्रत्यययोगेनशब्दसाधनंव्युत्पन्नपक्षः प्रकृतिप्रत्ययमिल
केजोशब्दसाधनहैसोव्युत्पन्नपक्षकहीदाहैतहांकृत्तद्धितसूत्रकरकेप्रातिपदिकसंज्ञाहो
तीहै षट्लिंगविवेसंपूर्णशब्दप्रायःकृदंतहैन रमंतेयोगिनोऽस्मिन् इतिरामः ई॰
रामशब्दकीअर्थवत्सूत्रकरकेप्रातिपदिकसंज्ञाभयीकृदंतमत्रकेंकृत्तसूत्रकरकेभीभयी कृत्त
तिसततेपरेस्वादिकहोनेहैं कोईकहै स्वादिकौं हैनतवकहिनास्ते के

अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्
कृत्तद्धितसमासाश्च ६

औ जस् अम् औट् शस् टा भ्यां भिस् ङे भ्यां भ्यस्। ङसि भ्यां भ्यस् ङस् ओस् आम्।
ङि ओस् सुप् ये स्वादिक हैं इनकी प्रत्यय संज्ञा है प्रत्यय पद का पर पद का अधिकार है ङी
एवं आप् एवं प्रातिपदिकश्च एषां समाहारो ङ्याप्प्रातिपदिकं तस्मात् ङ्याप्प्रातिपदिकात्
ङीवंतते आवंतते व पुनः प्रातिपदिकते स्वादिक प्रत्यय परे होते राम शब्द प्रातिपदिक है।
तिसते सभ स्वादिक होतेत बकहिना सुपके जो तिन्नतिन्न वचन हैं सो एक एक एक वचन
द्विवचन बहुवचन संज्ञक होते जैसे सु प्रथमा का एक वचन है औ प्रथमा का द्विव॰
चन है जस् प्रथमा का बहुवचन है इसी प्रकार द्वितीयादिका के एकवचनादिक जानने हि

अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं धातुं प्रत्ययं प्रत्य
यांतं च वर्जयित्वार्थवच्छब्दस्वरूपं प्रातिपदिकसंज्ञं स्या
त्. कृत्तद्धितसमासाश्च द्वितंतौ समासश्च प्रातिपदि कृत
कसंज्ञास्युः स्वौजसमौट्छष्टाभ्यांभिस् ङे भ्यांभ्यस्
ङसिभ्यांभ्यस् ङसोसाम् ङ्योस्सुप्. ङ्याप्प्रातिपदि
कात्. ङ्यंतादावंताप्रातिपदिकाच्च परे स्वादयः प्रत्य
याः स्युः सुपः सुपस्त्रीणित्रीणिवचनान्येकश एक
वचनद्विवचनबहुवचनसंज्ञानि स्युः द्व्येकयोर्द्विव
चनैकवचने द्वित्वैकत्वयोरेते स्तः विरामोवसानं वर्णा
नामभावोवसानं स्यात्. रुत्वविसर्गौ रामः ॥ २२

त्व एकत्व विवक्षा में द्विवचन एकवचन होते हैं राम विवक्षित एकत्व है इसते एकवचन सु परे
आया राम सु भया उपदेशे जनुनासिक कर के सु का उकार संज्ञा षष्ठी लिंग विशेष संज्ञ
क भया विरमणं विरामः वर्णों का जो अभाव है सो अवसान संज्ञक होय शब्द शास्त्र विषे

वर्णानुपूर्व्यहैन इसवास्तेवर्णोकाग्रभावग्रहणकीयाहै ससजुषोरुः करकेसकारकोरेफभया
त्वरवसानयोः करकेरेफकोविसर्गभया रामः सिद्धभयाएकहैरामहै आगेअर्थवत्सूत्रकाव्या
ख्यानधातुन्नुप्रत्ययन्नुप्रत्ययांतन्नत्यागकरकरजोअर्थवान्शब्दरूपहैसोप्रातिपदिकसंज्ञकहो
इससूत्रमेअधात्वादिपदमेपर्युदासनञ्हैलाघवतेअधातुःप्रातिपदिकंस्यात्धातुःप्रातिपा
दिकंनस्यात्इसरीतिसेप्रसज्यमेक्रियाग्रहणसंबंधनेगौरवआवताहै जेकोईकहैप्रत्ययांतनि
षेधकहांसेआयाहैतबकहिनाअप्रत्ययआहाणिकरकेपकअप्रत्ययपदमेतदंतग्रहणनेप्रत्य
यांतनिषेधआयाहैजेकोईकहैसंज्ञाविधौप्रत्ययग्रहणेनतदंतविधिर्नास्तीपहनिषेधहोवेगात
बकहिनाप्रत्ययकोसंज्ञानहींकर्तव्यहैतहांनिषेधहैइहांप्रत्ययमात्रकीप्रातिपदिकसंज्ञानहीं
इसतेतदंतनाभयी जेकोईकहैआहणिविवेकप्रमाणहैतबकहिनाकृत्तद्धितसूत्रविधेन
हितग्रहणप्रमाणहैजेकरधातुप्रत्ययकोहीसंज्ञानिषेधहैतबऔपगवप्रभीधातुभिन्नहैप्रत्य
यभिन्नहैअर्थवत्सूत्रकरकेसंज्ञाहोवेगीतद्धितपदव्यर्थहैसोव्यर्थहोकेजनाताहैपूर्वसूत्रवि
षेआहणिहैतदंतनाभीहैऔपगवःप्रत्ययांतहैपूर्वसूत्रसेसंज्ञानहींप्राप्तभयीतद्धितपदग्र
हणवेतितहैजोकोईकहैधातुभिन्नधातुसूहशब्दअर्थवान्पदकिसहीहोनाहैऔरनकेवलाप्रकृ
तिप्रयोक्तव्यानापिप्रत्ययःइसभाष्यसकेवलकृत्तद्धितकाप्रयोगनहींहोनासप्रकृतिकअर्थ
वानोंकाहीग्रहणहोनाहैकेअर्थवत्पदकिसवास्तेहैतबकहिनाएतत्संज्ञाफलभूतविभ
क्तीतरससभिव्याहारानपेक्षलोकेअर्थविषयबोधजनकत्वंअर्थवत्वंइसविशेषार्थजनानेवा
णअर्थवत्पदहैएतत्संज्ञाप्रातिपदिकसंज्ञातत्फलीभूतविभक्तिःस्वादिविभक्तिःतिसते
इतरसंसर्गणवस्तुकासंबंधनहींहोवेलोकविषेअर्थविषयकबोधकाजनकहैसोअर्थवत्
हैऐसेरामादिकशब्दहैनडीवादिकभीविभक्त्यंतनगनतहै जेकोईकहैअधातुपदकिसवास्तेहै
तबकहिनाअधातुपदनहींररवीयेतबअहन्ईहांहन्धातुकीभीसंज्ञाहोवेगीयेप्रत्यय

प्रत्ययांतभिन्नहैनलोपाहोवेगाइसवास्तेअर्थवान्पदहैनलोपोऽतिङः इत्यादिकव्या-
मानेव्याख्यानगौरवआवताहै अप्रत्ययपदनहींराखीयेनवहरिपुकरोषिईहांप्रत्यय-
कीभीसंज्ञाहोवेगीमात्पदाद्योः कारकेषत्वनिषेधहोवेगा अप्रत्ययांतपदनहींराखीये
नवहरिपुकरोषिईहांसंज्ञाहोकेपरेत्वादिकआवनगे जोकोईकहैकुंडेइहांह्रस्वकि-
सवास्तेनहींहोनायेधातुप्रत्ययप्रत्ययांतभिन्नहैसर्वांनवह्रावकारकेक्लीवत्वभीहै नव
कहिनाकार्यकालपक्षविषेसुकेउत्पत्तिकालविषेप्रातिपदिकसंज्ञानभयेकुंडह्रस्व-
त्वनहींहोनायद्योदेशपक्षविषेभीह्रस्वनहींहोनासमस्याधिकरणेचइतनिर्देशासेई-
हांअधिकरणाणिचयेसानहींपठनकीयाएकादेशविषेसर्वांनवह्रावनहींहोना जेको-
ईकहैअर्थवत्पदाकिसवास्तेहैनवकहिनाअर्थवत्पदनहींराखीयेनवधनंव-
नंईहांभिन्नवर्णकींसंज्ञाहोवेगीसंख्याकर्मादिकाकेअभावभयांभीसुमात्रआवेगा
धनंईहांनलहोवेगाऔरनलोपहोवेगाइसवास्तेअर्थवत्पदहैसमुदायकेभिन्न-
भिन्नवर्णकींसंज्ञाहोवैनीं अर्थवान्नहींजेकोईकहैप्रातिपदिकधातुप्रत्ययनिपातप-
द्एकवर्णवालेभीअर्थवान्हैजैसेअः येप्रातिपदिकहैइकस्मरणेयेधातुहैअणयेप्र-
त्ययहैअआईइत्यादिकनिपातहै कृपः सृपः तृपः ईहांऋपसम मेतुल्यहैपरंतु-
ककारकरकेकृपार्थहैयकारकरकेसृपार्थहैसकारकरकेसृपार्थहैककारापाय-
दयाककारविनाशहोयावर्णांतरनिवेशहोयाअन्यार्थहोताहै वृत्तः क्रन्तः ईहांभीव-
कारमात्रसेअर्थांतरहोताहैइसतेसमुदायविषेवर्णभीअर्थवान्हैनहींतैंतिलसमु-
दायविषेतैलहैएकतिलविषेभीतैलहै नवकहिनातर्कः सिंहः धातयतिकृन्त्या-
दिकवर्णव्यत्ययादिकाविषेवर्णोंकोअर्थवत्वनहीं इसतेआर्थवत्वअनर्थकवर्णों-
वर्णोंकोभयाकोनसापक्षग्रहणकरणानवकहिआजेसेपठनवालेपो कोईपंडि

नहोताहैनैसेप्रत्ययनिपातादिएकवर्णवास्तेअर्थवानहैऔरसमभ्रनर्थकहैनञ्जुति
भावःलिङ्ईहांप्रातिपदिकसंज्ञावास्तेकृतग्रहणहैऔपगवइत्यादिकाविखेसंज्ञावा
स्ते   नहितपरेहैराजपुरुषइत्यादिकावास्तेसमासपदहैनिपातवास्तेचका
रहैइसीवास्तेहस्निमत्त्यातिपदिकंन्यासनहीकीयाहरहितसनाथेनैकशेषथानवःपं
वहस्रपःईहांनिपातपदनहीअवयतिईहांनिपातकोसंज्ञाहोनेनेतिङ् तिङः करके
निघा॰ तस्वरहोताहैस्वादिकाकीपरिगणनाकरताहैजेकोईकहैसौजसईहांलाघवते
रुवौजस्सूपाठकिसवास्तेहैनवकहिनारवौजसकेरेफकोउत्वकीतयारेफासिद्धहैउत्व
भीसार्थकहैअवयशासुअवयशोवृईहांसकारकोरुत्वकरकेउत्वकारदयाहत्वअसिद्ध
होवेगाइसवास्तेरवौजसनहीपरेहैयप्रथमान्द्वितीयानेककेसाथतृतीयातांईवा
स्तेचतुर्थीषष्ठीनेपंचमीदादीदेकोषष्ठीविखेविद्वेषंइंदयासप्तमीएहसप्तविभक्तिकेअ
र्थहैं रामरामऔईहांद्वित्वविखेद्विवचनपरेआयाएकविभक्तिपरेहुंदयाजेरेअर्थकर

स्वरूपाणामेकशेषएकविभक्तौ एकविभक्तौयानि
सरूपाणिदृष्टानितेषामेकएवशिष्यते प्रथमयोः
पूर्वसवर्णः अकःप्रथमाद्वितीययोरचिपूर्वसवर्ण
दीर्घएकादेशः नादिचि अवर्णादिचिनपूर्वसवर्ण

केशाहुकरकेसमानरूपदेषेहैतिनकाएकशेषहो इसकारकेएकरामरह्याहै जना
नीपरिच्छेत्वावकमान्तशब्दकाएकशेषनहीहोताऔजसपरतःविरूपहोनेने राम
औईहांद्वित्वबोधकेसेहोवेगानवकहिनायःशिष्यतेसःलुप्यमानार्थाभिधायीतिन्या
येनजोशेषरहिंदाहैसोलुप्यमानअर्थकोकथनकरताहै ईहांप्रथमहाहिरेविसर्जनकर

केवृद्धिपायीसीतबवृद्धिकीबाधाकरीप्रथमयोःसूत्रने प्रथमाचप्रथमाचप्रथमेतयोप्रथमयोः
एकप्रथमाशब्दप्रथमावाचकहै द्वितीयप्रथमाशब्दद्वितीयावाचकहैतबऐसाहुआअर्थभया अकतेप्र
थमाद्वितीयाकाअच्परेहुंदयापूर्वसवर्णदीर्घएकादेशहो राममेंअहुआअकारहैप्रथमाकाअऔपरे
औकारहैअकारऔकारमिलकेपूर्वसवर्णदीर्घआकारपायासीतबनादिचिसूत्रनेदीर्घकीबाधाक
रीअवर्णतेइच्परेहुंदयापूर्वसवर्णदीर्घनहीहो इसकारकेदीर्घनिषेधभयाफेरवृद्धिभयीप्रथमा
द्विवचनरामौसिद्धहुंजेकोईप्रश्नकरेएकवारीवृद्धिकीबाधाभयींफेरकैसेवृद्धिभयी तबकहिनाअप
वादेनिषिद्धेपुनरुत्सर्गस्यस्थितिःअपवादकेनिषेधभयाफेरसामान्यसूत्रकीस्थितिहोतीहैदेव
दत्तरुतरहेहन्यायकरकेदेवदत्तकेहंताकेहननहोयादेवदत्तकाजीवनहोताहैवृद्धिःदेवदत्तहैहंत्या

दीर्घःवृद्धिःरामौ बहुवबहुवचनम् जुट् प्रत्ययाश्चौजु
ट्इतौमतः विभक्तिश्चसुमिङौविभक्तिसंज्ञौमतः ॥
नविभक्तौनुस्माःविभक्तिस्थास्तवर्गसकारमकाराश्नो
नस्युः इतिसम्प्रनेत्वम् एकवचनेसंबुद्धिः संबोधने।

पूर्वसवर्णदीर्घहैतिसकाहुंनानादिचिहैइससेफेरदेवदत्तरूपवृद्धिभयीइसविधिनोसमूसूत्र
मेतौपदप्रमाणहैईहांवृद्धिहीभयीरामौसिद्धभया बहूनयोंरूपोविधिबहुवचनहीहोईहांबहु
शब्दसंख्यापरकहैसंख्येपपरकनहीतिसनेबहुपर्वतःईहांयाम्नहीअजोप्रत्ययकआदिच
वर्णहैनसोइत्संज्ञकहोन सुप्तिङ्विभक्तिसंज्ञकहोनकोईप्रश्नकरेइससूत्रविधेचकार
ग्रहणकिसवास्तेहैतबकहिनाऔरसंज्ञासमावेशवास्तेचकारहैनहीतोसंज्ञासंज्ञाका
बाधीयहोजायेगा ॥ कोईप्रश्नकरेविभक्तिश्चसूत्रकिसवास्तेकरणाविभक्तिपदश्रुतिनमहे
शाविधिसुपपदतिवेशकरकेनिर्वाहकरांते तबकहिनाप्रादिशोसूत्रविधेसुपपदनिवेश
कीयेनेपहितहिंईहांमुपिचकारकेदीर्घापत्तिआवेगीअनिष्टरूपहोवेगेइसवास्तेविभक्ति

सुसूत्रकारणाविभक्तिसंज्ञाकाक्याफलहै विभक्तिविवक्षितजोनवर्गसकारमकारहैन सोइत्संज्ञकनहीं होनइससूत्रकरकेजसूकेसकारकीघद्धकेमकारकीङ॰सूङ॰सिङोसूके स कारकीहलंत्यंकाकेइन्॰संज्ञानहीहोनी रामरामरामनसईहांसरूपाणांसूत्रकरकेएकरा मशेषहैचुटूकारकेतकारइनूभयारामसूभयाईहांअकःसवर्णेकोबाधकेअतोगुणेकीप्रदृ॰ त्तिभयीसीतिसकोबाधकेप्रथमयोःपूर्वसवर्णःकरकेदीर्घभयारामासूभयासकारकोरेफविस र्गभयेरामाःसिद्धं रामसुईहांसंबोधनविषेजोप्रथमाकाएकवचनहैसोसंबुद्धिसंज्ञकहोजाय॥

प्रथमायाएक वचनंसं बुद्धिसंज्ञंस्यात् यस्मात्प्रत्ययविधि स्तदादिप्रत्ययेऽङ्गम्॥ यःप्रत्ययोयस्मात्क्रियतेतदादिशब्दस्वरूपं तस्मिन्प्रत्ययेपरेऽङ्गसंज्ञंस्यात् एङ्ह्रस्वात्संबुद्धेः एङन्ता त् ह्रस्वान्ताच्चाङ्गाद्धल् लुप्यते संबुद्धेश्चेत् हेराम हेरामौ हेरामाः अकोम्यवि अकोम्यविपूर्वरूपमेकादेशः रामम् रामौ लशक्वतद्धिते तद्धितवर्जितप्रत्ययाद्यांलशाकवर्गाः

प्रत्ययजिसतेकरीयेतदादिजोशब्दस्वरूपहैतिसप्रत्ययपरेअंगसंज्ञकहो भवामिइत्यादिका विषेसंपूर्णसूत्रार्थपायीदाहै रामादिकशब्दोविषेविषयपदेशावड्काकरकेमुख्यकीन्पायीअंगत्वहै सुप्रत्ययकीसंबुद्धिसंज्ञाभयीरामशब्दकीअंगसंज्ञाभयी संज्ञाद्वयकाफलक हेनाहैएङ॰तथं गतेहृस्वान्तअंगतेपरेहल्लूलोपकरीदाहै जबहल्संबुद्धिकाहोवेतबईहांअंगविशेष्यहैएङं॰ ह्रस्वविशेषणहैतदंतनाभयी गुणान्संबुद्धेःन्यासनहीहोनाहेलाद्भ्यईहांसुलोपनहीहोवेगा॥ रामह्रस्वान्तअंगहैतिसतेपरेसकारकालोपभयाहेरामसिद्धं हेरामऔईहांहृद्धिभयीहेरामौसि द्धभयाहेराम नमसईहांजकारइत्भयादीर्घभयासकारकोरेफभयारेफकोविसर्गभयाहेरामाः

सिद्धं संबोधनतजानेकालेहेरामकाकार्यसकाहै ॥

रामअम् ऐसा स्थितमें अम्‌का अच् परे होंदया पूर्वरूप एकादेश होके सकारके अम्‌का अकारमें मिल न भया रामम् सिद्ध द्वितीया एकवचन है राम औ ऐसा स्थितमें वृद्धि भयी रामौ सिद्ध द्वितीया द्विवचन है राम शस् ऐसा ल च श च कु च एषां समाहारो लशकु इस समासने इतरार्थ करता है तद्धितवर्जित प्रत्ययके आदि जो लकार शकार कवर्ग हैं तिनसो इत्संज्ञक होंय इस सूत्र करके शस्के शकारकी इत्संज्ञा होती है राम अस् भया तदनंतर पूर्वसवर्णदीर्घ ने परे शसके सकारको नकार होउ इसी विधि इस सूत्र करके सकारको नकार भया रामान् सिद्ध द्वितीया बहुवचन है कोई कहै ऐसा अट् कवर्ग पवर्ग आङ् नुम् इनो भिन्न वर्णोंकर के व्यवधान होयां यथासंभव मिलनोंकर कर भी व्यवधान होयां रेफ षकार ते परे नकारको

इनः स्युः तस्माच्छसोनः पुंसि पूर्वसवर्णदीर्घात्परो यः शसः
सस्तस्य नः पुंसि अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेपि अट् कवर्ग पवर्ग
आङ् नुम् एतैर्व्यस्तैर्यथासंभवमिलितैश्च व्यवधानेपि रषाभ्यां
परस्य नस्य णत्वं स्यात् इति णत्वे प्राप्ते पदान्तस्य नस्य णत्वं न रा
मान् टाङसिङसामिनात्स्याः अदन्तात् टादीनामिनादयः स्युः ।
णत्वं रामेण सुपि च यञादौ सुप्यतोंगस्य दीर्घः रामाभ्यां अतो
भिसऐस् अतोंगात्परस्य भिसऐस् स्यात् रामैः ॥ २४ ॥

त्व होय एकपद विशेष इस सूत्र करके णत्व कि सकारके नहीं होना तब कहिना पदांत नकारको णत्व नही होये पदांत नकार है इसको णत्व निषेध भया रामान् सिद्ध अदंत अंगते परे टादिकाको इनादिक होन टाको इन होउ ङसिको आत् होउ ङसको स्य आदेश होउ राम टा ऐसा टाको इन भया तदनंतर आदि गुण करके गुण भया अट्कुप्वाङ् करके णत्व भया रामेण सिद्ध रामाभ्यां ऐसा मकार दीर्घ भया सुपि च इस करके अकारान्त अंगको दीर्घ होय यञादिक सुप् परे होंदया अकारान्त अंगते परे भिस्‌को ऐस् होउ राम भिस् ऐसा अनेकाल्त्वने सर्व भिस्‌को ऐस् आदेश भया तदनंतर वृद्धि भयी सकारको रेफ भया रेफको विसर्ग भया रामैः सिद्ध तृतीया बहुवचन है कोई प्रश्न करे अंगग्रहण किसवास्ते है तब कहिना अंग पद नहीं देवें तो नवब्राह्मणाभिः ऐसा भी अकारते परे भिस्‌को ऐस् होवेगा ये अंग न होने।

कोईकहैअनर्थवर्णनी विभक्ति तुल्यके अंगत्व आलणशहु को है तब कहि ना अर्थवान् के ग्रहण भ
यां अनर्थ का ग्रहण नहीं होता ईहां बालणपद अनर्थक है अथवा अंग निमित्तानां टादीनां श्नाद
यः इति भाष्याशयः ये भिसु अंग निमित्त नहीं ॥ अकारांत अंग ते परे ङे को य कारादेश हो राम
ङे॰ ईहां अकारांत अंग ते परे ङे को य कारादेश हो राम ङे॰ ईहां अकारांत अंग राम है तिस ते परे ङे को
य कार भया तदनंतर सुपि च करके दीर्घ भया रामाय सिद्ध भया चतुर्थी बहुवचन है जे कोई कहै
ङे को य कार स्थानी जया सु सु नहीं रहा सुपि च करके कैसे दीर्घ होवेगा तब कहि ना आदेश स्थानी की
न्याई होय अनल्विधि विषे जहां वर्ण मात्र के आश्रय विधि है तहां स्थानी की न्याई नहीं होइ ईहां।

ङेर्यः अतोङ्गात्परस्य ङे यादेशः स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ
आदेशः स्थानिवत्स्यात् न तु स्थान्यलाश्रयविधौ इति।
स्थानिवत्त्वात्सुपि चेति दीर्घः रामाय रामाभ्यां बहुवच
ने झल्येत् झलादौ बहुवचने सुप्यतोंगस्यैकारः रामेभ्यः
बहुवचने किं रामः रामस्य झलि किं रामाणां सुपि किं प
चध्वम् वावसाने अवसाने झलां चरो वा रामात् राम
द् रामस्य ङसिच अतोंगस्यैकारः ओसि रामयोः ॥

ङे॰ अनल् है यकार ङे की न्याई भया दीर्घ भी भया रामाभ्यां ईहां सुपि च करके दीर्घ भया रामा।
भ्यां सिद्ध चतुर्थी द्विवचन है रामभ्यस् ईहां झलादि क बहुवचन सुप परे है दया अकारांत अंग को
एकार हो ईहां भ्यस् झलादि क है सुप भी है बहुवचन भी है अकार को एकार भया सकार को रेफ
विसर्ग भये रामेभ्यः सिद्धम् चतुर्थी बहुवचन है रामः ईहां बहुवचन परे नहीं रामाणां ईहां
झल्परे है ही पचध्वं ईहां सुप परे नहीं रहा कि दरे भी एकार नहीं भया अवसान विषे झलों को च
र् होन विकल्प करके रामङसि ईहां ङसि सामिनात्स्याः करके ङसि को आत् भया रामा।
आत् भया तदनंतर अकः सवर्णे करके दीर्घ भया तदनंतर झलां जशोंते करके तकार को
दकार भया तदनंतर वावसाने करके दकार को तकार विकल्प से भया रामात् रामाद् सि।

हुभये पंचमी का एकवचन है॥ रामाभ्यां सुपि च करके दीर्घ भया पंचमी का द्विवचन है रामेभ्यः ई
हां बहुवचने झल्येत् करके एत्व भया पंचमी को बहुवचन है रामङस् ई हां टाङसिङसामिना
त्स्याः करके ङसको स्य आदेश भया रामस्य सिद्धम्॥ अत्वन ही होतो सकारोच्चारण सामर्थ्य ने ष
ष्ठी का एकवचन है ओस् परे हुं दयां अकारांत अंग को एकार हो राम ओस् ई हां ओस् परे है अकार॥
को एकार भया तदनंतर एचोऽयवायावः करके एकार को अय् भया सकार को रेफ भया रेफ को॥
विसर्ग भया रामयोः सिद्धं षष्ठी का द्विवचन है॥ ॥ह्रस्वांत नते नद्यांत नते च शनः आबंत नते

ह्रस्वनद्यापो नुट्॥ ह्रस्वांतान्नद्यंतादाबंताच्चांगात्पर
स्यामो नुडागमः स्यात्॥ नामि॥ अजंतांगस्य दीर्घः
नामि॥ रामाणाम्॥ रामे॥ रामयोः॥ एत्वे कृतेऽप्यादे
शप्रत्यययोः॥ इण्कुभ्यां परस्यादेशप्रत्ययावयवस्य
सस्य मूर्द्धन्यादेशः स्यात्॥ ईषद्विवृतस्य सस्य तादृश एव
षः॥ रामेषु॥ एवं कृष्णादयोप्यदंताः॥ ॥

परे आम को नुट् का आगम हुआ नामि परे हुं दया अजंत अंग को दीर्घ हो रामआम् ई हां आम
के परे नुट् आया उट् सर्वत्र इत् भया तदनंतर आम् परे हुं दया दीर्घ भया नकार को णत्व भा॰
या रामाणां सिद्धं षष्ठी बहुवचन है रामङि ई हां लशक्वतद्धिते करके ङकार इत् भया तदनं
तर आद्गुणः करके अकार इकार मिल के एकार गुण भया रामे सिद्धं सप्तमी का एकवचन
है रामओस् ई हां ओसि च करके अकार को एकार भया तदनंतर एचोऽयवायावः करके एका
र को अय् भया सकार को रेफ विसर्ग भया रामयोः सिद्धं सप्तमी का द्विवचन है रामसुप्

ईहोबहुवचनेकल्पेनकारकेअकारकोएकारभयातदनंतरआदेशप्रत्ययअआदेशप्रत्यययोरि इण्का
योः आदेशप्रत्यययोः इण्कवर्गतेपरेआदेशप्रत्ययकाअवयवजोसकारहैतिसकोमूर्द्ध।
न्यादेशहोवेषहितजोसकारहैतिसकोनहींसाहोयकारहोईहांइण्तेपरेप्रत्ययकाअवयव
वसकारहैतिसकोमूर्द्धन्यषकारभयारामेषु सिद्धंसप्तमीकाबहुवचनहै ॥ अः औआः अं
औआन् एनआभ्यांएभ्यः आत्आद् आभ्यांएभ्यः अस्यअयोः आनांएषुअयोः एषु हेअ हेऔ हेआः
सर्वआद्यवयवोयेषांतेसर्वादयः तानिसर्वादीनिसर्वादिकहैंगणहैंपदहैंसोसर्वनामसं
ज्ञकहोत सर्व विश्व उभ उभय डतर डतम अन्य अन्यतर इतर त्वत् त्वनेम सम सि म

सर्वादीनिसर्वनामानि सर्वादीनिशब्दरूपाणिस
र्वनामसंज्ञानिस्युः सर्व विश्व उभ उभय डतर
डतम अन्य अन्यतर इतर पूर्वापरावरदक्षिणो
त्तरापराधराणिव्यवस्थायामसंज्ञायां स्वमज्ञा
तिधनाख्यायां ज्ञातिधनान्यवाचिनःस्वशब्दस्यस
र्वनामसंज्ञास्यात् अन्तरंबहिर्योगोपसंव्यानयोः
त्यद् तद् यद् एतद् इदम् अदस् एकद्वि॥

म पूर्व पर अवर दक्षिण उत्तर अपर अधर व्यवस्थाविशेषसंज्ञाविशेषर्वादिकस
र्वनामसंज्ञकहो ज्ञातिधनतेभिन्नअर्थकावाचकजोस्वशब्दहैसोसर्वनामसंज्ञकहो
वाह्यअर्थविशेषपरिधानअर्थविशेषअन्तरशब्दसर्वनामसंज्ञकहो बहिरकानामहैउप। वाह्य
संव्यानपरिधानेकानामहै येत्रिसूत्रीसंज्ञावास्तेहैआगेकीत्रिसूत्रीजस्ङि.न्वचनय
रतःसंज्ञाविकल्पवास्तेहै त्यद् तद् यद् एतद् इदम् अदस् एक द्वि युष्मद् अ

स्मद् भवत् किम् येपंचविंशतन्सर्वादिकहैंन सर्वमुर्ईहांउपदेशोजनुकारकेषट् लिंगविवेउ
कारकोसाहैइत्संताहोतीहैसकारकोसर्वजस इनुबोरुः कारकेरुहोताहैरुकोखरवसानयोःक
रकेविसर्गहोताहैसर्वः सिद्दं सर्वऔईहांवृद्दिभयीसर्वौसिद्दं सर्व जस्ईहांअदंतसर्वनामते
परेजोजस्हैतिसकोशीहोअनेकालत्वतेसंपूर्णकोहोइसकारकेजस्कोशीभयात्सषोंकरकेशा
दगुणभयागुणभयासर्वेसिद्दंसर्वं सर्वौ सर्वान् सर्वेण सर्वाभ्यां सर्वैः अदंतसर्वनामतेप
रेजोङेहैतिसकोस्मैहो सर्वस्मैसिद्दंसर्वाभ्यां सर्वेभ्यः अदंतसर्वनामतेजोङसिङिहैतिन

ष्मद् अस्मद् भवत् किम् जसःशी अदंतात्सर्वना
म्नोजसःशी अनेकालत्वात्सर्वादेशः सर्वे सर्वेनाम्
म्नः स्मै अतः सर्वनाम्नोङेःस्मैः सर्वस्मै ङसिङ्योः
स्मात्स्मिनौ अतः सर्वनाम्नः एतयोरेतौ सर्वस्मा
त् आमिसर्वनाम्नः सुट् अदंतात्सर्वनाम्नो विहित

सर्वादीनि सर्वनामानि ॥ ४ ॥ न सर्वैः सर्व ॥ स:

कोस्मात्स्मिन्होनइसकारकेङसूकोस्मात्होंगे सर्वस्मात् सर्वस्य सर्वयोः अदंतनेप
रेसर्वनामतेविहितजोआम्हैतिसकोसुट्हो सर्वेषांसिद्दभया सर्वस्मिन्ङिकोस्मिन्
भया सर्वयोः सर्वेषां॥इसीप्रकारविश्वादिकसिद्दभयेउभशब्दनित्यद्विवचनांतहैतिस
काईहांपाठअकच्वास्तेहैअव्ययसर्वनाम्नामकच्प्राक्टेःइसकारकेअकच्आवताहैउभय
काःउभयकोउभयेदोनोंनेकैहैउभयशब्दकाद्विवचननहींकैयटकहिताहैउभयशब्दकाद्वि
वचनहैहरदत्तकहिताहैजेकोईकहैकैयटहरदत्तपरस्परविरुद्दपक्षकिसआशयिसूलय
केकहितेहैंजेकौनवकहिनादोंवेभाष्यकेआशयनूलयकेकहितेहैं उभयोःमणिः

उभयेदेवमनुष्याः इसभाष्यमेएकवचनवहुवचनदेषिग्रहकेवैयटकहितेहैं केंयंतरेण
यिस्वार्थकाः प्रत्ययाः भवंतिद्विवचनपरोनविद्धत्यतेइसभाष्यनुल्यकेदरदत्तकहितेहैं
इतरइतमप्रत्ययहैप्रत्यग्रहणहोयानदंतकाग्रहणहै सर्वग्रर्थविविसमशब्दसर्वना
महैतुल्यग्रर्थविविसर्वनामसंज्ञानहींहोतीकोईकहैंइसविखेकीप्रमाणहै नवकहिना।
यथासंख्यमनुदेशः समानांईहांसमानांषष्ठीतुल्यग्रर्थवालेसमशब्दकीहैईहांसर्वनासेम

एवं विरुद्धयोरुभयवंतोः उभयशब्दोद्विवचनांतः न
स्त्येतद्वयावयवकमर्थः उभयशब्दस्य द्विवचनंनास्ति
ग्रस्तीतिहरदत्तः उभयः उभयेइत्यादि इतरइतम
मौप्रत्ययौप्रत्ययग्रहणेतदंतग्रहणं इतिनदंताः
शब्दाः नेमइत्यर्द्धेसमः सर्वपर्यायस्तुल्यपर्याय।
स्तेनेहगृह्यतेसमानामितिज्ञापकात् पूर्वपराव
रदक्षिणोत्तरापराधराणिव्यवस्थायामसंज्ञायां
पूर्वेपूर्वाः स्वाभिधेयापेक्षावधिनियमोव्य
वस्थाव्यवस्थायांकिंदक्षिणागाथकाः कुशलाः

इत्यर्थः अवयवानांकिंतत्वात् कारवः स्वकाः प्राणीयाः आत्मीयाः इतिकांताः इति
पूर्वादीनिनवसप्तानीयाः स्वस्तीयातानां कं

मतके सूत्र नहीं भयाप्रमाण है पूर्वादिक नव शब्द सर्वशब्दकी न्यायी सिद्ध करणे जस ङि त
यरतः विकल्प होता है पूर्वपरअवरदक्षिणउत्तरअपरअधर इनोशब्दोंकों व्यवस्था विखे
असंज्ञाविखे सर्वनामसंज्ञा गणसूत्रने नेनेहीप्राप्त होयी है सो जस परे इंदया विकल्पकर
के होइसकरके पूर्वेभी भया पूर्वाः भी भया स्वनो पूर्वादिक शब्द है न तिनों करके अभिधे।

यवस्थाकथनेयोग्य दिग्देशकालहैतिसकरकेअपेक्षमाणजोअवधिनियमहैसोव्यवस्थाकही
दीहै गायकदक्षिणहैंचनरहैं इहांव्यवस्थावाचीदक्षिणशब्दनहींसर्वनामसंज्ञानहींभयी उत्तरः
२ कुरवः ईहांकुरुकीउत्तरसंज्ञाहै ज्ञातिधननेंअन्यअर्थविषेजोस्वशब्दहैतिसकोप्राप्तभयीजोसर्व
नामसंज्ञाहैसोजसपरतःविकल्पकरकेहोवेभयास्वांभीभया आपनेहैंआपहैयेअर्थहैज्ञाति
धनवाचीकास्वाःएकरूपभया ॥ ज्ञातिहैंधनहैनवाहकअर्थविषेचपुनःपरिधानअर्थवि
विषेअन्तरशब्दकोप्राप्तहोयीजोसर्वनामसंज्ञाहैसोजस्परतःविकल्पकरकेहोयअंतरेभीसर्व

नामयोर्था वा अंतरं बहिर्योगोपसंव्यानयोः बाह्येप
रिधानीयेचार्थेन्तरशब्दस्यप्राग्वत्संज्ञाजसिवाअन्तरे।
अन्तराःवागृहाःबाह्याइत्यर्थः अन्तरेअन्तराःवाशाट।
कापरिधानीयाइत्यर्थः पूर्वादिभ्योनवभ्योवाएभ्योङ
सिङ्योःस्मात्स्मिनौवास्तःपूर्वस्मात्पूर्वात् पूर्व
स्मिन् पूर्वे एवंपरादीनामपि तीयासमासेन मास
पूर्वापत्नीयासमासार्थवाक्येपिनमासेनपूर्वापर।
इंदेचसर्वनामताणवर्णाश्रमेतराणांविभाषाज
सिवर्णाश्रमेतरेवर्णाश्रमेतराः प्रथमचरमतया

कीतराभयाअंतराः गृहाः कीतराभयागृहअंतरहैनकबाहरहैनशाटकाअंतरहैनका
धोतीयापहिननेयोग्यहैनयेअर्थहै पूर्वादिकजोनवसंख्याकशब्दहैतिनकेपरेजोङसि
ङिहैतिनकोस्मात्स्मिन्विकल्पकरकेहोय पूर्वस्मात्भया पूर्वात्भीभया पूर्वस्मिन्
भया पूर्वेभीभया पूर्वः पूर्वौ पूर्वे पूर्वाः पूर्वं पूर्वौ पूर्वान् पूर्वेण पूर्वाभ्यां पूर्वैः
पूर्वस्मै पूर्वाय पूर्वाभ्यां पूर्वेभ्यः पूर्वस्मात् पूर्वात् पूर्वाभ्यां पूर्वेभ्यः पूर्वस्य पूर्वयोः

सर्वेषां सर्वस्मिन् सर्वे सर्वयोः सर्वेषु हे सर्व हे सर्वौ हे सर्वे हे सर्वाः इसीप्रकारपरश्च वारइत्यादिकाकेउच्चारणजाननेतृतीयासमासविधिमेसर्वनामसंज्ञानहीहोमासपूर्वशब्दमे तृतीयासमासहैसंज्ञानहीभयी रामशब्दकीन्याईहैतृतीयासमासार्थवाक्यविधिमेभीसं ज्ञानहीहोमासेनपूर्वः ईहांतृतीयासमासकायेअर्थहै ईहांभीसंज्ञानहीभयीमासेनपूर्वाय ईहांडे.कोस्मैनहीभया समासेपदअनहतिसेआवतासौफेरसमासेपदइसमेप्रमाणहै ई हविधिमेसर्वनामसंज्ञानहीहो वर्णाश्रमेतराणांईहांसहनहीआयावर्णाश्चआश्रमश्चइत

१५ स्यार्द्धकतिपयनेमाश्च नेनेमाः शेषं सर्ववत्. प्रथमेप्रथमाः १

२८ माः शेषंतद्वत्. तीयस्यङित्सुवा द्वितीयस्मै द्वितीयाय एवंतृतीयः निर्जरः जरायाजरसन्यतरस्यां जरायाः जरस्. वाअजादौविभक्तौपदांगाधिकारेतस्यतदंतस्य च निर्दिश्यमानस्यादेशाःभवंति एकदेशविकृतम नन्यवत्. इत्येकदेशविकृतस्यानन्यत्वाज्जरशब्दस्य जरस्. निर्जरसौ निर्जरसः इत्यादिपक्षेहलादौरामव २ त्. विश्वपाः दीर्घाज्जसिच दीर्घाज्जसिइविचनपूर्व सवर्णदीर्घः विश्वपौ विश्वपाः विश्वपां विश्वपौ सु

रश्च इतिवर्णाश्रमेतराः येहंदहैजसपरेहुंदयासर्वनामसंज्ञाविकल्पकरकेहो वर्णाश्रमेत रेवर्णाश्रमेतराःविकल्पभया नेमशब्दकोनित्यसंज्ञाहैप्रथमादिकाकोनहीइसवास्तेसूत्र हैप्रथमचरमतयअल्पअर्द्धकतिपयनेमएहशब्दजसपरेहुंदयांवासर्वनामसंज्ञकहोन केमेनेमाशेषः सर्वकीन्याईजाननेप्रथमेप्रथमाःजसपरतःइनोंशब्दाकीसर्वनामसंज्ञा विकल्पभयी होरूपरामशब्दकीन्याईजानने तयकरकेतयप्रत्ययांतकाग्रहणहैतीय प्रत्ययांतकोसर्वनामसंज्ञाविकल्पतेहोडि.तपरेहुंदयाइसकरकेद्वितीयस्मैभीभयाद्वि

तीयाय भी भया द्वितीयस्मात् द्वितीयात् द्वितीयस्मिन् द्वितीये इसी प्रकार तृतीय शब्द है निर्जरः ईहां सु को रेफ विसर्ग भये निर्जरौ ईहां जरा शब्द को जरस् होय अजादिक विभक्ति परे ऊंदया रसू ह्रस्व क रके निर्जर मे जरा शब्द को जरस् होने लगा था तव शंका भयी ईहां जब नहीं ईहां निर्जर शब्द है कैसे जर सो देश होवेगा तव कहिना पदग्रथि कारवि खे ऊं अंग धिकार विवेति सको कार्य होव पुनः तदंत को कार्य न होय ईहां केवल जरा शब्द है तदंत भी है कि सको होवे तव कहिना निर्दिश्यमान को आदेश होन जिसको नाम लय के उच्चारण कीया है तिस को आदेश होन जे कोई कहे ना म जरा शब्द का सूत्र मे है ईहां जर शब्द है तव कहिना एक देश मे जो विकार वाला है सो तिस की न्यायी मानना जैसे छि

इनपुंसकस्य स्वादिपंचवचनानि सर्वनामस्थान सं
ज्ञानि स्युः क्लीवस्य स्वादिषु सर्वनामस्थाने कप्रत्या
यावधिषु स्वादिषु सर्वनामस्थानेषु पूर्वपादसंज्ञं स्या
त् पचिभ पादिषु कप्रत्ययावधिषु स्वादिषु सर्वनाम ॥ ६६ ॥
स्थानेषु पूर्वं भं स्यात् आकडादेका संज्ञा कडाराकर्म
धारयः इत्यतः प्रागेकस्यैकैव संज्ञा ज्ञेया पाय रानवा

न्न छेद्य जो था है सो था ही अवावता ही नां सांतर नहीं होता जैसे यह ई था उसने ऊन नो से रख सकते है सो से रुपरिमिति ही अवावती है पाऽ अई सेर नहीं अवावती है जैसे जरा शब्द आकार मात्र ने ही अहो यों भी निर्जरा शब्द ही अवावता है इसने जर को जरस् विकल्प करके भया सकार परे अ तु मे मिलना गया निर्जरसौ निर्जरसः इत्यादिक सिद्ध भये विकल्प के रूप औ रभ्यां भिसादि का के रूप राम शब्द की न्यायी जानने विश्वं पातीति विश्वपाः द्विश्वपा अमे इहां सकार को ससजुषोरुः करके रेफ भया रेफ को विसर्ग भया विश्वपाः सिद्धं विश्वपा औ ईहां प्रथम यो: पूर्वं करके दीर्घ पाया सो न दीर्घ का निषेध भया दीर्घ ने जस् पर तः च पुनः इचु परे ऊंट या पूर्व सवर्ण दीर्घ नहीं हो वृद्धि भयी विश्वपौ विश्वपाः ईहां दीर्घ भया सकार को रेफ विसर्ग भ

ये विश्वपां इत्यादि सिद्ध हैं। भया विश्वपौ स्वादिक जो पंच वचन हैं सो सर्वनामस्थान संज्ञक
होते न नपुंसक विदित वही होते न कप्रत्यय की अवधि दिवे स्वादिक असर्वनामस्थान परे हुए या
सुर्व पद संज्ञक हो यादिक अजादि कप्रत्यय की अवधि नी करस्वादिक असर्वनामस्थान परे हुए
ए या पूर्व भसंज्ञक हो आकडारा मेदे का संज्ञाः इस सूत्र ने उपरान्त कडारा कर्मधारयः इस सू॰
ने पूर्व पदकी पदसंज्ञा नेरी परसंज्ञा है च पुनः अनवकाश है ॥ अंगस्य लोपः कथं भूतस्य अं
गस्य आकारान्तो यो धातुस्तदन्तस्य पुनः कथं भूतस्य भस्य अंगका लोप हो कैसा अंग है आका
रान्त जो धातु है सो अन्त है जिस अंग पर्यन्त के सा अंग है भसंज्ञक अंग है अथवा आकारान्त जो
धातु है सो है अन्त जिसके ऐसा जो भसंज्ञक अंग है तिसका लोप हो इस सूत्र करके अव विभ

आतो धातोः आकारान्तो यो धातुस्तदन्तस्य भस्याङ्गस्य लो
पः विश्वपः विश्वपा विश्वपाभ्यामित्यादि धातोः किं हा
हान् आत इति योगविभागादधातोरपि क्वचित् हाः
अः एवं शङ्खध्मादयः हरिः प्रथमयोः पूर्वसवर्णे हरी
जसि च ह्रस्वान्ताङ्गस्य गुणः जसि हरयः ह्रस्वस्य गुणः

ङि परे हुए ह्या आकारका अलोन्त्यस्य करके लोप होता गया विश्वपास सर्व हैं लशक्क करके श
कारस्त भया तदनन्तर आतो धातोः करके यकारसे आकारका लोप भया परे मिलया वि
श्वपासिद्ध विश्वपा विश्वपाभ्यां कोई कहै सूत्रमे धातु पद किसवास्ते है तबक हिना धा
तु पद नहीं राखी ये तब हाहान् ईहां प्रातिपदिक आकारका भी लोप हो जाता ये धातु नहीं
कि दोकु योगविभाग ते धातु भिन्न आकारका लोप होता है जैसे हाहः अः ईहां प्रत्ययके आ
कारका लोप होता है योगविभाग ते आतः भिन्न सूत्र है धातोः भिन्न सूत्र है भसंज्ञक आका
रका लोप हो भसंज्ञक धातु के आकारका लोप हो योग विभाग का ये स्वरूप है हाहाः हा
हौ हाहाः हाहां हाहौ हाहान् हाहा हाहाभ्यां हाहाभिः हाहैः हाहाभ्यां हाहाभ्यः

हाहाः हाहाभ्यां हाहाभ्यः हाहौः हाहानां हाहे हाहौः हाहासु हे हाहाः हे हाहौ
ग हे हाहाः इसीप्रकार कथाकारांत गोरभी धातुन भिन्न जानाने ॥ हरिशब्द प्रातिपदिक तें एकत्वविव
क्षाविवि सु आया हरि स् इहां सु का उकार इत् भया सकार को रेफ भया रेफ को विसर्ग भया
हरिः सिद्ध भया हरी औ इहां प्रथमयोः पूर्वसवर्णः कर के इकार औकार के स्थान में दीर्घ ईकार
भया हरी सिद्ध ह्रस्वांत अंग को गुण हो जस् परे हुए हरयः जस् इहां जु इ कार के ज कार इत् भ
या इकार को एकार गुण भया तदनंतर एचोयवायावः कर के एकार को अय् भया सकार के
रेफ विसर्ग भये हरयः सिद्ध ह्रस्व को गुण हो संबोधन विभक्ति में हे हरे हे हरी हे हरयः हरी

संबुद्धौ हे हरे हे हरी हे हरयः हरिम् हरी हरीन्
शेषो घ्यसखि ह्रस्वौ याविदुतौ तदन्तं सखिवर्ज्यं घिसं
ज्ञं स्यात् आङो नास्त्रियाम् घेः परस्याङो ना स्यादस्त्रि
यां आङिति टासंज्ञा हरिणा हरिभ्यां हरिभ्यः
घेर्ङिति घिसंज्ञकस्य गुणः ङिति सुपि हरये
हरिभ्यां हरिभ्यः गुणे कृते ङसि ङसोश्च एङोङ

म् इहां अमि पूर्वः भया हरिम् हरी हरि शस् इहां ल शक्वतद्धिते कर के शकार इत् भया त
दनंतर प्रथमयोः पूर्वसवर्णः कर के इकार अकार के स्थान ईकार दीर्घ भया तदनंतर त
२४ स्मा सो नः कर के सकार को नकार भया हरीन् सिद्ध भया ह्रस्व जो इत् उत् हैं सो अंत है जि
के एसा जो सखि भिन्न शब्द है सो घिसंज्ञक हो घिसंज्ञा का फल कहि ना है घिसंज्ञक ने परे
टा को ना आदेश हो स्त्रीलिंग विषे न हीं हो आङ् टा की संज्ञा है हरि टा इहां टा को ना भया नकार
को णत्व भया हरिणा सिद्ध भया घिसंज्ञक को गुण हो ङित् सुप् परे हुए हरि ङे इहां ल श
क्व कार के ङकार इत् भया तदनंतर घिसंज्ञक हरि शब्द को गुण भया तदनंतर एचोयवायावः

कारकेएकारकोअयुभयाहरयेसिद्धभया विपदमत्येईद्धांगुणनिषेधवास्तेहैङि· नुपदहरिभ्यां ईद्धांगुणनिषेधवास्तेहैसुपृथदपद्धीईहीगुणनिषेधवास्ते हरिङ·सु·ईद्धांयेङितिकरकेगुणभया तदनंतरएङ·तेङ·सिङ·सुकाअतुपरेङ्कंदयापूर्वरूपएकादेशहोकेसकारकेअकारपूर्वरूपभयारेफ·विसर्गभये हरेः सिद्धं हरिभ्यां हरिभ्यः हरेः गुणभयापूर्वरूपभया हरि ओस्·ई होइकोयण्·विकारकेरकारकोयण्भयापरेओकारमेमिलासकारकोरेफ।विसर्गभये हर्योः सिद्धं हरि आम् ईद्धांह्रस्वयाधोनुट्करकेनुट्आम्केपूर्वआयानामिकारकेदीर्घभयाणत्वभया हरीणां सिद्धं हरिङि·ईद्धांइतउत्नेपरेङि·कोऔतहोयधिसंज्ञकहोकोगुणहोइसकारकेङि·कोऔ

हर्योः हरीणां अच्चघेः इदुद्भ्यामुत्तरस्य ङेरौत् घेरन्तू हरौ हर्योः हरिषु अनङ्सौ सख्युरंगस्यानङादेशोसंबुद्धौसौ अलोन्त्यात्पूर्वउपधा सर्वनामस्थानेचासंबुद्धौ नांतस्योपधायादीर्घोसंबुद्धौसर्वनामस्थाने अपृक्तएकाल्प्रत्ययः एका

कारभयाहरीकेइकारकोअकारभयापश्चात्वृद्धिभयी हरौसिद्धं हर्योः हरिषुषत्वभया इसीप्रकारसेविश्वाग्निकविइत्यादिजानने इः ई अयः ई ई ईन् इना इभ्यां इभिः अये इभ्यां इभ्यः येः इभ्यां इभ्यः एः योः ईनाम् औ योः इषु इणात्वहरिकीन्यायीहै उः ऊ अवः उं ऊ ऊन् उभ्यां उभिः अवे उभ्यां उभ्यः ओः उभ्यां उभ्यः ओः वोः ऊनां औ वोः उषु इसीप्रकारविस्माभानुइत्यादिकजानने साविइसखिअंगकोअनङ्होसअसंबुद्धौसुपरेहंदया अंत्यअलतेजोपूर्ववर्णहैसोउपधासंज्ञकहोनांतपदकीउपधाकोदीर्घहोअसंबुद्धिसर्वनामस्थानपरेहंदया एकअलवालाजोप्रत्ययहैसोअपृक्तसंज्ञकहोहल्लेनभ्योपरेजोसुतिसिंदे।

तिनके परे हल् का लोप करता है दीर्घ जो ङी अरु आप् हैं सो अन्त हैं जिसके तिसते परे सु का अपृ।
क्त हल् लोप करता है प्रत्ययलोप होयां भी प्रत्यय के आश्रय जो कार्य है सो हो ॥ प्रातिप
दिकसंज्ञक जो पद है तदंत जो नकार है तिसका लोप हो सखि सु इहां प्रथम अनङ् सो सू
त्र करके सखि के इकार को अनङ् भया हल् ङ्या करके ङकार इत् भया उपदेशे ऽजनु करके अका
र इत् भया सखन् स् भया सकार की अपृक्त संज्ञा भयी अन्त्य वर्ण नकार है तिसते पूर्व खकार मे अ
कार है तिसकी उपधा संज्ञा भयी नांत पद की उपधा को दीर्घ भया सखान् स् भया न हलंत
र हलंत ते परे सु का लोप भया प्रत्ययलोप भयां पदत्व है नदंत नकार प्रातिपदिकांत नकार का।

हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् । हलन्तात्परं दी
र्घौ यौ ङ्यापौ तदन्ताच्च परं सुतिस्यपृक्तं हल् लुप्यते
प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम् प्रत्यये लुप्तेऽपि तदाश्रि
तं कार्यं स्यात् नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य प्राति
पदिकसंज्ञकं यत्पदं तदन्तस्य नकारस्य लोपः
सखा सख्युरसंबुद्धौ सख्युरङ्गात्परं संबुद्धिवर्जं
सर्वनामस्थानं णिद्वत् अचो ञ्णिति अजन्ताङ्गा
स्य वृद्धिर्ञिति णिति सखायौ सखायः हे सखे
सखायं सखायौ सखीन् सख्या सख्ये ख्यत्या

लोप भया सखा सिद्ध भया सो ई सु को इहां सु को टा की न याटेः सूत्र करके इ लोप की नया।
भी सखा होता है सखि अंग ते परे संबुद्धि रहित जो सर्वनामस्थान है सो णित् हो तहां णित् प्र
त्यय परे अजंत या मा सखि औ ई हां औ की णित् संज्ञा भयी णित् परे अजंत या इकार को ऐकार वृद्धि।

भया ऐकार को आय् भया परे मिला सखायौ सिद्ध भया इसी प्रकार जस् अम् औट् परन्तः भीः
वृद्धि भयी नदनंतर आय् भया सखायः संबोधन विषे गुण भया हे सखे सखायं सखायौ
सिद्ध भये सखीन् दीर्घ भया नकार भया आगे इकोयणचि करके इकार को यकार होना
पा सख्या सखिभ्यां सखिभ्यः सखे सखिषु सुसंज्ञा खितिशब्द नेखीनीशब्द नेयणादेश
कीतस्मातेपरेङ सिः ङ सु के अकार को उकार होइ सकार के अकार को उकार भया सख्युः सिद्ध भ
या इसी प्रकार ङ सु की भी जानना ईश्न् उत् नेपरे डि नो इत्संज्ञा सखि औ न्लोपशाखिडि ईद्धार कारने परे
डि को औकार भया नदनंतर इकोयणचि करके इकार को यकार भया परे मिला सख्यौ सिद्ध भ

ख्यत्यात्परस्य ॥ खितिशब्दाभ्यां खीतीशब्दाभ्यां कृतयणा
देशाभ्यां परस्य ङसिङसोरुत् ॥ सख्युः ॥ ॥
औत् ॥ इदुद्भ्यामुत्तरस्य ङेरौत् ॥ सख्यौ ॥ सख्योः ॥ स
खिषु ॥ पतिः समास एव घिसंज्ञः ॥ पत्या पत्ये प
त्युः पत्योः ॥ समासे तु भूपतये ॥ कतिशब्दो नित्यं ब
हुवचनान्तः ॥ बहुगणवतुडति संख्या ॥ डतिच ॥
डत्यन्ता संख्या षट्संज्ञा स्यात् ॥ षड्भ्यो लुक् ॥ ष
ट्संज्ञकेभ्यः परयोर्जश्शसोर्लुक् ॥ प्रत्ययस्य लुक्
श्लुलुपः ॥ लुक्श्लुलुप्शब्दैः कृतं प्रत्ययादर्श

भ्यः ३ कतीनां कतिषु ॥ ३३ ॥ ३३ ॥

सखि ङि औ से ईद्धार को यणचि करके इकार को यकार भया परे औ मे मिला सकार को रेफ विसर्ग
भये सख्योः सिद्ध सखिषु समानं ख्यायते जनैः इति सखा मित्र का नाम है पतिः पती य

नयः पतिं पती पतीन् पतिशब्द समास विषे ही घिसंज्ञक होइ सनेसा हरिकी न्याई अ
गले रूप जानने मूल में लिखे है भूपतिशब्द के संबोधनरूप हरिशब्द की न्याई जानने ई हं समा
सँकृतिशब्द नित्य बहुवचनांत है बहुगुणवतुडति पद्॰ प्रत्यय संख्या संज्ञक होन डति
प्रत्ययांत जो संख्या ते संज्ञक होय षट् संज्ञकों ने परे जस् शस् का लुक होय लुक् लुमत् शब्दों कर
करकीया जो प्रत्यय का अदर्शन है सो क्रम ने सो सो संज्ञा हो षट्श्लो लुक् यह लुक संज्ञा है
जुहोत्यादिभ्यः श्लुः यह श्लु संज्ञा है जनपदे लुप् इको यह लुप् संज्ञा है कोई कहे एक लोप की
तीन संज्ञा किस वास्ते है तब कहिना लोप होया संधि फेर नहीं होनी लुक् भया होनी है

ल॰कौ॰सं॰भा॰टी॰ ७

त्रिशब्दो नित्यं बहुवचनांतः त्रयः त्रीन् त्रिभिः
त्रिभ्यः २ त्रेस्त्रयः त्रिशब्दस्य त्रय आदेशः स्यादामि
त्रयाणां त्रिषु द्विशब्दो द्विवचनांतः त्यदादीना
मः एषामकारोंतादेशः विभक्तौ द्वौ २ द्वाभ्यां
३ द्वयोः २ पातीति लोकमिति पपीः सूर्यः
पपी पप्यः पपीं पप्यौ पपीन् पप्या पपीभ्यां

सु विषे होती भी है नहीं भी होती लुप् श्विधानं अस्य इति लुमान् नने नलुप् नालुप्ना याहे
कर के एक लोप भया निमित्त न के अंग को कार्य नहीं होक तिशब्द डत्यंत है इस की ष
ट् संज्ञा भयी षट् संज्ञक होने परे जस् शस् आगे रूप सहा में है लुक् भया कति क
ति भया अब प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणं करके जस्परे मत के जसि च करके गुण किस
वास्ते नहीं होना तब कहि नाई हो लुक् शब्द करके लोप भया है अंग की र्य नहीं होना ॥
त्रिशब्द बहुवचनांत है त्रि जस् ई होउ त्र करके जकार इत्ल भया तदनंतर जसि च सूत्र क

रकेत्रिको एकार गुण भया तदनंतर एकारको एचोऽयवायावः करके अय् रे मिलया सका
रको रेफ विसर्ग भये त्रयः सिद्ध त्रिशस् ईहां लशक्वतद्धिते करके शकार इत् भया प्रथमयोः पूर्व
करके इकार दीर्घ भया तस्माच्छसो नः पुंसि करके सकारको नकार भया त्रीन् सिद्ध त्रिभिः रेफ
विसर्ग भये त्रिभ्यः २ त्रिशब्दको त्रय आदेश होय आम् परे होंदय त्रि आम् ईहां त्रिको त्रय हुआ।
वा त्रय आम् भया ह्रस्वनद्यापो नुट् करके आम्के पूर्व नुट् आया उ ट् इत् भया त्रिः एकवचन
अनुकरण ने ईहां बहुत्ववाची त्रि नहीं। द्विशब्द द्विवचनांत है त्यदादिकाको अकार हो
विभक्ति परे होंदय आद्विपर्यंत त्यदादिकाको अकार होय एह शब्द है द्वि औ ईहां द्वि के इकारको

पपीभिः पप्ये पपीभ्यां पपीभ्यः पप्यः प
पीभ्यां पपीभ्यः पप्यः पप्योः पप्यां पपी
पप्योः पपीषु एवं वातप्रम्यादयः वातंप्रमि
मीते इति वातप्रमीः वह्व्यः श्रेयस्यो यस्य सः ।
बहुश्रेयसी बहुश्रेयस्यौ बहुश्रेयस्यः यूस्त्र्या
ख्यौ नदी ईदूदंतौ नित्यस्त्रीलिंगौ नदीसंज्ञौ स्तः ।
स्तः प्रथमलिंगग्रहणाच्च पूर्वं स्त्र्याख्यस्योपस

अकार भया तदनंतर रहा द्वि भया द्वौ द्वौ सिद्ध भया द्वाभ्यां २ ईहां सुपि च करके दीर्घ भया
द्वयोः २ ईहां ओसि च करके एकार भया एकारको अय् भया पपीः ईहां रेफ विसर्ग भये
सूर्यका नाम है आगे अजादिक विभक्ति परे होंदय उकोयण विकरके ईकारको यका
र होना गया परे मिलना भया ॥ बहुत हो न श्रेष्ठ स्त्रीयां जिसकी यां सो बहुश्रेयसीक
ही दाहे इहास्य का नाम भया बहुश्रेयसी सु ईहां सकारका लोप भया बहुश्रेयसी व

हुश्रेयसी औ ई इहां ईकोयणचि करके ईकारकोयकारभया बहुश्रेयस्यौ बहुश्रेयस्यः ईदंतन्नदंत जो नित्यस्त्रीलिंग है सो नदी संज्ञक होनै सकार के बहुश्रेयसी शब्द ईदंत है इसकी नदी संज्ञा भयी जे कोई शंका करे श्रेयसी शब्द स्त्रीलिंग है बहुश्रेयसी शब्द तो पुंल्लिंग है न वक्तव्य नित्यस्त्री लिंग है अव गोण होयांभी नदी संज्ञा वक्तव्य है नदी संज्ञा का फल है अंतार्थ को न यंत को ह्रस्व होते बहुश्रेयसी बहुश्रेयसी ई इहां प्रथमयोः पूर्वः भया बहुश्रेयस्यौ ई इहां यण भया बहुश्रेयसी नु ई इहां प्रथमयोः पूर्वः करके दीर्घ भया तस्माच्छसोनः करके सकार को नकार भया बहुश्रेयस्या यण भया बहुश्रेयसीभ्यां बहुश्रेयसीभिः नद्यंतते परे जो ङित् है तिनको आट् का आ

येनत्वेपि नदीत्वं वक्तव्यमित्यर्थः अन्तार्थेन यो ईह
ङः सं बुद्धौ हे बहुश्रेयसि आपनद्याः नद्यन्ता
त्परेषां ङितामाट् आटश्च आटो विहितैरेका
देशः बहुश्रेयस्यै बहुश्रेयस्याः ङेराम्नद्या
म्नीभ्यः नद्यंतादावन्तान्नीशब्दात्परस्य ङेराम् ॥
बहुश्रेयस्या बहुश्रेयस्योः बहुश्रेयसीषु ॥
अतिलक्ष्मीः शेषं बहुश्रेयसीवत् प्रधीः प्र

गम को दो आट् ते अच् परे इहां दया पूर्व पर के स्थान विषे वृद्धि एकादेश हो बहुश्रेयसी ङे ई इहां ङे के पूर्व आट् आया ङकार इत् भया तदनंतर आ कार ए कार मिल के ऐकार वृद्धि भयी तदनंतर ईकोयणचि करके ईकार को यकार भया परे ऐकार में सब मिले बहुश्रेयस्यै सिद्ध भया बहुश्रेयसीभ्यः २ बहुश्रेयसी ङस् ई इहां ङस् के पूर्व आट् आया ङ इत् भया सवर्ण दीर्घः भया ईकोयणचि करके ईकार को यकार भया परे मिलया बहुश्रेयस्याः सिद्ध भया आगे अनादिक परतर ईकोयण विलगा बहुश्रेयसी ङि ई इहां नद्यंतते आवंतते नीशब्दते प

रैहि॰ कों ग्राम् होइ सकार के नष्ट भये ते परे ङि॰ कों आम् भया नदंनंतर यण् भया बहुश्रेयस्यां स्त्रि
हुभया शेष पपीकी न्याई जाननें इसी प्रकार अतिलक्ष्मी शब्द जानना गो॥ सुधीपम जैसे कर
के ह्रस्व श्रेयसी को नहीं होना ईससे बहुश्री सेः स कार के ह्रस्व निषेध है ॥ प्रकृष्ट धीर्य
स्य सः प्रधीः प्रधी औ ई है श्नु प्रत्ययांत को इवर्ण उवर्णांत धातुको वहुरनः भ्रू इस अं
गको इयङ् उवङ् हो अजादिक प्रत्यय परे हुंद या धातुका अवयव संयोग पूर्व न हीं हो वैसे
सा जो इवर्ण है सो है अंत जिसके ऐसा जो धातु है सो है अंत जिसके ऐसा जो अनेकाच् अंग है

विश्नुधातुभ्रूवां य्वोरियङुवङौ श्नुप्रत्ययांतस्ये
वर्णोवर्णांतधातोर्भ्रू इत्यस्य चांगस्य इयङुवङौ
स्तोजादौ प्रत्यये इति प्राप्ते एरनेकाचोसंयोगपू
र्वस्य धात्ववयवसंयोगपूर्वो न भवति य इवर्ण
स्तदंतो यो धातुस्तदंतस्यानेकाचोंगस्य यण्स्या
दजादौ प्रत्यये प्रध्यौ प्रध्यः प्रध्यं प्रध्यौ प्रध्यः प्र।
ध्या प्रध्यि शेषं पपीवत् एवं ग्रामणीः ङौ तु।
ग्रामण्यां गतिश्च प्रादयः क्रियायोगे गतिसंज्ञा।

है तिसको यण् हो अजादिक प्रत्यय परे हुंद यों प्रधी औ ई हो इयङ् पाया सो न वयण् भया र का
ल तथा नुधी है प्रधी अंग भी है अजादिक प्रत्यय औकार परे है प्रध्यौ सिद्ध इस प्रधी शब्द को अ
नुपरतः यण् ही भया और को ई सूत्र नहीं लगना है ग्रामणी शब्द भी प्रधी की न्याई है ङि॰
परतः ग्राम ण्यं होना है प्रधीः प्रध्यौ प्रध्यः प्रध्यं प्रध्यौ प्रध्यः प्रध्या प्रधीभ्यां प्रधी
भिः प्रध्ये प्रधीभ्यां २ प्रधीभ्यः २ प्रध्यः २ प्रध्यो २ प्रध्यां प्रध्यि प्रध्योः प्रप्रधीषु।
क्रियायोग विषे जो प्रादिक है सो गति संज्ञक हो न गति कारक ते इन रनो पूर्व पद है तिस

को यण् नहीं हो जे कोई कहै नै से प्रधी है नै से शुद्धधी है नै से सुधी है इन को यण् कि सवास्ते
नहीं होता तब कहिना शुद्धधीर्यस्य सः शुद्धधीः शुद्धधी ओ ई हां गतिकारक ने इतर पूर्वा
है प्रथमा पूर्व है इस को यण् नहीं होना सो इयङ् होना गया सुधी शब्द में स्त्र यण् को निषे
थ करदा है भू शब्द को सुधी शब्द को यण नहीं हो इस कारके यण नहीं हो या इयङ् होना ग
या सुधीः सुधियौ सुधियः इत्यादिक जानने ॥ ॥ क्रोष्टु शब्द की तृज्वत् हो संबोध
न भिन्न सर्वनामस्थान परे हुंदया जे कोई कहै तृचा तुल्यं तृज्वत् तृच् करनो न्तुल्य है सो।

सुः गतिकारकेतरपूर्वपदस्य यण् नेष्यते
शुद्धधीः शुद्धधियौ शुद्धधियः इत्यादि नमूःसु।
वियोः एतथीं विसुधियत्न सुधियौ सुधियः
इत्यादि सुखमिच्छतीति सुखीः सुतमिच्छती
ति सुतीः सुख्युः सुत्युः शेषं प्रधीवत् शम्भु।
र्हरिवत् एवं भान्वादयः तृज्वत्क्रोष्टुः असम्बु
द्धौ सर्वनामस्थाने क्रोष्टुस्थाने क्रोष्टृ प्रयोक्तव्य इ
त्यर्थः ऋतो ङि सर्वनामस्थानयोः ऋदन्तांगा।
स्य गुणः ङौ सर्वनामस्थाने च इति प्राप्ते ऋदुश।

तृवत् कहीदा है तृच् के तुल्य पक्ष आदेश क्रोष्टु शब्द को सब वाले नहीं होवे तब कहिना
ई हां रूपातिदेश है तत्समानवर्ण तत्समानार्थवाचकत्वं रूपातिदेशः तुल्य वर्ण
होन तत्स्यार्थ होवो सो रूपातिदेश कहीदा है क्रोष्टु शब्द उकारांत भी सृगालवाचक
है ऋकारांत भी सृगालवाचक इस नेक हिंदा है क्रोष्टु के स्थान विषे क्रोष्टृ प्रयोग क
रणे योग्य है ऋदंत अंग को गुण होवे ङि परे हुंदया अथवा सर्वनामस्थान परे हुंदया
या क्रोष्टु ई हां को स्व शब्द ऋान्त क्रोष्टृ तृज्वत् करके ऋदंत भया ऋतो ङि सूत्र करके

गुण प्राप्ति भयी सौ ति सकौ वा धके अनङ् भया ऋदंतानां कौ उशनस् पुरुदंश अनेहस
इनौं शब्दहों कौ अनङ् कौ होअसंबुद्धि सुपरे ऽहं दया क्रोष्टृ न् सु भया तद नेन र अप तृन् तृच् स्वसृ
नप्तृ नेष्टृ त्वष्टृ क्षत्तृ होतृ पोतृ प्रशास्तृ इनौं कौ इपधा कौ दीर्घ हो असंबुद्धि सर्वनामस्थान परे ऽहं
दया र स कर के उपधा कौ दीर्घ भया क्रोष्टा सिद्ध भया क्रोष्टृ औ ऐ ऽहां ऋतो ऋकार के अ कौ अर्
गुण भया अर न कार के उपधा कौ दीर्घ भया क्रोष्टारौ सिद्ध भया क्रोष्टृ जस ऐ ऽहां गुण भया
पा दीर्घ भं सकार के रेफ विसर्ग भये क्रोष्टारः सिद्ध क्रोष्टृ अम् ई ऽहां गुण भया दीर्घ भया क्रोष्टारं

नस्पुरुदंशोनेहसांच ऋदंतानामुशनसादीनां चानङ्
स्यादसंबुद्धौ सौ अप्तृन्तृच्स्वसृनप्तृनेष्टृत्वष्टृक्षत्तृ।
होतृपोतृप्रशास्तॄणां अवादीनामुपधायादीर्घो।
संबुद्धौ सर्वनामस्थाने क्रोष्टा क्रोष्टारौ क्रोष्टारः क्रो
ष्टारं क्रोष्टारौ क्रोष्टून् विभाषा तृतीयादिष्वचि अ
जादिषु तृतीयादिषु क्रोष्टुर्वा तृज्वत् क्रोष्ट्रा क्रोष्टुना
क्रोष्ट्रे क्रोष्टवे ऋत उत् ऋतो ङसिङसोः ऋति उदेका
देशः रात्सस्य लोपः क्रोष्टुः॥ क्रोष्ट्रोः क्रोष्ट्रोः क्रोष्टोः

करके नकार भया अजादिक तृतीयादिक विभक्ति परे ऽहं दया क्रोष्टु शब्द कौ विकल्प क
रके तृज्वद्भाव दो क्रोष्टु टा ई ऽहां तृतीया परे है ऋ कौ यण् भया क्रोष्टृ ऋ टा चु ष्टु क के रकार
हृत भया र कौ यण विकर के ऋ कौ रेफ भया क्रोष्ट्रा सिद्ध भया विकल्प पक्ष में विस्तुश
हकी मायी हो ना ना या क्रोष्टुना ई ऽहां ना कौ घि ने परे ना भया क्रोष्टुभ्यां क्रोष्टुभिः क्रोष्ट

ई ईहां श्को यण विकरके रेफ भया क्रोष्ट्रे सिद्धं जहां हे ङि. निकरके गुण भया अड् भया नहां
क्रोष्टवे सिद्धं क्रोष्टुभ्यां क्रोष्टुभिः क्रोष्ट. ङ. स् ईहां अकारनें ङ. स् ङ. स् को अनुपरे ङंद याद्वेव य
रके स्थानमेउ नपका बृ्पा हो रेफ ने परे संयोगांत सकार का ही लोप हे अन्य का नहीं
होता शाक्रकरके ङ. कार इत्त भया अनेपरे अकार है दोनों के स्थानमें उ भया सकार लोप भया

प. ई विसर्ग भया क्रोष्टुः २ सिद्धं उकारांत को गुण भया
अकार पूर्व रूप भया क्रोष्टोः २ क्रोष्टुभ्यां क्रोष्टुभ्यः क्रोष्टुः क्रोष्टोः सिद्धं क्रोष्टोः ईहां ङो

नुमचिरतृज्वद्भावेभ्यो नुट् पूर्वविप्रतिषेधेन क्रोष्टूनां क्रो
ष्टरि क्रोष्टौ पक्षे हलादौ च शंभुवत् हूहूः हूहौ हूहः
इत्यादि अतिचमूश्च हेतु नदीकार्यं विशेषः खलपूः
ओः सुपि धात्ववयवसंयोगपूर्वो न भवति य उवर्णान्त
दंतो यो धातुस्तदंतस्यानेकाचोऽसंयोगस्य यणस्यादचि सु
पि खलप्वौ खलप्वः इत्यादि एवं सुष्ठु लुनातीति सु
लूः सुल्वौ इत्यादयः स्वभूः स्वभुवौ स्वभुवः॥

स् परतः यण भया क्रोष्टोः सिद्धं अनुपरतः नुम ने रेफ विधि ने तृज्वद्भाव ने पूर्वविप्रतिषे
धकरके नुट् होवारी गां ईहां नुम् विधि है तिस णां ईहां रेफ विधि है क्रोष्टु नां ईहां तृज्व
द्भाव है तृनामु बाथ के नुट् हो क्रोष्टु आम् ईहां तृज्वद्भाव भी पावासी नुट् भी पावासी को
कौन हो वे वार्त्तिक ने नियम कीया पूर्वविप्रतिषेध करके नुट् ही हो आम् परतः नु
ट् भया नामि करके दीर्घ भया क्रोष्टूनां सिद्धं क्रोष्टरि ईहां तृज्वद्भाव डि. ऋकार के गुण भ
या विकल्प मे च पक्षे हलादि क परतः शंभु शब्द की न्याई जानना क्रोष्टोः क्रोष्टोः

क्रोष्टुः क्रोष्टुगीदड़का नामहै हेक्रोष्टुः हेक्रोष्टो ह्रस्वस्यगुणः भया क्रोष्टुः सुकोरे
रुविसर्गभये क्रोष्टारौ क्रोष्टारः ऋकोयणादिकरकेयणहोनागया क्रोष्टून् अमिपूर्वः भया
क्रोष्टून् प्रथमयोः पूर्वसवर्णकेदीर्घभयातस्माच्छसोनः पुंसिकरकेनकारभया अतिचमूश
ब्दविषेसंबोधनविषेह्रस्वभयाङे.ङ.स्परतः आट्आयाङि.कोआम्भयाहेअतिचमु
अतिचम्वै अतिचम्वाः अतिचम्वांभयेअन्यत्रऋकोयणादेशभया ॥ खलपूनामिशतिरुक्त
पूः खलपू औ ईदोंधात्वकाअवयवसंयोगपूर्वनहीहोवेऐसाजोउवर्णहैसोहैअंतजि

र्षाभूः वर्षाभ्वश्चअस्ययणस्यादचिसुपि वर्षाभ्वावि
त्यादि दृन्भूः दृन्करपुनः पूर्वस्ययणवक्तव्यः दृन्भ्वौ।
करभूः करभ्वौ पुनर्भूः पुनर्भ्वौ धाता धातारौधा
तारः ऋवर्णात्रस्यणत्वंवाच्यंधातॄणां एवंनप्त्रादयः
नप्त्रादिग्रहणंव्युत्पत्तिपक्षेनियमार्थं तेनेहन पि
ता पितरौ पितरः शेषंधातृवत् एवंजामात्रादयः
ना नरौ नरः नरं नृच अस्यवामिदीर्घः नृणां नॄणां

सकेऐसाजोधातुहैसोहैअंततिसकेऐसाजोअनेकाच्अंगहैतिसकोयणहोअचसुप
परेक्रमदयाईदोंधातुकाअवयवकारसंयोगपूर्वकनहीहैतदंतधातुरुपधातुहैसे
खलपदकेअंतहैऐसाअनेकाच्अंगखलपूहैतिसकोयणवकारभया खलप्वौ खलप्
वः तिदुभयेखलप्वं खलप्वौ खलप्वः खलप्वा खलपूभ्यामित्यादि ऊंसुधियिसूत्रनेओ
रनासूत्राकीबाधाकरीहै इसीप्रकारसुलूः सुल्वौरित्यादिकनानेअस्वयंभवतीति
स्वयंभूः स्वयंभुवौ स्वयंभुवः स्वयंभुवं स्वयंभुवौ स्वयंभुवः स्वयंभुवा स्वयंभूभ्यामित्यादि॥

विश्वेयविसर्गस्यानुकारके उवङ् हेनभूसुधियोः करकेयणनिषेधभयादृवर्षाभूशब्द. केयणनिषेधनहीवर्षाभूशब्दकोयणहोअवृत्तएपरेद्वंदया वर्षाया भवनीतिवर्षा भूः वर्षाभ्वौर्हस्वारेयणभया दृन्भूः इनूकरउनहुएदृनिसकेपूर्वहैएसनोभू शब्दहैतिसकोयणहोरसकरकेयणभयादृन्भ्वौ दृन्भ्वः पुनर्भूः पुनर्भ्वौ पुनर्भ्वः इ त्यादिकजाननेयान्तसुईहांचङ्शनसकारकेचकारकोअनङ्भया अनिनूकरकेउ पधाकोदीर्घभयाहृत्ङ्गोत्स्याभ्योकारकेसुलोपभयानलोपःप्रातिपदिकांतस्यकरा. केनलोपभयाथानासिद्धं अगोऔट्तीकरणनोद्विकरकेणभयाअनूकरके

से सखे सखयः गोतो णित् ओकाराद्विहितं सर्वनामस्था नं णिद्वत् वृद्धिः गौः गावौ गावः औतोम्शसोः ओतः अम्शसोः आकार एकादेशः गां गावौ गाः गवा गो भ्यां गवे गोः रायो हलि रैशब्दस्याकारादेशो हलि विभक्तौ राः रायौ रायः राभ्यामित्यादि ग्लौः ग्लावौ ग्लावः ग्लौभ्यामित्यादि इति व्याकरणे शेषउल्लिङ्गः स [प्रका] मासः ॥ रमा औङ आपः आबन्तादङ्गात्परस्यौङः शी स्यात् रमे रमाः संबुद्धौ च आप एकारः हे रमे हे रमे हे रमाः रमां रमे रमाः आङि चापः आङि ओसि चाप

दीर्घभयाथानारोथानारः आमेकों सिद्धं संबोधनविश्वेयान्तसुईहां संबुद्धौ चकारके अरगुणभयासलोपभयाहेयानुः सिद्धं वक्तव्यहैयान्तणोसिद्धं ॥ यान्तनईहां प्र थमयोः पूर्वसवर्णः भयादीर्घनंतरानस्माच्छसोनःकरकेसकारकोनकारभया

थाको ईहांणत्वभयाथान् ३॰ ईहांयणभत्वाभावसिद्धं थान् ३॰ सूत्रनः३ न्कारकेअकारअकार ईहां
केस्थानमें उभयासकारलोपभयाथानुः सिद्धं थाञोः अवर्णनें नकारको णत्वव कर्त्तव्य है परे
थानूणां ईहां नुट्आयादीर्घभयाणत्वभयाथाञोः थानूषु इसीप्रकार नृआदिक अदंत॰
जाननेआ आौ आः आं आौ अन् त अभ्यां अभिः ए अभ्यां अभ्यः उः अभ्यां
अभ्यः उः ओः अणां अश्रोः अषु हेअः हेआौ हेआः ईहांसंधिनहीहोतीहे शब्द॰
त्वनहे इसीप्रकारजानूक र्तृ विधातृ इत्यादिक जानने पितृमातृ इत्यादि अदंत शब्दों
कोंदीर्घनहीहोना कोईक है कि सवासे पितृादिकाकोदीर्घनहीहोना नवक हिनाअन्
तृचतृ च विते जोनआदि ग्रहणहै सो नियमवास्ते है कैसे नियम है स्वसृनप्तृ नेष्टृ इत्यादि

एकारः रमया रमाभ्यां रमाभिः याडापः आपो॰
ङितोयाट् ङुहि रमायै रमाभ्यां रमाभ्यः रमा
याः रमयोः रमाणां रमायां रमयोः रमासु॰
सर्वनाम्नःस्याङ्ढ्रस्वश्च आ

कसभनन् अदंतनहीहै नप्तृसनेष्टृत्वष्टृक्षत्तृहोतृपोतृप्रशास्तृ इनग्रहणसेअदंत शब्दोंकोंदीर्घहोवे
वि॰२ गानप्तृनेष्टादिकाका उणादिक तृन्तृच्प्रत्ययान्तहैं सो व्युत्पत्तिपक्षमेंहोवै सो व्यर्थहोकेनियमकरदेहै
तौः सौ औ आवः ईहांअओकारकोआत्वभयाडोवै ऐऔच् वृद्धिक्रमनेयेशाब्दहैं इति॰
पुंल्लिंगः उणादिप्रत्ययान्तानांसंज्ञाशब्दानां तृन्तृजन्तानांदीर्घोनहि नप्त्रादीनामेव उणा
दिगणविवेसिद्ध होयेहैं जैसे तृन्तृच्प्रत्ययान्तसंज्ञाशब्दतिनोंकोंदीर्घनहुवे नप्त्रादिकाकोही होवे
होवे इसनियमनेपितृमातृजामातृ इत्यादिकाकोदीर्घनहीहोनाएहहै नेहसूत्र मेनहीं है
आयेकनीनिपिताईहांअनङ्भयानांनउपधाकोदीर्घभयासुलोपभयानलोपभयापिता
अवस्त्रीलिंगशब्दोंकानिरूपणकरीताहै निए पतीभाषिकलिंगकाग्रहणहैशास्त्रीयसं॰

इसीतरहजामातृशब्दकीआदिलेकरऔरभीकएकजाननेभाईहांअनङ्भयाअङ्लोपभयानांनउपधाकोदीर्घभयासुलोपभयानकारलोपभयानरो
नरः परे नरौ ईहांअकोगुणकरकेगुणभयारेफपरेमिलजायगयानृशब्दकोअमृरोरेदयाविकल्पसेदीर्घहोनृणां नृणां ईहांदीर्घभयाणत्वभया॥
णत्वभयाकावेणलहवर्णनेरतिसेः सयोसपः ईहांएकारकोअरभयाअरनेमिलजायगया ओकारनेविभक्तिजोसवैनासस्थानहै सोतित्वनहोगी
नेअसोजीतिकरकेहविहोयीगोः गिरं गावौ गावः ईहांओकारकोआद्भयाओकारकोआकारहोआन्वासरूकाअवृत्तनेदयाग ईहांओकारको
आकारादेश भयाअमिरूपः भया गावौ गवः ईहांओकारकोआकारभयादीर्घभयारेफविसर्गभये आगेओकारकोअवृहोजाणकाअवृवंत नःरेशाब्दकोआ
कारादेशहोहलादिकविभक्तिपरेंहदयाराः ईहांआकाराभयाअगेऐकारकोआहोनाभया राभ्यां राभिः रायः रायौ रायः ईहांऐकारको

केतकरकेजोरावंतङीवंतहैसोपारिभाषिकहैलिंगशाह्नेइष्टहैअर्थनिष्टनहीइसीवास्तेस्त्री पदकाअर्थदारातूईहांस्त्रीत्वनहीभयानकारभया रमाशाह्नेसुआयाहल्ङ्याब्भ्योकरके सुकालोपभयारमासिद्धं रमाऔईहांआवंतअंगनेपरेऔङ्कोशीहो औङ्औकारकानामहै औकोशीभयालशकुकरकेशकारइतभयाआद्गुणःकरकेगुणभयारमेसिद्धंरमाजसई हांजइतभयासवर्णेदीर्घःभयारमाःसिद्धं संबोधनविविआपकोएकारहो हेरमासुई हांआकारकोएकारभयाएङ्ह्रस्वात्करकेसुलोपभयाहेरमेसिद्धंऔपरतःभीहेरमेहेरा माःरमांईहांअमिपूर्वःभयारमेईहांऔकोशीभयागुणभयारमाः ईहांप्रथमयोःपूर्वक रकेदीर्घभयासकारकोरेफविसर्गभये रामरांईहांआङ्परेह्रंदयाचझनःओसपरेह्रं

वंतान्सर्वनाम्नोङितःस्याडायश्चह्रस्वः सर्वस्यै स
र्वस्याः सर्वासां सर्वस्यां शेषंरमावत् एवंविश्वादय।
यश्रावंताः विभाषादिक्समासेबहुव्रीहौ सर्वना।
मतावाउत्तरपूर्वस्यै उत्तरपूर्वायैतीयस्येतिवासंज्ञा।

इयाआकारकोएकारभयाएकारकोअयभयायरेमिलपारभयासिद्धिःरमाभ्यां रमाभि : आवंतअंगनेपरेङित्कोयाट्काआगमहोरमाङेईहांङेकेपूर्वयाट्आयाटकारइतभया फेरआटश्चकरकेहाद्धिएकारभयीरमायैसिद्धं रमाभ्यां रमाभ्यः रमाङसूईहांङसूकेप हिपाटआयाआइतभया सवर्णेदीर्घभयासकारकोरेफविसर्गयेरमायाः सिद्धं रमाभ्यां रमा भ्यः रमायाः रमाओस्ईहांआङिचापःकरकेआकारकोएकारभयाएकारकोअयभया रमयोःसिद्धं रमाणां ईहांनुट्आयारमायांईहांङिकेपूर्वयाट्आयाङिकोआम्भया रम योःरमासु इसीप्रकारदुर्गाशाह्नजानना ॥ आ ए आः आं ए आः अया आभ्यां आभिः आयै आभ्यां आभ्यः आयाःआभ्यां आभ्यः आयाःअयोः आनां आयां अयोः आसु हेए हेए हेआः

एवंगंगामालादयः जोआकारांतस्त्रीलिंगशब्दहैसोरमाकीन्यायीहैआगेसर्वादिकाकाभेदहैकुछक सर्वा सर्वाः सर्वे सर्वाः सर्वां सर्वे सर्वाः सर्वया सर्वाभ्यां सर्वाभिः आदंतसर्वनामतेपरेङि-द्दवचनकोस्याट्हो चउनः आपकोह्रस्वहोसर्वा३ईहांलशक्वतद्धितकरके ङकारइत्भयानदनंतरङि-त्केसर्वस्याटआयाठरत्भ याहैद्दिभयीआपकोह्रस्वभयासर्वस्यैसिद्धं सर्वाभ्यां २ सर्वाभ्यः २ सर्वाङसतईहांस्याट्आयायाआकारह्रस्व भयादीर्घभयासकारकोरेफविसर्गभयेसर्वस्याःसिद्धं सर्वयोः सर्वा आम्ईहांआमिसर्वनाम्नःसुट्आ करकेंसुट्आयासर्वासांसिद्धं सर्वस्यां ईहांस्याट्आयायाआपह्रस्वभयाङेराम्नद्याम्नीभ्यःकरकेङिकोआम् भया सर्वासु ईसीप्रकारविश्वादिकजानने द्विगुकेउत्तरश्रीद्दिसमासविषेविकल्पकरकेसर्वनामसंज्ञाहो याइत्तरासाउत्तरायस्यासाउत्तरपूर्वाईहांवहुव्रीहिसमासहैउत्तरपूर्वाशब्दकेरूपरमाकीन्यायीहोंतीकर२ भयेआगेरमाकीन्यायीभीभयेसर्वाकीन्यायीभयेद्दितीयाशब्दरमाकीन्यायीङित्वचनपरतःविक

द्वितीयस्यै द्वितीयायै एवंतृतीया अंबार्थनद्योर्ह्रस्वः हे अंब हेअक्क हेअल्ल जरा जरसौ जरसः पदेरमावत् गोपाविश्वपावत् मतिः मती मतयः मतिं मती म तीः मत्या ङितिह्रस्वश्च इयङुवङ्स्थानौस्त्रीशब्दभिन्नौ नित्यस्त्रीलिंगौ ईदूतौह्रस्वौचेवर्णौवर्णौस्त्रियांवानदी।

नालरूपभयेअंबाशब्दअक्काशब्दअल्लाशब्दरमाकीन्यायीहैसंबोधनविषेअंबार्थनद्योःकरकेह्रस्वभयाहे अंब हेअक्क हेअल्लयेरूपभयेअंबार्थहत्तरंपदिअंबार्थपरतरकोह्रस्वहोरसीवास्तेकहाहैअसंयुक्ताजो डलकहैतिनकोह्रस्वनहीहोजरा जराऔईहांजरायाजरसन्यतरस्यांकरकेजरसादेशहोतागयाजराशब्द कोऔकाउत्तारणरमाकीन्यायीहैगोपाशब्दविश्वपाकीन्यायीहै ॥ मतिः मतीदीर्घभया मतयः गुणभया अमिभयामतिम्अमिपूर्वःभया मती हरिवत्सिद्धंयहरूपभयेमतिशसईहांलशक्वकरकेशकारइत्भ भयाप्रथमयोःपूर्वसवर्णःकरकेईकारदीर्घभयासकारकोरेफविसर्गभयेमतीःसिद्धं मतिटाईहांटा इत्भयाकेरयणभयामत्यासिद्धंमतिभ्यां मतिभिः मतिङेईहांविकल्पतेनदीसंज्ञाहोतीहै ईदू तौवानदीसंज्ञौस्त्रः कथंभूतौ ईदूतौइयङुवङ्स्थानौपुनः कथंभूतौ स्त्रीशब्दभिन्नौपुनःकथंभूतौनित्य

स्त्रीलिंगौ च पुनः ह्रस्वो इवर्णो उवर्णौ स्त्रियां वा नदीसंज्ञौ स्तः ङित ङिति परे सति इयङ् उवङ् के स्थान होनस्त्री आख्य भिन्न होन नित्य स्त्रीलिंग होनये से जो ई ऊ ऊन् हैं सो विकल्प करके नदी संज्ञक होन ङित् वचन परे रहें दया च पुनः ह्रस्व जो इवर्ण उवर्ण है सो स्त्रीलिंग विषे विकल्प से नदी संज्ञक होन ङित् परे रहें दया मति ङे० ई होना ह रूप में नदी संज्ञा मन के एवं आटनद्याः करके आट् आया ह द्धि भयी इकार को यकार भया मत्यै सि द्धं एक रूप में ये ङि० ति करके गुण भया अय् भया मतये सिद्धं मतिभ्यां मतिभ्यः मति ङ० स ई हो आट आया आकार दीर्घ भया इकार को यण् भया रेफ विसर्ग भये मतिषु इसी प्रकार बुद्ध्यादिक जानने हे हि सि ह्रि जानने मत्याः सिद्ध इ जो रूप में दो ङि० ति गुण भया पूर्वरूप भया मतेः सिद्धं मत्योः यण् भया मती नां ह्रस्वनद्यापो करके नुट् आयो स्यात् कथंभूतस्य ङेः इदुद्भ्यां परस्य कथंभूताभ्यां इदुद्भ्यां नदीसंज्ञक भ्यां नदीसंज्ञक इन् उन् हैं तिनको परे जो ङि० है तिसको आम् होइ ङि० को आम् भया यण् भया मत्यां सिद्धं

संज्ञौ स्तो ङिति मत्यै मतये मत्याः मतेः इदुद्भ्यां न
दीसंज्ञकाभ्यामिदुद्भ्यां ङेराम् मत्याम् मतौ मत्योः मति
षु हे मते हे मती हे मतयः त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृच
तसृ स्त्रीलिंगयोरेतयोरेतौ स्तः अचि र ऋतः तिसृचत
स्रोर्ऋतो रादेशो ऽचि तिस्रः २ तिसृभिः तिसृभ्यः तिसृ

को ई प्र आकरे ङे० राम् नद्याम्नीभ्यः करके ङि० को आम् होना सी इदुद्भ्यां सूत्र किस वास्ते है तब कहिना ङे० राम का बाधक औत् सूत्र है तिसकी बाधा वास्ते यह सूत्र है भयो ॥ इः ई यै अयः ई ईः या इभ्यां इभिः ये अये इभ्यां इभ्यः याः एः इभ्यां इभ्यः याः एः योः ईनाम् यां औ योः इषु हे ए एवं मति बुद्धि भक्ति इत्यादिक जानने स्त्रीलिंग जो त्रि चतुर् शब्द हैं तिनको तिसृ चतसृ आदेश होना तिसृ चतसृ के ऋकार को र आदेश होइ अच् परे रहें दया त्रि शब्द ने जस् प्रत्यय आया त्रि को तिसृ आदेश भया ऋ को रकार भया परे मिला तिस्रः २ सिद्ध भया तिसृभिः तिसृभ्यः तिसृ आम् ई हो ह्रस्व नद्याप करके नुट् आया नामि कर के दीर्घ पाया सी न तिसृचतसृ निषेध भया तिसृ चतसृ शब्द को दीर्घ नहीं होना आम् परे रहें दया तिसृणां सिद्धं तिसृषु षत्व भया हि ओ ई हो त्यदादीनामः करके इकार को अकार भया आगे टाप् आया ह कार द्वि ह करके इन्

भयापकारहलंत्यकरकेइत्भयाङ्गाषट्भयाडौङ्आपःकरकेऔकारकोषीभयाषकारइत् भयाङ्
भयौंसिद्ं अैकोई कहैहैं तिभक्तिपरेमन्नकेहोय जोअकारहै सोमध्यमेंलापकरणोसेमहातिप्रत्ययआन
न्र्थकाविधानकहोवेगा तबकहिनासत्रियानवरिभाषाअनित्यहैनयास्योःइसनिर्देशसे डा
भ्यां३ डाडोस्ईहांआदि० गौरीईहांहलङ्याभ्योकरकेसुलोपभयागौरीऔईहांइकोयणविकरको
यणहोनागयागौर्यौ गौर्यः गौरीईहांअमिपूर्वःभयागौरीं गौरीः प्रथमयोःपूर्वसवर्णभयारे
फविसर्गभयेगौर्यायणभयागौर्येईहांनदीसंज्ञाभयीआट्आयाहृद्धिभयीयणभया गौरीभ्यां गौरी
भ्यः गौर्याः ईहांङसूकेपूर्वआट्आयागौरीभ्यां गौरीभ्यः गौर्याः गौर्योः ईहांयणभयासकारकोरेफ
विसर्गभयागौरीणांईहांनुट्आया गौर्यांईहांङिकोआम्भयाफेरयणभया गौर्योः गौरीषु हेगौ

ग्णं निरत्तु हेहे हाभ्यां २ ह्वयोः २ गौरी गौर्यौ गौ
र्यः गौरीं गौरीः गौर्या गौर्यै स्त्री हेस्त्रि स्त्रियाः अस्ये
यङ्गजादौप्रत्यये स्त्रियौ स्त्रियः वाम्शसोः स्त्रियाः ३
यङ् वासणदाम्शसोः स्त्रियं स्त्रीं स्त्रियौ स्त्रियः स्त्रीः
स्त्रिया स्त्रियै स्त्रियाः स्त्रीणां श्रीः श्रियौ श्रियः नेय

आपः करके णाकारको पकारको ष्टुभया हयोः ङौ.
रीईहांअंबार्थनद्योर्ह्रस्वःभयाइसीप्रकारनद्यादिकजानने स्यायतेमुक्तघोणीनेअस्यांइतिस्त्री
हलङ्याभ्योकरकेसुलोपभयासंबोधनविधिअंबार्थनद्योर्ह्रस्वः करकेह्रस्वभया हेस्त्रि स्त्रीऔ
ईहांस्त्रीशब्दकोईङ् होअजादिकप्रत्ययपरेअंदयाइसकरकेसारेइयङ् हो गयास्त्रियौ स्त्रियः अ
मशस्परेअंदयाविकल्पनेस्त्रीशब्दकोइयङ् होस्त्रियंभया स्त्रीं अमिपूर्वःभयाजसूकेदोरूपहै स्त्रियो
शस्कोदोरूपहैस्त्रियः स्त्रीः प्रथमयोःपूर्वसवर्णःकरकेईहांकास्प्रकारमिलकेईहांकारभया ई
रेफविसर्गभये स्त्रिया स्त्रियै ईहांयूस्त्र्याख्यौनदीकरकेनदीसंज्ञाभयीआट्आयावृद्धिभयीइय
ङ्भया स्त्रियाःआड्आयास्त्रीभ्यां स्त्रीभ्यः स्त्रियोः स्त्रियोःस्त्रीणांईहांनयनतेनुट्आयास्त्रियांई
हांङिकोआम्भयाईकोइयङ्भया स्त्रियोः स्त्रीषु श्रयनेहरींइतिश्रीः श्रियौ श्रियः श्रियं श्रियौ

श्रियाः ईहां सारे श्रिञ् धातुं श्रुवं कारके इयङ् होना गया परे मिलना गया इयङ् उवङ् विधि स्थिति है जिनों की ऐसे जो ईत् ऊत् है सो नदी संज्ञक नदी हो न स्त्री शब्द तो विना ह्रस्व्या यों का यह निषेधक है हे श्रीः ईहां संबोधन विषे ना नदी भयी ह्रस्व नदी हो या श्री ङे ईहां ङि. ति ह्रस्वश्च करके विकल्प करके नदी संज्ञा भयी एकमें आट् या श्रियै सिद्धं श्रिये इयङ् भया श्रियाः ईहां ङ. स् के स्वं आट् या दीर्घ भया श्ये ङ् भया श्रियः इयङ् भया श्रियोः इयङ् उवङ् के स्थान होन स्त्रीलिंग होने ऐसे जो ईत् ऊत् है सो विकल्प करके नदीसंज्ञक होन आम् परे ऊं दया नदी संज्ञा पक्ष विषे नुट् ह्रस्व या या श्रीणां श्रियां ईहां इयङ् भया श्रियि ईहां इयङ् भया श्रियां ईहां ङि. को आम् भया श्रियोः श्रीषु धेनु शब्द मतिशब्द की न्याई है धेनुः धेनू धेनवः धेनुं धेनू धेनूः धेन्वा धेनुभ्यां धेनुभिः धेन्वै धेनवे धेनुभ्यां धेनुभ्यः धेन्वाः धेनोः धेनुभ्यां धेनुभ्यः धेन्वाः धेनोः धेनुभ्यां धेनुभ्यः धेन्वाः धेन्वोः

ङुवङ्स्थानावस्त्री ॥ इयङुवङोः स्थितिर्ययोस्तावीदूतौ नदीसंज्ञौ न स्तः न तु स्त्री हे श्रीः । हे श्रियौ हे श्रियः श्रियं श्रियौ श्रियः श्रिया श्रीभ्यां श्रीभिः ॥ ङिति ह्रस्वश्च ॥ श्रियै श्रिये श्रियाः श्रियः ॥ वामि ॥ इयङुवङ्स्थानौ स्त्र्याख्यौ यू आमि वा नदीसंज्ञौ न तु स्त्री श्रीणां श्रियां श्रियि श्रियां श्रीषु धेनुर्मतिवत् ॥ स्त्रियां च ॥ स्त्रीवाची क्रोष्टु शब्दः तृजन्तवद्रूपं लभते ॥ ऋन्नेभ्यो ङीप् ॥ ऋदन्तेभ्यो नान्तेभ्यश्च ङीप्।

धेनूनां धेन्वां धेन्वो धेन्वोः धेनुषु हे धेनो उः ऊ अवः उं ऊ ऊः वा उभ्यां उभिः वै अवे उभ्यां उभ्यः वाः वोः उभ्यां उभ्यः वाः वोः वोः ऊनां वां वौ वोः उषु हे ओ इसी प्रकार से लघुभी इत्यादिक जानने स्त्रीवाची जो क्रोष्टु शब्द है सो तृच् की न्याई रूप लभता है ऋदंत शब्दों ने वशुनः नांत शब्दों ने स्त्रीलिंग विषे ङीप् हो क्रोष्टु उकारांत ऋदंत भया जिस ने ङीप् आया ऋकार लघु करके र भया षकार हलत्व करके र भया र को यण विकर करके र भया पकार मे मिला क्रोष्टी शब्द गोरी की न्याई भया वधू शब्द गोरी की न्याई जानना ऊः वौ वः ऊं वौ ऊः वा ऊभ्यां ऊभिः वै ऊभ्यां ऊभ्यः वाः ऊभ्यां ऊभ्यः वाः वोः ऊनां वां वोः ऊषु हे उ हे वौ हे वः इसी प्रकार वधू चमू इत्यादिकों में ङीप् ऊङ् पत्यय नहीं होन स्वसा

तिसृचतसृननांदडहितयालमातृपद्वत् हैं स्वसादिषेनाक्षः नुः द्यौः गौवत् है राः पुंवत् है नौः
ग्लौवत् है इत्यजंता स्त्रीलिंगा ॥ अथ नपुंसकलिंगके शब्दोंकी साधना है अकारांत अंग ज्ञान नपुंसक।
लिंग है तिसनेपरेजो सु अम् है तिनको अम् होअम् कोअम् करणात्सुकलोपावालेहै ज्ञान सर्व ह्रस्वको
अम् भया अमिपूर्वः भया ज्ञानम् सिद्ध ज्ञान औ ईहां अकारांत नपुंसकते परे औङ् को शी हो ई सकर के ई
ओ शी भया शकार इत् भया ई च अग्ला इति यः तस्य स्वभसंज्ञक जो इवर्ण अवर्ण है तिसका लोप को।
ईकार नहि ते परे हैं द्या ई सकर के ईकार परे है ज्ञानके अकारका लोप प्राप्त होया सौ तव निषेध भया
औङ् के स्थान विषे जो शी है तिसके परे हैं द्या अकारके लोपका निषेध है गुण भया ज्ञाने सिद्ध ज्ञा
न जस् ईहां सकर के ऊह् कारके जकार इत् होता है सकार मकार तवर्ग शि सर्वनामस्थान संज्ञ कि दे।

स्त्रियां ऊकी पृ को स्त्री वधूर्गौरीवत् भूः श्रीवत् स्वयंभूः पुंवत्
तू नपहूस्वस्रादिभ्यः पभ्यो ङीपूदा पौनस्मः स्वसा तिस्रश्च
तस्रश्च ननांदाड हितान नप्तापाता माता ते तिसृभ्यो ने स्वस्रादय
उदाहृताः स्वसा स्वसारौ स्वसारः माता पितृवत् पाशीमा
तः द्यौः गौवत् राः पुंवत् नौः ग्लौवत् इत्यजन्ताः स्त्रीलिंगाः
अतोम् अतोंगात्स्त्रीवास्वमोरम् नपुंसकाच्च औङः शीय
यस्येति च भस्य वर्णावर्णयोर्लोपः ईकारे तद्धिते च परे औङः

पूर्ण प्रतिषेधः ज्ञाने जश्शसोः शिः शि सर्वनामस्था
नं नपुंसकस्य झलचः झलंतस्याजंतस्य च नुमा
गमः स्यात् सिद्धौ त्यान्यः ज्ञानानि ८

ङ् ह्रस्वादिति संबुद्धिलोपः हे ज्ञान हे ज्ञाने हे
ज्ञानानि पुनस्तद्वत् शेषंवत् एवं धनवनफला
दयः ॥ ८॥

भीजकहीह् नहीं होने विभक्तौ संज्ञा करके निषेध होता है अकारांत नपुंसक ने परे जस् शा
स्को शि हो फलं नपुंसकको च पुनः अजंत नपुंसकको नुम् सर्वनामस्थान परे हैं द्या मित् अं
त्य अच् ते परे तिसका अंत्य अवयव हो मित् अंत्यदीर्घ हो जस्को शि भया ज्ञान ने परे नुम् आया
उम् इत् भया उपधाको दीर्घ भया ज्ञानानि सिद्ध इसी प्रकार ज्ञानं ज्ञाने ज्ञानानि शेषं पूर्ववत् राम।
शब्दकी न्याई जानने ज्ञान सु ईहां एपलोप पासो परत्वने सुको अम् भया अमिपूर्व भया फेर
अनवत् भाव ने पद ह्रस्वान्त करके सुलोप भया ॥ ज्ञानेन ज्ञानाभ्यां ज्ञानैः ज्ञानाय ज्ञाना।

भ्यां ज्ञानेभ्यः ज्ञानात् ज्ञानाभ्यां ज्ञानेभ्यः ज्ञानस्य ज्ञानयोः ज्ञानानां ज्ञाने ज्ञानयोः ज्ञानेषु । इसीप्रकार धन वन फल इत्यादिक जानने उतरादिक जो पंच नपुंसकलिंग शब्द हैं तिनके परे जो सु अम् हैं तिनको अदड् आदेश होइ डित् परे टेः इत्यादिका लोप होइ कतर सु ई हां सु को अदड् भया अ द् इत् भया डित् अद् के परे टेः इस करके कतर के अकार को लोप भया कतरत् सिद्धं कतरत् सिद्धं इसी तरा कतर अजन्त डौ ई हां औङः शी भया गुण भया कतरे ई हां नुम् आया दीर्घ भया कतराणि सिद्धं शेषरूप ज्ञान शब्द की न्यायी जानने इसी प्रकार कतमत् इतरत् अन्यत् अन्यतरत् ए भी जानने अन्यतम का तु उनः अन्यतमं ऐसा ही होता है नपुंसकलिंग विशिष्ट जो अजन्त प्रातिपदिक को ह्रस्व होइ श्रियं याति

अद्ड् उतरादिभ्यः पञ्चभ्यः क्लीबेभ्यः स्वमोरद्डादेशः टेः
डित्त्वात् टेर्लोपः कतरत् कतरे कतराणि हे कतर
त् शेषं पुंवत् कतमत् इतरत् अन्यत् अन्यतरत् अन्य
तमस्य तु अन्यतमम् इत्येव एकतरात् प्रतिषेधः एकतरम्
ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य अजन्तस्य प्रातिपदिकस्य
ह्रस्वः श्रीपं ज्ञानवत् स्वमोर्नपुंसकात् लुक् स्यात् वा
रि इकोऽचि विभक्तौ इगन्तस्य क्लीबस्य नुम् अचि विभक्तौ ।
वारिणी वारीणि न लुमतेत्यस्यानित्यत्वात् पक्षे संबुद्धि नि

इति श्रीपं ई हां श्रीपा शब्द को ह्रस्व भया श्रीप भया सको अम् होया पूर्वरूप भया श्रीपं श्रीपे श्रीपाणि इत्यादि जानने नपुंसक ते परे सु अम् का लुक् हो वारि सु ई हां सु का लुक् भया वारि सिद्धं कको इगंत नपुंसक को नुम् हो अच् विभक्ति परे हुंदया वारि औ ई हां वारि ते परे नुम् आया उम् इत् भया औ को शी भया नकार ईकार मे मिलया णत्व भया वारिणी सिद्धं वारि जस् ई हां नुम् आया जस् को शि भया दीर्घ भया वारीणि सिद्धम् ॥ हे वारि ई हां सु का लुक् भया न लुमताङ्गस्य निषेध कर के गुण नहीं भया न लुमताङ्गस्य को अनित्य होने से पक्ष विधि गुण भया भी है हे वारे सिद्धं को ई कहे न लुमता के अनित्यत्व विधि की प्रमाण भया है नब ह्रिक हिनाइ को विस्तृत विशेष अग्र पद प्रमाण है ॥

इसीरीतिसे भ्यांभिस्सुप्सुसंबोधनपरतः हलादिकापरतः नुम्केआयांभीनलोपः प्रातिपदिकांतस्य
करके नलोप होवेगा केरअन्नुपदव्यर्थहै जेकोई कहेसंबोधनविषे नङिसंबुद्धोः करके नलोप नहीं हो
नातेक्यक हिना नलुमतांगस्य करके निषेध कीनया नलोप होवेगा केर अन्नुपद व्यर्थ होके जनाता है
वारिणाई होसारे नुम्आया वारिडे ईहां घेर्ङिति करके गुणकी प्राप्ति थीसो तब नुम्ही भयाव वचनब
लते हाड़ि औन्न त्वबाब्दाव गुणरनें मेंनुम ही होसर्वविधानिषेध करके अतिसखीनिकुलानिई हो
प्रितल्लल्णहड्डिनेनुम्भया वारिणी औन्नेनुम्भयाकोफुनिई होन द्वबादावनेनुम्भयावारिणे ई
होगुणनेनुम्भया वारिभ्यां वारिभिः वारीणांनुट्आयादीर्घभयादधयिईहांसुलोपभया दधीनीई

घेर्ङितीतिगुणेप्राप्ते हलोऽनन्त्वञ्चावगुणोभ्योनुम्पूर्वविप्रति
षेधेनवारिणे वारिणः वारिणोः नुमचिरेतिनुट्वारीणां वा
रिणिहलादौहरिवत् अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णामनङ्दात्तः दा
दावपि अल्लोपोनः अंगावयवोऽसर्वनामस्थानयजादि
स्वादिपरोयोनन्तस्याकारस्यलोपः दध्ना दधिभ्यां दधिनि शे २१७
षंवारिवत् मधु मधुनी मधूनि शेषंवारिवत् ॥ ॥

होनुम्आयाद धीनिईहां नुम्आयादीर्घभया पुनः दधि दधिनी दधीनि अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णामनाको
अनङ्भयाअनङ्होतादिकअन्तपरेहैदयादधिटाईहां इकारकोअनङ्भयाअङ्इत्भयादयन्शब्द
भयानदंनंतस्यनोअकारस्यलोपःस्यात्कस्यअनः यः अंगावयवः असर्वनामस्थानयजादि॥
स्वादिपरः अन्केअकारकालोपहोवनकैसाहैअंगकाअवयवहोवेसर्वनामस्थानतेविनायजा
१८ दिकस्वादिकजिसकेपरेहोवे इसकारकेअकालोपहोनागया ॥ लेढि इतिलिहालिहधातुनेकि
पकालोपभयाकर्दमकोंनेनेप्रातिपदिकसंज्ञाभईस्वादिकपरेआयेहैंआगेहोढः लगाढः
षष्ठीढः प्रथमा हकारकोढकारहोकलपरेहैदयावषुनः पदांतविवक्षालिट्सुईहांहकारको

ढकार भया लिड्सु भया फलांजयोंने करके ढकारको डकार भया हल्ङ्याभ्यो करके सं इसों हलंत पुलिंग विविमुकालोप भया वावसाने करके विकल्पने ड कार भया लिड् लिट् लिहं आगे अचू परतः सुवंतः व्यंजन ह कार परे मि लता गया लिहौ लिहः लिहं लिहौ लिहः लिहा लिड्भ्यां ईहां ढकार ह कारको होया जस्त्व भया लिड्भिः लिहे लिड्भ्यां लिड्भ्यः लिहः लिड्भ्यां लिड्भ्यः लिहः लिहोः लिहां लिहि लिहोः लिड्सु लि ड्त्सु ईहां डः सि धुट् आया खरिचु करके थकारको तकार भया डकारको टकार भया फलत्व परे ईहां दया चहुउ भया

परे दुा विविद कारादिक जो धातु है तिसके ह्कारको घकार होई ईहां धातोः धातोः आह त्रिकरले नी एक धातु ये पदधातु पर है एक धातु पद उपदेश परहै तब हल्य यिये भया वशो भष्स्यात् कथंभूतस्य वशः धात्व वयवस्य पुनः कथंभूतस्य एकाचः पुनः कथंभूतस्य फषंतस्य कसतिसे ध्वे परे मति च पुनः पदांते वश

हो ढः। फलि पदांते च लिट् लिड् ति हौ लिहः लिहाः लिड्भ्यां लिड्सु लिट्सु दादेर्धातोर्घः फलि पदांते चोपदेशे दादेर्धातोर्हस्य घः एकाचो बशो भष् फषंतस्य सध्वोः धात्ववयव स्यैकाचो फषंतस्य बशो भष् से ध्वे पदांते च धुक् धुग् धुग्भ्यां धु त्सु वा द्रुह मुह ष्णुह ष्णिह विंदा पदः हस्य वा घः धुक् धुग् दुहौ दु हः धुग्भ्यां धुड्भ्यां धुत्सु धुट्सु धुड्त्सु एवं मुक् मुट् धा

लिहः लिहौ लिहः लिहः ४

कोभष् होवैसे वशको धात्ववयवको फेरके से वशको एकाचको फेर कैसे वशको फषंतको क्या भया से ध्वे परे ईहां दया च पुनः पदांत विषे दिड् ह्नते परे सुआया ईहां पुहृद कारादिक धातु है इसके ह्कारको घकार भया ड। सु भया वा पदे श वजा व करके ड धातु का अवयव है एकाच भी है फषंत भी है इसते द कारको धकार भष् भया सु भया दकारको जश गकार कौं भया वावसाने करके एक ठौरे ककार भया सुलोप भया धुक् धुग् सि ह भये धुग्भ्यां धुग् ईहां हकारको चकार भया घकारको जश गकार भया गकारको चर् ककार भया आदे शप्रत्यययोः करके सकारको षकार भया कषा मिलके क्षकार भया धुक्षु लिहं इसी प्रकार और भी सिद्ध क रलो द्रुह मुह ष्णुह ष्णिह सिह इन चारोंके हकारको विकल्प करके घकार होहलंत नराह्नोको आप धातोः वश

होनो चपदहै नयात्तुवो आदिषकाषुकोसकारहो कुड्हुस्तुरईहांयकारूपमेहकारकोघकारभयादकारकोभष्
धकारभयाफेरजसभयाचावसानेकरकेककारविकल्पभयासुलोपभयाधुक्धुग्सिद्धं विकल्पविरवेद
कारमेगोढकारभयाभष्भयातिसकोडकारभयाडकारकोटकारभयासुलोपभयाधुट्धुड् सिद्धं आ
गेद्रुहो द्रुहः इत्यादिआगेदेइसीप्रकारसे कृमुग्मुह् मुड् षकारकोसकारभयास्निक स्निग् स्निट् स्नि
ड् सिद्धभयेसुश्केरूपमुद्दकीन्याईसिद्धकरणेयणकेस्थानविविधमानजो इक हैसोसंप्रसारण
संज्ञकहोभसंज्ञकवाहकोपूर्वरूपएकादेशहोविश्ववाहस्तुईहांहोछःकरकेछत्वभयाफेरजस्त्वच
र्त्वभयेविश्ववाड्सिद्धं विश्ववाहौइत्यादिजाननेआगेटीकर विश्ववाह्शस्तुईहांवकारकोऊसंप्रसारण १८ संप्रसारणसूत्रहरि संप्रसारणकेपूर्वरूपहरि ४
भयाआकारपूर्वरूपभयाऊकारकारूपभयाविश्वऊह्शहह्कोकेपरेविभक्तिकेअत्तमेमिलनागया

इग्यणः संप्रसारणं यणःस्थानेप्रयुज्यमानइक्संप्रसारण
संज्ञःस्यात् वाहऊठ् भस्यवाहःसंप्रसारणमूठ् संप्रसार
णाच्चसंप्रसारणादचिपूर्वरूपमेकादेशः ह्वहि:विश्वौ इ
त्यादिचतुरनडुहो संप्रसारणेनैव ईनामस्थाने सावनडुहः
अम्संबुद्धौचचतुरनडुहोः इनयोः आम्स्यात् वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहांदः
दः सांतवस्वंतस्यस्रंसादेश्चडः स्यात्पदांतेअनडुद्भ्यामित्यादि।

विश्वौहः विश्वौहा विश्ववाड्भ्यांइत्यादिभयेचतुरअनडुह्इहांशाहकोआम्होसर्वनामस्थानपरेऊं
दयासोउदात्तहैसुपपरेऊंदयाअनडुह्शाहकोनुम्होआनःशाकांवहतीतिअनडुहान् ईहांउकार॥
नेपरेआम्भयायाउकारकोयणवकारभयाअनड्वाभयाहकारकेपूर्वनुम्भायायाउम्भरन्भयासुलोप
भयासंयोगांतहकारलोपभयाऔनैहोताससंयोगांतलोपकोअसिद्धहोनेते ॥ ॥ संबुद्धिविवेच
नुरअनडुह्शाहकोअम्होइसकरकेउकारनेपरेअम्भयायायणभयानुम्भायासुलोपभया हेअन
डुन्सिद्धंआगेऔट्तीकरआम्भायायायणभयाअनुड्वाहौअनडुहः शसादिकपरतःहकारपरे॥

मिलता गयाथा अनडुह् सांत न वसु स्रंस ध्वंस को तथा धनः स्रंसादिकों को दकार होय पदांत विषे अनडुह् शब्द ईहां हकार को दकार भया पदांत विषे किं स्वत्वं ईहां पिदांत नहीं साड्रूप जो सह है तिसके सकार को मूर्धन्य आदेश होय पदांत विषे विनरास ईहां हो ढः करके हकार को ढकार भया झलां जशोऽन्ते करके डकार भया सकार को मूर्धन्य षकार भया वाव साने भया तुराषाट् तुराषाड् सिद्ध आगे हकार परे मिलता गया तुरासाहौ तुरासाहः इत्यादि दिव इस प्रातिप दिक को औत होय सु परे इहं दया सुदिव ईहां वकार को औकार रकार को यण भया सकार को रुत्व विसर्ग भये सुद्यौः सिद्धं सुदिवौ सुदिवः इत्यादि दिव को उत होय पदांत विषे सुदिव् भ्याम् ईहां वकार को उकार भया यण भया सुद्युभ्यां सिद्धं चत्वारः ईहां आम् आया यण भया चतुरः ईहां रेफ परे मिला है चतुर्भ्यः षट्संज्ञका

दिपदांतस्य किंस्वत्लधलं सहेः साडः सः साड्रूपस्य सहेः सस्य मूर्द्धन्यादेशः तुराषाट् तुराषाड् तुरासाहौ तुराषाड् भ्यामित्यादि दिव औत् दिविति प्रातिपदिकस्यौत्स्यात्सौ सुद्यौः सुदिवौ दिव उत् पदांते सुद्युभ्यां चत्वारः चतुरः चतुर्भिः चतुर्भ्यः षट्चतुर्भ्यश्च एभ्य आमो नुडागमः र षाभ्यां नो णः समानपदे एकपदस्थाभ्यां रेफषकाराभ्यां परस्य नस्य णः समानपदे चतुर्णां रोः सुपि सुपि रोरेव विसर्गः सु पि चतुर्षु मोनोधातोः प्रशान् प्रशानौ प्रशांभ्यां किमः कः विभक्तौ त्यदाद्यत्वापवादः कः को के शेषं सर्ववत्

ते च पुनः चतुर् शब्द इनते परे जो आम् है तिसको नुट् का आगम होय चतुर् आम् ईहां आम के पूर्व नुट् आया रेफ ते परे नकार को णत्व भया एक पद विषे चतुर्णां सिद्धं सुप परे रुत्व दया रु को ही विसर्ग होय चतुर्षु ईहां षकार स्थानीय रु नहीं ॥ धातु के मकार को नकार होय पदांत विषे प्रशाम् शमी ति प्रशान् ईहां मकार को नकार भया नलोप भया प्रशान् सिद्धं आगे प्रशामौ प्रशामः इत्यादि किं विभक्ति परे रुत्व दया म को ककार होय विभक्ति परे रुत्व दया किम् सु ईहां त्यदादि के विभक्ति परे रुत्व दया किम् को ककार होता गया । सर्व शब्द की न्याई है कः कौ के अकच् सहित किम् को ककार इदम् को इमकार होय सु परे रुत्व दया रादे ।

आ: ईति अनुवर्ततेवालेककारसेयुक्त है १ इदम्‌कोमकारहोयसुपरेरहतेंसु १

प्रकालेत्र्यवाकृति मकारकोयकारविधानत्यदादीनोः ईहोत्र्यनुहेत्निवालेकेनामःकेवायावालेहै। मकारोच्चारणहैइदम्‌शह्वकीइदकोत्र्यपहोयुल्लिंगविवेइदम्‌सुईहांइदकोत्र्यपभयात्र्यइदकेत्र्यकार मेमिलायकारलेपरेसुलोपभयात्र्ययम्‌सिद्धं इदम्‌औईहांत्यदादीनामःकरकेमकारकोत्र्यकारभयात्र्यपदां तत्र्यकोपरनेगुणपरेऊंदयापररूपएकादेशकोरसकरकेइदकात्र्यपदांतत्र्यकारपरलेत्र्यकाररूपहीया इद म्‌केदकारकोमकारहोविभक्तिपरेरऊंदयादकारकीमकारभयावृद्धिभयीइमौसिद्धंत्र्यागेमकारकोत्यदा दीनामःकरकेत्र्यकारहोकेरसकरकेदकारकोमकारहोकेइमशह्वभयाइमजसईहांजसकोशीभया गुणभयाइमेसिद्धंत्यदादिकाकासंबोधननहीस्वाभाविकतें इमंत्र्यमिपूर्वःभयाइमौवृद्धिभयीइम शसईहांप्रथयोःपूर्वकरकेदीर्घभयातस्माच्छसोनःकरकेसकारकोनकारभयाइमान्‌सिद्धं इदम्‌

इदमोमः सौत्यदाद्यत्वापवादः कः कौ के इदोपपुंसिअय म्‌ त्यदाद्यत्वे अतोगुणेअपदांतादकाराद्गुणेपररूपमे कादेशः दश्च इदमोदस्यमोविभक्तौवृद्धिः इमौ इमे त्यदा देःसंबोधनंनास्तीत्युत्सर्गः अनाप्यकः इदमइदोऽनापि विभक्तावित्यावितिप्रत्याहारः अनेन हलिलोपः इदम इदो लोपः आपिहलादौनानर्थकेलोंत्यविधिरनभ्यासविका रे आद्यंतवदेकस्मिन्‌सुपिचेतिदीर्घः आभ्यां नेदमदसोर कोः अककारयोरिदमदसोभिस्‌एस्न एभिः अस्मै एभ्यः अस्मात्‌ अस्यअनयोः एषां अस्मिन्‌ एषु द्वितीयादौ

दाईहांककारहीनजोइदम्‌शह्वकाइदहैतिसकोअनहोत्र्याएपरेऊंदया टानेलेकरसुपर्यंतत्र्याप्र त्याहारहैइम्‌केमकारकोत्र्यकारभयापररूपभयाइदकोत्र्यन्‌भयाएकोइन्‌भयागुणभयात्र्यने नसिद्धं इदम्‌भ्यांईहां इदम्‌केइदकालोपहोत्र्याएहलादिकपरेऊंदयाइसकरकेइदकालोपभयात्र्य कारसेषरहाजेत्र्योईकहै अलोंत्यकरकेअंत्यकालोपकिसवास्तेनहीहोतातबकहतेनात्र्यनर्थकविं

नसंख्याभ्याम विकारविविभ्यत्तोंम्ब विधिनहीं होती इसतें अकारका लोप नहीं भया इदका लोप भया सु विच कारके दीर्घ भया जे दीर्घ कहे ईहां अकारांत अंग नहीं अवक हिना एक विरवे जो क्रिया मा ला कार्य है सो या देअंत कीन्यायी होइ इसतें इस पकार न् अकारांत जानके दीर्घ भया है आभ्यां सिद्धं ककारा ही न जोइ दम् ए नद शा हो। है न तिन के परे जो भिस् है तिस को ऐस् नहीं होइ इदम् भिस् ईहां अत्व भया पररूप भया इदका लोप भया भिस् को ऐस नहीं भया अकार को एकार भया एभिः सिद्धं आगे मकार को अकाके र य पररूप फेर इदका लोप होने गये अशष भयाङे को स्मै भया अस्मै सिद्धं आभ्यां दीर्घ भया एभ्यः ईहां एकार भया अस्मात् ईहां ङसि को स्मात् भया अस्य अनयोः ईहां अनाप्यकः इदको अन भया ओसि च करके एत्व भया अ सु भया एत्व भया षत्व भ

तराः॥ अन्वादेशे किं चित्कार्यं विधातुमुपात्तस्य कार्यान्तरं विधातुं पुनरुपादानमन्वादेशः। यथा अनेन व्याकरणमधीतमेनं छन्दोऽध्यापय। अनयोः पवित्रं कुलमेनयोः प्रभूतं स्वमिति। एनं एनौ एनान्। एनेन। एनयोः। राजा। न ङिसंबुद्ध्योः। नस्य लोपो न स्यान्ङौ संबुद्धौ च हे राजन्। ङावुत्तरपदे प्रतिषेधः। ब्रह्मनिष्ठः। राजानौ राजानः। राजानं राजानौ। अल्लोपोऽनः। राज्ञः राज्ञा राजभ्यां राजभिः। नलोपः सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति। सुब्विधौ स्वरविधौ संज्ञाविधौ

कृति तुग्विधौ च नलोपोऽसिद्धो नान्यत्र तेन राजभ्यां भिस्यादौ नलोपस्यासिद्धत्वान्नात्वमेत्वमैस्त्वं च न राजाश्व इत्यादौ दीर्घः ॥

५ ईद कार्यनाशको फेर कार्यान्तरकरीवे ५

रेफ विसर्ग भये अनयोः सिद्धं एषां ईहां सुट् आया एत्व पीछे भया षत्व भया आसि अनयोः एषु द्वितीयाटा ओस्सु परे इदम् एतद् को एनत् आदेश होय अन्वादेश को अन्वादेश विवेक ऐच्छिक कार्य के करणान्जो कथन है सो अन्वादेश है जैसे इसने व्याकरण पठन कीया है इसनूं वेद पठन करावो ईहां इदम् को अनु परतः एन। आदेश भया दोवारी इदम् का उपादान है इन कीय विरक्तल है इन का पठन बहु है ये अन्वादेश है यूना। आदेश भया राजन् सु ईहां नांत कीउपधाको दीर्घ भया सु लोप भया नलोप भया राजा सिद्धं नकार का लोप नहीं होइ ङि परतः च संबोधन विखे है राजन् ईहां नलोप नहीं भया सुलोप भया उत्तरपद विखे ङि परे ऊं दयानिषेध है ब्रह्मनि निष्ठा यस्य सः ब्रह्मनिष्ठः ईहां नलोप भया राजानौ राजानः ईहां उपधाको दीर्घ भया राजन् शस् ईहां अकार लोप भया ष्टोः ष्टुः करके नकार को ञकार भया॥

नकारअकार मिलकेतभयापेमिलतागयाराज्ञः सिद्धं राजन्‌शब्दईहांअल्लोपभयाअकारभयाराज्ञासि हुंराजन्‌भ्यांईहांनलोपभया राजभ्यां सिद्धं राजभिः इत्यादिकाविविसुपिवकरकेदीर्घमिलकोपसंराजभ्यः ईहांयत्वनहींहोतानलोपकोअसिद्धहोनेसेराजाभ्यईहांदीर्घकरदयानलोपसिद्धहैरसलत्वबलनमुपविधिविविस्वरविधिविविसंज्ञाविधिविविकृन्‌परतः वपुनः लुकविधिविविनलोपअसिद्धहै होरविधिविविसिद्धहैआगेतपरेमिलदागयाराज्ञांराजभ्यांराजभ्यः राज्ञः २ राज्ञोः २ राज्ञां राज्ञि राजसु इसीप्रकारयज्वन्‌शब्दहैयज्वा यज्वानौ २ यज्वानः यज्वानं यज्वन्‌ शसईहांअल्लोपोनः करकेअकारलोपपर्यासीसोनिषेधकरदाहैवकारांतमकारांतनसंयोगनेपरेयज्वन्केअकारकालोपनहींहोयज्वनःय

यज्वा यज्वानौ यज्वानः नसंयोगाद्वमंतात्‌ वमांतसंयोगा द्नोकारस्यलोपोन यज्वनः यज्वना यज्वभ्यां ब्रह्मणः ब्रह्मणा इत्यत्रापार्थमूणायो एषणावेणोपधापादीर्घः सौच इत्यादीनामुपधापादीर्घोसंबुद्धौसोहनहा देहनहन्‌ एकाजुत्तरपदेनः एकाजुत्तरपदंयस्मिन्‌तस्मिन्समस्तपदस्या त्रिनिमित्तात्परस्यणस्तियदिकांतन्नुन्विभक्तिस्थस्यनस्यणः वृत्रहणौवृहणेनेत्रिनिर्वृत्तिनिमित्तिनिप्रान्त्येनकौरैयोहने च हस्यकत्वंहनेरन्तर्वस्सेव नस्यणत्ववृत्रघ्न इत्यादि

ज्वना यज्वभ्यां यज्वभिः इत्यादिकजाननेब्रह्मा ब्रह्माणौ २ ब्रह्माणः ब्रह्मणः ब्रह्मणा ब्रह्मणे ईहांम कारांतसंयोगसेअल्लोपनहींभयाहववहंतीतिहवहार्दतः वनहनुसुईहांउपधाकोदीर्घपायासीसोछ्वा॥ वस्थानमेंहोताहैरनहवन्स्य पमन्‌रनकीउपधाकोशिपेउंदयांदीदीर्घहोरसकारकेनिषेधभया॥ ईहांचिपरेनहींनवकरताहैइनहाहोंकीउपधाकोदीर्घहोसंबुद्धिहीनमुपरेअदंदयोरसमत्वकारकेदीर्घ भयानुलोपभयानलोपभयाहवहासिद्धंआगेदीर्घनहींभयाएकअच्‌हैउत्तरपदविविविजिसकेनि॥ ससमासेविविवृत्तिपदविविन्धिनजोनिमित्तहैतिसनेपरेआगेयदिकांतनजोनुमकानकारहैतिम॥

किस्यजोनकारहैनिमित्तकोणत्वहोरसकरकेहण्णुटणोइत्यादिकाविविणकारभयाहवहणः हवहन्‌शसईहांअल्लोपोनः करकेमकारलोपभयाफेरनित्‌णोत्‌प्रत्ययवहनः नकारप रेहंदयाहारकेहकारकोकुत्वहोरसकरकेघवसहईहांचतुर्थहकारकोकवर्गकाचतुर्थघकारभयाअन्त्यर्वकहन्‌केनकारकोणकारहोईहांअन्त्यनहींहतब्रुः सिद्धं हवहन्‌भ्यांआगेहवहरणे मिलदागया॥ ९

इसी प्रकार शार्ङ्गिन् सु ईहां सौ च करके दीर्घ भया सु लोप भया न लोप भया शार्ङ्गी सिद्ध शार्ङ्गिणौ शार्ङ्गिणः
शार्ङ्गिभ्यां इत्यादि जानने यशस्विन् सु ईहां सौ च करके दीर्घ भया सु लोप भया न लोप भया यशस्वी सिद्ध
यशस्विनौ यशस्विनः यशस्विभ्यामित्यादि पूषन् सु ईहां सौ च करके दीर्घ भया सु लोप न लोप भया पूषा
सिद्ध पूषन् शस् ईहां अल्लोपोनः करके अकार लोप भया पूष्णः करके नकार को णकार भया पूष्णः
सिद्ध पूषभ्यां ईहां न लोप भया अर्यमन् सु ईहां दीर्घ भया सु लोप न लोप भया अर्यमा सिद्ध अर्यमन् शस्
ईहां अल्लोपोनः करके अकार लोप भया अर्यम्णः सिद्ध मघवन् शब्द को विकल्प करके तृ अन्तादेश होके
इस करके नकार के स्थान तृ आदेश भया ऋ इत् भया मघवत् भया तदनन्तर धातु भिन्न जो उगित्

एवं शार्ङ्गिन् यशस्विन् अर्यमन् पूषन् मघवा बहुलं मघ
वन् शब्दस्य वा तृ अन्तादेशः ऋ इत् उगिदचां सर्वनाम
स्थानेऽधातोः अधातोरुगितो नलोपिनोऽञ्चतेश्च नुम्
स्यात् सर्वनामस्थाने मघवान् मघवन्तौ मघवन्तः हे
मघवन् मघवन्तं मघवन्तौ मघवतः मघवता मघ
वद्भ्यां तृत्वाभावे सुटि राजवत् श्वयुवमघोनामतद्धिते
अन्नन्तानां भानामेषाम् अतद्धिते परे संप्रसारणं स्यात् म
घोनः मघवभ्यामित्यादि एवं श्वन् युवन् न संप्रसारणे सं

प्रसारणं ॥ ४ ॥

है च उनः न लोपी अञ्चु धातु है तिस ने नुम् होसर्वनामस्थान परे हां दयां उकार ऋकार लृकार जहां इ
त् है सो उगित् कहाता है इस सूत्र करके नकार के पूर्व नुम् आया है उम् इत् भया दीर्घ भया सु लोप भया
संयोगान्त नकार लोप भया मघवान् सिद्ध ईहां न लोप नहीं होता संयोगान्त को असिद्ध होने ने अगे नकार न
कार परे मिलते गये दीर्घ पर्यन्त अगे नकार परे मिलता गया जैसे मघवनः नहीं तो नहीं भया न हां और प
र्यन्त जनी ऋ की न्यायी रूप जानने मघवा मघवानौ मघवानः इत्यादि अवर्ण भसंज्ञक हो जो श्वन् एव न मघवन्

मघवं शिवकोअसंप्रसारण होता है तिसका पर्वोक्त रूप ॥

मघवन् शब्दसे ईहांपर इस सूत्रकरके वकारको उकार संप्रसारण होया संप्रसारणाच्च इस सूत्रकरके अकार पूर्वरूप
भया गुण भया मघोन् शब्द वनके परे मिलदा गया मघोनः मघोना सिद्ध भया मघवभ्यां ईहां नलोप भया इ
सी प्रकार श्वा श्वानौ श्वानः श्वन् शब्दसे ईहां वकारको संप्रसारण उकार भया पूर्वरूप भया श्वन् परे मिला
दा गया शुनः शुना श्वभ्यां युवा युवानौ युवानः युवन् शब्दसे ईहां वकारको उकार संप्रसारण भया पू
र्वरूप भया दीर्घ भया यून् परे मिलदा गया यूनः यूना युवभ्यां इत्यादि जो ईक है युवन् में यकारको संप्र
सारण किस वास्ते नहीं होता न तद्धितका हिना संप्रसारण परे ईहां दया पूर्वको संप्रसारण नहीं हो इस कारके
निषेध है अर्वन् सु ईहां दीर्घ भया सुलोप अर्वा अर्वाणौ स्नेपभयो नलोप भया अर्वा सिद्ध है नञ्सावनम
नञ् हि न जो अर्वन् है तिसको तृ अर्वन्तौ अर्वन्तः देश हो सु विना नुम् आया परे मिलदा गया अर्वन्तौ सिद्ध प

पथिमथिऋभुक्षामात् सौ इतोत्सर्वनामस्थाने थो
न्थः पथिमथोस्थस्यन्थादेशः पंथाः पंथानौ पंथा
नः पंथानं भस्य टेर्लोपः भस्यपथ्यादेष्टेर्लोपः पथः
पथा पथिभ्यां पथिभिः एवं मथाः ऋभुक्षाः ष्णांता
षट् ष्णांतानां ना च संख्या षट्संख्या स्यात् पंच २ पंचभिः
पंचभ्यः ३ नुट् नोपधायाः नोनस्योपधादीर्घः नामि पं

थिन् पथिन् ऋभुक्षन् इनोंको आत् हो सु परे ईहां दया पथिन् के इकारको अत् हो सर्वनामस्थान परे ईहां
दया पथिमथके थकारको न्थादेश हो पथिन् सु ईहां नकारको आकार होया इकारको अकार भया दी
र्घ भया थकारको न्थ आदेश भया सुको रेफ विसर्ग भये पंथाः सिद्ध औ जसी कर इकारको अकार होता
है नकार परे मिलदा है पंथानौ पंथानः भसंज्ञक हो जो पथ्यादिक है तिनकी टि का लोप हो पथिन्
शब्द ईहां टि का इन् का लोप हो ता गया थकार परे मिलना गया पथः पथा पथिभ्यां इत्यादि इसी प्रका
र मथिन् सु ईहां नकारको आत् भया इकारको अकार भया दीर्घ भया ण भया सुको रेफ विसर्ग भये म
थाः सिद्ध ऋभुक्षन् सु ईहां नकारको आत् भया दीर्घ भया सुको रेफ विसर्ग भये ऋभुक्षाः सिद्ध
षांत नांत जो संख्या है सो षट्संज्ञक हो पंचन् जस ईहां षट्संज्ञा भयी षड्भ्यो लुक भया न लोप भया

पंचभ्यः ३ ईह्यांनलोपभया नांतअंगकीउपधाकोदीर्घहोनाम् परीह्मंदया पंचन्‌ षाम् ईह्यां षट्‌ चतुर्भ्यः क
रकेनुड्‌आयाफेरनामिकरकेदीर्घनहीपायी ससीनवनेपथा याः करवोदीर्घभयानलोपभयापंचानां
सिद्धंपंचन ईह्यांनलोपभया अष्टन् शह्‌कोविकल्पनेआकारहोहलादिकविभक्तिपरेह्नंदयाकीया।
हैआकारजिसकोऐसाजोअष्टन्‌शह्‌ हैतिसतेपरेजस्‌शस्‌कोऔश्‌होअष्टाभ्यऐसोकथनकरणासी
आकारकादर्शनजस्‌शस्‌परतःभीआकारविधिकोजनातहै अष्टन्‌जस्‌शस्‌ ईह्यांनकारकोआकार
भयादीर्घभयाजस्‌कोऔकारभयावृद्धिभयीअष्टौरसिद्धंअष्टाभिः ईह्यांआत्वभया अष्टाभ्यां अ
ष्टानांईह्यांनुडुआयादीर्घभयानलोपभयाअष्टानांसिद्धंअष्टासुआत्वसेजौव विविअष्टन्‌पंचन्‌कीन्या

अष्टन्‌शह्‌स्यआकारादेशः स्याद्धलादौविभक्तौअष्टाभ्यः
औश्‌कृताकारादष्टनोजश्शसोरौश्‌अष्टभ्यइतिवक्तव्येकृ
तात्वनिर्देशोजश्शसोर्विषयेआत्वंज्ञापयति अष्टौ २ अष्टा
भिः अष्टाभ्यः अष्टानां अष्टासु आत्वाभावेअष्टपंचवत्‌
ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगंचुयुजिक्रुंचांच प्रश्वः क्विन्‌
अंचेः सुप्युपपदेयुजिक्रुंचोः केवलयोः क्रनाविनोक्रुदति
ङ्‌अन्यथात्वयिकोरेतिङ्‌भिन्नःप्रत्ययः कान्तस्तः ॥ ॥ ॥

हैऋत्विग्दधृक्‌स्रग्दिग्उष्णिग्अंचुयुजक्रुंचुइनोंनेपरेक्विन्‌होसुपपूर्वपदहोयांअंचनेहोयुजक्रुंच
केवलकोहोककारनकारइनहैइसथात्वयिकारविविक्तिङ्‌भिन्नजोप्रत्ययहैसोकान्तसंज्ञकहोअष्टकविका।
लोपहोक्विन्‌प्रत्ययजिसतेकरीदाहैतिसकोकवर्गीनादेशहोयदंतविवे ऋत्विग्‌ सुईह्यांप्रथमक्विम्‌
आयाक्विन्‌कालोपभयास्वादिकूपरेआयेजकारकोकवर्गगकारभयावावसानेकरकेविकल्पनेककारभ
याऋत्विक्‌ऋत्विग्‌जतीतिऋत्विकसिद्धंआगेजकारथाचुमेमिलदागयाऋत्विग्भ्यां ऋत्विक्षु ईह्यांकुत्वभ।
याषत्वभयाऋत्विक्षुसिद्धं युज्‌ ईह्यांसमहोसमासविविनहीहोइसकरकेनकारतेपरेनुम्‌आयाउम्‌इत्‌
क्विनकालोपभयापरेसुआया सर्वनामस्थानपरेह्यंदया युजेते ९५) भयासुलोपभयासंयोगांतजकारकालोपभयाकुत्वा।
नकारकोङकारभयायुङ्‌सिद्धंयुनूङौईह्यांपरसवर्णभयायुञ्जौइत्यादिसिद्धंशसादिपरतः युजः युजा।

युग्भ्यां युञ्जु सुयुक् सुयुई होंकि श्मायाहै चवर्गको कवर्गादेश होकल् परनः चपुनः पदांन विवेइ सकारके कुत्वभयासु १कुसुयुजौ इत्यादि नुम् नहीआयाई हांसमासहै खञ्नु मुईहांसंयोगांतनकारलोपभया सुलोपभयाखञ्नुसिहंआगेपैमिलदागया खञ्जौ खञ्जः व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयुज्राजभ्राजू इनकों श। ३१८
कारछकारकोंषकारहोकल्परेऊंदयाचपुनः पदांतविवेराजन्नु सुईहां जकारको षकारभयाफलाजरों ते कर के षकारकोडकारभयावावसानेभयाराड् राट् सिहं राजौ राजः इसीप्रकारविभ्राट् देवेट् विश्व सृट् इत्यादिकजानैनेपरि उपपदभयांव्रजनैं क्विपूहो चपुनः दीर्घहोपदांतविवेषत्वभीहोपरिव्रज सुई

ऋत्विक् ऋत्विजौ ऋत्विजः ऋत्विग्भ्यां युजेरसमासे यु
जेः सर्वनामस्थाने नुम् स्यात् असमासे सुलोपः संयोगां
तलोपः कुत्वेन नस्य ङः युङ् युञ्जौ युञ्जः युग्भ्यां अ
समासे किम् चोः कुः चवर्गस्य कवर्गादेशः स्यात् झलि प
दांते च सुयुक् सुयुजौ सुयुजः सुयुग्भ्यां खन् खञ्जौ ख
ञ्जः खञ्भ्यां व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः झ
लि पदांते च जस्य षत्वे राट् राड् राजौ राजः राड्भ्यां एवं वि
भ्राट् देवेट् विश्वसृट् परौ व्रजेः षः पदांते परावुपपदे व्रजेः
क्विप् स्यात् दीर्घश्च पदांते षत्वमपि परिव्राट् विश्वस्य वसु
राटोः दीर्घः विश्वाराट् विश्वराजौ स्कोः संयोगाद्योरंते च पदांते
झलि च पः संयोगस्यादौ यौ सकारककारयोर्लोपः भृट्स

हांकि शकालोपभयादीर्घभयाम कारकोक्षकारभयाजश डकारभयाविकल्पचर्भयापरिव्राड् परिव्राट् सिहं विश्वाराड् विश्वाराट् ईहां दीर्घभयाषत्वजश्चचर्त्वभयाभृस्जसुईहांपदांतविवेचपुनः झलुपरे ऊंदयाजोसंयोगहै तिसकेआदिमोसकारककारहै तिसकालोपहो ॥ इसकरके सकारलोपभयाज कारकोषकारभयाषकारकोडकारभयाचर्भयासुलोपभयाभृट् भृड् सिहं भृस्जन् ओई हां स्कोः सुः।

नाकारके सकारकोशकारभयाजश्च जकारभयापरेमिलदागयाभृज्जौ सिद्धंभृड्भ्यां भृड्सु भृड्भ्यस
ः सिद्धभ्यायासिद्धंलन सुई होत्यदादीनामः करके नकारकोअकारभयापररूपभयान शब्दवनया।
केत्यदादिकाकेअनेत्यतकारदकारकोसकारहोसुपरेऊंदयारसकारके नकारकोसकारभयासुकौं
होसुपरेऊंदयारसकारकेनकारकोसकारभयासकोरेफविसर्गभयेसः सिद्धंयागेतशब्दसर्वकीन्यायी
हैतौ ते इत्यादि त्यद् सुईहांअकारभयापररूभयात्यशब्दतयासकारभयासुकोरुत्वविसर्ग भये
स्यः त्यौ त्ये सिद्धं यत सुईहांअकारभयापररूपभयानकारकोसकारभयाषत्वभयाएषः एतौ एते सि।
द्धं एतद्शब्द सर्वशब्दकीन्यायीहै युष्मद्सु अस्मद्सुईहां युष्मदअस्मद्शब्दनेपरेजोङे हैचतुनः प्रथमा
द्वितीयाहैतिसकोअम्काआदेशहोइसकारकेसुकोअम भयायुष्मद्अस्मद्शब्दकीमकारपर्यंतत्व

भृड्सस्य भृज्जेषाः जषत्व भृज्जौ भृज्जः भृड्भ्यां त्यदादित्वे
पररूपत्वे तदोःसःसावनन्त्ययोः त्यदादीनामनन्त्ययो
स्तदोःसः स्यात्सौ स्यः त्यौ ते स्यः त्यौ त्ये यः यौ ये एषः
एतौ एते ङे प्रथमयोरम् युष्मदस्मदर्भ्योपरस्य ङे प्रथमा
द्वितीययोरमादेशः त्वाहौ सौ अनयोर्मपर्यंतस्य त्वाहः।
आदेशौस्तः सौ शेषेलोपः एनयोष्टिलोपः त्वं अहं युवा
वौ द्विवचने ह्ययोः युवावनयोर्मपर्यंतस्य युवावौ स्तो विभ।
क्तौ प्रथमायाश्च द्विवचनेभाषायां औङ्येतयोरान्त्वलोकेयु

अहं आदेशहोनइसतरेञकारकेमकारतीकअयुष्मकोत्वभयाअस्मकोअहंभयायुष्मद्अस्मद्कीटि
कालोपहोइसकारकेअद्काेलोपभयापररूपभयात्वंसिद्धंअहंसिद्धंयुष्मद्औ अस्मद्औ ईहां औकार।
कोअम्भयातदनंतरदोनोकीउक्तिविधियुष्मद्अस्मद्कोमकारपर्यंतकोयुवआवआदेशहोनवि
भक्तिपरेऊंदयारसकारकेमकारपर्यंतइनकोयुवआवभयाफेर प्रथमाकाद्विवचनऔङ्परेऊंदया
युष्मद्अस्मद्कोआकार होइसकारकेदकारकोआकारभयासवर्णदीर्घदोवांदीर्घभया युवां आवां। वे
सिद्धभया॥ युष्मद्जसअस्मद्जसईहांजसकोअम्भयामकारपर्यंतयुष्मद्अस्मद्कोयूयवयमा

देशहोइसकारकेस्थयुष्मकोवयअस्मकोमभयाअद्कालोपभयापररूपभयाहृयंवयंसिद्धंयुष्मद्
अस्मद्अमईहांअम्कोअम्भयाएककीउक्तिविषेइनकोमकारपर्यंतत्वमआदेशहोनयुष्मकोत्वभयाअस्मकोमभयाद्वितीयाविषेइनकोआकारहोइसकाकेदकारकोआकारभयासवतोदीर्घ
भयासिद्धंत्वांमांअमिसर्वः भयाऔपरतः युवआवभयादकारकोआकारभयायुवांआवांसिद्धं[यु
ष्मद्शसअस्मद्शसईहांद्वितीयाकेस्तृतसेदकारकोआकारभयापेरयुष्मद्अस्मद्इनसेपरेशस्
कोनकार होइसकारकेअंत्यकोयायासौसोआदेःपरस्यकारकेआदिकोनकारादेशभयासंयोगा
तसकारकालोपभयाअम्कायेअपवादहैयुष्मान्अस्मान्सिद्धंयुष्मद्टाअस्मद्टाईहांत्वमावेक
ववनेकरकेमकारपर्यंतत्वमभयानदनंतर युष्मअस्मद्कोयकारादेशहोअरुपरतः इसकारके

मूयवयौजसिअनयोर्मपर्यंतस्य यूयं वयं त्वमावेकव
चने एकस्योक्तावनयोर्मपर्यंतस्यत्वमौस्तः द्वितीयांच
अनयोरान् त्वांमां शसोनः आभ्यांशसोनःआदेशः अमो
पवादः आदेःपरस्यसंयोगांतस्यलोपः युष्मान् अस्मान् यो
चिअनयोर्यादेशो विलयामया युष्मदस्मदोरनादेशो अना
देशात्स्यान्अना देशेहलादौ युवाभ्यां आवाभ्यां युष्माभिः
अस्माभिः तुभ्यमह्योङ् विअनयोर्मपर्यंतस्यतुभ्यमह्यंभ
सोभ्यम्आभ्यांपरस्ययुष्मभ्यं अस्मभ्यं एकवचनस्यचआ
भ्यांङसेरत्तत्त् मत् पंचम्याःअत् आभ्यांपरस्य युष्मत्

टकारकोयकारभयाटाकेआकारमे लोत्वयामयासिद्धंयुष्मद्भ्यांअस्मद्भ्यांईहांयुष्मकोयुवभा
यात्रस्मकोआवभयानदनंतरयुष्मद्अस्मद्कोआकारहोअनादेशविषेहलादिकविभक्तिपरे
हुईदयाइसलत्रकारकेदकारकोआकारभयादीर्घभया युवाभ्यां आवाभ्यांसिद्धंयुष्माभिः अस्माभिः
ईहांदकारकोआकारभयायुष्मद् ङे अस्मद् ङे सूईहां ङेपरेङेदयामकारपर्यंतयुष्मद्अस्मद्को
तुभ्यमह्यआदेशहोनइसकारकेइनकोतुभ्यमह्यआदेशभयाअद्कालोपभयाङेकोअम्होया

युष्मद् ङस् अस्मद् ङस् सूईहां त्वमावेकवचने सूत्रकरके मकारपर्यंतत्वमआदेशभयेतिकाग्रद्‌कालोप
के भयाङस्अन् आदेशभयात्वतमन्‌ सिद्धं युवाभ्यां आवाभ्यां युष्मद् अस्मद् नेपरे पंचमीके भ्यस् कोअत्
हे युष्मत् अस्मत् ईहांतिलोपभयाभ्यस् कोअत् भया युष्मद् अस्मद् कोतवममआदेशहोनङस्परे
ह्रदा युष्मद् अस्मद् नेपरेङस् कोयुष्मद् ङस् अस्मद् ङस् सूईहां मकारपर्यंततवममभयातिलोपभया
ङस् कोअशहोयात्‌वममसिद्धं युष्मद् ङो अस्मद् ङो सूईहां मकारतीकरयुवआवभया दकारके
यो विकल्परके यकारभयापरेओस् मेमिलारेफविसर्गभयेयुवयोः आवयोः सिद्धं युष्मद् आम्
अस्मद् आम् ईहां युष्मद् अस्मद् नेआम् कोआकं आदेशहोरसकरके आम्कोआकंभयातिकालोप

तवममौ ङसि अनयोर्मपर्यंतस्य आभ्यां ङसोश् तवममयु
वयोः आवयोः साम्आकं आम्याःपरस्यसाम आकमादेशः
युष्माकं अस्माकं त्वयि मयि युवयोः आवयोः युष्मासु
अस्मासु युष्मदस्मदोः षष्ठीचतुर्थीद्वितीयास्थयोर्वानावौ
पदात्परयोरपादादौ स्थितयोः षष्ठ्यादिविशिष्टयोर्वानावादे
शौस्तः बहुवचनस्य वस्नसौ उक्तविधयोरनयोः षष्ठ्यादिब
हुवचनांतयोर्वस्नसौस्तः तेमयावेकवचस्य उक्तवि

भयापरेमिलायुष्माकं अस्माकं सिद्धं युष्मद् ङि अस्मद् ङि ईहांङकाररत्‌ भयात्वमावेकवचनेकरके
त्वमआदेशभयायोविकरके दकारकोयकारभयात्वयि युवयोः आवयोः युष्मासु अस्मासु ईहां यु मयि २
ष्मदस्मदोः सूत्रकरके दकारकोआकारभया युष्मदस्मदोः वानौआदेशौस्तः कथंभूतयोः युष्मद
स्मदोः पदात्परयोः पुनः कथंभूतयोः अपादादौस्थितयोः पुनः कथंभूतयोः षष्ठ्यादिविशिष्टयोः प
दतेपरेहोनपादकेआदिविषेनहोस्थितहोनषष्ठीचतुर्थीद्वितीयायुक्तहोनपेसेजोयुष्मद् अस्म
द्‌ दे तिनकोवानौआदेशहोनपेसेमकारकरके युक्तजोषष्ठीचतुर्थीद्वितीयाकेबहुवचनांत युष्म
द् अस्मद् तिनकोवः नः आदेशहोन ॥ एकवाक्यविषे युष्मद् अस्मद् कोआदेशवक्तव्य है न एक

नित विवेतिङ् हे सा एक वाक्य कहीदा है तिसतेजे दर्नं वं चनवभविष्यतिई हांनव कोतेनहीभयाईहां होति
ङ्हैनयेश्चादेशाश्चत्वादेशविवेनित्यहोनयातानेभकोसितवभकोसिईहांविकल्पभयातसैतेनमःईहांति
त्वाश्चादेशभयाशोभनोपादौयस्यसः सुपात्ईहांसुलोपभयाचरभयाश्चागेपादपरेमिलतागयासुपादै सु
पादः सुपादं सुपादौ पाद्शब्दहैश्चंतजिसकेऐसाजोभसंज्ञकअंगहैतिसकाश्चवयवजोपाद्शब्दहैतिसको
पद्श्चादेशहोसुपदः सुपदा सुपाद्भ्यांइत्यादि अग्निमथ्नातीतिअग्नि मत्ईहांसुलोपभयाचर्भयाश्चागेपका
रपरेमिलतागयाअग्निमथौइत्यादिहलंतअनिदितजोअंगहैतिसकीउपधाकाजोनकारहैतिसकालो
पहोकितङित्परेहुंदयानमूहोसंयोगांतलोपहोकुत्वहोअग्निमथुनेकित्नकालोपभयापरेसमयाया
रजिसकारनहीहोवेसोकहीयेअनिदितअनितत्अंगयाप्रान्चहैतिसकीउपधाकेनकारकोलोपभ

सुपात् सुपादौपादःपत् पाञ्चहांतेपदंगंभंतदवयवस्य
पाञ्चहस्यपदादेशः सुपदः सुपाद्भ्यां अग्निमत् अग्नि
मथौ अग्निमथः अग्निमद्भ्यां अनिदितांहलउपधायाः
क्ङितिहलंतानामनिदितामंगानामुपधायाःनस्य
लोपःस्यात्कारस्यलोपः चौलोपः क्ङितिङितिनमूसंयो
गांतस्यलोपःनस्यकुत्वेनङ्प्राङ्प्राञ्चौप्राञ्चः प्रचः॥
लुप्तनकारस्य॥ लुप्ताकारनकारेचपरेपूर्वस्याचोदी

याउगिदचांकारकेनुम्आयाउम्इत्भयासंयोगांतचकारकालोपभयासुलोपभयानकारकोङत्वङकार
भयादीर्घभयाप्राङ्सिद्धं आगेप्रान्चौइत्यादिकाविवेनश्चापदांतस्यकरकेनकारकोअनुस्वारभयाअनु
स्वारस्ययपरिकरकेअनुस्वारकोपरसवर्णञकारभयापरेमिलतागयाप्राञ्चौ प्राञ्चः प्राञ्चं प्राञ्चौसिद्धं।
प्रान्चशस्ईहांअनिदितांकरकेनकारलोपभयातदनंतरलुप्तनकारकजोअच्हैतिसकेअकारकालोपहो
करकेअकारलोपभयाप्रचश्चसभयातदनंतरसमभयाहैअकारनकारजिसकाऐसाअच्परेहुंदय
पूर्वअचकोदीर्घहोइसकरकेदीर्घभयापरेमिलासकारकोरुत्वविसर्गभयेप्राचःसिद्धंप्राचा प्राग्भ्यांईहांन
लोपभयाकुत्वभयाजशभयाप्राच्ईहांनलोपभयाकुत्वभयाषत्वभया॥ इसीप्रकार प्रनिपूर्वकअंचका

प्रत्यङ् सिद्ध भया प्रति अञ्चु सुई ह्रां अनिदितां करके नकार लोप भया इगिद चां करके नुम् आया संयोगान्त नकारलोप भया हल्ङ्याब्भ्यः करके सुलोप भया कुत्व ङकार भया इकार को यण भया प्रत्यङ् सिद्ध प्रत्यञ्चौ ईहां न लोप भया सर्वनामस्थाने करके अनुस्वार भया अनुस्वारस्य ययि करके ञकार भया परे मिलदाग हाया प्रति अञ्चु शस् ईहां नकार लोप भया अचः स्त्र करके अकार लोप भया चौ स्त्र करके इकार को दीर्घ भया प्रतीच् शस् परे मिलदा गया प्रतीचः प्रतीचा इत्यादि प्रत्यग्भ्यां ईहां न लोप भया कुत्व भया उद् अञ्चु सुई हां भी न लोप भया नुम् आया वलोप भया सुलोप भया कुत्व भया उदङ् सिद्ध उदञ्चौ इत्यादि उद अञ्चु शस् ई हां नकार लोप भया ल्लुमा नकारक जो अञ्चु है तिसका भसंज्ञक होय अकार है तिसको ईत् होय सकरके अकार को ईकार भया उदीच् परे मिलदा गया उदीचः उदीचा इत्यादि सम् को समि आदेश होवे अप्रत्ययान्त अञ्चु परे हुंदया इसकारके समि अञ्चु सु भया ईहां वकार लोप नुमागम भया वकार सु लोप भया कुत्व भया यण भया सम्यङ् सिद्ध सम्यञ्चौ

च्यः प्राचः प्राचा प्राग्भ्याम् प्रत्यङ् प्रत्यञ्चौ प्रतीचः प्रत्य । ग्भ्याम् इदङ् उदञ्चौ उद ईत् उच्छेदर्शन्यात्सुम नकारस्या । ञ्चतेरीपरे सम्यङ् सम्यञ्चौ समीचः सहस्य सध्रिः सध्र्यङ् । तिरसस्तिर्यलोपे अलुप्ताकारेऽञ्चतावप्रत्यये तिरसस्ति । र्यादेशः तिर्यङ् तिर्यञ्चौ तिर्यग्भ्याम् नाञ्चेः पूजायाम् पूजा । र्थस्याञ्चतेरुपधाया नलोपो न प्राङ् प्राञ्चौ नलोपाभावा । दलोपो न प्राञ्चः प्राञ्चा प्राङ्भ्याम् प्राङ्क्षु एवं पूजार्थे

इत्यादि शसादि परतः नकार अकार लोप भया पूर्व नू दीर्घ भया समीच् परे मिलदा गया समीचः समीचः सिद्ध सह अञ्चु रहां सह को सध्रि आदेश होय सकरके सह को सध्रि भया फेर यण भया न लोप भया वलोप सुलोप भया कुत्व भया न अञ्चु परे हुंदया तिरस् को तिरि आदेश होय तिर्यङ् ईहां भी न लोप नुमागम वलोप सुलोप कुत्व भया शसादि परतः नकार अकार लोप भया तिरश्च् शस् परे मिलदा गया तिरश्चः तिरश्चा इत्यादि सिद्ध तिर्यग्भ्यां तिर्यक्षु पूजार्थक जो अञ्चु धातु है तिसके नकार का लोप नहीं होय न लोप नहीं होने तें नुम् भी नहीं आया शसादि परतः अकार लोप भी नहीं भया प्राङ् सिद्ध भया विशेष लीनराष्ट्रागे सारे भकार च ।

चकारपरेमिलनेगये प्राञ्चौ प्राञ्चः प्राङ्काभी प्राञ्चः इसीप्रकारहजानाअर्थविषे प्रत्ययआदिकजाननेइसीतराक्रुङ्भ्
याकुञ्चपरेमिलनागयाप्राङ् प्राञ्चौ प्राञ्चः प्राञ्चं प्राञ्चौ प्राञ्चः प्राञ्चा प्राङ्भ्यां प्राङ्भ्यः प्राञ्चे प्राङ्भ्यां प्रा
ङ्भ्यः । प्राञ्चि प्राङ्भ्यां प्राङ्भ्यः प्राञ्चिः प्राञ्चोः प्राञ्चां प्राञ्चि प्राञ्चोः प्राङ्क्षु ईहांझ्लोःकुगागमभया
हैपयोमुंचतीतिपयोमुक्कुत्वभयाहैचोःकुःकरकै॥महत्हजानाअर्थविषेहै वर्तमानअर्थविषे एषतमहन्
बृहन्जगत्पृषत्निपाततेकरीदेद्वैंशनोशहोकोषान्कीन्यायीकार्यहोमहत्सुईहांउगिदचांकरकेनुम्भया।
यासांतसंयोगकोमहत्षाहकाजोनकारहैतिसकीउपधाकोदीर्घहोअसंबुद्धिसर्वनामस्थानपरेकुंदया।
इसकरकेदीर्घभयासंयोगांतनकारलोपभयासुलोपभयामहान्सिद्धंमहांतौ महांतः हेमहन्सिद्धंमहै
धीमान्सिद्धईहांदीर्घनहीभयाप्रागेनकारपरेमिलन ।महतःइत्यादि॥अत्वंतकीउपधाकोदीर्घहोच 〽

प्रत्ययादयः क्रुङ् क्रुञ्चौ क्रुञ्चः क्रुङ्भ्यां पयोमुक् पयोमु
चौ पयोमुचः पयोमुग्भ्यां महत्इजायांवर्तमाने एषन्महद्बृ
हज्जगच्छन्तृवच्च एतेनिपात्यंते शतृवच्चैषांकार्यंस्यात् उ
गित्वान्नुम् सांतमहतः संयोगस्य सांतसंयोगस्यमहतश्च
यो नकारस्तस्योपधायादीर्घोऽसंबुद्धौसर्वनामस्थानेमहा
न् महांतौ महांतः हेमहन् महतः महता महद्भ्यां
अत्वसंतस्यचाधातोः अत्वंतस्योपधायादीर्घोधातुभिन्नासं
तस्यचासंबुद्धौसौ नित्यंचनुमं वाधित्वादीर्घः धीमान् श्रीमं

ड्वतुः डित्वसामर्थ्यादभस्यापि टेर्लोपः भवा
न् भवंतौ ...नस्य भवन् उ... षाहि

उनः धातुभिन्नअसंतकीउपधाकोदीर्घहोअसंबुद्धिसुपरेकुंदया धीमत्सुईहांपूर्वदीर्घभयाकेरनुमर्थया
तलोपसुलोपभया॥ ॥प्रागेडवतुःतीकरनअभायाप्रागेनकारपरेमिलदागया॥भवधातुतेडवतुप्रत्ययहोणि
त्वसामर्थ्यतेअभसंज्ञकटिकाभीलोपहोयाडवतुईहांउकरकेडलोपभयाटेःस्तकरकेभाकेआकार
कालोपभयापरेमिलयाभवत्भयापरेसुआनुम्भयायादीर्घभयातकारलोपसुलोपभयाभवान्भयापरे
सुआनुम्भवंतःभवंतंभवंतौभवतःभवताभवद्भ्यामित्यादिषष्ठेशतृआयाऊकोगुणभयाअवभया भा
वत्सुभयानुम्सिद्धंहिविअध्यापकेहितप्रकारिविजेहितकपानकीयेहैंसोदोवेहृपअप्रसंसं ते... ज॰ स॰

१९

नअभ्यस्तसंज्ञकनेपरेनुम्नहीहोरददत्ईहांनुम्नहीआयाददतौइत्यादिषट्धातुअभ्यन्तादित्समभया
नुपहुअभ्यस्तसंज्ञकहोनलत्नजक्षतौइसीप्रकारजाग्रत्इत्यादिकजाननेगबुगुबुगुपौइत्यादिअसानार्थक
हुशधातलोकसृउनःक्विन्होत्यदादिकउपपदहोयांसर्वनामकोआकारहोहग्दृशवन्नपरेहृंदयानन्दृ
शईहांक्विन्कालोपभयातकारकोआकारभयाशकारकोषकारभयोफेरककारभयोतकारकोआकारभ
याशकारकोषकारकोडकारभयाडकारकोकुत्वगकारभयाफेरककोरभयानाहमनाटकसिद्धंनाहशोवि
शसुईहांषत्वडत्वभयानशकोकवर्गादेशविकल्पकरकेहोनशसुईहीशकारकोषकारभयाषकारको
डकारभयानट्नुट्भयाजबडकारकेकुत्वभयातबनकुनग्सिद्धंअनुदकसुपउपपदकोहोयास्पृशअ
नेक्विन्होछृतस्पृशईहांशकारकोषत्वडत्वगत्वकत्वभयादिदृक्षुसुईहांषकारकोडकारभयाडकारको

त्वप्रकरणोयेहेविहितेतेउभेअभ्यस्तसंज्ञेस्तः नाभ्यस्ताच्छतुः
अभ्यस्तात्परस्यशतुर्नुम्नस्यात् ददत् ददतौ जक्षित्यादि।
यः षट् षट् धातवेऽन्येजक्षितिस्तथासप्तमपतेऽभ्यस्तसंज्ञास्युः
जक्षत् जक्षतौ एवंजाग्रत् दरिद्रत् शासत् चकासत् दीध्य
त् दीध्यत् गुप् गुबृ गुपौ गुपः त्यदादिषु दृशोनालोचने कञ्च
असानार्थादेशः कञ्चस्यात् चात्क्विन् आसर्वनाम्नः दृग्दृश
वन्तुषु नाहकृनाहशोवृद्धेति षः जश्त्ववर्त्वे वीरुपधायाः दी
र्घइकः रेफवान्तस्यधातोरुपधायाइकोदीर्घः पिपठीः पिपठि
षौ पिपठीर्भ्यां नुम्विसर्जनीयशर्व्यवायेऽपि पिपठीःषु प्रत्येकंवाच्यः।

कुत्वगकारभयोरेफरककारभयाटकारभयाषड्२ईहांषकारकेजसशासकानुकभयाषसंनुट् ॥ पिपठि
षसुईहांसकारकोरुत्वभयाषत्वनहीहोनाफेरफरकवांतनोधातहैतिसकीउपधाकाजोइकहैतिसको
दीर्घहोइससूत्रकरकेदीर्घभयासुलोपभयापिपठीःसिद्धंआगेषकारपरेमिलगयापिपठिषौइत्यादिस
न्केअकारकोस्थानवदावनाहीहोनाविपरीतोस्यकार्यविवेस्थानवद्भावकानिषेधहैपिपठीर्भ्यांईहां
दीर्घभयापिपठीःषुईहांदीर्घभयावाशरिकरकेविसर्गकोविसर्गभयानुम्विसर्जनीयशर्इनोसाथय
गतेपरेकएककरकेव्यवधानहोयांभीइणकवर्गसकारकोषत्वहोईहांसर्गकरकेअंतरहैषत्वभयापठामेषुनाषुः

वि

करके रुत्वले सकारको भशीषत्व भया विपठीष्षु सिद्धं विकीर्षुस् ईहां संयोगांत षकारलोप भया सुलोप भ
यारेफमको विसर्ग भया विकीः सिद्धं विकीर्षु ईहां षत्व भया विद्वस् सु ईहां उगिदचां करके नुम् सकारके पूर्व भया
या उम् नुम् भयांत उपधाको दीर्घ भया संयोगांत सकारलोप भया सुलोप भया विद्वान् सिद्धं आगे परे मिला अ
सुबुद्ध्या या विद्वांसौ हे विद्वन् ईहां दीर्घ नहीं होना विद्वत् शस् ईहां वसुत्वं भसंज्ञकको संप्रसारण होइ सकार
के वकारको उकार भया अकार सवर्ण रूप भया सकारको षत्व भया विदुषः परे मिलना गया विदुषः सिद्धं विद्वद्भ्या
ईहां वसु स्रंसु करके सकारको दत्व भया विद्वद्भ्याम् पुमस् सु ईहां पुंसोसुङ् सर्वनामस्थान परे अं दया
इस सूत्रसे भिन्न करके सकारको असुङ् भया उङ् इत् भया पुमसु सु भया मकार ने परे नुम् भ्या या उम् नुम् भया सांत
महतः करके दीर्घ भया सु लोप सुलोप भया संयोगांत सकारलोप भया पुमान् सिद्धं आगे परे मिला पुमांसौ ईहां

वसोः संप्रसारणं स्यात् विदुषः वसुस्रंसु ध्वंसु इति दत्वं विद्वा
द्भ्यां पुंसोऽसुङ् सर्वनामस्थाने पुमान् पुमांसौ हे पुमन् पु
मः पुंभ्यां पुंसु ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां च उशना उशनसौ अस्य संबु
द्धौ वानङ् नलोपश्च वा वाच्यः हे उशनन् हे उशन हे उश
नः उशनोभ्यां अनेहा अनेहसौ अनेहोभ्यां वेधाः वेध
सौ वेधोभ्यां चंद्रमाः अदस औ सुलोपश्च अदस औत्स्यात् सु
लोपश्च दस्य सत्वं हाहि: असौ अदसोसेर्दादु दो मः अदसोसे
न्त स्यादात्परस्य उदूतौ स्तो दस्य मश्च अमू पनरीत् वहु वचने

तन्मात्रा ह्रस्वस्य उः दीर्घस्य ऊः

नुम् दीर्घ भये पुंस् शस् ईहां सकार परे मिलना गया पुंसः पुंसा पुंभ्यां संयोगांत सलोप भया पुंसु उश
नस् सु ईहां ऋदुशनस् इस सूत्रसे सकारको अनङ् भया अङ् इत् भया उशनन् ईहां नांत उपधाको दीर्घ भया
सुलोप भया नलोप भया उशना सिद्धं हे उशनस् संबोधन विषे विकल्प ने अनङ् हे उशनः नलोप होने
अनङ् भया नव उशनन् सिद्धं नलोप होयाना उशन विसर्ग भया उशनः अनेहा ईहां अनङ् भया सुलो
प भये नलोप भया ॥ उशनस् भ्यां ईहां सकारको रुत्व रुत्वको उत्व करके गुण भया उशनोभ्यां सिद्धं
वेधस् सु ईहां अत्वसंतस्य करके दीर्घ भया सुलोप भया सकारको रेफ विसर्ग भये वेधाः सिद्धं वेधसौ

धस्त्प्रत्याई हो सकारको रुत्व भया रुत्वको हशि च से उत्व भया गुण भयो वेयो भ्यां सिद्ध हुए वें वं इमाः वं इ मो भ्यां सि
द्ध ए वे वे इमो अमु अदस् सुई हां अदस् को औकार होवे पुनः सु का लोप होवे सकारके सकारको औकार भया सु का
लोप होया अदऔ भया नदेतः सः कारके उकारको सकार भया हल्ङ्यादि भयी असौ सिद्ध अदस् औ ई हां त्यदादीनाम
कारके सकारको अकार भया अतो गुणे से पररूप भया अद भया अदौ इस अवस्था में वृद्धि भयी अदौ।
भया अदौ हो भया नदनं तर उत्व भया असौ तनो अद सगाह है तिके दकारने परे उत ऊ त होने व पुनः दकार
को मकार होदकारने परे ह्रस्व को उकार हो दीर्घको ऊकार होई हां औकार दीर्घ है तिसको ऊकार भया दकारके
मकार भया अमू सिद्ध अदस् जस ई हां जस् को शी भया शकार इत् भया गुण भया अदे भया फेर अदस् शब्द के
दकारने परे जो एत है तिसको ई त होवे दकारको मकार होवे बहुत्वविवक्षा में सकारके एकारको ईकार भया।

पूर्वत्रासिद्धमिति वि भक्तिकार्यं प्राक्पश्चादुत्वमत्वे

इत्सोदात्यासेनर्ईतदसो मो वहुर्यो औ अमी अमुम् अमू अमून्
कृते २ मुत्वे कृते घिसंज्ञायां नाभावः नाभावे कर्तव्ये कृते
मुभावो नासिद्धः अमुना अमूभ्यां अमीभिः अमुष्मै
अमूभ्यां अमीभ्यः अमुष्मात् अमूभ्यां अमीभ्यः अमु
ष्य अमुयोः अमीषां अमुष्मिन् अमुयोः अमीषु इ
ति व्याकरणप्रकाशे अमीषु इति हलन्ताः पुंलिङ्गाः ॥

कारको मकार भया अमी सिद्ध हुआ ऐसे प्रथम विभक्तिकार्य है पश्चात् उत्वमत्व करणा है अदस् अस् ई हां अमि प्र
वे:या फेर अदसो से: कारके उकार ने परे अकारको उत्व भया दकारको मकार भया अमुं सिद्ध अदस् औ ई हां वृद्धि
भयी ऊकार भया मकारको नेस्मा ऐसो नः भया अमू सिद्ध अदस् शस् ई हां एत्व ईत्व दीर्घ भया सकारको न।
स्मा ऐसो नः कारके नकार भया ऊकार भया उकार भया दकारको मकार भया अमून् सिद्ध अदस् टा ई हां अदसो से।
सत्र कारके उत्वमत्व प्रथम भया फेर घिसंज्ञक उकारको नेपरे टाको ना भया अमुना नाभाव की यां कर्तव्य होयां मपा
मुभाव असिद्ध नहीं होता अदस् भ्यां ई हां सुपि च कारके दीर्घ भया फेर ऊकार भया मकार भया अमूभ्यां सिद्ध अद
भिः ई हां एत्व भया फेर एकारको ईकार भया दकारको मकार भया अमीभिः अदस् ङे ई हां ङेको स्मै भया दकार
ने परे उकार भया मकार भया अमुष्मै सिद्ध अमूभ्यां अमीभ्यः अदस् ङसि ई हां ङसिको स्मात् भया दकारको

उत्वमात्वभयाअमुष्यौ याउत्वमत्वभयाअमुष्य सिद्धं अदसो सुपईहांडः सकोस्वभयाउत्वमत्वभयाअमुष्य सिद्धं
अदसोसईस्ड्रांर्डोसिचसेपकारभयाअप्भयाउत्वमत्वभयेअमुयोः सिद्धं अदस्भ्या मुत्रुद्भ्यायायत्वहोकेर्ह्री ईन
कारभयायात्वभया॥ ॥अदसडि ईस्ड्रांडिकोस्मिन्भयाउत्वमत्वअयेमत्वभयाअमुष्मिन् सिद्धं मुयोः अद मुष्मिं
सुई स्ड्रांपत्वभयाषत्वभयाईकारभयाअमीषु सिद्धं इतिव्याकरणप्रकाशे हलंतपुल्लिंगः समाप्तः॥
नहकोधकारहोकत्वपरतः चपुनः पदांतविविनहहनहथ्यपुरुत्वसहनन्पहकिवंतयेइंदयासर्वपद त्वाहु
कोदीर्घहोउपनहसुईस्ड्रांहकारकोधकार भयाफेरजस्टदकारभयाविकल्पतेचत्वकारभयायकारदीर्घ येदन्तमें
होयाउपानत्उपानद सिद्धं आगेदीर्घसारेभयाहकोधेमिलनागयाउसिसुई स्ड्रांकुत्वचकारभयाजफ्ग्रका पका
रभयाविकल्पचरभयाउसिक् सिद्धं उस्मिसुई स्ड्रांकुत्वचकारभयाफेरजश्भयाचरभयासकारकोषकार

क्वि न नत्वात्कुत्वे नघः

नहोधः कलिपदांतेचनाहिंवाविहविहाविवविह्नविसहि
तनिवृत्तौ क्विवंतेषुसर्वपदस्यदीर्घः उपानत् उपानहैं
उपानद्भ्यां उपानत्सु उसिक् उस्मिहौ उस्मिग्भ्यां उस्मित्सु
द्यौः दिवौ द्युभ्यां गीः गिरौ गिरः पूर्वं पूः पुरौ पुरः चत्वसः
२ चतसृणां चतसृषु हेस्त्वेसत्याहदे २ द्वाभ्यां द्वयोः का
केकाः सर्वावत् यः सौ इदमोदस्य इदमोमः इयम् त्यदा
द्यत्वंटापदश्चेतिमः इमे इमाः इमां इमे इमाः अनया आ
भ्यां आभिः अस्यै आभ्यां आभ्यः अस्याः अनयोः आसां अनयोः

भयायोः ईस्ड्रांदिव औत्भयायणभयारेफविसर्गभये द्युभ्यां ईस्ड्रांदिवउत्भयायणभयागिर्सुईस्ड्रांर्वो
रुपधायाः दीर्घभयासलोपभयारेफकोविसर्गभयागीः सिद्धं गिरौ पुरसुईस्ड्रांभीदीर्घभयासुलोपभया
पूः पुरौ पुरः इत्यादि चतुर्जसशसईस्ड्रांभीदीर्घभयासुलोपभयात्रिचतुरोःस्त्रियामेचतुर्कोचतसृभया
देशभयागुणन्त्वायकेअविसर्जनःकारकेऋकोरेफभयाफेरमेयोपरेमिलाचतस्रः २ सिद्धं चतसृणां
ईस्ड्रांदीर्घनिषेधहैचतसृषुद्विऔईस्ड्रांरकारकोअत्वभयाटापभयापाहाहोयाउओडः पीभयागुणभयाद्वेत
सिद्धं द्वाभ्यां द्वयोः ईस्ड्रांअडिचापः सेपकारभयाअप्भयाकिमस्तुइत्यादिकाविवेकिमः कः विभक्तौक

किम् क कारादेश भया तदप्रथयासर्वावत् सिद्धं भया इदम् के दकार को यकार होसुपरतः इदम् के मकार
मकार हो सुपरतः इदम् सर्ई हांदकार को यकार भया मकोम भयासुलोप भया इयम् सिद्धं इदम् सिद्धं इद
कोइत्यादिका विविमकार को अकार भया पररूप भया गुण आदश सूत्रकर के दकार को मकार भया उ ८.
णाद् भयासर्वादी न्यायी सिद्धं करणा इमाओई हां सेङः षी होयागुणहोया अनयाई हां अनाथक सेरट कोध ३म
भया पाद् आया इदम् भ्यां आगे सारेहलिलोपः सेरट काले प भया आकार शेषर हां आभ्यां अभिः सिद्धं आगे
ई हां स्याट् आयाआप् ह्रस्व होया वृद्धि भयी असे सिद्धं अस्याः ई हां भीस्याट् आयादी र्घ भया अनयोः ई हां इद को
न भया षष्ठा सदीर्घ भया आडिच्चापुः सेपकार भया अपु भया आसां ई हां सुट् आयाअस्यां ई हां डिको आम् भया
म सिद्धं स्वकर ई हांकत्व भया त्यदस्सुई हां शकार भया नदोः सः करके सकार भया टाप् आयासुलोप भया स्या
ई आगे सर्वावत् है इसी प्रकार साथ षार त्यादि जानने वाकर ई हां कुत्व वो कार के भया अपरा क्वबरू दवनान है

वा वौ वाभ्यां आपः अपः अपोभिः अपस्नकारो भा दो प्रत्यये
अद्भिः अद्भ्यः अपां अप्सु दिक् दिशौ दिशः दिग्भ्यां दिग्भिः
दिक्षु दृक् दृशौ दृग्भ्यां त्विट् त्विषौ त्विड्भ्यां हत्वं सजूः
सजुषौ सजूर्भ्यां आशीः आशिषौ आशीर्भ्यां असौ उत्वमा
त्वे अमू अमूः अमुं अमू अमूः अमुया अमूभ्यां अमूभिः
अमुष्यै अमूभ्यां अमूभ्यः अमुष्याः अमुयोः अमूषां अम
ष्यां अमुयोः अमूषु इति हलंतस्त्रीलिंगः समाप्तः ॥८॥

जसर्ई हां अप्तृन्तृच् सेदीर्घ होयादैआपः सिद्ध शस् का अपः सिद्धं अप्को अपः सिद्धं अप् को नकार हो
भुक प्रत्ययपरे हां दया इससेपकार को नकार भया अद्भिः सिद्धं अद्भ्यः अपां अप्सु दिशर सुई हां क्विन् कालो
भया है शकार को षकार भया षकार को नश ड कार भया ड कार को कुत्वगकार भया वर् ककार भया दिक्
है इसी प्रकार हक भया त्विष् सुई हां षकार को ड कार भया वट् दकार भया त्विट् सिद्धं आगे व्यंजन नषवे मित
हैसजुष् सुई हां सकार को रेफ होया उकार को दीर्घ भया रेफ को विसर्ग भया सुलोप होया सजूः सिद्धं भा
आशिष् सुई हां भी रेफ होया दीर्घ भया विसर्ग भया सुलोप होया आशीः अदस् सुई हां अदसः औसुलोप
कर के सकार को औकार भया सुलोप भया नदोः सः से दकार को सकार होया वृद्धि भयी असौ सिद्ध भया
सओ ई हां सकार को अकार भया पररूप भया गुण आयादीर्घ भया अदा शह भया शेकार को शी भया षा

त्वम् भया गुणहोयाऽदे ईर्हा अद सो सेस्त्र वसे दकारको मकार भया पकारको ऊ भया अमू सिद्धं अदाभ्यां ते
परे जसः शसस्त्र्या यादीर्घ भया मकारको रेफ विसर्ग भया आकारको ऊकार भया दको मत्व भया अमूः २ सिद्धं अ
दाः अम् ईर्हा अमि सवर्ण भया ऊकार मकार भया अमूः अमू अमू अमूम् अदाः ईर्हा आङि चापः कारके आको पका
र भया अदा होया अद या ईर्हा उत्व मत्व भया अमुना सिद्धं अदाभ्यां ईर्हा उत्व मत्व भया अमूभ्यां ३ अमूभिः
अदा ङे ईर्हा ङे के सर्व स्याट् आवाप हि उत्व मत्व भयेअमुष्मै सिद्धं अमुष्याः अमुयोः ईर्हा आङि चापः ॥९॥
अदा आम् ईर्हा सुट् आयाऊकार उत्व भया षत्व भया अमूषां अदा ङि ईर्हा ङि को आम भया स्याट् स्या या सर्व को
ह्रस्व भया उत्व मत्व भया अमुष्यां सिद्धं अमू सु ईर्हा ऊकार मकार षत्व भया इति स्त्रीलिङ्गः ॥ नपुंसक रते सु
सु अम् कालुक् दो हकारको दकार व सुस्व तस्त्र वसे दो सस्त्र अनडुान् याम्नि नक्लेन मस्वनडुत् ईर्हा

स्वमोर्लुक् दत्वं स्वनडुत् स्वनडुद्दी स्वनडुांहि पुनस्तद्वत् वाः।
वारी वारि वारा वार्भ्यां चत्वारि किं के कानि इदं इमे इमानि
ब्रह्म सेवुट्टैन पुंसकानां नलोपो वा वाच्यः हे ब्रह्मन् हे ब्रह्म
हे ब्रह्मणी ब्रह्माणि रोसु प्ये हन्त नहृत्यस्यरुः नहस्वपि अ अही
अ हनी अहानि अहन् अहर्निन्यस्यरुः पदांते अहो भ्यां दंडि दं
डिनी दंडीनि सुपथि सुपथी सुपंथानि ऊर्क् ऊर्जी ऊर्जिन
रजानां संयोगः तत् तेतानि यत् येयानि एतत् एते एतानि
गवाक् गोवी गवांचि पुनस्तद्वत् गोचा गवाभ्यां प्राक् प्राची

अन्नादेशोन पुं सकेपन द्रूता प्यः ॥ एतद् पते

स्व का लुक् भया दत्व भया स्वनडुद्दी ईर्हा औ को शी भया स्वनडुांहि ईर्हा जस् शस् को शि भया शि सर्वनाम स्थान सं
ज्ञक ईर्हा नुम् आया स्वनडुांहि सिद्धं वार् सु ईर्हा सु लोप भया रेफ को विसर्ग भया वाः वारी वारि चत्वारि जस् शस्
को शि भया किम् ईर्हा सु लोप भया किम् औ ईर्ष्या दौ किमः कः भया ओ ङ को शी भया गुण भया के सिद्धं कानि
ईर्हा नुम् आया दीर्घ भया ईर्हा ब्रह्मन् सु ईर्हा सु लोप न लोप भया ब्रह्म सिद्धं ब्रह्माणी ब्रह्माणि ईर्हा णकार परे
मि स्नासे वोप न विविन पुंसकां कान लो विकल्पने दो हे ब्रह्मन् हे ब्रह्मन् भये अहन् सु ईर्हा सु लोप भया अस्य ह
न् के नकारको रु होस्य पर नः नहीहो रस स्व स्त्र से नकारको रु भया रु को विसर्ग भया अहः नभ्यां ईर्हा अह न
के नकारको रु होय दांत विविरस कारके नकारको रु होया रु को उत्व भया गुण भया अहोभ्यां सिद्धं सुपथिन् सु ईर्हा

हीनत्तो यस्तुलोपसलोपभयासपाथिसिद्धंसपथीईह्लंमत्वनेतीलोपभयायकारईकारमेमिलासपथिन् जसईहांरनोत्सर्वनामस्थानेकारकेरकारकोअत् भयाउपधाकोदीर्घभयासुपंथाविसिद्धंननसईह्लंमत्तो पभयालकहोयेपत्वनहीभयानत्तूौरईहांउोकोधीभयानकारकोअकारभयागुणभयानेसिद्धंनजसई हांनमुआदीर्घभयाजसकोशिभयानानिसिद्धंफेररसीप्रकारसैंआनेसर्वकीन्यायीहैऐसेहीयत्पतत् हैगोअंचतीतिगवांकईहांक्विन्कालोपभयाफेरसुकालोपभयाअनिदितांकरकेनत्तोपभयागनिपत्ति विगोकोअवङ्भयाकत्वभयासर्वत्रविभाषागोःहोयातवगोअकगोअक्पदःपदांतात्हिंभयातवगोअक् गोग्एजोधीविविनत्तोपनहीभयासंयोगांतवकारलोपसुलोपभयानकारकोकत्वङ्कारभयाअवङ् कारभयासिद्धंगोअङ्गोंसिद्धंगोचीईहांउोकोधीभयानत्तोपभयाभत्वनेअचःसङ्गतेअकारलोपभया

शास्यांददत्ददतीवानपुंसकस्यस्भ्यस्तात्शीवान्य रस्यशात्वीनुम्सर्वनामस्थाने ददंति ददति तुदत् आच्छीनद्योर्नुम् आदंतात्परोयःशात्रवयवस्तदंतस नुम्शीनद्योः तुदंती तुदंतिभात् भांती भांति पापच्य नीतित्यंपापश्यनोरात्परोपःशात्रवयवस्तदंतस्यनुम् स्पीनद्योःपंचतीपंचंतिदीव्यम् दीव्यंतीदीव्यंतियनुःय नुषीसांनेतिदीर्घःनम्विसर्जनीयेतिसपचेत्षित्वनस्तद

नृपवृत्त्यादयश्चर्याद्येवंवत्तहृद्भिरद्वः पयः पय सी पयांसि पयसा पयोभ्यां पयोभिः ॥

एत्जार्थमेअवङ्भयागवाञ्चीगोअञ्चीगोचीसिद्धंगतिएजनेविवेअवङ्भयागतार्थमेनमुआयागवां विभयागोअंचेगोंचिरसीप्रकारअसंधिअवङ्पूर्वरूपरनोकरकेनवाधिकशतरूपहैगत्यर्थमेगका गोचाभयानहोनलोपकेहोयाअचःकारकेअकारलोपहोनाहैरसवासेअवङ्नहीहोतासजार्थमेगवां वागोअंचागोंचा डावाभ्यां पदत्वनेअत्तोपनहीभयाअवङ्भ्यायागवाङ्भ्यांगोअङ्भ्यांगोङ्भ्यां गवाग्भिः गवांङ्भिः गोअङ्भिः गोङ्भिः गोचे गवांचे गोअंचि गोंचेगतौवगोचःएजायांगवांचःगोअंचः गों डोसिगतौगोचोःएजायांगवाचोःगोअंचोः गोंचोः अमिगतौगोचांएजायांगवांचांगोअंचां गोअंचां गोंचांङौगतौगोविएजायांगवांचिगो ॥ ८८ ॥ ८८
॥

अंबिगोंचि सुपिननैगावालुगम अदूहजायांगोवाङ् दृकुकआयागो अङ्दृगोङ् दृगवाङ् कुगोअङ् कुको
ङ् सुपुरुहननलोपभयावदनईहां सुलोपभयाददनीईहांनकारईकारमेमिलाअभ्यस्तनपुंसकनेपरेशस्
सू॰२ को विकल्पतेनुमसर्वनामस्थानपरतः इससेउम् भयाददंतिनवभयाहुजाददतिभयातुदनईहांसुलोप। ४३
भयाअदंतनेपरेजोशत्तृकाअवयवनहैतिसकोनुमहोकीन्तीपरतः नुदंतीईहांनुमआयायातुदंतिईहांभीनुम्
आयामानभांतीभांमियेसेहीभयापुपप्पनकेअकारनेपरेजोशतृकाअवयवनहैतिसकोनुमहोशीनदीपरेकुंद
याएचंतीईहांनुमआयायादीव्यंतीईहांभीश्यनकेअकारनेपरेनुमआयायापनुः ईहांसुलोपभयापयांसुलोपभयापपे ४५
पीयन्पिईहांनुमआयायासांतमहतःसेदीर्घभयानुमविसर्जनीयसेसुत्वभयापयःसुलोपभयायपसीडेकोशीभ
यापयांसिनुमआयायासुपुमससुईहांसुलोपभयासंयोगांतसकारलोपभयासुपुम्सिद्धंसुपुंसीसुपुमांसिईहां

इत्यादि सुपुम् सुपुंसी सुपुमांसि अदः विभक्तिकार्यं प्राक्पश्चा
उत्वमत्वे अमू अमू विशेष्यवत् इति हलन्तनपुंसकलिंगः
स्वरादिनिपातमव्ययम् स्वरादयो निपाताश्चाव्ययसंज्ञाः स्युः
स्वर् अन्तर् प्रातर् पुनर् सनुतर् उच्चैस् नीचैस् शनैस् ऋधक्
ऋते युगपत् आरात् पृथक् ह्यस् दिवा रात्रौ सायं चिरं मनाक्
ईषत् जोषं तूष्णीं बहिस् अवस् समया निकषा स्वयं वृथा
नक्तं नञ् हेतौ इद्धा अद्धा सामि वत् ब्राह्मणवत् क्षत्रियवत्

अससुभयासुपुमसुजसशेसाभयानुमआयादीर्घभयाजसकोशिभयासुपुमांसिसिद्धंअदससुईहांसुलो
पभयासकारकोऔकारविसर्गभयेअदःसिद्धंअदसऔईहांऔकोशीभयासकारकोअकारभयागुणभयाअदे
भयापेअदसोसेः सुत्वसेउकारभयाएकारकोमकारभयाअमू सिद्धंअदजसईकोहांनुमआयादीर्घभया
जसकोशिभयाअदांनिभयादकारमकारभयाअमूनि सिद्धंरसीप्रकारअमूसुशेष्यकेजानने संस्कृत प्राकृ
के आगे सुना पुंल्लिंगमायी हैं २ इति हलंतनपुंसकलिंगः ॥ अथाव्ययानि स्वरादिक जेहैं नवपनति
४४ पातजोहैंनसोनिर्यातसंज्ञकहोनसवीतिसर्गेअंतरमध्येमातरमनुप्रेषपुनरन्यार्थेविशेषार्थेचसनुतरउच्चैस
नीचैसउच्चनीचनीचयोः शनैस लचुकपनेऋधकसत्येऋतेवर्जनेपृथगन्यार्थेह्यस्गतीतदिनेश्वस्आगा

मिदिने दिवा दिने रात्रौ रात्रौ सायं रात्रिमुखे चिरं कालबहुत्वे मनाक् अल्पत्वे तोषं मौन सुखयोः बहिस् अथ बहिस्तात् अवस् बाह्ये सम
यांतिकमध्ययोः निकषा सामीप्ये स्वयं स्वात्मार्थे वृथा निरर्थके नक्तं रात्रौ हेतौ निमित्तार्थे इद्धा प्रकाशे अद्धा स्फु
टावधारणयोः सामि अर्द्धे निंदायां च सामि वत् ब्राह्मणवत् क्षत्रियवत् तेन तुल्यं क्रिया चेद्वतिः सः आसासना
सनात् नित्ये उपधा भेदे तिरस् अंतर्द्धे तेऽपि नाम मध्य विनार्थयोः अंतरेण वर्जने ज्योक् कालबाहुल्ये कं जलशीर्ष
निंदासु खेषु शं सुखे च मशम योः सहसा आकस्मिके विना वर्जने नाना अनेकार्थे स्वस्ति मंगलयोः स्वाहा दिहा
देवदाने स्वधा पितृदाने अलं पर्याप्ति भूषणवारणेषु वषट् हविर्दाने अन्यत् भिन्नार्थे अस्ति सत्तायां उपांशु
अप्रकाशे क्षमा क्षमणे विहायसा आकाशे दोषा रात्रौ एषा वितथे मिथ्या असत्ये मुधा विफले पुरा पूर्व के आर्य
हलं बलात्कारे अभीक्ष्णं पुनरर्थे साकं सार्धं सहार्थे नमस् नतौ हिरुक् वर्जने धिक् निंदायां भर्त्सने।

सना सनत् सनात् उपधा तिरस् अन्तरा अन्तरेण ज्योक्
कं शं सहसा विना नाना स्वस्ति स्वधा अलं वषट् श्रौषट्
वौषट् अन्यत् अस्ति उपांशु क्षमा विहायसा दोषा मृषा मु
धा पुरा मिथो मिथस् प्रायस् मुहुस् प्रवाहुकं प्रवाहिका आर्य
हलं अभीक्ष्णं साकं सार्धं नमस् हिरुक् धिक् अथ अम् आम्
प्रताम् प्रशान् प्रतान् मा माङ् आकृतिगणोऽयं च वा ह अह एव एवं
नूनं शश्वत् युगपत् भूयस् सूपत् कुवित् नेत् चण् यत्र।
नह हन्त माकिं नकिं माकिम् माङ् नञ् यावत् तावत् त्वै द्वै

प्रताम् प्रशान् प्रतान् समानार्थे प्रतान् विस्तारे मा माङ् निषेधे इति स्वरादिः। च समुच्चये पादपूरणे वा विकल्पे।
ह अह योः अत्र नियोगे एव अवधारणे एवं प्रकृतपरामर्शे नूनं वितर्क निश्चययोः शश्वत् वारंवारार्थे सूपत् प्रशंसायां कुवित् भू
र्यर्थे नेत् शंकायां चेत् पदर्थे चण् वेदार्थे कच्चित् इष्टप्रश्ने यत्र तत्र गर्हायां अर्थे नह प्रत्यारंभे हं नहंत कारे ॥
माकिं निषेध अर्थे नकिं अपि यावत् तावत् कात्स्न्येऽवधारणे त्वै विशेष वितर्कयोः द्वै वितर्के रै अनादरे
श्रौषट् वौषट् हविर्दाने नं निरस्कारे तथा हि उक्तार्थ दृढीकरणे खलु निश्चये किल प्रसिद्धौ तथा साद्दश्ये स
मनीते याद् पूरणे च आसि अहमर्थे असंबोधने इ विस्मये उम् सम्मत्ये आङ् मर्यादाभिविधिक्रियायोगेषु इत्

अर्थेऽर्थेइत्युक्तिहिंवितर्कसंबोधनयोःशोकस्यआश्चर्येआदरइत्यक्रमहिंसाकुल्यनेष्यातंकषोकार्यां
यथायोग्यताकीएयोःकिनिंदासमुच्चयोःयत्र्हेतौहाशोकेहस्फटेदैहैपादूष्यादुसंबोधनेअहोविकल्पे
अथोअथार्थेननुपरमततदेयमन्येवितर्केनहिभावनिषेधयोःउताहोविकल्पेआसित्वमर्थेद्वहिमे
षार्थाइतिहेतुमनायोःस्वरउपमानेऔंअंगीकारेफट्विघ्ननिवारणेउपसर्गस्वरविभक्तिप्रतिरूपक
जोहैतसोअव्ययसंज्ञकहोतप्रतिरूपकनतुल्यकानामहैअवदन्नेयेउपसर्गप्रतिरूपकहैअहंयुअन्य
स्तियेविभक्तिप्रतिरूपकहैअआइईउऊऋएऐओऔअंअःयेस्वरप्रतिरूपकहैएपशुसमयागर्थेष्टुकशीवेविषया।
आनंदेरहःपकांत्येसमदितंकालेचैदिश्याद्वानिगणःजितनेसर्वविभक्तीनहीउत्पन्नहोतसोनहिंतोलअव्य
यसंज्ञकहोयपरिगणनकर्तव्यहैतसिल्कीआदिलेकरयाशाःकेहर्वअव्ययहैनशस्कीआदिलेकरसमासं

रैस्मौषट्वौषट्स्वाहास्वधावषट्तुंनमाहिरवत्नुकिलअथसुष्ठुस्म।
आदइउपसर्गविभक्तिस्वरप्रतिरूपकाश्चअवदत्तंअहंयुःअस्ति
क्षीराअआइईउऊएऐओऔपशुशुकंयथाकथाचपाटप्याट्अंगहेहेभोअ
गेदुविषुपकपदेयत्ननतुआनत्चादिश्याद्वानिगणःनहिनस्यास
र्वविभक्तिःयस्मात्सर्वाविभक्तियोनोत्पद्यतेसतद्धितान्तोअव्ययंस्या
नुपरिगणनंकर्तव्यंतसिलादयःप्राक्पाशपःशस्प्रभृतयःप्रा।
क्समासान्तेभ्यःअम्आम्कृत्वोर्थाःतसिवतीनानाञौतेनेहपचति
कल्पंकामानोसून्कसुनःकृत्वाउदेतौविसृपःकृन्मेजन्तःक्त्वातोसुन।
कसुनःतस्मात्यंदेनमव्ययंस्यात्स्मारंस्मारंदोवसेपिबध्यैअव्ययीभावश्च भो

द्वतोर्थ नोकेहर्षेअव्ययसंज्ञकहैनअम्आम्कृत्वोर्थवत्नानाञौयेअव्ययहैनतिसकरकेपचतिकल्पंरहीसुलोपनहींभ
याकृत्मान्तहैचप्रनःयजैनहैनदेवतोशहहैसोअव्ययसंज्ञकहोस्मारंस्मारंईहांसामन्तआयाहैजीवसेई
हांजीवनेअसेप्रत्ययआयाहैपिबधेईहांपायानेशयैप्रत्ययःआयाहैकाम्सन्कसुन्एनदेनअव्यय
ष्ट्र२विं हैउत्तएवंकरणतेरवंकसुन्एनेकसुन्आयाहैअव्ययीभावअव्ययसंज्ञकहोअव्ययनेविहितजोआपवचनःअ
सुप्हैतिसकाअलुकहोतत्रशालायांईहांतत्रनेडाप्नहींआयासलोपभयाविद्धितविशेषणनेअनुचैसोई
हांगोणात्वनेभीसलोपनहीभयाअव्ययकोअलिंगत्वहोनेतेयाप्रयहणव्यर्थहैतिच्चरिंगोविखेसर्वविः

भक्तिपरतः जौअनव्ययपरहै व्ययनहीं होवे सोअव्ययकहीदाहै भागुरिनामाचार्य अवउपसर्गोंकेअकारलोपचाहै कहिताहै हलंतनातें टापकरके कहिताहै यथावाचानिशादिशः इत्यव्ययानि॥ इतिश्रीपंडितनाथिरामज्जात्मजपंडितहजारीरामसुनपंडितदेवीसहायात्मजरूपचंद्रकृतेव्याकरणप्रकाशेषडलिंगक्रियासमाप्ताः अथाख्यातप्रक्रियालिखनेदशलकाराकिंआख्यातधातुभाषाकीप्राचीनोंनेसंज्ञाकरीहै अथप्रथमधातुस्थापनहैतिसनेपरेकर्त्ताकर्मभावअर्थविषेलडादिकआवनेहैं लडादिकाकोतिपादिकरकेहीदेहे नमिलकेक्रियाप्रयोगकहानेहैं लट्लिट्इत्यादिकदशलकारहै संलकहैनइनोविषेजोपंचमलकारहै सोछंदोमात्रगोचरहै वेदविषेहीउसकाविषयहै सकर्मकधातुनेजोलकारहैनसोकर्मकर्त्ताअर्थविषेहोनअकर्मकधातुनेपरेजोलकारहैनसोभावकर्त्ताअर्थविषेहोनवर्त्तमानकालसोक्रियाप्रारब्धवर्त्तमानक्रियावर्त्तमानक्रियार्थः॥ १

अव्ययंस्यात्परव्यादायः अव्यया   हितिसप्ताप:
तयअल्कस्यात्तत्रशालायांअयविहितविशेषणा।
सेहूयन्तुसैसोअव्ययस्यालिंगत्वाशपृथग्गणोव्यर्थम् तथा
१ चश्रुतिः सदृशंत्रिषुलिंगेषुसर्वासुचविभक्तिषु वचनेषु
चसर्वेषुयन्नव्येतितदव्ययं वष्टिभागुरिरल्लोपमवाप्यो
रुपसर्गयोः आपंचैवहलंतानांयथावाचानिशादिशाव
गाहः अवगाहः पिधानंअपिधानं इत्यव्ययानि ॥८
लट् १ लिट् २ लुट् ३ लृट् ४ लेट् ५ लोट् ६ लङ् ७

तिर्यस्यथानैस्मान्लट् वर्त्तमानक्रियाहतिजोधातुहै तिसनेलट्होईहाँवर्त्तमानपदकरकेवर्त्तमानक्रियाग्रहणकरणाकिसनेकालेक्रियात्मकमाकुः कालकोक्रियारूपहोनेनेव्यापारसंज्ञानः क्रियापारव्यापरिसमाप्त्युपलक्षितकालोवर्त्तमानः कार्यकेप्रारंभतेलेकरसमाप्तिपर्यंतजोकालहै सोवर्त्तमानकहीदाहै लट्तिट्इत्यादिकोविषेअन्त्यवर्णकीहलैन्यकरकेइत्संज्ञा ^ नीहै अवर्णकीउपदेशोजनकरकेइत्संज्ञाहोनीहै इत्संज्ञाकाफललोपहोनाहै इसीवास्तेकहाहै अटविनोलट्मेअकारउच्चारणहै जोकोईकहैलशब्दकउच्चारकरकेलकारकीइत्संज्ञाकिसवास्तेना।

हीहोतीनवक्रदिनाल्लकारकेउच्चारणसामर्थ्यतेइत्संज्ञानहीहोतीजेकरलकारइत्संज्ञाहोतीप्रथम ही अट् इट् उट् इत्यादिकमरखनासीइसक्रमकेनहीरखनेसेहोतीदोहैलकारकीइत्संज्ञानहीं। होतीभूधातुसत्तार्थविषेहैसत्ताभावः सत्ताआत्मधारनानुकूलोव्यापारः अनुकार्यानुकरणकी अभेदविवक्षाविषेभूनिर्विभक्तिकनिर्देशहैचरोभवतिइहांआत्मधारणावर्थाहैस्वस्वरूपावस्थि तितत्संप्रकजोव्यापारहैसोसत्ताहैचेतनाचेतननिष्ठधर्मविशेषोव्यापारः भूधातुनेपरेकर्त्रअर्थके कथनकारइच्छाविषेतङ् आयाअट्इत्नभयाभूलयेसेस्थितिभयाआगेकथनकरदाहै तिप १ तस् १ झि १ सिप ४ थस् २ थ ३ मिप १ वस् २ मस् ३ त १ आतां २ झ ३ थास् १ आथां २ ध्वं ३ इट् १

मकेभ्यः लकाराः सकर्मकेभ्यः कर्मणिकर्त्तरिचस्युरकर्मके
भ्योभावेकर्त्तरिच वर्त्तमानेलट् वर्त्तमानक्रियावृत्तेर्धातोर्ल
ट् स्यात् अटावितौ उच्चारणसामर्थ्याल्लस्येत्त्वं भूसत्तायां
कर्त्तृविवक्षायांभूलइतिस्थितेतिमस्तिबसिथस्मिब्वस्मस्तातांझथासाथांध्वमिड्वहिमहिङ्एतेऽष्टादशला
देशाः स्युः लः परस्मैपदं लादेशाः परस्मैपदसंज्ञाः स्युः तङा
नावात्मनेपदं तङ्प्रत्याहारः शानच्कानचौचैतत्संज्ञास्युः
पूर्वसंज्ञापवादः अनुदात्तङित आत्मनेपदं अनुदात्तेत उ
पदेशेयोङित् तदन्ताच्चधातोरात्मनेपदंस्यात् स्वरितञितः
कर्त्रभिप्रायेक्रियाफले स्वरितेतोञितश्चधातोरात्मनेपदं

कर्त्रगामिनि क्रियाफले चोभाभ्यां परस्मैपदं आत्मनेपदं निमित्तहीनाच्छानोः परस्मै पदं स्यात् तिङ् स्त्रीणि त्रीणि प्रथममध्यमोत्तमाः तिङ् उभयोः पदयोस्त्रयस्त्रिकाः क्रमादेतत्संज्ञाः स्युः ॥

वहि ङ् २ महिङ् ३ एहअष्टादशलकारकेस्थानविषेआदेशहोतेहैंलकारकेस्थानविषेजो आदेशहैसोपरस्मैपदसंज्ञकहोनतङ्प्रत्याहारजोहैचपुनः शानच्कानचुजोहैसोआत्मनेपद संज्ञकहोनपरसंज्ञाकाअपवादहैअनुदात्तेत्धातुतेचपुनः उपदेशविषेजोङित्हैसोहैअं तजिसकेतिसधातुतेआत्मनेपदहोस्वरितेत्धातुतेचपुनः ञित्तधातुतेआत्मनेपदहोक्रि याफलकर्त्तनिष्ठहोयांआत्मनेपदकेजोकिभिन्नहैंतिनतेहोनजोधातुहैतिसतेपरस्मैपदहो

भूधातुतिङ्केजोदोपदहैंनतिनकोजोतिनतिनकेहैंसोक्रमतेप्रथममध्यमउत्तमसंज्ञकहोत

तिङ् के जो तीन तीन वचन हैं न सो एक एकवचन द्विवचन बहुवचन संज्ञक होंन तिङ् कारके वाच्य जो कारक है तिस कारक का वाचक जो युष्मद् है सो क्रियापद के पूर्व प्रयुज्यमान होय अथवा अप्रयुज्यमान होय तो समानाधिकरण विषे मध्यमपुरुष होय ऐसे अस्मद् के पूर्व होय उत्तमपुरुष होय एकार्थवृत्तित्वं सामानाधिकरण्यं क्रियाके एकत्व द्वित्व बहुत्व सा युष्मद् अस्मद् कार्य एकत्व द्वित्व बहुत्व है सो सामानाधिकरण है मध्यम उत्तम के अविषय विषे प्रथमपुरुष होय धात्वधिकार विषे कहे जो तिङ् चतुनः शित् है न सो। सार्वधातुक संज्ञक होंन सार्वधातुक संज्ञा का फल कहिता है कर्त्रर्थ विषे सार्वधातुक परे छंदया धातु ते परे शप् हो सार्वधातुक आर्द्धधातुक परे छंदया इगंत अंग को गुण हो अव् ओकार को हो भू ल् ईहां लकार को एकवचन तिप भया पकार इत् भया तिङ् सार्वधातुक संज्ञक भया भू के परे शप् आया लशक्व।

तिङस्त्रीणित्रीणिवचनान्येकशः तिङस्त्रीणित्रीणिवचनान्ये
कश एकवचनद्विवचनबहुवचनसंज्ञानिस्युः युष्मद्युपपदे
समानाधिकरणेस्थानिन्यपिमध्यमः तिङ्वाच्यकारकवा
चिनियुष्मद्यप्रयुज्यमाने प्रयुज्यमानेचमध्यमः स्यात् तथा
भूतेस्मद्युत्तमः शेषेप्रथमः भूतिश्तिप्जाते तिङ्शित्सार्वधा
तुकं तिङः शित्सर्वधात्वधिकारोक्तं प्रत्ययसंज्ञास्युः कर्तरिश
प् कर्त्रर्थे सार्वधातुके धातोः शप् सार्वधातुकार्धधातुकयोः
अनयोः परयोरिगन्तांगस्यगुणः अवादेशः भवतिभवतः झोन्तः

२ स्तु इ कार के सर्वत्र शकार इत् भया हलंत्य कार के सर्वत्र पकार इत् भया भू अ ति ईहां यण न्वा थके इगंत गुण ओकार को अव् भया भवति सिद्ध ईसी प्रकार भव सिद्ध होके प्रत्याय नाल मिल तगया भवतस् नाल मिला सकार को रुत्व विसर्ग भये भवतः सिद्ध भव कि ईहां प्रत्यय को अवयव जो झकार है तिस। को अंत होय ऐसा इसकर के झ को अंत् आदेश भया अतोगुणे करके भव का अकार पररूप भया अंत रकार मे मिला भवंति सिद्ध भवसि भव थस् ईहां सकार को रुत्व विसर्ग भये भवथः सिद्ध भव थ भवमि ईहां अकारांत अंग को दीर्घ होय ञादिक सार्वधातुक परे छंदया इस कर के वकार दीर्घ भया भवामि सिद्ध भव वस् भवमस् ईहां वकार के दीर्घ भया सको रुत्व विसर्ग भये भवावः भवामः सिद्धं भवति।

इत्यादिक क्रियाप्रयोगो विषे लक्षणा करके कर्त्ताप्रतीति होता है जो शप् तिङ् कर्त्ता विषे आये हैं तिसा त्कर्त्ताका प्रयोग करते हैं ना अन्य पार्थकर्त्ताका साक्षात्कर्त्ताका अभेदसंबंध है सः भवति इत्यादि में लो करीति से पुरुषव्यवस्था जाननी भवत्का लिंगवान् अर्थ है युष्मद् अस्मद् का अलिंग संबोध्य विषयः अर्थ है इससे भवान् पचतु मया अस्ति त्वं पचति ईहां गौणता है प्रथमपुरुष मध्यमपुरुष उत्तमपुरुष ये क्रम हैं भूत अनद्यतन परोक्ष अर्थ विषे वर्त्तमान जो धातु है तिससे परे लिट् होता भविष्यत् वर्त्तमान भिन्न भूतत्वं अरुणोदयादारभ्यारुणोदयपर्यन्तं अद्यतनः तद्भिन्नोऽनद्यतनः अहं साक्षात्करोमीत्याकारक विषयताशालि ज्ञाना विषयत्वं परोक्षत्वं अक्षिभ्यां परः परोक्षस्तस्मिन परोक्षे भू धातु से परे लिट् आया।

प्रत्ययावयवस्य झस्यान्तादेशः अतो गुणे भवन्ति भवसि भवथः भवथ अतो दीर्घो यञि अतोंगस्य दीर्घो यञादौ सार्वधातुके भवामि भवावः भवामः सः भवति तौ भवतः ते भवन्ति त्वं भवसि युवां भवथः यूयं भवथ अहं भवामि आवां भवावः वयं भवामः परोक्षे लिट् भूतानद्यतनपरोक्षार्थवृत्तेर्धातोर्लिट् स्यात् लस्य तिबादयः परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः लिटस्तिबादीनां णलादयः स्युः भू अ इति स्थिते भुवो वुक् लुङ्लिटोः लिटि धातोरनभ्यासस्य अनभ्यासस्य धात्ववयवस्यैकाचः प्रथमस्य द्वे स्तः आदिभूतादचः परस्य तु द्वितीयस्य पूर्वोऽभ्यासः॥

लिट्को क्रमसे तिबादिक आये लिट्के तिबादिकाको णलादिक होत ॥ तिप्को णल् होता तस्को अतुस् होता झिको उस् होता सिप्को थल् होता थस्को अथुस् होता थको अकार होता वस्को व होता मस्को म होता भू अ इति स्थिते वुक् का आगम होता लुङ् लिट् का अच् परे हुए दया अभ्याससे हीन जो धातु का अवयव एकाच् लुङ् लिट् का अच् परे हुए दया अभ्याससे हीन जो धातु का अवयव एकाच् है प्रथम है तिसको द्वित्व होता लिट् परे हुए दया आदिभूत अच्से परे द्वितीयको द्वित्व होता द्वितीय वर्णभी एकाच् होवे तब द्वि

त्व होतिसतेअनअवईहां द्वितीयको द्वित्व नहीं होताय एकचूनहीं ऊर्णुञ् ईहां द्वित्व द्वितीयको होता है ईहां
द्वित्व है तिसकार्पूर्व अभ्याससंज्ञक होय अभ्यासका आदि हल्शेष करीता है अभ्यासके अच्को ह्रस्व होय भूधा
तुके अभ्यासके उकारको अकार होय लिट्परतः अभ्यासका आदिक हल्शेष है अन्य हल् लोप करीता है
अभ्यास विषे झलोंको चर होय न जश भी होय न झलोंको जश होय न खयाको चर होय न पह विवेक है भू तिई।
हां तिप्को णल भया हलंत्यसे लकार इत् भया अनुबंध ङसे णकार इत् भया अभूअर हां भूके परे वुक् आया इक
अच् भया भूव् अर ईहां वकार भूका अवयव है यत्तागमस्तद्गुणीभूतः जो आगम है सो तिसका अवयव।
रहत ग्रहणवालवान्न्यायसे भूव् भूव द्वित्व भया पूर्व भूव्की अभ्याससंज्ञा भयी अभ्यासका आदि अ
शेष रहा वकारका लोप भया ऊकारको ह्रस्व भया उकारको अकार भया भकारको जश् (भया) बकार भया भूव

द्वयेहेतयोः पूर्वोऽभ्यासः हलादिः शेषः ह्रस्वः अभ्यासस्या
चः भवतेरः भवतेरभ्यासोकारस्य अः स्याल्लिटि अभ्यासे
चर्च अभ्यासे झलां चरः स्युर्जशश्च झलां जशः खयां चरः
इति विवेकः बभूव बभूवतुः बभूवुः लिट् च लिडादे
शस्तिङ् आर्धधातुकसंज्ञः आर्धधातुकस्येड्वलादेः वलादे
रार्धधातुकस्येडागमः स्यात् बभूविथ बभूवथुः बभू
व बभूव बभूविव बभूविम अनद्यतने लुट् भविष्यत्यनद्यतने
धातोर्लुट् स्यतासी लृलुटोः धातोरेतौ स्तः लृलुटोः परतः

रे मिलनागया बभूव सिद्ध ॥ इसी प्रकार बभूवु सिद्ध भया परे णलादिक ॰॰ मिलनागया बभूव् अतुस् मे
मिला सकारको रेफ विसर्ग मे मिला बभूवतुः सिद्ध कको उस् भया बभूवुः भया बभूवुः सिद्ध ईहां सिप्
को थल् भया लकार इत् भया सिट्को आदेश जो तिङ् है सो आर्धधातुकसंज्ञक होय सूत्रका द्विकआर्धधा
तुकको इट्का आगम होय इस करके थके पूर्व इट् आया बभूविथ ॰॰ णल्त्र भया बभूव ईहां थस्को
अथुस् भया बभूवथुः ईहां थको णल् भया बभूव ईहां मिप्को अकार भया बभूव ईहां वस्को वकार
भया इट् आया बभूविव ईहां मस्को मकार भया इट् आया बभूविम सिद्ध भविष्यति अनद्यतने अ

शी विदि जो धातु है तिसतें लुट् हो भू धातुतें लुट् आया तिसको तिपादिक करतेन ट नेंत स्थानमें स्यतासू होना।
लृट्लुट् परतः स्य करके ल्ट् ङ ल्ट् का आ रतमें शपादिका कार्य अपवाद है इस करके भू के परे तास् आया ति
ड् शितसे भिन्न होनेसे धातुतें विहित प्रत्यय है सो आर्द्धधातुक संज्ञक हो इट् हो नाम की आर्द्धधातुक संज्ञा भई थी
तासके सर्व इट् आया भू को गुण ओकार भया ओकारको अव् भया भवितास् ति भया फेर लुट् के प्रथम पुरुष
को डारौरसः होनेसे करके ति को डा आदेश भया डा इत्से इ दश्न् भया डित्वसामर्थ्यतें भसंज्ञक तें हीन टिका भी
लोप इस करके आस् का लोप भया तकार आकारमें मिला भविता सिद्ध इट्को गुण नहीं होना दीर्घ भी वर्गस्त्र
निषेध करदा है इसी प्रकार भवितास् भ का परे तना गयात् को रौ आदेश भया तास् के अस् के सकार का
लोप होनेसे रादिक प्रत्यय परे इस करके सकारका लोप भया भवितारौ भवितारः भ

शबाद्यपवादः। ल्युट् इति लट् ङ् लृटो टि च णो आर्द्धधातुकं शेषः। तिङ्
शिद्भिन्नो धातोरिति विहितप्रत्ययएतस्यैतः इट् लुट्ः प्रथा।
मस्य डारौरसः डित्वसामर्थ्यादभस्यापि टेर्लोपः भविता तासा।
स्त्योर्लोपः सादौ प्रत्यये रि च रादौ प्रत्यये तथा भवितारौ भवि
तारः भवितासि भवितास्थः भवितास्थ भवितास्मि भविता।
स्वः भवितास्मः लृट् शेषे च भविष्यदर्थाद्धातोर्लृट् स्यात् क्रि।
यार्थायां क्रियायां सत्यामसत्यां वा स्यः इट् भविष्यति भविष्य

या सि

या सकार परतः लोप हो भविता सिद्ध भविष्यत् अर्थक धातुतें लृट् हो क्रियार्थक क्रिया होय या भावें नहीं होय या
इट् हो भू धातुतें लृट् आया लृट् को तिपादिक होते हैं भू के परे स्यतासी सूत्रसें स्य आया स्य के सर्व इट् आया
भू को सार्वधातुकार्द्धधातुकयोः करके गुण भया ओकारको अव् भया षकारको आदेश प्रत्यययोः करके गुण
भया भविष्य भया परे प्रत्यय ताल मिल ना गया भविष्यति सिद्ध भया भविष्यतस् तास मिला सकारको रु
त्व विसर्ग भये भविष्यतः सिद्ध भया भविष्यन्ति सिद्ध हो झेन्तः करके झकारको अन्त आदेश भया अतो गुणे भ
या भविष्यन्ति सिद्ध भविष्यसि भविष्यथः भविष्यथ भविष्यामि भविष्यावः भविष्यामः ईर्घ्यामेती दी
र्घोपजि करके तीनोमें दीर्घ भया सकारको ससजुषो रुः करके रुत्व भया रेफको विसर्ग विसर्जनीयसंज्ञा भावनाश्च।

ष्यंति विषे धानु नें लोट हो आशीष अर्थ विषे विधि लिङ् लोट् होनर प्रार्थनें सं प्रश्नें आशीः किसी को मनें भी इच्छा जो तथ
न करणा सो आशीः कहीं दा है भू धातु नें लोट् आया आः लोट् को तिपादिक हो फेर भू के परे शप् आया आ शप् भ
या भू को ओकार गुण भया ओकार को अव् भया भवति भया फेर लोट् के इकार को उकार हो रस कार के तिप के इका
र को उकार भया भवतु सिद्ध भया तप्त्रा दिष्ठ इतिन हीं तयोस्तु ह्यो नु को हि को तातङ् हो आशीः अर्थ विषे
विकल्प से रस कार के पद मे संपूर्ण तु को तातङ् भया भवता। सिद्ध भू धातु नें तसादिक परे आये सप् के
परे शप् आया गुण भया अव् भया भवं हुया दै प्रत्यय ना लमिल हो गया भवताम् ईहां लोट् को लङ् की न्या

नः भविष्यंति भविष्यसि भविष्यथः भविष्यथ भविष्यामि भ
विष्यामि भविष्यावः भविष्यामः लोट्च विध्याद्यर्थे भू धातोः।
लोट् आशिषि लिङ्लोटौ च ३ लोट् एरुः भवतु तुह्योस्ता
तङ्ङाशिष्यन्यतरस्याम् आशिषि तुह्योस्तातङ् वा परस्य सर्वादेशः भ
वतात् लोटो लङ्वत् लोट् स्तामादयः सलोपश्च तस्य स्थामि
पौ तं तंताम: ङितश्च नित्यं तामादयः स्युः भवतां भवंतु सेर्ह्य
पिच्च लोट् सेर्हिस्यात् सोपिच्च अतो हेः लुक् भव भवतात् भवतं भव
त मेर्निः लोट् आडुत्तमस्य पिच्च लोट् उत्तमस्याट् स्यात् पिच्च हिन्यो
रुत्वं न इकारोच्चारणसामर्थ्यात् भवानि नित्यं ङितः सकारांतस्य
ङित् उत्तमस्य नित्यं लोपः अलोंत्यस्येति सलोपः भवाव भवाम।

यी हो लोट् को ताम् आदिक आदेश हो न च उन सलोप हो तस् थस् थ मिल् प्र इन्नो को तां तं त अम् आदेश हो
न स भया मु नें परें तस् तिप को अम् हो ईहां नां भया भवता सिद्ध भवत ईहां सरूप भया कोर ना हो यस् को
त हो यस्को तस हो लोट के स्थान में जो सि है तिस को हि हो सो अपित् हो अकार नें परे हि का लुक् हो भवति
ईहां सि को हि भया फेर हि का लुक् भया पक्ष में हि को तातङ् भया भवतात् सिद्ध भवतं ईहां थस् को तम्
या भव ईहां थ को त भया लोट के मि को नि आदेश हो लोट् के उत्तम पुरुष को आट् हो सो पित् हो हि नि को

उकार नहीं होइ कारो द्वारणसामर्थ्य तें नहीं नो मध्यमहीमेन्त्रुः सूत्रकरणसामर्थ्यसे ईहां सिको नि भया नि
के पूर्व आट् भया भवानि सिद्धं भवाव भवाम ईहां वस्‌मस् के हर्द अट् भया दीर्घ भया फेर सकार नजो
ङित इत्यमत्तस्यहै तिसका लोप होइ सकार के सकारलोप भया भवाव भवाम सिद्धं अनद्यतन भूतार्थ वृत्ति
जो धातु है तिसने परे लङ् होता लुङ् लङ् लृङ् परे अंगस्या अंग को अट का आगम होइ ङित जो लकार है तिसके इकार
का लोप होइ भूधातुने लङ् आया तिसको तिपादि का भये भूके पूर्व अट् आया इकार का लोप भया भू के परे शप्
आया भू को ओकार गुण भया ओ को अव भया अ भवति भया इकार का लोप भया अभवत् सिद्धं अभवत्

अनद्यतने लङ् अनद्यतनभूतार्थवृत्तेर्धातोर्लङ् लुङ्लङ्लृङ्
क्ष्वडुदात्तः एष्वंगस्याट् इतश्च ङितो लस्य परस्मैपदमिकारांतं यत्त
स्य लोपः अभवत् अभवतां अभवन् अभवः अभवतं अभव
त अभवं अभवाव अभवाम विधिनिमंत्रणामंत्रणाधीष्टसंप्र
श्नप्रार्थनेषु लिङ् एष्वर्थेषु धातोर्लिङ् यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च
लिङः परस्मैपदानां यासुडागमः स उदात्तो ङिच्च लिङः सलोपोऽनन्त्य
स्य सार्वधातुकलिङोऽनन्त्यस्य सस्य लोपः इति प्राप्ते अतो येयः अ
तः परस्य सार्वधातुकावयवस्य यास इत्यस्य इय् स्यात् लोपो व्योर्वलि
भवेत् भवेतां झेर्जुस् लिङः भवेयुः भवेः भवेतं भवेत भवेयं
भवेव भवेम लिङाशिषि आशिषि लिङस्तिङ् आर्धधातुकसंज्ञः कि
दाशिषि आशिषि लिङो यासुट् कित् स्यात् लोपः सिषियतुसिषेधि

रे मिल्लदाधि होगया अभवतां अभवन् ईहां झकको अंत भया रत सं से ईहां इकार लोप भया संयोगांत नका
र लोप भया अभवसि ईहां इकार लोप भया सकार को रेफ विसर्ग भये अभवः अभवतं ईहां थस को तं
भया अभवत थको त भया अभवं ईहां मिप् को अम् भया अभवाव अभवाम ईहां दोमेव कार को अतो दीर्घो से
दीर्घ भया नित्यङितः से सलोप भया विधिनिमंत्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनेषु नेष्वर्थेषु विवक्षितेषु लिङ् होवि

कारहैतिसकालोपहोइसकीप्रा भयी सीतत्वचनतः यासुडयः इतिछेदः संधिरार्षः अकारांतत्वगतेपरेयास्
हेतावृहोगुणाहोवत्वपरेलंद्यावकारयकारकालोपहोभूयान्तेपरेलिङ्कोतिपादिकहोयेभूकेपरेश अ
ागपकेपरेयासुःआयाउडूइत भयासकारलोपपायासीमहोहोयास्कोइपभयाभूकोशेकारगुणाभयाशेका
रकोअवभयाफेरगुणाभयाभवेइतिभयायलोपभयाइतह्वकारकेरकोलोपभयाभवेत्सिद्धं इसीयकारभवे
यतांइहांपलोपभयालिङ्केकिकोजतहोइसकारकेकिकोजस्भयाजकारइत्भयापरेमिलाभवेयुःसि
ताभवेयुःसिद्धंभवेपसिरईहांपलोपहोयाइकारलोपभया सकारकोरेफविसर्गभयेभवेःसिद्धंभवेतंभ
वेतहांपलोपभयाभवेयंभवेवभवेमईहांपलोपभयाआशीअर्थविवेलिङ्किन्संज्ञकंहोकिन्ह्ङि॰।

ङितिच किद्गुङ्नूगित्विनिमित्ते इग्लक्षणोगुणावृद्धीनस्तः भूयात् भू
यास्तां भूयासुः भूयाः भूयास्तं भूयास्त भूयासं भूयास्व भूयास्म
लुङ् भूतार्थधातोर्लुङ् माङिलुङ् सर्वलकारापवादः स्मोत्तरेलु
ङ्चस्मोत्तरेमाङिलङ्स्यात्लुङ्चाङ्लिलुङ् शवाद्यपवादः ङ्लेःसिच्
गातिस्थाघुपाभूभ्यःसिचःपरस्मैपदेषुलुकगायाविहेणादेशाविव
नीशृद्येनेभूसवोस्तिङि भूसुपतयोःसार्वधातुकेतिङिगुणोनअभू
१६१ तअभूतां अभूवन् अभूः अभूतं अभूत अभूवं अभूव अभूम न
माङ्योगे अटाटौनास्तः माभवान्भूत् मास्मभवत् मास्मभूत् लि
ङ्निमित्तेलृङ्क्रियातिपत्तौहेतुहेतुमद्भावादिक्रियाविमितंनत्रभ
विष्यत्यर्थेलृङ्क्रियाअनिष्पन्नोगम्यमानायां अभविष्यत् अभविष्य
तां अभविष्यन् अभविष्यः अभविष्यतं अभविष्यत अभविष्यं अभविष्याव
अभविष्याम सुवृष्टिश्चेदभविष्यत्तदासुभिक्षमभविष्यदित्यादि।

नूगित्निमित्तेइकलक्षणगुणावृद्धिनहीहोनइसकारकेआशीअर्थविवेभूकेपरेयासुट्आयाकित्वनेगुणना
हीभयाभूयात्सिद्धंभूयास्तांभूयासुःभूयास्सि ईहांइकारलोपभयास्कोःसंयोगाद्योःकारकेयास्कासकारलो
पभयारेफविसर्गभयेभूयः भूयास्तं भूयास्व भूयास्मभूतार्थविवे आनुमेपरेलङ्होभूतपरेलुङ्कोतिपादिकभयेमा
ङ्उपपदहोयेलुङ्होस्महैपरेजिसकेपेसामाउपपदहोयालङ्कोचपुनःलङ्होसर्वलकारकाअपवादहै लुङ्प

रेफेदया ग्निद्धोरपकाग्रपवादहै ग्निकोसिचहो भूतिरहां भूकेपरेक्तिकोसिचभयारचइत्मया गास्याग्रुसंतकम
भूरननपभूसिचकाल्लकहोरसकारकेसकारलोपभयाएवं अदस्याया भूत्इनको गुणनहीहोसार्वधातुकलिट्या
ले रेफेदस्यारससेगुननहींभयाअभूत् लिटं अभूना अभूवन् इहांवु कस्यायाककोअनभयावकारलोपनलोपभ
त याअभूः रहांरकारलोपभयाअभूतअभूतअभूतम् नस्यणिपासारेलमाअभूवं अभूव अभूम हेतुहेतुमजावजातिहूनि
भि त्रिदेतहाभविष्यत्अर्थ विवित्लृङ् ओक्रियाकीअसिद्धतापतीतिहोयाहेतुमिमित्तहहेतुमान्फहै ॥२॥ हैभू
धातुनेलृङ्आयालृङ्कोतिपादिकभयेभूकेपर्वअट्आयास्यातासीलस्तुदोःकरकेभूकेपरेस्यआयाभूकोगुणभया
अवभयासकारकोमुलभयाअभविष्यतिभयारतअसेंरकारलोपभया आगेनस्यास्यमिपाकरकेमन्ययादेश

अनसानन्यगमने अनति अनआदेः अभ्यासस्यादिरतोदीर्घःस्या
त् आनत आनतुः आनुः आनिथ आनथुः आन आनि च आनि म अनि
ता अजादेरंगस्याट् लुङ् लङ् लृङ् षु आनत् अनेनूअन्यात् अनि
ष्टाल्लुङि सिच इडागमे हलन्ते आलिसि चोहके विद्यमानास्ति वोत्सेश्चा
पस्यापृक्तस्य हल ईडागमः इटईटि इटः परस्य सस्यलोपः स्याद्दी
र्घसिज्लोपोपकादेशे सिद्धो वाच्यः आनीत् आनिष्टां सिजभ्यस्ता
विदिभ्यश्च सिचोऽभ्यस्ताहिदेश्च परस्य झेर्जुस्स्यात् आनिषुः
आनीः आनिष्टं आनिष्ट आनिषं आनिष्व आनिष्म आनिष्यत् षिध
गत्यां ह्रस्वं लघु संयोगे गुरु दीर्घं च गुरु स्यात् पुगंतलघूपध
स्य च पुगंतस्य लघूपधस्य चांगस्येको गुणः सार्वधातुकार्धधातुका
योः धात्वादेः षः सः सेधति षत्वं सिषेध असंयोगाल्लिट् कित् असे

भयेअभविष्यतांअभविष्यन् इहांणकोअंतभयाईकाललोपभयानकारलोपभयाअभविष्यः इहांभूके
परेस्यआयास्यकेपर्वआईधातुकस्यकरकेइटआयाभूकोसार्वधातुकार्द्धधातुकयोःकरकेगुणभयाओका
वः ऱकोपवोदयकाय कृ्केएवभयासकारकोआदेशप्रत्यययोःकरकेषकारभयारतस्थकरकेसिपकेइकारकालो
पभयाससजुषोरुःकरकेसकारकोरेफभयाखरवसानयोःकरकेरेफकोविसर्गभयाअभविष्यःलिटं अभ
विष्यतंइहांथसकोतभयाअभविष्यत इहांथकोतभयाअभविष्यइहांमिप्कोअम्भयाअभविष्यावअभ
विष्यामइहांभीदीर्घभयाअननिरंतरनगमनदिखेहैअनधातुनेपरेलटकोतिपादिकभयेअनकेपरेकर्तरि

रि॰ इट्‌ आया अततिथ अततुः अततं तिथ अतति अतनय अतम अतताम अतनाव अताम अतो द्विर्वच पति से टीर्घ भया अभ्या सके आ स के आदि आकार को दीर्घ होय अततने पैरे लिट्‌ को तिपादिक भये तिप्‌ दिका को णल्‌ तस्य ल थस थ णल्‌ व मा ऐसे आदेश भये तिप्‌ को णल्‌ भया णकार लकार रत भये अत अतू इत्व भया हलादि शेषः भया अभ्यास को दीर्घ भया फेर दीर्घ भयाय इमिला आन सिद्धं अततुः आतुः आतिथ ईड्‌ हो इट्‌ पाया आ तथुः आत आन आतिव आतिम अत परे लुट्‌ को तिपादिका भये अत के परे ना स आया ना स के पूर्व इट्‌ आया तिप्‌ को डा भया डित्‌ को लोप भया अतिता सिद्धं अतितारौ अतितारः अतिता सि अततास्थः अतितास्थ अतितास्मि अतितास्वः अतितास्मः सिद्ध भये अतिष्यति ईड्‌ हो लृट्‌ को तिपादिक भये अत के परे स्य आया स्य के पूर्व इट्‌ आया षत्व भया अतिष्य परे मिल नागया अतनु ईड्‌ हो परुः करके बत्व भया आतन ईड्‌ हो लङ्‌ को तिपादिक भये शप्‌ आया आडजादि कन्नों को आट्‌ होय लुङ्‌ लङ्‌ लृङ्‌ परे अङ्‌ दया सकार के अत के पूर्व आट्‌ आया परस्रूप वाधा वा से आट्‌ है लुङ्‌ लङ्‌ से आट की या परस्रूप होना सो अतेत ईड्‌ हो लिङ्‌ को तिपादिक भये अत तिईड्‌ हो अत के परे सि

सिषिधतुः सिषेधिथ सिषिधथुः सिषिध सिषेध सिषिधिव सिषिधि मसेधिता सेधिष्यति सेधतु असेधत्‌ सेधेत्‌ सिध्यात्‌ असेधीत्‌ असे धिष्यत्‌ एवं षिधू संराद्धौ शास्त्रे माङ्गल्ये च ॥ षिधू गत्याम्‌ ॥ गद व्यक्तायां वाचि गदति निर्गदति प्रणिगदति अनुपूर्वक नित्यपद स्मास्वति हन्ति वाति द्राति प्साति वपति वहति शाम्यति चिनोति देग्धि इति णकार नाम्यसर्ग स्थान निमित्त नात्परस्य ने र्णो गदादिषु परे प्रणिगदति अजगाद जगदतुः अभ्यास कवर्ग होय चवर्ग शेषः अतउपधा याः हित्वे णलि वृद्धि जिनाम्यसर्ग परे जगाद जगदतुः जगदुः जगदि थ जगदथुः जगद णलुत्तमो वा णित्‌ जगाद जगद जगदिव जगदिम गदिता गदिष्यति गदतु अगदत्‌ गदेत्‌ गद्यात्‌ अतो हलादेर्लघोः

प आया षत्व के परे ष आया ष आया सकोरय भया लोपो व्योर्वलि करके यं लोप भया इनद्य करके इकार लोप भया अगादीत सिद्धं अगादिष्टां अगादिषुः अगादीः अगादिष्टं अगादिष्ट अगादिषं अगादिष्व अगादिष्म आशीः विषिष्यत्‌ अत्या अत्यातां अत्या सुः अत्याः अत्यास्तं अत्यास्त अत्यासं अत्यास्व अत्यास्मनिलंछित नः करके सकार लोप भया अत धातु ने परे लु ङ्‌ को तिपादिक भये अतनेन्‌ क्ति को सिच्‌ भया सिच के पूर्व इट्‌ आया तदनंतर सिचि वृद्धि परस्मैपदेषु इति सिच परस्मैपदेषु परे अकारस्य दीर्घ वरति परस्मैपद परे सिच् सर्व नस्मा त्‌ आ लि सिचः ईड्‌ हो पंचमी का लकार है कृत्व नहीं भया अत्व ने विद्यमान लिए ने परे वचनः अस ने परे नो अपृक्त हल है तिसको ईट का आगम होति प के रकार का इनद्य से लोप भया न कार के पूर्व इट्‌ आया के ररइ ने परे सकार का लोप हो ई ट्‌ परे अड़ दया फेर दीर्घ भया एका देश कै दया सि द्वको सिद्ध है आनीत सिद्धं आनिषुः रहा सकार को बत्व भया णत्व नाडुः करके नकार को रकार भया सिघु परे ने अभ्यस्त ने

वधुनः विदतेपरेङिलसंवंधीछितिसकोलुगत्होआतिपुः ईहांहिकोलुक्भयाआतीः ईहांरघुईदिकरकेसिद्
काःलोपभयासिधकेसकारकोरुत्वविसर्गभयेआगेषत्वष्टुत्वभयाषिपूगतिविवेहैक्रस्वत्तकुसंतकहोसं
रू० योगपरेहोयाहस्वसंतकहोदीर्घगुरुसंज्ञकपुगन्तअंगकेरककोवधुनःलघूपधअंगकेरककोगुणहोसार्वा
धातुकयार्धधातुकपरेइंदयाधातुकेआदिषकारकोसकारहोसेयतिईहांलड्आयाएँ[illegible]भया॥
सिषेधईहांलिङ्कोतिप्भयाहिल्यादिकार्यभयापरलेसकारकोषत्वभयायकारणलादिकामेमिलनआ
याअसंयोगतेपरेजोअपित्लिट्हैसोकित्संतकहोरसतेसिषेधतुःसिषिधुःईहांगुणनहींभयाआगेसिषि
धुपरेमिलासिषेधिथईहांरड्आयासिषिधथआदिसेधितईहांलङ्केतिप्केहरवंतासआयातासकेहरवंदद्
आयतिप्कोडभयासेधिष्यतिईहांलृट्केहरवंस्यआयास्यकेहर्दरड्आयाषत्वभयासेधतुईहांलोट्कोतिपा
दिकपरेएरुःसूत्रसेरकारउकारभयासेधतुईहांहिकोतिपादिकभयेआपआयापरेयासड्आयायास्
कोरघ्भयाणत्वभयाअसेधीत्ईहांछिकोसिच्भयारतच्कारकेलुङ्केतिकोइकारकालोपभयाईट्आयास

णा० णादश्च्यादेशःहे धात्वादेःषःसः णोपदेशास्त्वनर्द्नाटिनाथनाधनन्दनक्रन्ददनन्दः णा०
क्रन्दनः उपसर्गादसमासेऽपिणोपदेशस्य उपसर्गस्थान्निमित्तात्
रस्यणोपदेशाधातोर्नस्यणः प्रणिनदति निर्नृगदे निणत्वनवाद॥

लोपभयादीर्घभयाअसेधिष्यत्ईहांहरवंस्यआयास्यआयाइड्भयाषकारभयाणत्वभयाइसीधकाराचि
तीसंज्ञानविवेहैचेनतिविधेनष्टुत्वपोकविवेहैशोचनिष्णोच गदव्यक्तवाणीगेईतिईहांनकारकोण
त्वहोनाहैउपसर्गविरविस्थितजोनिमित्तहैतिसतेपरेनकारकोणत्वहोगदइदिकपरेइंदयारसत्रसेण
त्वभयाप्रणादईहांसिद्केतिपादिकाकोणलादिकभयेहिल्यादिकार्यभयापेरअभ्यासकवर्गकोचवुनः
हकारकोचवर्गदेशहोरसकरकेगकारकोजकारभयाजिनृणीनृपरेअंदयाउपधाकेअकारकोवृद्धिहोरस
लो० करकेआकारकोजकारभयाजिनृगीनपरेवृद्धिभयीजगादसिद्धंणत्वनमेंविकल्पसेवृद्धिहोजगादईहां
वृद्धिभयीजगदईहांनहीभयीअगलेलकारोंकिपिछलेमस्रांसेरूपसिद्धकरणोदलादिकधातुकाजोत
णुआकारहैतिसकोविकल्पकरकेवृद्धिहोपरस्मैपदविविरटादिकसिद्धपरेइंदया गदधातुनेलुः
ङ्कोतिपादिकभयेरतच्कारकेइकारलोपभया हरवंतकारकेईट्आयासिचकेहरवंरड्आयासकार
कोलोपभयादीर्घभयागदकेहरवंयईआयाविकल्पवृद्धिभयीअगादीत्अगदीत्सिद्धं णदअव्यक्तशब्दा
द्विविवेहैधातुकेआदिणकारकोनकारहोनर्दनाटनेषणानाथनन्दनक्रन्दनृत्त्ववृ्योनेविनाणोपदेश
हैनउपसर्गविरवेस्थितजोनिमित्तहैतिसतेपरेणोपदेशधातुकेनकारकोणत्वहोप्रणिनदतिईहांमें

नदृ अनत् सई त्यादि विविहित्वादि भये पेर लिट् नि मित्त कआदेशादिक नहीं होये हो मये स्ताजी ग्रंग है तिसरा कार्य संयुक्त हल्मध्यस्य अकार है तिस को यत्व हो च पुनः अभ्यास का लोप हो किन्तु ङि-न परे इंदया रस कर के अभ्यास का लोप भया अकार को य कार भया नेदतुः नेदुः लिहं इत्यादि अन्यत्र परे इंदया अकार को एत्वादि होने दिय ईटा यिन् परतः भीयत्वादि भया ओ इत्त कार को अभ्यास की न्यायी रूप लिङ कर लैने दुनदि सम्हि विविहे उपदेश विवियानु के आदि विवि त्रिदुदु है न सो इन्सं तक होन इस से इदन् भया इनत्वयस्यसः इदिन् इदित् यानुने।

अत एक हल्मध्येनादेशादेर्लिटि लिति नि मित्तादेशादिकं न भवति पदं गेत्व तद्वय वस्य असंयुक्त हल्मध्यस्य गतएत्वमभ्यासलोपश्च किति लिटि नेदतुः नेदुः थलि च सेटि इट् तिष्ठति वषागुक्तं स्यात् नेदिथ नेदथुः नेद ननाद ननद नेदिव नेदिम नदिता नदिष्यति नदतु अनदत् नदेत् नद्यात् अनादीत् अ
२ नदीत् अनदिष्यत् टुनदि समृद्धौ आदिर्ञिटुडवः उपदेशे धातोरादय एते इतः स्युः इदितो नुम् धातोः नंदति ननंद नंदिता नंदिष्यति नंदतु अनंदत् नंदेत् इति ताव लोपो न नंद्यात् अनंदीत् अनंदिष्यत् एवं वदि अभिवादन स्तुत्योः भदि कस्याणे सुखे च मदि स्तुति मोद मद स्वप्न कांति गतिषु अर्च पूजायां अर्चति तस्मान्नुड् द्विहलः द्विहलो धातोर्दीर्घीभूतादत परस्य नुट् स्यात् आनर्च आनर्चतुः अर्चिता अर्चिष्यति अर्चतु आर्चत् अर्चेत् अर्च्यात् आर्चीत् आर्चिष्यत् व्रज

गतौ व्रजति वव्राज व्रजिता व्रजिष्यति व्रजतु अव्रजत् व्रजेत् व्रज्यात् अव्राजीत् अव्रजिष्यत्
वदव्रजहलन्तस्याचः वद व्रज हलन्तस्याचः सिचि परस्मैपदेषु ॥

नुम् हो नंदति ईहां सभत्त कारपरतः नुम् आवता है नंद्यात् ईहां इदित्व नेन लोप नहीं होता है इसी प्रकार वदि अभिवादन स्तुति विविहे वंदति वंद इत्यादि भदि यानु कस्याण विविहे भंदति व मंद स्मदि स्तुति मोद मद कांति स्वप्न गति अर्थ विविहे मंदति ममंद इत्यादि अर्च पूजा विविहे अर्चति ईहां लिट् परतः आम्रपाया लिट् परतः अर्च अर्च भया अभ्यास के अकार को दीर्घ भया फेर दीर्घी भूत जो हि हल्त वाली यानु है तिस।

अकारको नुट् होइ रसनुट् आया या था न बर इत्यादि सिद्धं अबी तू ब्रजगति विशेषै है ब्रजति ब्रजाम वद ब्रजया तुवजनः।
हलेन धातुके अकको हादि होइ रसमैपद विवेति वृपरनः अक्रामीत् रहां वृद्धि भयी काने ग धातु वर्षा आवरण विषे
हे पकारे इत् है कटति रहां लिट् आया चकार इहां लिट् परतः द्वित्वादि भये कृदो सुः करके अभ्यास ककार को चक
रभया अत उपधायाः से वृद्धि भयी कावे ताई हां लुट् परतः तास् कलेपरे आयाता वृके एवं आई धातु कस्य कराके
इट् आयाति श कोड भया दिलोपभया कटिता सिद्धं कटिष्यति इहां लृट् परतः स्य आया स्यके एवं इट् आ।
णाषत्व भया लोट् तहां लोट् परतः शप् आया लङ् लुङः तूउकार के रकारकोउकार भया अकटत् इहां लङ् परतः या।
तुके एवं यट् आया या थातु के परे शप् आया रत उसू उकार के परे शप् आया शप के परे यासुट् आया यासि के र श भया

कटे वर्षावरणयोः। कटति। चकाट। कटिता। कटिष्यति। कटतु।
अकटत्। कटेत्। कट्यात्। ह्म्यन्तक्षणश्वसजागृणिश्व्येदिताम्।
मयान्तस्य क्षणादेर्ण्यन्तस्य श्वयतेरेदितश्च वृद्धिर्नेडादौ सिचि।
अकटीत्। अकटिष्यत्। गुपू रक्षणे। गुपूधूपविच्छिपणिपनिभ्य आयः।
आयः स्वार्थे। सनाद्यन्ता धातवः। सनादयः कमेर्णिङन्ताः प्रत्य
या अन्ते येषां ते धातुसंज्ञकाः। धातुत्वाल्लडादयः। गोपायति।
आयादय आर्धधातुके वा। आर्धधातुकविवक्षायामायादयो वा।
स्युः। कास्यनेकाच आम् वक्तव्यः। लिटि कास्प्रत्ययादाम् विधानान्मन्त्र
वेत्यमन्त्रे। अतो लोपः। आर्धधातुकोपदेशे यदकारान्तं तस्य अतो लोप
आर्धधातुके। आमः। आमः परस्य लुक्। कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि

गुण भया लोपो व्योर्वलि करके पलोप भया अकटत् अकरीत् इहां लुङ् परतः सिंच् आया सि चू के एवं इट्
आया तिप् के एवं ईट् आया यासुट् रहां तिकार के सकार लोप रतन ललगा लोप भया दीर्घ भया वद ब्रजने से हादि
अयी सी न वह कांत मकारांत यकारांत धातु को क्षण श्वस जागृ श्वि च पुनः एदंत धातु को वृद्धि
नहीं होइ है केलि परतः इस से निषेध भया अकटीत् इहां लुङ् परतः स्य आया गुप् धातु रक्षा विषे
है ऊदित है गुपूधूप विच्छि पणि पनि इनो ने परे आय हो स्वार्थ विषे सनादि कमे कमते णिङ् पर्यंत प्रत्यय
एदं तान

लो है नयौंन । जिसके लोपा न संज्ञक होन था तु त्व ने लङादिक होन गुण के परे आय आया गण की धातु इ. दिक आये प्रश्न आये ॥ गुण भया गोपाय ति सिद्ध भया गोपाय धातु प्रत्यय ना लमिलनीग । सा आह धातु क वि वर्त्त वि त्वे आप रयङ्‌ णिङ्‌ विकल्प कर के होन का सु ने अने का व्व ले आम्‌ व क व्य है का । मू ने आप करणे ने मकार को इत्व नहीं आई धातु को पदेश वि वे जो अद त ने है तिस के अकार का लोप हो आम के परे जो है तिस का लुक होआ म त ने लिट्‌ है परे जिन के वे से कृ भू अस्‌ अनु प्रयोग करी दे है नति नो को द्वित्व । द्वि होन अभ्यास के ककार को चकार हो प्रत्यय परे हटया वृद्धि हो अब साधना है गुप धातु से आ अ आया

यो ऽ न्यो पि न्द्रि ट किल्य तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात्‌ उपदेशे यो धातु रेकाजनुदात्त इत्याई धातु कस्य ऋ उ ह ई ने यो ति न ह तानुशीलन त्वृ त्रृ डी श्रिभिः वृ व वि नै का चो ज न्ते षु निहताः स्मृताः कान्तेषु शक्ल कः चान्तेषु पचि मुचि रिचि विचि सिचः षष्ठान्तेषु प्रच्छेषः जान्तेषु त्यज निजिर्‌ भज भञ्ज भुज मस्ज यज युज रुज रञ्ज विजिर्‌ स्वञ्ज सञ्ज सृजः पंचदश दान्तेषु अद क्षुद खिद छिद तुद नुद पद भिद विद विनद्‌ स्कन्द शद सद स्विद्‌ । विद षो ऽ श धान्तेषु क्रुध क्षुध बुध बन्ध युध रुध राध व्यध शुध साधु सिध्या एकादश नान्तेषु मन्य हनो द्वौ पान्तेषु आप् छुप् तिप् तप् कृप् क्षिप् तृप् दृप् लिप् लुप् वप् शप् स्वप् सृपो ऽ दश भान्तेषु यभ रभ लभस्त्रयः मान्तेषु गम् नम् यम् रमश्चत्वारः शान्तेषु क्रुश दंश दिश दृश मृश रिश रुश लिश विश स्पृशो दश षान्तेषु कृष त्विष तुष

फेर गुण भया पीछे लकार में लिट्‌ आया गोपाय के आगे आम आया फेर य कार मे अकार का लोप भया जाया यां लिट्‌ भया फेर लिट का लोप भया फेर गोपायां के आगे कृ भू अस्‌ आये कृ भू अस्‌ के आगे लिट्‌ आया ति । स को तिपादिक भये तिपादिका को णलादिक भये कृ द्वित्व भया ऋकार को अकार भया कृ हो कुः कर के अभ्यास ककार को चकार भया णल्‌ निमित्त के परले कृ को वृद्धि भयी गोपायांचकार सिद्ध गोपायांचक्र

नुस ईहां द्वित्वकी प्राप्ति भी है परन्तु नेयणकी प्राप्ति भी है दोनोमे क्या होवे न वकहा है द्वित्व निमित्त अच् प
रे है तथा अन्तुकोभ्यादेश नहीं होजहां द्वित्व कर्त्तव्य है इसनेयण म हित्वभया उरत् भयानुकार भया फेरय
ण भया गोपायांचकर्थ सिद्ध गोपाया च कृतः गोपायांचक्रुः सिद्ध भये उपदेश विवे गोपाया तु एकाचः
अनुदात्त है तिसने भूपरे आई धातु ककोइट् नहीं होकिन्तु नेगुपूं नहीं भया इसकरके इट् निषेध गला १०
भया नौ न उपरश न धातु एकाचू अनुदात्त है नमूल मे सपष्ट लिखी बात है न भूभूत्र स्त स्तजत द्वित्व भया
तब गोपायांबभूव गोपायामास इत्यादिक जानने जहां आयन नहीं आया तहां सिद्ध पर तः गुप गुप द्वित्व भ

द्विषु जुगुपुः ष्यपिषु विषु शिषु श्रिषु एकादशसांनेषु च सवसो ६
होतहां नेषु दह दिहउ हन हमिहरुह लिह वहो ष्टौ ॥ अनुदात्ताह
लंते षु धातव सप्तविंशतिः ॥ गोपायांचकर्थ गोपाचकृथुः गो
पायांचक्र गोपायांचकार गोपायांचकर गोपायांचकृव गोपायां
बभूव गोपायामास जगोप जुगुपतुः स्वरति सूति सूयति धूञ्
दितो वा स्वरत्यादेः इट् दित अपरस्य वलादेरार्द्धधातुकस्येड्वा जुगो
पिथ जुगोप्थ गोपायिता गोपिता गोप्ता गोपायिष्यति गोपिष्या
ति गोप्स्यति गोपायतु अगोपायत् गोपायेत् गोपाय्यात् गुप्या
त् अगोपायीत् नेटि इडादौ सिचि हलंतस्य वृद्धिर्न अगोपीत्
अगौप्सीत् कलौक लिफलः परस्य सस्य लोपः फलि अगोपायिष्ट अगौ
प्ताम् अगौप्सुः अगौप्सीः अगौप्तं अगौप्त अगोपायिष्यत् अगोपिष्यत् अगो

भया हलादिशेषः भया वव र्गमे जकार भया पुंगनल भूपय सपसे गुण भया जुगोप भया जुगुपतुः ई
हां किन्तनेगुण नहीं भया जुगोपिथ ई हां इट विकल्पने आवता है स्वरत्यादिक धातु है वउनः ऊदित
धातु है न तिनोनेपरे जो वलादिक आर्द्धधातुक है तिसकोइट् विकल्पने होगश धातुने आर्द्धधा
तुक विधि आय विकल्प करके आवता है तहां इट् भी विकल्प करके आवता है इस वास्ते तिन्नरूप भये
गोपायति तिह ई हांतास् आ या अकार लोप भया तास् के पूर्व इट् आया तिपकोड भया हि लोप भया गोपा

पिता सिद्धं जहाँ अ नहीं आया न हो गो पिता भया जहाँ इट् विकल्प है न हो गो माइसीं ओर नालकार के जाननेगो पा ॥ ३७
६० याानुबंधं उकार में अकार लोप भया है गुण लुइ हाँ गुण के पद सि आया सि वृ के पर्व इट् आया ति पूके पर्व इट् आया वट अनुकर के हटि पायी सीनुब निषेध भया इड़ादि कित्व से गुण याहलन्त लघुपध हित्व नहीं होस लोप भया अगोपी नु सिद्धं अगोपी नु इट् नहीं आया सि वृ लोप भी नहीं भया वृ हि भयी इट् वाले में अगोपि भया हहि में अगोपं भया इं होस लोप भया ॥ दिधान ल ध वि वि है दि धानु ने ल ट् आया ति के परे शप् आर गंन के गुण पकार भया एवो य वाया वः से अव भया लयति सिद्ध भया लिट् पर तः हित्व भया हलादि शेषः भया कु हो श्चुः सें चकार भया लिलिय भया अचो ञ्णिति कर के हद्धि भयी विच्छाय सिद्ध भया वि ति अन उर आदि वि वि अवि

तिस्ये तस्यति वितसाय ति तिय तः विविदुः पकाद इति निषेधे प्राप्ते क्रम्भवृ दृ लुस्तु श्रुवो लिटि क्रादिभ्य एव लिटि इ इन्नस्मादन्यस्मादनिट इत्यनिपसात् अच स्तास्वत् थल्यनिटो नित्यं उपदेशोऽत्वतो धान्तस्तासौ नित्यानिट स्थल इड् उपदेशोऽत्वतः ऋतोभारद्वाजस्य विति सिपिय वि लेघ वि इडिः पछुः चिति विताय वि ति पिव विति यम तेना लेघ नित्य यत् अस्तयन् नेप सेना पवि वि हैनप ति त पेल्ल क्रन्ता र्व। धानुकयोर्दीर्घः अजेनां गस्य दीर्घः पादौ प्रत्यये न नु क्रमता र्वधानुकयोः लोपान् सि वि च्छद्विपं रस्मैपदेषु इगं तांगस्य हृद्धिः परस्मैपदे सि वि अतैषीत् अतेष्यत् नपसेनापे नपति ननापते पिद्य मनतथ्य तमा तस्यति तपत्यस्नपत् तपेत् न

मुधानु कर के इयङ् भया विदिपन्तुः विविदुः भये विदिपा इहाँ पकार उपदेश अनुदात्त नकार के इट् निषेध पायी सो न बकहाँ क्रम्भ वृ स्तु दु स्तु श्रुव न के परे ही लिट् को इट् नहीं होय अन्य अनिट् ने भी इट् होय यह नियम दालेस वे है अ कदं न धातु न को ऋतो भारद्वाजस्य थल परतः इट् निषेध करता है अकारांत धातु को अचस्तास्वत्
३० थल परतः निषेध करता है समझ नु सूत्र से थल निषेध परतः निषेध करै दाहै इउप देश विरोध अन्तनो धान है सो तासू विरुवे नित्य अनिट् हैं तैसे थल परतः इतस को इट् नहीं होउपदेश विरोध प्रकार कोर वान्याान् वासह विरोधि

अति दहै सो यत्परतः भी अनिट् होभारद्वाज के मत विषे क्रादं तने परे थल्को इट् नहीं होता स्। विषे नित्य अनिट् होइस तें ईहां विकल्प भयें अचस्तास्वत् से निषेध पाया क्रतोभारद्वाजस्य से विधि पायी चिकेथ भी भ याग्रुण भया इट् आया चिकयिथ भी भया इट् आया इयङ् भया क्षेता क्षेष्यति क्षेपतु अक्षयत् क्षयेत् क्षीयात्
भ॰पा॰ ईहां दीर्घ अंतं अंगको दीर्घ होयादि कृप्रत्ययपरे हुं दयाक्तन्सार्वधातुकपरतः नहीं हो इगंत अंगको हादि होसि चुपर नं अक्षेषीत् ईहां सिच्चाया ईट् आया हद्धि भयी अक्षेष्यत् तप संताप विषे है तपति ईहां लट्परतः शप् आया तता तापई हां लिट् के तिपादिका को एलादिक भये लिट्या तो कारके द्वित्व भया हलादिशेषः से पकार लोप भया अत उपधायाः से हृद्धि भयी परे मिला तनताप तिहं ततापु अत एकहल्मध्ये इत्यादि विषे अनयक हल्मध्ये कर के अभ्यासलोप भया परले अकारको एत्व भया तेपतुः तेपुः सिहं तेपिथ ईहां इट् वतू यत्परतः एत्वादिभ

प्यात् अतापीत् अनाप्सी अनपस्यत् क्रमु पादविक्षेपे वा भ्राश भ्लाश क्ला
श भ्रमु क्रमु क्लमु त्रसि त्रुटि लषः यः श्यन्वा कर्तरि सार्वधातुके
परे शप् क्रमः परस्मैपदेषु क्रमे दीर्घः परस्मैपदे शिति क्राम्यति क्रा
मति चक्राम क्रमिता क्रमिष्यति क्रामतु क्राम्यतु अक्रामत् अक्राम्ये
त् क्रामेत् क्रम्यात् अक्रमीत् अक्रमिष्यत् पापाने पाघ्राध्मास्था
म्नादाण्दृश्यर्त्तिसर्त्तिशदसदां पिबजिघ्रधमतिष्ठमनयच्छपश्यर्च्छ

याइट् विकल्पते आया तमा इत्यादि विषे इट् नहीं आवता ये अनिट् है अतापीत् ईहां वदव्रजहलंतस्याचः से हृद्धि भयी अताप्सं ईहां कलो कालि करके सकार लोप भया है अनपस्यत् थात् क्रमधातु उरते विषे है भ्राश भ्लाश भ्रम् कम् क्लम् त्रस् त्रुटि लष् इनों धातो ते परे यपन् विकल्पते होक र्त्ता विषे सार्वधातुकपरे हुंदया पदा विषे शप् होकम्धातु को दीर्घ होपरस्मैपद विषे शित्परे हुं दया क्रमधातु ते लट् को निपादिक भये क्रम के परे यपन् आया शा कारलय कुकरके इतन् भया नकार हलंत्यं कर के इत् भया दीर्घ होया क्राम्यति सिहं पाश परतः भी दीर्घ भया काम ति सिहं आगे सारे सार्वधातुक विषे यपन् शप् आवने हैं नकमितु क्रमिष्यति ईहां इट् आया है ये से इट् आया है उकार इतते पाधातु पान विषे पादिक धातु को पिबादिक आदेश हैं इत्संज्ञक शादिक प्रत्ययपरे हुं दया पा को पिबहो
ध्रा घ्रा को जिघ्र होध्मा को धम होस्था को तिष्ठ होम्ना को मन को दाण को यच्छ होदृश को पश्य होऋ को ऋच्छ होस
को धौ हो शद को शीय हो सद को सीद होईहां शप्परतः पा को पिब भया पिबति सिहं पाधातु के परे लिट् के तिपादि

काकोपत्तीदिकभयेपायादित्वभयापेअभ्यासंतनथालुतेपरेणल्कोऔहोइसकरकेणल्कोऔभयाकेअजादिका
आर्द्धधातुककिन्ङिन्इट्परेहुएदयाआकारकालोपहोइसकरकेआकारकालोपभयापरेमिलायपौसिद्धपपतुःपपुः
इट्होसारेपकारपरेमिलनागयापानार्थस्थतिसुगमहैनपेयास्तइट्होएत्वभयाहैतुसेतकजोथालुहैनआस्योपिव
जहातिस्यतिस्तकोएत्वहोआईयालुकङिन्तिसुपरेहुएदयाअपान्इट्होगातिस्थाघुपाभूभ्याकरकेसिचलुकभ
याहैअपा इट्होसलोपहोयाहैअपुःइट्होआदंततेंहोपरेजोकिहैतिसकोउस्होइसकरकेकिकोउस्होया पदं
नअकारनेउसपरेहोयापररूपएकादेशहोइसकरकेपररूपहोयाअपास्यन्इट्होस्यआयासेथालुहर्षद्विपवि
खेदहैसैलट्इट्होपापआयायेकारकोआयभयासायतिसिद्धलट्इट्होउपदेशपाविंपजंनथालुकोआत्वहोशीन्यरननही

रै। सीयसीदाः पादीना पिवादयः स्युरित्यं तत्केशात्सै प्रत्यये पिवादे
शोऽदंतस्तेनन गुणः। पिबति। आत औ णलः। पपौ। आतो लोप इटि च।
यत्ना घोरार्द्धधातुकयोः क्ङिति। दिऽचः पश्यो पमो लोपः। पपतुः। पपुः।
पपिथ पपाथ। पपथुः। पप। पपौ। पपिव। पपिम। पाता। पास्यति।
पिबतु। अपिबत्। पिबेत्। एर्लिङि। घुसंज्ञानां मास्थागापिबतिजहा
तिस्यतीनां च एत्वमार्द्धधातुके लिङि। किति। पेयात्। गातिस्था
तिसिचो लुक्। अपात्। अपमा आतः। सिज्लुकि आजंनादेवके

होरसकरकेसिद्धपरतःऐकारकोआकारभयासासादित्वभयापूर्वआकारह्रस्वभयाणल्कौऔकारभया
आतोलोपःसेआकारलोपभयाजा कारभयाजसौजसतःसिद्धघुमास्थागापाजहातिसांसंयोगादि
कयालहैतिसकोआकारकोएत्वहोआईयालुकङिन्परेहुएदया सेयाल्स्मायात्इट्होएत्वविकल्पनेभया
सेकेपरेलङ्आयायमरमनमआदंतधातुकोसक्काआगमहोरसकेपरेसिच्कोइट्काआगमहोसेके
पूर्वअट्आयापरेसक्आयाअक्इन्भयासक्करकेपरेसिच्औलिङ्केपूर्वइट्आयाणिप्केपूर्वईट्आयाइट
ईट् टिकरकेसिच्कालोपभयादीर्घभयासकार ईकारमेमिलाअसासीत्सिद्धअसास्यत्ग्लै
धातुकटिलनाविदिहैधायान्नलट्परतःगुणभयाहुरनिआदंतजोसंयोगादिकथगईहैतिसको

गुणाभयालिट्परतः अतउपधायासे वृद्धि भयी जगाम सिद्ध भयो आगे ज हरतः जह्रुः इत्यादि विषे गुणाभ
या कृञ्जी कृदंत धातुतें चपुनः हन् धातुतें परे सकार को इट् होकरि ष्यति ईहां इस्या या ऋ धातु को संयो
गादि के ऋदंत धातु को गुण होकि तू परे ऋदया यारी कृ आई धातु कौं रे ऋदया तयीत् स्मृ धातु अवणा विषे है ५
स्मृ धातु को अ आदेश होचपुनः स्मृ अन्यय होकर्मो विषे सार्व धातु कपरे ऋद या स्मृ गोति ईहां स्मृ आदेश भया
स्मृ परे ऋ स्मृ जो अनेकाच है तिसका असंयोग पूर्वक योः जो उवर्ण है तिसको यण होआ वृ परतः स्मृ एवं ति ईहां

जैसू उस्य पदांता नूअपदांतातकाय ऽ सिपर रूपमेकादेशः
अ ऽः अपास्यत् सैह्रूर्छसये सायति आदेच उपदेशोशिति उप
न देशोपजंतस्य धातोएवं नशिति निसोस्याना सास्यतिसा
पतु अस्याघन् सायेत् वान्यसंयोगादेः भुमस्यादेरन्यस्य संयोगा
ऽअ देधातोस्कनपत्वं वा आई धातु के कि ति लिङि सेयात् सायाः
न्यमरस्मृन माता सहव्यं यसंगेभ्यः सिचरूर परस्मैपदे
लि शुअशीत् असासन् हुकौ ति लिये हरति ऋत स्य संयोगादेर्गु
णः ऋदंतस्य संयोगादेर्गस्य गुणोलिटि उपधावृद्धिः जहार ।
जह्रतुः जह्रुः जहर्थ हर्थ जहू नेस्य ऋतोह्नेस्य स्यस्य इ
इ कृ ष्यति कृ तः अह्ला न ह रेत गुणो निं संयोगा होंऋतेः सेयो

गण भया असंयोग पूर्वक जो प्रत्यय का उकार है तिसका लोप होवा मपरतः विकल्पते णिम्परतः गम्ह
र धातु गमन विषे है लट् विजतै स्माओ पम्रन को छ आदेश होरला करके मरवे के आकारको वकारहो या पा छ
न मृ होया गच्छति सिद्ध गामर्ड होमनउप धायासे वृद्धि भयी के धेस्मु सेजकार भया जगाम एवं जगन्तुः जग्मु
१ म की उपधाको लोप होकि तङि नू परे ऋदया अड् परतः नही होजग्मतुः जग्मुः ईहां अकारका लो
प होया जग्मिथ ईहां इड् विकल्पते आया गम् धातुतें परे सकारादिक आर्द्धधातुक को इट् विकल्प

तेआयागम् श्नुते परे कादिक अर्हधातुक को इट् विकल्पकरके होगमिष्यति ईहांस्वके पूर्व इट् आया पृथन विकर णजो श्रुणादिक धातु हैं श्रुनादिक धातु है वश्नुनःत्वदितधातुहै तिसके परे श्नुकोयट् होयेत्व इत् है इसतेआगमनर्ई होत्वेकोअई भया आगमिष्यतीहां इट् आया इतिपरस्मैपदप्रक्रियासमाप्ता ॥ अथधातुहद्विविधहै इतिजोलकारहैना तिनके स्थानजो आत्मनेपद है न तिनकी हींकोयकार होयथके परेत्व इट् आयातिसकोतआत्तौ क इत्यादिक होयेमध्येमेपाश ।

णादेशोऽदंतस्य च गुणः । किति पाद्यर्थधातुके लिङि च हूयात् अश्ना ऊ

पीत् अश्रोषिष्यत् । ऋश्नुवणोश्नुवः । ऋश्नुवः आदेशः । श्नु प्रत्य

यश्च कर्तरि सार्वधातुके श्रृणोति सार्वधातुकेऽपित् अपित्सार्व प

धातुके श्रृणोति सार्वधातुकमपित् ङित् हुश्नुवोः श्रृणोतः । हुश्नु

वोः सार्वधातुके हुश्नुवोरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य वर्णस्य यणः स्या

त् अचि सार्वधातुके श्रृण्वंति श्रुणोषि श्रृणुथः श्रृणोमि श्रृणो

मि लोपश्चास्यान्यतरस्यां म्वोः असंयोगपूर्वप्रत्ययोकारस्य लो

पो वा म्वोः परे श्रृण्वः श्रृणुवः । श्रुश्राव शुश्रुवतुः श्रोता श्रोष्य

ति श्रृणोतु श्रृणुतात् श्रृणुतां श्रृण्वंतु उतश्च प्रत्ययादसं

योगपूर्वात् असंयोगपूर्वात् प्रत्ययोतो हेर्लुक् श्रृणु श्रृणुतात्

श्रृणवै श्रृणुत गुणावादेशौ श्रृणवानि श्रृणवाव श्रृणुतां श्रृणु

यात् श्रृणुवन् अश्रृणोः अश्रृणुतं अश्रृणुत अश्रृणवं अ ॥ ८८ ॥ कि० सि० कौ० टी०

श्रृणव अश्रृणुव अश्रृणुम अश्रृणुम श्रृणुयात् श्रूयात् अश्रौ

आयातकारविविधकारकोयकारभयापथनेभयापथमातोरईहांअकारनेपरे ङित् व चनाकेआकारकोरूपहो इससूत्रसेआकोइय् भयालोपोव्योर्वलि करकेयकारलोपभयागुणभयाहिकोयकोयकारभयाथयेतो भयापथयेतेईहांफवोयेतभयापररूपभयाहिकोयकारसारेहोताहै ङित्वलकारन छोड केहिन्लकारकेस्था नजेयासहै तिसकोसहोयपयसे भयापयेयेईहां रूप भयापथश्चेपयेवथावहैपयापहेईहां हिकोयकोयका

रभयाअतोदीर्घोयञिभयाइत्यादिकजोधातुहैसुरूमात् जहछतेअन्यतिसतेंपरेआमूहोलिट्इरतः इसकस्के
परेआम्आयाकृञ्चानुप्रयुज्यतेसूत्रकरकेएधांकेपरेकृभूअस्आयेफेरआम्प्रकृतिकरकरनुलस्अनुप्रयु।
ज्यमानजोकृञ्हैतिसकोभीआत्मनेपदहोफेरद्वित्वभयाउरत्सेअकारभयःकुहोश्चुःकस्केचकारभयाफे
रयणहोकेपरेमिलनागयालिट्केस्थानमेजोतकहैनतिनकोएशहुएहोइससेतकारकोएशभयाफ
कोइरेचभयाएधांचक्रेएधांचक्रातेएधांचक्रिरेइत्यादिभयेइणःकेपरेषीध्वंलुङ्केलङ्केधकारकोढका
रहोइसीप्रकारभूअस्आसूहित्वभया एधिताईहांलुट्परतःएधकेपरेतासआयातासकेसर्वइट्आया।
तकोडाभयाटिकालोपभयाएधितारौईहांरिचसत्रवसेंसकारलोपभयाएधितारःऐताससेईहांथ्यासकेसेभया

गम्लृगतौ। इषुगमियमां छः। एषां छः शितिगच्छति जगाम गमहन
जनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि। एषामुपधालोपो जादौ क्ङिति न
त्वङि। जग्मतुः जग्मुः जगमिथ जगन्थ जग्मथुः जग्म जगाम जग।
गम जग्मिव जग्मिम गन्ता गमेरिट् परस्मैपदेषु गमेः सादेरार्धधातुक
स्येट् परस्मैपदेषु गमिष्यति गच्छतु अगच्छत् गच्छेत् गम्यात् पु
षादिद्युताद्य्लृदितः परस्मैपदेषु श्यन्विकरणपुषादेर्द्युतादे।
र्लृदितश्च्लेरङ् परस्मैपदेषु अगमत् अगमिष्यत् इति
परस्मैपदप्रक्रिया अथ एध वृद्धौ टित आत्मनेपदानां टेरे टितो लस्या
त्मनेपदानां टेरेत्वं एधते अतो ङितः अतः परस्य ङितामात्
इय् एधेते एधन्ते थासः से टितो लस्य थासः से एधेते थासः से दि

सकारकालोपभयाइत्यादिजाननेयादिकप्रत्ययपरेहुंदयासलोपहोएधितासेईहांसलोपभयातासको
सकारकोअस्केसकारकोहकारहोएकारपरेहुंदयाएधितादेईहांसकारकोहकारभयाएधितास्वहेएधि
तास्वहेईहांटिकोएकारभयाल्टइपरतःएधकेपरेस्यआयास्यकेपर्वइट्आयायावत्वभयाटिकोएकारभयालृट्
इत्वहोनागयाएधिष्यतेइत्यादिजाननेलोट्केएकारकोआमहोएधतांईहांथाप्आयाथकोआमभयाएधे।

ईड्शप्रश्नातो ङितः सेरूप्र्याया पलोप भया पथनां ईड्शा फ को अनभयाञ्च भयासकार वकार ने परे लोट् के ए । १३
कारको क्रमते वम होन सकार के एकोव होवकार के एको महोपथस्व ईड्शप को वकार भया लोट् के उत्तम को
एकार को ऐकार होपथै एथा सुदृहै पथामहै ईड्शा ऐकार भया दीर्घ भया लङ्परतः एवं अट् आगम हृदि भयी पे
यते ॥ लिङ् को सीयुट् होस लोप होपथ के परे शाम् आया लिङ् के एवं सीयुट् आया न भया लिङः सलोपो नं स्ति । २५

तोऽलस्य पथसे पथेथे पथध्वे अनाम्पुत्तोप येथे पथावहे पथामहे इजादे ।
सगुरुमतोऽनृच्छः इजादिर्यो धातुर्गुरुमान् ऋच्छत्यन्यस्तस्मादाम् स्या
लिट्याम्प्रत्ययवत्कृञोऽनुप्रयोगस्य आमप्रकृत्यानुत्वमनुप्रयुज्यमा
नात्कृञो आत्मनेपदं लिटस्तझयोरेशिरेच् लिडादेशयोस्तझयोरेशि
रेचौ स्तः पर्थांचक्रे पर्थांचक्राते पर्थांचक्रिरे पर्थांचकृषे ॥
पर्थांचक्राथे इणः षीध्वंलुङ्लिटांधोऽङ्गात् इणन्तादङ्गात्परेषां षीध्वंलु
ङ्लिटांधस्य ढः पर्थांचकृढ्वे पर्थांचक्रे पर्थांचकृवहे पर्थांचकृमहे प
र्थांबभूव पर्थामास पथिता पथितारौ पथितारः पथितासे पथितासे
पथितासाथे धिच धादौ प्रत्यये सलोपः पथिताध्वे ह एति तासस्त्योः सस्य
हः पथिताहे पथितास्वहे पथितास्महे पथिष्यते पथिष्येते पथिष्यसे प
थिष्येथे पथिष्यध्वे पथिष्ये पथिष्यावहे पथिष्यामहे आमेतः लोट एत
आम् पथताम् पथेताम् पथन्ताम् सवाभ्यां वामौ सवाभ्यां परस्य लोट एतः क्रमा
द्वामौ स्तः पथस्व पथेथाम् पथध्वम् पथै पथावहै पथामहै अट् अपथत
अपथेताम् अपथन्त अपथथाः अपथेथाम् अपथध्वम् अपथे अपथावहि अपथामहि लिङः सी
युट् लिङात्मनेपदस्य सीयुट् स्यात् लिङः सलोपोऽनन्त्यस्येति सलोपः पथेत पथे

हे सीयुट् के सकार का लोप भया के अस्य इ णः से गुण भया लोपो व्योः से यलोप भया पथेत सिद्ध भया पथेयातां लिङः कोरन् २६
हो पथेरन् पथेथाः यलोप भया पथेयाथां पथेध्वं लिङादेश जो इट् है तिस को अत् होपथेय पथेवहि पथेमहि आशीः
सर्वीविवेपथ के परे नकार के एवं सीयुट् आया उट् इत् भया थकार के एवं इट् आया लिङ् के तकार ईकार को स
ट् होइ ससे तके एवं सट् आया आदेश प्रत्यययोः कारके दोनों सकार को षकार भया ष्टुना ष्टुः करके तकार के टकार

भयाप्यतिष्ठीष्ट सिद्धं वेविषीयास्तां इत्यादि नके परत्वं सुट्स्याया वेविषीरन् वेविषीष्ठाः इत्यादि पलोपभयाद्धकारके परं सुट्स्याया वेविषीरन् वेविषी याथांरत्यादि वेविषीद्वं इत्यादि लुङ्परतः सेकोसिचहोयाप्यके परत्वं आट्स्याया इम् योसिचके परत्वं सुट्स्याया सकारको षकारभयात कारको टुत्वभयाद्वेविष्ट सिद्धं वेविषातां अकारनेमिन्नवर्णानेपरेक को अनुहोवेविषत इत्यादि कको अनूआदेशभयान कारफकारके अकारमेमिलाइत्यादि जाअने वेविषत इत्यादि पथके

याथां वेवीध्वं इटोऽत् लिङादेशस्य। वेवीय वेवीवहि वेवीमहि सुट्तिथोः लिङस्सलोपः सुट्पलोपः वेविषीष्ट वेविषीयास्तां वेविषीरन् वेविषीष्ठाः वेविषीयास्थां वेविषीध्वं वेविषीय वेविषीवहि वेविषीमहि अवेविष्ट अवेविषातां आत्मनेपदेष्वनतः अनात्मरस्तात्मनेपदेषु कस्मात्स्मात् अवेविषत अवेविष्ठाः अवेविषाथां अवेविढ्वं अवेविषि अवेविष्वहि अवेविष्महि अवेविष्यत अवेविष्येतां अवेविष्यन्त अवेविष्यथाः अवेविष्येथां अवेविष्यध्वं अवेविष्ये अवेविष्यावहि अवेविष्यामहि कमु कान्तौ कमेर्णिङ् स्वार्थे कामयते अयामन्ताल्वाय्येत्स्निष्णुषु पगुणोरयू कामयांचक्रे आयादय आर्धधातुके वा चकमे चकमाते चकमिरे चकमिषे चकमिढ्वे चकमे चकमिवहे चकमिमहे कामयिता कामयितासे कमितासे कामयिष्यते कमिष्यते कामयतां अकामयत कामयेत कामयिषीष्ट कमिषीष्ट णिश्रिद्रुस्रुभ्यः कर्तरि चङ् णिपनात्

पूर्वं आट्स्यायास्यायास्यके परत्वं इट्स्याया यत्वभयाकमुथातुकांतिविदैकम् थातनेपरेणिङ् होस्वार्थे विरवेङ्कार हलंतसेरत्वभयाणकारवृद्धिसेरत्वभयाअत उपधायाः सेहद्धिभयी कामि तर्ई हाष्ट्रा इत्या यागुणभयाअयभयादिको यकारभयाकामयंते सिद्धं कामि तिर्ह हांआम् सिके परेत्र्याया फेर ॥

कार

अपप्रथमंथं तस्मात्‌याये रत्तु इस्तु परे ङदयाणि को अपृहोरसकारके रकारको अप भया का मयां भयापरेक आयादि
नादि भये कंमयां चङ्के रम्यादि आयादयः से णिङ् विकल्पमेव कमे भया अर्थाई थानुकमे विकल्पते णिङ् होता है
काम रत्नु ई हां एयन नेच पुनः श्रिङ स्तुरनते परे शिं को चङ् हो चङ् इन भयाका मिश्रन भयापरे अनिटादि कथा
ई धातुक परेङ दयाणि कालोप होरसमेरकारलोप भया फेर चङ् परे णि सके पेसा णी परेङ दयाअंग है तिसकी
उपधाको ह्रस्व होकम ग्र अन भया फेर अनभ्यास धातुका अवयव एकाच् जो प्रथम है तिसको द्वित्व होम्रङ् परतः

आयादिभ्यश्च्लेश्चङ् कर्तरि लुङि। कामि अ त इति स्थिते णेरनिटि
अनिटादावार्धधातुके णेर्लोपः। णौ चङ्युपधाया ह्रस्वः। चङ्परे
पा० णौ परेऽङ्गस्योपधाया ह्रस्वः। चङि। अनभ्यासस्य धातोरवयवस्यै
६ काचः प्रथमस्य द्वे स्तो जादेर्द्वितीयस्य। सन्वल्लघुनि चङ्परेऽनग्लो
पे। चङ्परे णौ परे यदङ्गं तस्य योऽभ्यासो लघुपरस्तस्य सनीव कार्यं स्या
दनग्लोपे सति। सन्यतः। अभ्यासस्यात इत्स्यात्सनि। दीर्घो लघोः।
लघोरभ्यासस्य दीर्घः स्यात्सन्वद्भावविषये। अचीकमत। णिङभावप
क्षे चङ्। वा०। अचकमत। अकामयिष्ट। अय गतौ। अयते। उपा च्य
सर्गस्यायतौ। उपसर्गस्य रेफस्य लत्वं स्यादयतौ। प्लायते। पलायते। द
यायासश्च। दयायास्भ्यामाम् लिटि। अयाञ्चक्रे। अयिता। अयिष्यते

परतः

अजादिको द्वितीयको द्वित्व होकम् कम् अत् भया हलादिशेषः होया चङ् है परे जिसके ऐसा परे है दयो। ऋ
जो अंग है तिसको जो अभ्यास है लघुपरक तिसको सन्वद्भाव होय अकलोप होय नहीं है ई हो सन्परे म
त्रयादे सन्परे ङ दया अकारको इकार हो सकर के इकार भया कि कम अत भया एवं अच् ह्रस्व या कहा॥
सुः से चकार भया फेर अभ्यासके लघुको दीर्घ हो सन्वद्भाव विषय अचीकमत सिद्ध णिङ के अभाव विषे
चिको अङ् वकार भया है तो अचकमत भया अकामयिष्ट ईङ् होती आया तारा है भयी णी को गुण भया॥

अयृभयास्यकोइत्वआयाषत्वभयाअपपातुगातिविखिहैअयन्नेईहांशपुआयादिकोवकारभयाअपरेहैद
याउपसर्गकेरेफकोलत्वकारहोआयतेपलायतेईहांलत्वभयादयअपआसइननेपरेआम्होलिट्परतःपरेहैद
ह्यआयाअयोवकेभयाअयांचक्रेपरेआम्होलिटपरतःपरेनोरत्वहैतिसतेपरेजोषीध्वंद्युतयातुदीप्तिविखेहैद्यो
ततेईहांशपआयाद्युतपद्युतलत्वपथसेभयाद्युतलपकोअभ्यासकोसंप्रसारणहोद्युतद्युत्दित्वभयाहत
देशोषःभयासंप्रसारणयकारकोइकारभयादिद्युतेदिद्युताकनेदिद्युतिरेइत्यादिद्युतादिकातेपरस्मैपदवि

आपतअयेतअपिपीष्टविभाषेटःइणःपरोयइट्ततःपरे
षांषीध्वंलुङ्लिटांधस्यवाढःअपिपीढ्वंअपिपीध्वंआपिष्ट
आपिढ्वंआपिध्वंआपिष्यत्द्युतदीप्तौद्योततेद्युतिस्वाप्योःसं
प्रसारणंअभ्यासस्यदिद्युतेद्योतिताद्योतिष्यतेद्योततांअ
द्योततद्योतेतद्योतिषीष्टद्युद्भ्योलुङिद्युतादिभ्यःपरस्मैपदं
वालृदित्पुषादीत्यादङ्अद्युततअद्योतिष्टअद्योतिष्यतवृ
तुवर्तनेवर्ततेववृतेवर्तितावृद्भ्यःस्यसनोःवृतादिभ्यः
पंचभ्योवापरस्मैपदंस्यसनोश्चनवृद्भ्यश्चतुर्भ्यःवृतवृधु
शृधुस्यन्दूभ्यःसादेरार्धधातुकस्येट्नतङानयोरभावेवर्त्स्य
तिवर्तिष्यतेवर्तितास्यवर्तितास्यवर्तिषीष्टअवृततअव
र्तिष्टअवर्त्स्यत्अवर्तिष्यतददददानेददतेनशसददवादि
गुणानांशपोर्ऽदेवेकारादीनांचगुणशाहेनविहितोयोअत्त

कल्पतेहोलुङ्परतःद्युतादित्वनेअङ्भयाअद्युततअद्योतिष्टईहांसिवृकेसर्वइहआयाढत्वभया
वृतादिकपंचधातनतेविकल्पपरस्मैपदहोहततवृधुशृधुस्यन्दइनोतेपरेसकारादिकआर्धधातुककोइ
ट्नहींहोतातङ्आनकेअभावविखेवर्त्स्यतिईहांइट्नहींभयावर्तिष्यतेईहांइट्भयाददरानविखेहैद
दतेशसददवकारादिकधातुइनकेगुणशब्दकरकरविहितजोअत्हैतिसकोएत्वअभ्यासकालोप
नहींहोवैददतेइत्यादिफलभयाइनकेअत्केएत्वकोअभ्यासलोपदोनेउरोइनिकामनेअक्रियाधितदई

अशृभयाश्रयतिसिद्धंश्रितेट्ईहांश्रिश्रिहिनभयाहस्तादिशेषःभयात्तिपकोणत्वभयाहृद्दिभयीश्रापभया
शिश्रायसिद्धंअशिश्रयत्ईहांणिश्रिद्रुस्रुभ्यः त्रिकोचङभयाघुणभयाअशृहोयाभ्यात्ईहांशकारपदे
इंदयापकपादिकआर्द्धधातुकातिङ्परेइंदयाऋकारको ङ्होस्तसेऋकोदिङ्भयाध्रियात्सिद्धंई २
हांअकृत्सार्वधातुकयोःसेदीर्घःनहीहोजापीछेदीर्घकरणोसेप्रथमहीदीङ्करणसाहस्तनेक्याजानीदा।
३ हैङ्प्राप्तिसेहिङ्विधिसामर्थ्यसेदीर्घनहीहोकृदन्तनेपरेझलादिकजोलिङ्सिचूहैनसोकित्संज्ञकहो

ष्यते ददतां अददत ददेत ददिषीष्ट अददिष्ट अददिष्यत त्रपूष् ।
लज्जायां त्रपते तॄफलभजत्रपश्च एषामत एत्वमभ्यासलो ।
पश्च किति लिटि सेटि थलि च त्रेपे त्रपिता त्रप्ता त्रपिष्यते त्रप्स्यते त्रपतां अ
त्रपत त्रपेत त्रपिषीष्ट त्रप्सीष्ट अत्रपिष्ट अत्रप्त अत्रपिष्यत अत्र
प्स्यत इत्यात्मनेपदप्रक्रिया श्रिञ् सेवायां श्रयति श्रयते शि
श्राय शिश्रिये श्रयिता श्रयितासे श्रयिष्यति श्रयिष्यते श्रयतु
श्रयतां अश्रयत् अश्रयत श्रयेत् श्रयेत श्रीयात् श्रयिषीष्ट
चङ् अशिश्रियत् अशिश्रियत अश्रयिष्यत् अश्रयिष्यत भृञ् भर
णे भरति भरते बभार बभ्रतुः बभ्रुः बभर्थ बभृव बभृम बभ्रे
बभृषे भर्त्तासि भर्त्तासे रिङ् शयग्लिङ्क्षु शयक्लिङादावार्द्धधातु
के लिङि ऋतो रिङ् रीङ् प्राप्ते रिङ् विधिसामर्थ्याद्दीर्घो न भ्रियात्
उश्च ऋवर्णान्तात्परौ झलादी लिङ्सिचौ कितौ स्तः तङि भृषीष्ट ।

नतङ्परतःभृषीष्टईहांकित्वनेगुणनहीभयाअभार्षीत्ईहांसिच्आयाईट्आयाहृद्दिभयीहस्वअंगात्
परेसिचकालोपहोझलपरतःअभृतईहांसिचकालोपभयाअभादिनिंदुडुवःकरकेउकीइत्संज्ञाभयीपापा
दिभयेपचतिपचतेभयेपपाचईहांद्वित्वादिभयाहृद्दिभयी पेचतुःपेचुःईहांअतएकहल्मध्येसेएत्वादि।
भयेपक्ताईहांचोःकुःसेकुत्वभयासकारकोषकारभयाकषसंयोगमेक्षकारभया यजदेवपूजादिकअ
र्थीविषेहैयज्देवपूजादिकअर्थ यजतिलिटपरतःयज्द्वित्वभयाकरिवचिस्वपियजादिकानांकिति
च

भ्यासको संप्रसारण होलिट् परे ईदयाइससे उरलेयकारको संप्रसारण इकार भयाइयाज सिद्धं यजत् यजन् ।
स्रईहां अभ्यासको संप्रसारण भयाफेर वचिस्वपियजादिकाको संप्रसारण होकिन् लिट् परतः इससे परले यका
रको भी संप्रसारण भयादीर्घ भया ईजतुः ईजुः सिद्धं इयष्ठ ईहां अभ्यासन कारके जकारको षकार भये फेर ष्टुत्व
भयापद्वन्ति ईहां जकारको व्रश्च करके षकार भयाफेर षकार ढकारको ककारको ककार होसकारपरतः इ
सकरके षकारको ककार भया सकारको षत्व भया कषसंयोगे क्ष भया वहप्रापणे वहति वहते उवाह ई

भृषीपास्तां अभार्षीत् ह्रस्वादंगात् सिचोलोपोऽकलि अभृत
अभरिष्यत् अभरिष्यत धृञ् धारणे धरति धरते णीञ् प्राप
णे नयति नयते डुपचष् पाके पचति पचते पपाच पेचिथ पपक्थ
पेचे पक्ता पक्ष्यति पक्ष्यते पचतु पचतां अपचत् अपचत
पचेत् पचेत पच्यात् पक्षीष्ट अपाक्षीत् अपाक्तां अपाक्षुः अ
पाक्षीः अपक्त अपक्षातां अपक्षत अपक्थाः अपक्षाथां अ
पग्ध्वं अपाक्षि अपक्ष्वहि अपक्ष्महि भज सेवायां भजति भ
जते बभाज भेजे भक्ता भक्ष्यते अभाक्षीत् अभक्त अभक्षातां ॥
यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु यजति यजते लि
ट्यभ्यासस्योभयेषां वच्यादीनां ग्रहादीनां चाभ्यासस्य संप्रसार
णं स्यात् लिटि इयाज वचिस्वपियजादीनां किति वचिस्वपि
यजादीनां च संप्रसारणं स्यात् किति ईजतुः ईजुः इयजिथ
इयष्ठ ईजथुः ईज इयाज इयज ईजिव ईजिम ईजे ईजिषे

हां अभ्यासको संप्रसारण भया हलि भयी ऊहतुः ऊहुः उरे भी परे भी संप्रसारण भया वहयष्ठ ईहां संप्रसारणम
भयाफेर ह कारसे ढकार भयाफेर झषन्तथो धरे जो नकार थकार है तिनको धकार होइससे थकारको धका
र भया ष्टुत्व ढकार भयाफेर ढ कार परे ढ़ दयाढकारका लोप होइससे ढकार लोप भया फेरसहवहवोस्वका
र होइससे अकारको ओकार भया उवोढ सिद्धि वस्यति ईहां होढः भया ढकारको ककार भया षत्व भया ॥ ॥

इति भ्वादिः ॥

वृद्धि भमत्ता विवेदैसदादिकयासनेपरेशप्‌कालुकहोयनिर्ईहां शप्‌कालुक सारे भयाद कारकोचकारनका रभयाः स्यादिजाननेनेलिट्‌परेऽर्द्द यअट्‌कोघस्लृआदेश होएसकारकेअइकोघस्यादेशभयापरेत्वस्यसादि स्नभयामसलोपभयाकुहोतुःकरकेचकारकोकत्तारभयाअभ्यासेचर्चकरकेककारकोतकारभयाहद्विमयी जत्वामसिद्दंजचस्यानुसईहांगमहनजननखनघसरनकीउपधाकालोपहोअजादिककित्‌डि‧नपरेऽर्द्द

वृ स्मिपद्यति   यद्यते स्यात् पत्नी स्म्पातीत अयष्ट वह प्रा
पणे वहति वहते उवाह ऊहतुः ऊहुः उवहिथ कथमत्र ढो ढे
थः कथं धरयोस्तकारधकारयोर्धकारः स्यात्तनुदर्थते ढो ढे
ढलोपः सहिवहोरोदवर्णस्य ढलोपे उवोढ ऊहे वोढा व
क्ष्यति वक्ष्यते स्यात् वहतीश्अवाक्षीत् अवोढां अवाक्षुः अवाक्षीः
अवोढं अवोढ अवाक्षं अवाक्ष्व अवाक्ष्म अवोढ अवक्षातां अव
क्षत अवोढाः अवक्षाथां अवोढ्वं अवक्षि अवक्ष्वहि अव
क्ष्महि इति भ्वादिः अद भक्षणे अदिप्रभृतिभ्यः शपः लुक
स्यात् अत्ति अत्तः अदंति अत्सि   : अत्थः अत्थ अद्यः लि
ट्यन्यतरस्याम् अदो घस्लृ वा स्यात् गमहनजनखनघसां लो
७१ पः क्ङित्यनङि उपधायाः लोपोऽजादौ क्ङिति नत्वङि इत्युप
धायाः लोपः खरि चेति घस्य चर्त्वं शासिवसिघसीनां च इति षत्वं क
भ्यामेषामसमस्थः जक्षतुः जक्षुः जघसिथ जक्षथुः जक्ष जघास जघ
स जघस जक्षिव जक्षिम आदस्याद् आदतुः आदुः इडत्यर्तिव्यय

दयाउसमेचकेअकारकालोपभयाखरिचसहउसेचकारकोककारभयाकेरशासवसघसरनके सकारकोशाकहीनेपरेसत्वहोउसमेसकारकोसकारभयाकषमिलकेक्षभयाजक्षतुः जक्षुः सिद्दंविकल्पमेअद्दिलभयाआद सिद्दंअदकोजनरनके   परेयस्त्वंइट्‌होआदिए के इकतनेपरेदिकोदितोअद्दिर्ईहां सिप्‌कोहि कोधिभयाअद्धिअदलङ्‌ईहांअट्‌केसर्वअट्‌भया

पेरम्रदृतेपरेम्रएकसार्वधातुककोम्रट्कामागमहोम्रादतृसिद्धंम्रज्लङ्‌ईहोलङ्‌सन्नपरेऽडेदघाम्रट्कोयक्क्षहै म्रादेष्टाहोरससेसंम्रट्कोवत्त्वभयाहिकोउघ्रादिस्त्वसेम्रट्‌भयाम्रद्वसमसिद्धं हनिहैङ्होशस्त्वकभयाघनदा नोपदेशनोधातुहैवनतितनोत्यादिकजोधातुहैउनकेम्रनुनासिककालोपहोनलोपभयाहनः सिद्धंतिहैङ्हो गमहनजनखनघसेउपधासोपभयाहोदंतेःस्त्वसेहकारकोघकारभयाम्रागोक्कित्तङितृपरतःनलोपहोनाहैति

नोनौवधदम्रधेनूम्भस्थसोनित्य मिद्धम्रादिघ्रम्रन्ना म्रत्स्यति ॥
म्रनुम्रन्नात् म्रन्नो म्रदेत इफल्भ्योहे हैंघ्नदंतेभ्यादेड्डिः स्या
न्नम्रहि म्रन्नात् म्रनं म्रत म्रदानिम्रदाव म्रदाम म्रदः सर्वेषांम्र
दोघ्लृ स्यसार्वधातुकस्याट् स्यात् म्रादत् म्राद्मो म्रादन् म्रादः
म्राद्मे म्रात म्रादं म्राद म्राद्म म्रघात् म्रघातो म्रघुःम्रघात् म्रा
घास्तां म्रघासः लुङ्सनोर्घस्लृ म्रदः घुषादित्वलादित्वदितश्च
तिलृदित्वादङ्‌म्रघसत् म्रात्स्यत् हनहिंसागत्योः हंतिम्रनु
दात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनां म्रनुनासिकलोपोझलिक्ङिति
म्रनुनासिकांतानामेषांलोपः घमिरमिनमिगमिहनि मन्यनपे
नुदात्तोपदेशान्त रतर्णु क्षणुवनुमनुतनोत्यादयः हतः
गमहनजनखनघसांलोपः इत्युपधालोपः होहंतेञ्णिन्नेषुविति
ञ्णित्सुवृंति हंतेर्हस्यघः स्यात् घ्नन्ति हन्वः घ्नन्ति जघान जघ्नतुः ॥
जघ्नुः म्राभ्यासाच्चहंतेर्हस्यकुत्वं जघनिथ जघंथ जघ्नथुः ज
घ्न जघान जघन जघ्निव जघ्निम हंता हनिष्यति हंतु हतात्

हधरतः हनुहननहिनभयाकुहोउःसेम्रम्यासकोघकारभयाम्रम्यासेहुर्वसेहकारभयाके म्रम्यासहैं ॥
परेहनुकेककारकोकुत्वहोरससेपरतेहकारकोघकारभयाहदिमयीनघानसिद्धंजघ्नतुः जघ्नुः ईहांग
महनलुकीउपधालोपभयागहनिष्यतिहैहोहहनोः सेकरकेरम्रायादेसनकोजः होदिपरतःजहिहो
सिद्धकोदिभयाहनुकोगकारम्भयाकोईकदैङ्होम्रनोहेः स्त्वसेदिकालुकुक्किसनास्त्तेनहीभयानवकै

नानदंतसंहतनहृनानिहनाव हनाम म्रहन् म्रहतांम्रघ्नन् म्रहनम्रहतं म्रहत
म्रहनंम्रहन्वम्रहृ यङ्‌हन्यात म्राईयातककेहन्याधिकन्यहनोवधूलिङि लुङि च
वध्यातवध्यास्तांवःघासुः म्रवधीत् म्रवधिष्टां म्रवधिषुःम्रहनिष्यत् ॥

हतो ध्नत हंतेर्नःहौम्रनोहेलुक्यम्रसिद्धवदत्राभा त् इनजहै णंरसमाप्तेरा
भीवंसमानाधियेनास्मिकतैवैनदसिद्धं इतिजस्यासिद्धत्वान्नदेर्लुक नहि द

हिलासिद्धवदत्राभातइसनेउपरंतपादपर्यंतआभीयहैसमानाश्रयआभीयकर्तव्य भयाँसोअसिद्धहोयतने
हिःलुककीयाहूंतोर्जःअसिद्धहोताहैअदसूईहांलङ्सेदलआम्पोरीवीनसूउसेत्कारलोपनाहैहसकोवय
आदेशहोतिङ्लङ्परतःआईधातकविविवधातस्यवधीनईहांसिञ्आयाइङ्आयाईङ्आयाआरायिहां।
ईहांपत्वभयाहृत्वभयाउकारकोवृद्धिहोलुकविवेदलादिकसार्वधातुकपिन्परतःयौतिईहांवृद्धिभयीगुतस्यु

शुमिश्रुणामिश्रुणायोःउतोवृद्धिर्लुकिहलितिलुग्विषयेउतोवृद्धिःपिति
हलादौसार्वधातुकेनत्वभ्यस्तस्ययौति शुतः शुवंति यौषि शुथः शु
थयौमिशुवः शुमः शुनाव शुशविथ शुशविव शुशविम यविता पा।
विष्यति यौतु शुतात् अयौत् अशुतां अशुवन् शुयात् इट्उतोवृद्धि
र्लुकिहलीतिवृद्धिर्नपित्स्वस्याभावात् नचविभक्तिस्वायात्रटः
पित्वंशतिकृत्वाङिच्चेत्युक्तेङिन्तोपात्राटःपित्वेनत्यप्तेः भाष्येपिच्च
ङिन्नङिच्चपिन्नेतिव्याख्यानात् शुयातां शुयुः शुयाः शुयातं शुयात
शुयां शुयाव शुयाम शुयात् अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः शुयास्तां शु
यासुः अयावीत् अयविष्यत् पाप्रापणे याति पातः यांति पपौ
पपतुः पपुः पयिथ पपाथ पपथुः पपपौ पपिव पपिम पाता
पास्यति पातु अपात् अपातां लङः शाकटायनस्यैवआदंतान्नङो
केर्जुसवाअपुःअपान् अपाः पायात् पायतांपायुःपायात् पाया
स्तांपायासुःअपासीत् अपासिष्टां अपासुः अपासीः अपासिष्ट अपासिष्व
अपासिष्म अपास्यत् अपास्यत् एवंवागतिगंधनयोःभादी
भौसापीचे आपाके हाऊ स्नायां गनौ प्रामद्रणोपारद्रणोरादा

गातिस्थाघुपाभूभ्यः सिचः परस्मैपदेषु ॥

तिईहांउदङ्भयाउयामटुहांवृद्धिनहीहोतीयासटकोङिन्होनेतेभाष्यमेङिन्पित्नहीपित्नहींङिन्नहीं।
होताथायाणत्वईहांणत्वकोउकारभयाअतोलोपःसेंआकारलोपभयाअभ्यासकोहृस्वभयायथोभयापयतुः
पपुःईहांआकारलोपभयाआदंततेलङ्केकिकोजुसहोविकल्पते अपुःसिद्धरसीप्रकारहोरभीआकारांतथातु
ओंनतीअयासीतईहांसकुयायाँविदलानविविदैविदथातनेयरेलिङ्केस्थानविवेजोपरस्मैपदहैनतिनकोण
लादिकहोनरसस्वकारकेलटकेतिपादिपाकाकोणलतुसइत्यादिकहोतेहैनविदकादकारपरेमिलनागया

वेदविदतुः इत्यादि भये पक्षमें एकार को चत्र्य भया परे निसलनाम पाहे बिन्नि ईहां उगंत से गुण भया उषविदजागृ
इनते परे आम् होइ विकल्पते लिट् परे ईहां दयाविद धातु को अदंतत्व प्रतिज्ञा ते गुण नहीं होइ सम्वत्रसें विकल्प
के परे आम भया याकृञ्चानु लृज कार के परे कृञादि कस्याये हैं संहित भये विदां चकार इत्यादि सिद्ध भये वेदिता ईहां
गुण भया इट् भया वेदिष्यति ईहां गुण इट् भये विदकें परे आम् होइ लोट् परत: गुणाभाव होइ लोट्का लुक

विदिता वेदिता लटो वा वेत्तेर्लटः परस्मैपदानां णलादयो वा वेद वि
दतुः विदुः वेत्थ विदथुः विद वेद विद्व विद्म पक्षे वेत्ति वित्तः विदन्ति वेत्सि
वित्थः वित्थ वेद्मि विद्वः विद्मः उषविदजागृभ्योऽन्यतरस्याम् एभ्यो
लिट्याम्वा विदेरदन्तत्वप्रतिज्ञानादामि न गुणः विदांचकार वि
वेद बभूव विदामास विवेद वेदिता वेदिष्यति विदांकुर्वन्त्वित्य
२२। न्यतरस्याम् वेत्तेर्लोट्याम् गुणाभावो लोटो लुक् लोडन्तकरोत्यनु
प्रयोगश्च वा निपात्यते पुरुषवचने न विवक्षिते तनादिकृञ्भ्यः
४ उः इत्यपवादः विदांकरोतु तुह्योस्तातङ्ङाशिष्यन्यतरस्याम् विदांकुरुता
त् उत्सार्वधातुके कृञि नित्यं विदांकुरुतात् विदांकरवाणि विदां
करवाव विदांकरवाम पक्षे वेत्तु वित्तात् विद्धि विद्धि वि
त्तं वित्त वेदानि वेदाव वेदाम अवेत् अवित्ताम् अविदुः अवेः अ
वेत् अवित्तम् अवित्त अवेदम् अविद्व अविद्म विद्यात् अविद्यातां वि
द्यात् विद्यास्ताम् अवेदीत् अवेदिष्यत् समो गम्यृच्छि उपसर्गात्
ऊर्ध्वं मलिनं प्रस्वरः उपसर्गेभ्यः प्राक् पाठः समस्य पः एकारेऽपि

च परे निष्पन्न पाठ्यान् निसृंवति पाठ्यंती पचार: किंस्मिल्तुः

होइ लोट् परे है जिसके ऐसे कृञ् का विद के परे अनुप्रयोग निपातन ते कीदा है विकल्प ते पुरुषवचन विवक्षित
न होया तनादिक धातु ते कृञ् ते परे उः होइ शप् का ये अपवाद है विदांकरोतु ईहां विद के परे आम् लुक् विदां
के कृञ् भया याकृञ् के परे लोट् को तिप आदिक भये तिप के एत्व उकार भया याक को गुण भया उकार को गुण भया उप
त्यय तनोति कृञ् है तिसके अनु कोइ न होइ विदांकरुतात् ईहां उकार भया आम् के योग पूर्वक प्रत्यय के उकार के

परेद्विकारान्तकहो विरोकुरुईद्दोंअकारकोउकारभयाद्विकारान्तकभया अथेत्वे ईद्दोंहल्ङ्याभ्योदीर्घात् करके निः
शुकारान्तकभया अविदः ईद्दोंसिचतेअभ्यस्तत्वेच पुनः द्विदत्वेपरङि तु संबंधोकिहै तिसकोजुसहोरससेजुस भया
थातकेद कारकोलके इकस्यते लिश्पतः अविर्भूतिईद्दोंद कारकोलूभयाहल्ङ्याभ्यः करके सिश्लकभयारे
फकोविसर्गभयाअवेः सिद्धंपदतमेअवेत्भयासिश्लकभया अस्थात सत्वाविदेहैअसनिश्वात्समिलाअसिः
हुभयाउपसर्गकेरश्तेयरेवपुनः शाइसके परेसकारकोषकारहोयकारअवृथरतः निष्यात् ईद्दोंउपसर्गकेइणके

असोरल्लोपः। अस्यास्तेश्चाऽनोऽल्लोपः सार्वधातुके क्ङिति। अस्ति
स्तः सन्ति। असि स्थः स्थ। अस्मि स्वः स्मः। अस्तेर्भूः। आर्धधातुके। बभूव। भविता। भव
िष्यति। अस्तु स्तात्। स्ताम्। सन्तु। घ्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च। घोरस्तेश्च एत्
वं स्याद्धावभ्यासलोपश्च। आभीयत्वात्। हेर्धिः। एधि स्तात्। स्तम् स्त।
असानि असाव असाम। आसीत्। आस्ताम् आसन्। स्यात्। स्याताम् स्युः।
भूयात्। अभूत्। अभविष्यत्। इण् गतौ। एति इतः। इणो यण्। यन्ति। अज
ादेर्द्वितीयस्य। अभ्यासस्यासवर्णे। इयङुवङौ स्तो
ऽचि। इयाय। दीर्घ इणः किति। इणोऽभ्यासस्य किति लिटि दीर्घः। ईय
तुः ईयुः। इययिथ इयेथ। एता। एष्यति। एतु। ऐत्। ऐताम्। आयन्। इयात्। ईयात्। एतेर्लि
ङि। उपसर्गात्परस्य इणोऽणो ह्रस्वः आर्धधातुके किति लिङि। निरी
यात्। अणो नादिवच्च पोपमेकादेशः समर्थसमानवस्परस्यादिस्या।
तुरुभय नेत्याअपणोनानाशिवत्। अभीयात्। अणः किं। समे।
यात्। इणो गा लुङि। गातिस्थेति सिचो लुक्। अगात्। अगाताम्।

परेसकोकोषकारभयानिर्धंतिया उर्ध्वतिईद्दोंपत्वभयाअतृपरेहैअभिस्तः ईद्दोंपवृपरेनहीयत्वनहीद्दोभया
अकेपुनः असकेअकारकालोपद्दोकिन्तङि तसामेथात्ककपरेङ स्याअम् नसईद्दोंअकारलोपभयासको
रपरेसित्वारेफविसर्गभयेस्तः सिद्धंइसीसत्वसेद्दोंपेभीलोप रेताहैसकारपरेभीलनाहै संनिआर्धंधातुकप
रतः असकोभूआदेशद्दोरूपमूलमेसिद्धेहैनथुसंतककोवपुनः असकोपत्वद्दोअभ्यासकालोपद्दोद्विपरे
हिदपथियिईद्दोंअसकोएकारभयायुसोरेद्दाकोअसिद्धद्दोनेतेहुक्कलभ्यो करकेधिभयाअसाविईद्दोंआहुआ

अधेः मयाया मेर्नि भया आशी तृ इंतो सिद्ध आया इत्या ता इंद निपके स्वं आया ति तृ लोप भया इत्याग ति विलिके निरंहः गुण भया इत्याके यह लो अङ्गादिक अयपयो इंदया वं निर्दृथ्यग इसका को भया ॥ शीङ्ः इंथ यमिर बर सिद्ध रनका निर्दृ न भया तस्य ननर अथ्या सके रवर्गीत्व गीको स्य इड् उवह लो अभव गीअ घुपो इंदया इस से इरसकार को स्वड् भया परले इकार को ह ड्रिये कार भया ये कार की आर भया इपाव निसिद्ध भया इस के अभ्यास को दीर्घ हुवा तो इस यार इस अभ्यास नर्द हो ग इल को दीर्घ भयापरले इकार को यण भयाई पद स्य सिद्ध भया य ये पर इंतो उरले इनार

शीङ्ः स्वप्ने शीङः सार्वधातुके गुणः शेते शयाते शेरते शेषे शयाथे शेध्वे शये शेवहे शेमहे शिश्ये शिश्याते शिश्यिरे शयिता शयिष्यते शेतां शयातां शेरतां शेष्व शयाथां शेध्वं शयै शयावहै शयामहै अशेत अशयातां अशेरत अशेथाः अशयाथां अशेध्वं अशयि अशेवहि अशेमहि शयीत शयीयातां शयीरन् शयिषीष्ट शयिषीयास्तां शयिषीरन् अशयिष्ट अशयिषातां अशयिषत अशयिष्ठाः अशयिषाथां अशयिढ्वं अशयिध्वं अशयिषि अशयिष्वहि अशयिष्महि अशयिष्यत इङ् अध्ययने इङिकावध्युपसर्गतो न व्यभिचरतः अधीते अधीयाते अधीयते अधीषे अधीयाथे अधीध्वे अधीये अधीवहे अधीमहे गाङ् लिटि इङो गाङ् स्यात् लिटि अधिजगे अध्येता अध्येष्यते अधीतां अधीयातां अधीयतां अधीष्व अधीयाथां अधीध्वं अध्ययै अध्ययावहै अध्ययामहै अध्यैत अध्यैयातां अध्यैयत अध्यैथाः अध्यैयाथां अध्यैध्वं अध्यैयि अध्यैवहि अध्यैमहि अधीयीत अधीयीयातां अधीयीरन् अध्येषीष्ट अ ध्येषीयान् केश्व अपि ह अध्यैष्ट अध्यैषातां अध्यैषत अध्यगीषत अध्यैष्यत ॥ ॥

विभाषा लुङ्लृङोः इङो गाङ् गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित् गाङादेशात् कुटादिभ्य परे ञ्णिद्भिन्नाः प्रत्यया ङितः स्युः घुमास्थागापाजहातिसां हलि ईत् स्यात् हलादौ क्ङिति प्रतः

को स्य इड् भया परले को गुण भया एता पश्यति पत रता न रतो यत् पदि र्त रत अयाति अयाव अधी याम: येत उपसर्ग ने परे रण के अणको हस्व की। दो निरि पात रंहो हस्व भया जो एकादेश है पूर्व के अंत की अथी है परके आदि की ना थी है उभयतः आश्रयण विवे सर्वीन वद्भाव नहीं हो ताइस ते अभी पात रंहो हस्व नहीं भया इसो उपसर्ग यान दो नो का आश्रयण होता है समेयात रंहो एक आगले नहीं स्व इड् परतः उपा को गाङ् हो श्व गात रंहो गाङ् भया गानि स्या कर के सिद्ध को तक भया शीङ् को गुण हो सार्वधातुक परतः शेते

ईङ्गुण भया शयाने ईङ्गुण ऋकार को अकार भया अकार को अय भया अन्यपक्ष की टि को अकार भया शी ऋ ईङ् ऋ को अन भया शीङ् के पेरक को आदेश अन्त है निस को हट् का आगम होइ स से रुट् आया दि को एकार हो ताने या शेरते भ गा आद गुण भया लिङ् परतः शीषीध्विच भया एवं को हस्व भया तक को पशेरेन् भये यण भया शयितो ईङ्गुण भया अव भया शयिष्यति ईङ्गुण भया अड् परतः अय भया अशेत अशेयातां ईङ् शी को इयङ् होके गुण भया शायी न ईङ् सीयुट् आस लोप भया शी को गुण भया अय भया॥ शायिषीष्ट ईङ् मे युट् आया सट् आया इट् आया गुण अय भ

दुहप्रपूरणे दोग्धि दुग्धः दुहन्ति धोक्षि दुग्धे दुहाते दुहते धुक्षे दुहा
थे धुग्ध्वे दुहे दुह्वहे दुह्महे दुदोह दुदुहे दोग्धा धोक्ष्यति धोक्ष्यते दो
६ ग्धु दुग्धात् दुग्धां दुहन्तु दुग्धि दुग्धात् दुग्धं दुग्ध दोहानि दुग्धां
धुक्ष्व दुहाथां धुग्ध्वं दोहै दोहावहै दोहामहै अधोक् अधोग् अदु ७
८ ग्धां अदुहन् अदोहं अदुग्ध अदुहातां अदुहत अदुग्धाः अधु
९ ग्ध्वं दुह्यात् दुह्यातां दुह्युः दुह्यात् दुह्यास्तां दुह्यासुः दुहीत लि
१० ङ् सिचावात्मनेपदेषु इकः समीपाद्धलः परौ झलादी लिङ् सिचौ
कितौ स्तः तङि॥ धुक्षीष्ट शल इगुपधादनिटः क्सः इगुपधो यः शा
लन्तस्तस्मादनिटश्च्लेः क्सादेशः॥ अधुक्षत लुग्वा दुहदिहलिहगुहा
मात्मनेपदे दन्त्ये एषां क्सस्य लुग्वा स्यात् दन्त्ये तङि॥ अधुक्षत अदुग्ध क्सस्या
चि क्सस्याचीति लोपः॥ अधुक्षातां अधुक्षन्त अधुक्षथाः अदु
ग्धाः अधुक्षाथां अधुक्षध्वं अधुक्षि अधुक्षावहि अधुक्षामहि अधुक्षा
स्यत् अधोक्ष्यत एवं दिह उपचये देग्धि॥ लिह आस्वादने लेढि
लीढः लिहन्ति लेक्षि लीढे लिहाते लिहते॥

याअपाप ई ईंठां सिच् आया टू त्व भया इङ् रकथा न अयि उपसर्ग ने व्यभिचार को नहीं पाम होने अथी ने ईङ् देश भया,
टि को पत्व भया आगम व परतः इङ् को कैटी ई होना है अधीयाने मि ईङ् शरा को गाङ् हो लिङ् परतः अयिजे गे ईङ्
इकार को गुण होके यत्र आय के इकार को यण होना है लङ् लृङ् परतः इङ् को गाङ् होगा ङ् कृतादि का ने परे जो छिं
नकोन प्रत्यय है नसो ङि. तु मं तक होन सु मास्या गया न होति ई को ई कार हो किन्तु ङि. न सार्वधातुक परे इङ् दयाअ
गी ई ईङ् इङ् को गा आदेश भया ई कार भया एवं अगह भायाय णभया ङित्व ते गुण नहीं भया सि अआया षत्व हुआ।

भयाडुह्यातवत्लतलपूर्ववत्राम्भ्धीविवेदैडुहतेलट्परतःहादेर्धातोः करकेहकारकोढकारसमेहोगयाहैक
वत्लयोर्धः करकेतिप्कोधकारहोताहैकसांजपशझषिवःरकेधकारकोगकारहोताहैष्टुगंतस्करकेष्टुत्वहोताः
१ सभरूपोमयेसत्वलानेयोदिरेहोहकारकोलत्वभयापकारोवशोभषसेदकारकोधकारभयाघकारकोज
पस्गकारभयागकारकोचर्ककारभयाराणकुभ्यांकःरकेतिप्केसकारकोषकारभयाकषयोगेमेक्षभयाधी
तिभयाम्भ्योकःईहोहस्तस्याम्भ्ःकरकेतिपसिपकालोपभयाहैढत्वधत्वगत्वकत्वपूर्ववत्जाननेपुसी

लिहतेलिक्षे लिहाथेलीढेलिहे लिह्वहे लिह्महे लिलेहलि
लेहिथ लिलिहे लेढासिलेढासेलेक्ष्यति लेक्ष्यते लेढुलीढा
त्लीढांलिहंतुलीढिलिहोहैरिकावकारौचःलिहिहैलेहानि
लीढांअलेट्अलीढलिह्यात् लिह्यातांलिहीत लिक्षीष्ट अ
लिक्षत्अलिक्षतअलीढअलिक्षातांअलिक्षतअलिक्षथाः॥
अलीढाःअलिक्षाथांअलिक्षध्वंअलीढ्वंअलिक्षिअलिक्षावहि
अलिह्वहिअलिक्षामहिअलेक्ष्यत् अलेक्ष्यतब्रूञ्व्यक्तायांवाचिब्रुवः पं
चानामादितआहोब्रुवःब्रुवोलट्इतिवादीनांपंचानांणलादयः
पंचवास्युःब्रुवश्चाहादेशःआहतुःआहुःआहस्थुःफलितवत्वं
आत्थआहथुः ब्रुवईट्ब्रुवोहलादौपितईट्ब्रवीतिब्रूतःब्रुवंतिब्रू
तेब्रुवतेब्रुवोवचिःआर्द्धधातुकेउवाच ऊचतुः ऊचुः उवचिथ
उवक्थऊचेवक्तावक्ष्यति वक्ष्यते ब्रवीतु ब्रूतात् ब्रूतां ब्रुवंतिब्रू
हिब्रवाणिब्रूतांब्रुवैअब्रवीत अब्रूत् अब्रूयात् ब्रवीत उच्यात्।
वक्षीष्टअस्यतिवक्तिख्यातिभ्योऽङ्लेःवचउम्अङि अवोचत अवो

एईहो किन्वतेगुणनहीभयाहगुपधमोपालंनहैतिसअनिटनेपरेहेकोढसआदेशहोअपुदानईहोहका
रकोढत्वकत्वभयाढकारकोधकारभयाहिकोढसभयाहोःसत्वसेककारलोपभयामकारकोषत्वभयाआ
नेपदमेडहदिहातिरगदहनकेपरेकसकालुक्लोतङ्परतःश्रससेअपुसतर्ईहोनहीनकभयाअडुग्धई
होत्वकभयाअदुग्धईहोत्वकभयारसीनराणलपरतः लुकभयाहैअनादिकतङ्परेअदुग्धयाकसकालोप
होरससेअलोत्वकरकेअकारलोपभयाअपुतातांसिद्धअधोत्वनईहोपत्वयत्वगत्वकत्वएत्वसभयो॥

इसी प्रकार इति कथानुउपचयक्या हद्विता विविदै दृष्यितिद्यानुम्मास्वादन विवि हैले दि रहासोढः सेहकारा
कोढकार भयाकवलगोर्थः सेतिपृकोथकार भयाथकारकोषुत्व ढकार भया ढो ढेलोपः करके उरले ढका
रकोलोपभयातो ढः रहा ढलोपे पूर्व स्यसे दीर्घ भयाले त्वतिरहां हकारको ढकार भयाषढोः कः सि इसक
रके ष्कारको ककार भयासकारकोषत्व हो केलभया श्लेट रहां दलङ्ग्यामः सेतिपृसिएलोपभयाओरडह
क्रोध्यायी है हके परे जो लिट् के स्थान पं वातिवादिक है नतिन्को पं वलाला दिक हो न भुवको आहम्आदेश हो

ववृत्वान् अववृत्वान् वर्करीति ववर्करीन मितिपदं प्रगंतेदा
दैवोर्थ्यं ऊर्णुञ् आच्छादने ऊर्णोति विभाषावृद्धिः हलादौ पिति सार्व
धातुके ऊर्णोति ऊर्णौति ऊर्णुतः ऊर्णुवंति ऊर्णोते ऊर्णुवाते ऊ
र्णुवते ऊर्णोते एमन्नेति वाच्यम् नन्द्राः संयोगादयः अचः पराः सं
योगादयो नदराः द्विर्न भवंति नुशाहस्यादिद्वे ऊर्णोनाव ऊर्णुनुव
तुः ऊर्णुनवुः विभाषोर्णोः इडादिप्रत्ययो ङित्स्यात् ऊर्णुनुविथ
ऊर्णुनविथ गुणोत्स के ऊर्णोते गुणे सन्के हलादौ पिति सार्वधातुके ऊर्णोः
ऊर्णुयात् ऊर्णवीत् ऊर्णुवीयाः ऊर्णुयात् ऊर्णविषीष्ट ऊर्णुवि
षीष्ट और्णवीत् और्णुविष्ट ऊर्णोतेर्विभाषा इडादौ परस्मैपदे सि
चि वृद्धिः पक्षे गुणः और्णावीत् और्णाविष्टां और्णवीत् और्णविष्टां ॥
और्णुविष्यत् और्णविष्यत इत्यदादिः हुदानादनयोः जुहोतेः ॥
त्यादिभ्यः श्लुः शपः श्लौ धातोर्द्वे स्तः जुहोति जुहुतः अदभ्य
स्तात् कस्यहूस्त्वोटि नियमा जहुति भीह्री भृह्रुवां श्लुवच्च प्रत्य्यो

विकल्पने ऊर्णसलालादिक भयाआह आहनुः भयेपलमे हुवने परोजो हलादिक पिन है तिसको वृद्धि
सतेरहयायाभुवकोगुण भयापेर अन्न भयाऊर्णीति सिद्ध भयाआदंयानुकपरके दधानुबको बश्मादे
शहो रसकरके वत्र भयाद्वित्व भयाअभ्यासको संप्रसारण उकार भयापरे गाल भया उवाचः सिद्धं ऊचतुः
रहा अभ्यासको उकार भयाव विस्व पिसे परेलवै कारको उकार भयादीर्घ भयाऊचनः सिद्धं अवस्यविति
वक्षि प्यामिरन ने परे विकोअइ होव कृ को उभ्यहो अवोचत् सिद्धं वर्करीते परमनोपदं लुगन्त हैं सो अत

हि विविजाननातहाँभी शप् का लुक हो ऊर्णुयातु को विकल्प नेह द्वित्व हो हलादिक पित् हप् यातु का परे
इँ दया ऊर्णोति ऊर्णौति निरेहाँ एक मेह हि भयी एक मे गुण भया ऊर्णुवंति रन्यादि में उवङ् भया ऊर्णोते प
रे आम् नहीं होइ सस्से आम् निषेधपायाअरे रेफ को द्वित्व भया सी नव कहा अवृने परे संयोगादिक न॥
कार दकार रकार द्वित्व नहीं होने रसतेन शह को द्वित्व भयाहि भयी ऊर्णुनाव भया ऊर्णुनुव नुः इहाँ
उवङ् भया रडादि कृत्य विकल्प तेडित् नहीं हो ऊर्णुन विषः इहाँ इट् आया उवङ् भया ऊर्णुनविथ इहाँ गु॥
ण भया ऊर्णु को गुण होय कसार्वधातु कपित् परे इँ दया ऊर्णोत् इहाँ गुण भया ऊर्णु को विकल्प तेहि

लिङ्याम्वा॥ आमि श्लोरिव कार्यं वा॥ जुहवांचकार जुहाव होता
होष्यति जुहोतु जुहुतात् जुहुतां जुह्वतु जुहुधि जुहवानि
अजुहोत् अजुहुतां जुसि च इगन्ताङ्गस्य गुणो जादौ जुसि अजु
हवुः जुहुयात् हूयात् अहौषीत् अहोष्यत् ञिभी भये॥ बिभे
ति भियोऽन्यतरस्याम्॥ इः स्याद्धलादौ क्ङिति सार्वधातुके बिभितः
बिभीतः बिभ्यति बिभयांचकार बिभाय भेता भेष्यति बिभेतु
बिभितात् बिभीतात् अबिभेत् बिभियात् बिभीयात् भीया
त् अभैषीत् अभेष्यत् ह्री लज्जायां जिह्रेति जिह्रीतः जिह्रियति जि
ह्रयांचकार जिह्राय ह्रेता ह्रेष्यति जिह्रेतु अजिह्रेत् जिह्रीयात् ह्री॥
यात् अह्रैषीत् अह्रेष्यत् पॄ पालनपूरणयोः॥ अर्तिपिपर्त्योश्च॥ अ
भ्यासस्य इः स्यात् श्लौ॥ उदोष्ठ्यपूर्वस्य॥ अङ्गावयवौष्ठ्यपूर्वो य ऋत्

हो इत्यादिक पर स्मैपद विवि है सिवृ परे इँ दया औ र्णावीन् औ र्णावीत् इहाँ हि भयी औ र्णुविषत् इत्यादि॥ कुया॥
नुदान विखेऔरभत्ताणविखे हैं म हो न्यादिकधातु नेपरे शप्को श्लुहो श्लु विविधातु को द्वित्व हो लट् परतः अ
के परे शप् का श्लु भया श्लु लोप का नाम है श्लु का फल धातु को द्वित्व होना है इसने हु अ द्वित्व भया परले हु को ग
ण भया जुहो कुहोः चुः से हकार को झकार भया अभ्यास में चर्च कर के झकार के जकार भया जुहोति भया जुहुतः
इहाँ द्वित्व गुण न हीं भया अभ्यस्त ते परे झकार को अत् हो सि इट् में वोः सैं यो में हो रन से जुह्वति भया जुहो॥
षि इत्यादि भी कृनीम् जुहु इत्यादि धातु ने परे आम् हो आम् परे इँ दया श्लु की न्याई कार्य हो जुहवां चकार इहाँ गु ने प

ऽभ्याम् आयाम् आम् के परे ङ को हित्वादिक भये हैं और रूप पूर्ववत् की रीति से हैं नश्गं नश्ग को गुण हो अजादिक जस् परत:
विभे तिर्ईहां हित्व भया अभ्यास चर्त्व भया गुण भया पूर्व ह्रस्व भया भी धातु को इत्संज्ञक कार हो हलादिक कित् का कित् डि॰
त् सार्वधातुक परे हैं दया विकल्प ने इस से एक और ईकार का इकार भया विभितः भया नंदी नो विभीतः भया विभ्या॰
ति ईहां यण भया विभयां चकार ईकार आम् आयां भी भी हित्व भया पूर्व ह्रस्व भया भी को गुण हो के अय् भया परे ङ को॥
भी हित्वादिक भये एक और विभाय भया ईहां हहि भयी विभ्यतुः विभ्युः॥ इसी प्रकार की धातु है सब का अभ्यास ह्रि॰
त्व भया गुण होया जिहेति भया जिह्रियति ईहां इयङ् भया क्र धातु के हु धातु के अभ्यास को इकार हो सुविवि श्रंग का

सि॰कौ॰ति॰ ५८

इतसंयोगस्य गुणः ३ण हहीपरत्वादिमं बाधते नेपिपर्तिहालिच रेफ
वान्तस्य धातोरुपधानीरूपधायाय को दीर्घो हलि पिपर्तिः पिपूर्षति
पपार स्वहृ श्रो ह्रस्वो वा किति लिटि पप्रतुः पपुरुः ह्रस्वो वा हङ्॰ह्र
ऋकारान्तोनोदादिक ऋच्छने ऋधातोर्कारं नोच गुणो लिटि पपरतुः
पपरुः ह्रस्वो वा हङ् ह्रन्मभ्याम् इंतौ हे दीर्घो वास्यान् ह्रत्त्रतुलि
टिपरिता परीता परिष्यति परीष्यति पिपर्तु अपिपः अपिपर्तु अपि
पिपरुः पिपर्यात् अपात् सिविवि स्मेपरे ऋच्च ऋहन्तस्य नदीर्घः
अपारि षेध अपरीष्यत् अपरीष्यत् ओहाक् त्यागे जहाति जहाते।
इस हास्या हलादौ क्ङिति हस्तिं जहितः जहीतः आम्यस्तयोरातः
लोपः क्ङिति सार्वधातुके जहति जहौ हो हांता हास्यति जहातु जहि
तात् जहीतात् आवहे जहानि ते राम्पा आदिदीतो हो जहा दि जाहि
हि जहीहि अजहात् अजहुः लोपो पिजहाने राज्ञो लोपो पा दौसा

अवयव गो पूर्वक गोऋकार है सो अंत जिसके है ऐसा जो अंग है तिसको गुण हो पिपर्ति ईहां पपृ हित्व भ
या अभ्यास को इकार भया परत्व ते एको अङ्गुण भया परत्व ने पिपर्ति ईहां ऋकार को इत्व भया के रेफवान्त
जो धातु है तिसकी उपधा के इक को दीर्घ हो इस से दीर्घ हो भया पपार ईहां हहि भया श्र ह द हन को विकल्प ते ह्र
हो इस से ह्रस्व भया यण भया पप्रतुः भया नो दादि कम्हल्को न को ऋदंत को गुण हो इस से गुण भया पपरतुः
भया हङ् ह्रन्ते परे च उनः ऋदंतो ने परे जो इट है तिसको विकल्प ते दीर्घ हो लिट् परतः नहीं होपरितः परी
ता इत्यादि विविदीर्घ भया जहाति हा धातु को इकार हो क्ङित् ङित् परतः जहितः ईहां आम्यहा को आकार

कोईकहैईकारहोकि नुङितहल्परतः इससेईहाँकारभयाजहतिर्इहाँ आभ्यस्तकेआकारकालोपहोकि
नुङितसार्वधातुकपरेहैंदयाइससेआकारलोपभयाहियहैदर्योंआकारकोआकारहोवकारते। ईत्हीन।
जहाहिजहीहि जेसीहिमयावकारपरेहैंदयाहाकेआकारकालोपहोजहात्भया॥ भृञ्माङ्‌ओहाङ्‌रन
केअभ्यासकोइकारहोभृञामित्‌इतिसेइहाँअभ्यासकोइकारभयापरन्तेआकारकोईहलयोःकरकेईका
रभयामिमातेईहाँआभ्यस्तयोरातःकरकेआकारकोलोपभयाआगेसुगमहैजिहीतेईहाँभृञामित्‌कार

माङ्‌माने शब्दे च भृञामिति भृञ्‌माङ्‌ओहाङ्‌एषामभ्यासस्येत्स्या
त्‌ श्लौ मिमीते मिमाते मिमते ममे माता मास्यते मिमीतां अमि
मीत मिमीत मासीष्ट अमास्त अमास्यत ओहाङ्‌ गतौ जिहीते
जिहाते जिहते जहे हाता हास्यते जिहीतां अजिहीत जिहीता
हासीष्ट अहास्त अहास्यत डुभृञ्‌ धारणपोषणयोः बिभर्ति बि
भृतः बिभ्रति बिभ्राते बिभ्रते बिभराञ्चकार बभार बभर्थ बभृव बभ्र
व बिभराञ्चक्रे बभ्रे भर्ता भरिष्यति भरिष्यते बिभर्तु बिभृतात्‌ बि
भृतां अबिभः अबिभृतां अबिभरुः अबिभृत बिभृयात्‌ बिभ्रीत
भ्रियात्‌ भृषीष्ट अभार्षीत्‌ अभृत ह्रस्वादङ्गादिति सिचो
लुक्‌ अभृत अभरिष्यत्‌ अभरिष्यत डुदाञ्‌ दाने ददाति श्नाभ्यस्त
योरातः अनयोरातो लोपः क्ङिति सार्वधातुके ददतः ददति दत्ते ददाते
ददते ददौ ददे दाता दास्यति दास्यते ददातु दत्तात्‌ दाधाघ्वदाप्‌ दारूपा
धारूपाश्च धातवो घुसंज्ञाः स्युः दाप्दैपौ विना घ्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च देहि
दत्तां अददात्‌ अदत्त अददात्‌ दद्यात्‌ ददीत देयात्‌ दासीष्ट घुसंज्ञात्वात्‌

सकर्मकत्वनस्थानत्वश्लोभयतयोः स्लोस्ठपरतः यन्तः दयतिरथासियन्वः यन्वयत्नैर्दयाते
दयतेयत्नोदयाते यन्नेये हियेव हियेमहि॥

तिसे तिसि वो नुक अहात्‌ अहातां अडः स्याद्धोरिच्च न यो री दंताद्देशः सिच किदात्मने
पदेषु अदित अदास्यत्‌ अदास्यत डुधाञ्‌ धारणपोषणयोः दधाति दधत्त थोश्च विरक्रे

केअभ्यासकोइकारभयाइहल्योःकरकेआकारकोईकारभयाबिभर्तिईहाँभृञामित्‌सेइकारभयापर
लेकोगुणभया अबिभः ईहाँहल्ङ्याभ्यःसेतिसिकालोपभयादारूपधारूपजोधातुहैसोघुसंज्ञकहो
नदापदैपनेविनाअन्तरईहाँसिच्‌लुकभयाहैअदितईहाँस्थाघ्वोरिच्चकरकेइकारकोहोसिच्‌किदात्मनेपदरन्तःआ
त्मनेपदमेइससेसलोपभयाथतःईहाँधाधाहित्वहैरवकोमशभयाआभ्यस्तयोःसेआकारलोपभया

रहित क्लोकयंनहै तिसकोवग्राहोनणसे धेरानः रस सेएरयेथ कारभयापरलेको वर्त कार भया अन्य
त्वगन् धनिज्जादिकतिग्रयानुहैनतिनकेअभ्यासको गुणहोस्वविवेनेनेकिइहां अभ्यासकोगुणभयापरे
गुणंनस्यकरकेगुणभया नेनिजानिइहांअत्रुपिन्परतःलघूपधगुणनहीहोतिषेयभयाअनिनत्रइहां।
इरितयालुनेपरेहलिकोयइ दिकल्पनेहोरससेएकठौर अनैत्तीन भयाहरि भयीइतिजुहोत्यादिः दिवुयानं।
कौ॰ दु॰ नैयेक्षी दिकअर्थविदिहै दिवादिकानेपरेश्यन्होशउकाअपवादहै दिवूनेपरेलडादिकानेपरेकोतिवादि

णिजिर् शौचपोषणयोः निजां त्रयाणां गुणःश्लौ णिजिर् विजिर् विषॢ
व्याप्तस्यगुणः श्लौ नेनेक्ति नेनिजति नेनिक्षे निनेज निनेजे नेक्ता
नेक्ष्यति नेक्ष्यते नेनेक्तु नेनिग्धि नाभ्यस्तस्याचि पिति सार्वधातु।
केलघूपधस्यगुणोनस्यात् नेनेजानि नेनेक्तां लघूपधेतिगुणःअ
नेनेक् अनेनेग् अनेनिक्ता अनेनिजुः अनेनिजं अनेनिक्त नेनिज्या
त् नेनिजीत निज्यात् निक्षीष्ट इरितोवा अनिजत् अनैक्षीत् रइहापरस्मै
परेषु अनिजत् अनैक्षीत अनिक्त अनेक्ष्यत् अनेक्ष्यत इतिजुहो
त्यादिः दिवुक्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकांति
गतिषु दिवादिभ्यःश्यन् शपोपवादः हलिचेति दीर्घः दीव्यति
दिदेव देविता देविष्यति दीव्यतु अदीव्यत् दीव्येत् दीव्यात्॥
अदेवीत् अदेविष्यत् एवं षिवु तंतुसंताने त्रिवी गात्रविने
पेनृत्यति ननर्त नर्त्तितासोसिचिकृतचृतछृदतृदनृतः ए भ्यः प
रस्य सिचिभिन्नस्य सादेरार्द्धधातुकस्येड्वा नर्तिष्यति नर्त्स्यति नृतेऽ
नन्वनात अनर्तीत् त्रसी उद्वेगे वा भ्राशभ्लाशभ्रमुक्रमुक्लमुत्रसि त्रुटिलषः

बौदीर्केभयेसार्वधातुकविधिश्यन्आवाहूलिचकरकेदीर्घभयादीव्यतिदीव्यतःदीव्यंति भयेआगेसुगम
हैनर्तसीमकारतंनमसंतानंनत्रविस्तारः सीधोंतिसूत्रति हनहनन्दवृत्तरनतेपरेसादिकआर्द्धधातुकको
इटविकल्पनेहोनर्तिष्यतिभयाश्यन्परतःओकारकालोपहोइससेओकारलोप भयाश्यश्लेषः
इहांश्रादेवउपदेशकरकेओकारकोआकारभयाशाश्यहितभयासर्वकोह्रस्वभयातकोओभयाशोम्

हित्व भया सर्व कोऽन्त्य भया । लङ्को नो भया । छाशौ सिद्धं । श्यतुः । इसं या तो लोपः भया । आथेट् शा छाशसने सिककारि
कस्य ने लोप हो अशात् सिद्धं दो धातु खेदन विखे है । यति । इसंओ ओकार का लोप भया । दद्यो । इसं ओकार को आकार भया है
यात् । इसं अकार को एकार भया । अवद्युधातु नाः नः विखे है । ग्रहिज्या वयि व्यधि वष्टि विचति वृश्चति पृच्छति भृज्जति न को संप्रसा
रण हो ङित कित् परतः । विध्यति । इसं एत् आया यकार को संप्रसारण भया । विव्याधे । इसं संप्रसारण भया है

शेऽस्य च । छिद्यन्ने यति दैदे देयात् । व्यध ताडने ॥ ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टि
विचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च ॥ एषां संप्रसारणं स्यात् किति
ङिति च । विध्यति । विव्याध । विविधतुः । विव्यद्ध विव्यधिथ । व्यद्धा । व्यत्स्य
ति । विध्येत् । विध्यात् । अव्यात्सीत् । अव्यत्स्यत् । पुष पुष्टौ । पुष्यति । पु
पोष । पुपोषिथ । पोष्टा । पोक्ष्यति । अपुषत् । अपुष्यत् । शुष शोषणे । शु
शुष्यति । शुशोष । अशुषत् । अशुष्यत् । णश अदर्शने । नश्यति । ननाश । नेशतुः ।
रधादिभ्यश्च वलादेरार्धधातुकस्य वेट् । नेशिथ । मस्जिनशोर्झलि नुम् ।
ननंष्ठ । नेशिव । नेश्व । नशिता । नंष्टा । नशिष्यति । नङ्क्ष्यति । नश्येत् । नश्यात् । अ
नशत् । षूङ् प्राणिप्रसवे । सूयते । सुषुवे । सुषुवाते । सुषुविषे । सु
षुविढ्वे । सोता । सविता । दूङ् परितापे । दूयते । दीङ् क्षये । दीयते । दीङो युडचि क्ङि
ति । दीङः परस्याजादेः क्ङित आर्धधातुकस्य युट् । वुग्युटावुवङ्यणोः
सिद्धौ वक्तव्यौ । दिदीये । मीनातिमिनोतिदीङां ल्यपि च । एषामात्वं ल्य
पि चादशित्येजुनिमित्ते । दाता । दास्यते । अदास्त । डीङ् विहायसा गतौ ।
डीयते । मीङ् हिंसायां । मीयते । पीङ् पाने । पीयते । माङ् माने । मायते । मा
मे । जनी प्रादुर्भावे । ज्ञाजनोर्जा । शिति । जायते । जज्ञे । जनिता । जनिष्यते ।
दीपजनबुधपूरितायिप्यायिभ्योऽन्यतरस्याम् । एभ्यो च्लेश्चिण् वा एक

पीव्यहार्द इसं आर्द्धधातुक मे संप्रसारण नहीं होता कभल्त ओः करके नाको धा भया व्यान्स्यति इसं यकार
को चर भया ने शतुः इसं एत्व भया अनणक हलमध्ये सत्त्व से रशा नेदिकाने पर वलादिक आर्द्धधातुक
को विकल्प नेश्द होने शिष और इआया मस्जन श को नुम होके हल परतः नंनेष्ठ इसं नुम भया नंस्पाति
इसं श को ष भया ष को कहो के हल परतः यामिल के नभया दिदीये इसं दीङ्‌ ने पर अजादिक किन् ङि

नुश्चाईषात्नुकहैलिसकोडलकाञ्चागमदेश्यइ.उवङ्.कारदयाधुकषङ्सिरवङ्कयहेनमिनातिमिनोतिदीङ्
रन्नुकोञ्चावकारहोत्यश्चापिनुपरतःशन्नाभयात्तानन्नकोनाश्चादेशहोशीनुपरमःजायतेईशंशपन्नुश्चायाज
न्नुकोनाभयाजनतेरंशोगमहनूजनरवन्नुचसांस्तुवकरकेउपधालोपभयाहैफेरनकारकोश्चुत्वभयाजजोर्ज्ञः
भयादीपजन्नुष्वुयरूलापिच्याविरनतेपरेञ्झिकोविणाविकल्पनेहोएकवचननकारपरेरंदयाविणाकोः

पवनातो पचते पेदे पन्नापचेतपन्मीशचिणोनेपदः पदञ्चुं खिणा
नेपरेश्मपादिश्चपत्माताँश्चपत्स्ततविदसत्तायांविद्यतेवेत्ताबुधा
श्रवगमनेबुध्यतेबोद्धाभुत्स्यतेभन्सीष्टश्चबोधिश्चबुद्धश्चभुत्सा
तोषयुसंप्रहारेयुध्यते युयुधे योद्धाश्चयुद्धसृजविसर्गेसृज्यते
सस्रजेसस्रजानेस्त्रष्टासृजिरे सृजिदृशोर्झल्यमकितियमनुयोस्मृ
फलौंदावकितिसृष्टासृक्ष्यते सृक्षीष्टश्चसृष्टश्चसृष्टास्नाश्चसृष्ट
तमृषतितिक्षायांमृष्यतिमृष्यतेममर्षममर्षिथ ममृषिषे ममृषिधमम
र्षमर्षितासिमर्षितासेमर्षिष्यतिमर्षिष्यतेणहबंधनेनह्यतिन
नाहनेहेननाद्धनत्स्यतिश्वनात्सीत् श्चनद्धरति
दिवादिः ॥ अथस्वादिभ्यःश्नुः शपोपवादः सुनोतिसुनु
तः क्रम्बुवोरितिषणात्वंसुनेतिसुन्वः सुनुवः सुनुते सुन्वाने सु
नुद्देसनवहे सुनवावसुवावसुषुवेसोतासुनुसुनुनंवानिसुन
वैसुनवात्सुयात्सूयात्स्तुसञ्जयः परस्मैपदेषुसिचिवृद्धिः असावीत्
असोष्टचिञ्चयनेचिनोतिचिनुते चिक्यचिनेचीनोचिचेष्टलोगोश्चाद्धि
दनेस्तृणोति स्तृणुते शर्पूर्वाः खयः शिष्यन्तेअन्येहल्लोलुप्यन्तेतस्ता
रतस्तरतुः तस्तरेगुणोऽर्तिसंयोगाद्योः इत्यत्रसंयोगादेर्ऋदन्तस्य

परेल्लकहोमनत्वपकोहदिनदीहोश्चजनिर्हशोसिकोचिणभयाचकारणकारहलभयोजनुकानकारहका
रमेमिलातिएकासेपभयाहर्द्विनिषेधभयापद्मनेपरेञ्झिकोविलहोनकारपरेरंदयाश्चपादिईशोविणाञ्चा
पाहदिभयौभोत्पवनेईशोभष्भावभयाहेस्सृन्दपानेम्रम्हेयकितफलपरनःस्वशाभयारातिदिवादिः

किनहदेनहतिश्यासेञ्ञारिनियमानिसारिह उपुविञ्चञ्चयाबीनञ्चयविएञ्चयोएरनिस्वा
दि: ॥ ८ ॥ ७

योगारतिंङ्.सिचोरिद्धानरि.स्तनीवीश्चसृषीश्चास्नरीश्चास्तजपरन्कंपनेपुनोतिपुनुनेङ
योवस्वरतीतिवेट्ङुपविशङुयोश्चकितिसिस्मुकःकितिस्थिश्रपकाचङगंनाचा।

भ्रस्ज् धातुरभिलवावि विदेहै आमिषस्नानकापीरनकामसंधानकानामहै स्वादिकाने परेस्तुः होश कोवा
थके स्तनोतिर्देहां स्थ्रआयाशका रे रतुभया थाल्वादेषः सः भयाउणभयाम्नवतिर्देहां यणभयाल्लस्तरनने परे
लिचूको इद्होअभ्यासके णा सर्वस्वयचोपरदे इतिस्वादिः ॥ तुद धातु पीडा विवेदै तुदादिकाने परे शको शफनदी
होनुदतिर्देहां व्यवधा पुण नहीभया शके आर्याले लघुपधन नहीहै एवं तुदते तनोदईहां गुणभया शर्षे कोकायें

तुद व्यथने तुदादिभ्यः शः शपोपवादः तुदति तुदते तुतोद तुतोदि
थ तुतुदे तोत्ता अतौत्सीत् अतुत्त नुदति नुदते नुनोद नुनु
दे नोत्ता भ्रस्ज पाके ग्रहिज्यादिना संप्रसारणं सस्य श्चुत्वेन शः शस्य जश्त्वेन जः भृज्जति
भृज्जते भ्रस्जो रोपधयोरमन्यतरस्याम् भ्रस्जो रेफस्योपधायाश्च स्थाने
रमागमो वार्धधातुके मित्वादन्त्यादचः परः स्थानषष्ठीनिर्देशाद्रो
पधयोर्निवृत्तिः बभर्ज बभर्जतुः बभर्जिथ बभर्ष्ठ बभ्रज्ज बभ्रज्जतुः
बभ्रज्जिथ स्कोरिति लोपः व्रश्चेति षः बभ्रष्ठ भर्ष्टा भ्रष्टा भर्क्ष्य
ति भ्रक्ष्यति किति ङिति लिङि रमागमं बाधित्वा संप्रसारणं पूर्वविप्रतिषे
धेन भृज्ज्यात् भृज्ज्यास्तां भृज्ज्यासुः भर्क्षीष्ट भ्रक्षीष्ट अभार्क्षीत् अभ्रा॥
क्षीत् अभर्ष्ट अभ्रष्ट कृष विलेखने कृषति चकर्ष चकृषे अनु
दात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम् उपदेशेऽनुदात्तो य ऋदुपधस्तस्याम्वा
झलादावकिति क्रष्टा कर्ष्टा क्रक्ष्यति कर्क्ष्यति कृषीष्ट स्पृशमृशकृषतृपदृपां
च्लेः सिज्वा वाच्यः अक्राक्षीत् अकार्क्षीत् अकृक्षत् अक्राष्ट अकृक्षत ता
ते अकृक्षाताम् अकृक्षन्त अकृक्षत मुच्लृ मोक्षणे शे मुचादीनां नुम्
मुंचति मुंचते मोक्ता मुच्यात् मुक्षीष्ट अमुचत् अमुक्त अमुक्षाताम् लुप्लृ
च्छेदने लुंपति लुंपते लोप्ता अलुपत् अलुप्त विद्लृ लाभे विंदति विंदते।

ने विवेद विविदे व्याघ्रभूतमते सेट् भाष्यमते नेट् परिवेत्ता षिच क्षरणे सिंचति सिं
चते लिपिसिचिह्वश्च अबन्ध्य ... रत्रसि चत् आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम् लिपिसिचिह्वः पर

स्फोरटूताग्रमि चन्नग्रसिक ह्रा विक्षेपे कॄ नस्थानोः किरति चकार चकरतुः चकरुः करिता
करीता कीर्यात् अकारीत् ॥ ४९ ॥

ने ताईहां दकारको चरभया और अनुगम है नवारं वारक्यालिषीये भ्रस्ज् धातु पाक विषेहै लिट् परन्तः ग्रहिज्यास
से संप्रसारणभया भृस्ज् भया सकारको श्चुत्व सकारभया शकार कोजश्त्व जकारभया भृज्ज तिसि हुं भ्रस्जा
के रेफको व उपधाकोरम का आगम होता है धातु कपरन्तः मित्वनेभ के अकारके परे रमृ यासी [illegible] परंतु
स्थानषष्ठी निर्देश से रेफ के सकारस्थान मे रम्भया या बभर्ज भया भृज्ज्यात् ईहां संप्रसारण भया अभ्राक्षीत्

ईश्वर इत्यर्थः । गकारमध्ये आयासि च इत्यायातः । कारकोगकारः गौकारोगकारः कोककारः भयाषत्व भयाकश्चि लेषणा विवेचैः उप देशाविवेश्च न दान्तकःड पथनोधातु दैति सकोभ्याम् इत्यकारपरतः कस्य ईश्वर्यस्याचार्याः काभ्याम् परे इत्यामवादि कानुमुद्दोनुवतिः ईश्वरो नमन्याया त्तिपति वृङ् इननेपरे त्तिकोचड ॰ इत्यश्च सिचनत्यात्मनेपद विकल्पश्च ॰ इत्यो किर तिः इत्यञ्च नवनु थानोः भयाम्रनिगरणविवेविकल्पेले ने विवेचैश्च वृपरतः शृके रेफकोलकारः इत्यो विकल्पनेगो

यनिवारणोऽयम् ॥ विभाषा गिरतेरेफस्य लो नाऽदौ गिरति गिलति जगा र जगाल जगरिथ जगालिथ गरिता गरीता गलिता गलीता ॥ प्रच्छ ज्ञी प्सायाम् ॥ ग्रहिज्यादिना सम्प्रसारणम् पृच्छति पप्रच्छ पप्रच्छतुः पप्रच्छुः प्रष्टा प्रक्ष्यति अ प्राक्षीत् ॥ मृङ् प्राणत्यागे ॥ म्रियतेर्लुङ्लिङोश्च ॥ लुङ्लिङोः शितश्च प्रकृतिभूतान्मृङ आत्मनेपदं नान्यत्र ॥ रिङ् इयङ् म्रियते ममार ममर्थ म म्रिव मर्ता मरिष्यति मृषीष्ट अमृत ॥ इति तुदादिः ॥ रुधिर् आवरणे ॥ रुधादिभ्यः श्नम् ॥ शपोऽपवादः रुणद्धि ॥ श्नसोरल्लोपः ॥ णत्वस्यासिद्ध त्वादनुस्वारः रुन्धः रुन्धन्ति रुणत्सि रुन्थः रुन्थ रुणध्मि रुन्ध्वः रुन्ध्मः रुन्धे रुन्धाते रुन्धते रुन्त्से रुन्धाथे रुन्ध्वे रुन्धे रुन्ध्वहे रुन्ध्महे रुरुध रुरुधे रोद्धा रोत्स्यति रोत्स्यते रुणद्धु रुणत्तु रुन्धात् रुन्धां रुन्धन्तु रुन्धि रुणा नि रुणधाव रुणधाम रुन्धां रुन्धातां रुन्धतां रुन्त्स्व रुणधै रुणा धावहै रुणधामहै अरुणत् अरुन्धां अरुन्धन् अरुणत् अरुणः अरुन्धं अरुन्ध अरुणधं अरुन्ध अरुन्ध्व अरुन्ध्म अरुन्ध अरुन्धातां अरुन्धत रु ध्यात् रुत्सीष्ट रुधिर इरितो वा अरुधत् अरौत्सीत् अरुद्ध अरुत्सातां अरुत्सत एवं भिदिर् विदारणे छिदिर् द्वैधीकरणे युजि र् योगे शिषॢ विशेषणे शिनष्टि शिंष्टः शिंषन्ति शिनक्षि शिशेष शिशेषि

लति गिरतिभयोः इत्यतिः ईश्वरः संप्रसारणाभ्याम् इत्यनेई श्वरनोदिङ् भयापेरः इयङ् भयापैरे ईयङ् भयात्लुङ् लिङ् तः वश्नः शितः प्रकृतिभूतनोमृङ इति सनेआत्मनेपद इत्यो म्रियते भया इतितुदादिः रुधिरस्यावरणविवे ॥ इत्यादिकयानन्तेपरेश्नम् इत्यो शपकास्यापवाद इत्ये रुनजि ईश्वरः के परे श्नम्याया शकारमकारः रत्न भयेन कारको णत्वभयाद्यत्नयोः के इति को ध्रि भया रुणद्धि भयारुन्धः ईश्वरः श्नसोरल्लोपः करके अकारलोपः

तनादिकृञ्भ्य ते उप्रत्यय होता है शप्का अपवाद है तनोति ईहां तनु के परे उ आया उ गुण भया तनुतः तन्वन्ति यण भया तताननेने ईहां थल ता कहल मध्ये करके एत्व भया अभ्यास लोप भया तनिता ईहां सीयुट् आया लिङ् तलोप से सकारलोप भया उकार को वकार भया ईकार मे सिचा व लोप भया अतानीत् ईहां विकल्प वृद्धि भई तनादि ते परे सिच का लुक् होने या लुक् परे अं दया अतत ईहां वर्ण न ति तनो नादीनां करके नलोप भया सिच् लोप भ-

तनु विस्तारे तनादिकृञ्भ्यः उः शपोऽपवादः तनोति तनुते ततान ।
तेने तनिता तनिष्यति तनिष्यते तनोतु तनुतां अतनोत् अतनुत
तनुयात् तन्वीत तन्यात् तनिषीष्ट अतानीत् अतनीत् तनादिभ्य ।
स्तथासोः तनादेः सिचो वा लुक् स्यात् थासोः अतत अतथाः
अतनिष्ट अतनिष्ठाः अतनिष्ट डुकृञ् करणे करोति अत उत्सा
र्वधातुके कृतः न भकुर्छुरां भस्य कुरुछुरो रूपयाया न दीर्घः ।
कुर्वन्ति नित्यं करोतेः कुरुते ये च कारस्य नित्यं लोपो म्वोः कुर्वः
कुर्मः कुरुते चकार चकर्थ चकृव चकृम चक्रे कर्त्ता करिष्यति क-
रिष्यते करोतु कुरुतां अकरोत् अकुरुत ये च कृञ् उ लोपो वा स्या
त्ये ये कुर्यात् कुर्वीत क्रियात् कृषीष्ट अकार्षीत् अकृत अकरिष्यत्
अकरिष्यत संपरिभ्यां करोतौ भूषणे आभ्यां करोतौ भूषणे सुट् स्या
करोतेः सुट् भूषणेऽर्थे संस्करोति मनु अवबोधने मनुते मेने मनि
ता मनिष्यते अमनुत अमत अमनिष्ट मन्वीत मनिषीष्ट अमत
निष्ट अमनिष्ट इति तनादिः डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये क्र्यादिभ्यः
श्नाऽशपोऽपवादः क्रीणाति ईहल्यघोः क्रीणीतः श्नाभ्यस्तयोरातः

या सिच् लोप भया करोति ईहां कृ ते परे उकार आया कृ को गुण भया अनु को उन होसार्वधातुक परे कं दया कुरुतः ईहां अकार को उकार भया कुर्वन्ति ईहां यण भया हलि च करके दीर्घ पाया सो भसंज्ञक को कुरु कुर को उ पया । को दीर्घ न होहोर सन्ने निषेध भया कथा नुते प्रत्यय के उकार का लोप होय म परतः कुर्वः कुर्मः कृम् के उका-र का लोप होय आदि क प्रत्यय परतः कुर्यात् ईहां उलोप भया इति तनादिः क्र्यादिक धातु ते परे श्ना होता शप् का बाधक है क्रीणाति ईहां आया ता कार र न भया णत्व भया क्रीणीतः ईहां ल्यघोः आ को ई भया क्रीणंति

कृ

णाश्रितत्वाच्च न वृद्धिरिति हलो नातिसिद्धं स्तृणातिनस्तारीड्वा दीर्घः सर्वं भयाद्वृङ्वृञ्भ्यां च उनः स्वृदंतत्वे परे लिङ्सि॰
चोरिड्वा स्यात् तङि न लिङि नहि दीर्घस्तथा तत्र परे इट्कोनेही दीर्घ होलिङ्परतः एकाच इत्यस्याप्नुत्त्वे परे इट्कोदी
र्घ होलिङ्परतः नहीहो इटीनात् ईट्वा संप्रसारणं भयात् इटकोदीर्घ भयाद्धल्लत्वे परे ओष्ठ्यादेरिति सकोशान वृद्धोइट
तोईट्वा आकोशानच्च भयाच्च सेदैश्च शानच्च पाणं भयात् इत्यादिः ॥ सत्यापपाशवीणातूलश्लोकसेनालो

लिङ्सिचोरात्मनेपदेषु वृङ्वृञ्भ्यामृदन्ताच्च परयोर्लिङ्सिचोरि
ड्वा स्यात् तङि । न लिङि । इति नेह दीर्घः । स्तरिषीष्ट । उस्तृषीष्ट ।
सिचि च परस्मैपदेषु । अस्तारीत् । अस्तारिष्टाम् । अस्त
रिष्ट । अस्तरीष्ट । अस्तीर्ष्ट । वृञ् वरणे । वृणाति । वृणीते । ववार ववरे । वरिता वरीता ।
उदोष्ठ्यपूर्वस्य । वूर्यात् । वरिषीष्ट । वूर्षीष्ट । अवारीत् । अवारिष्टाम् । अव॰
रिष्ट । अवरीष्ट । अवूर्ष्ट । धूञ् कम्पने । धुनाति । धुनीते । धोता । धविता । अ
धावीत् । अधविष्ट । अधोष्ट । ग्रह उपादाने । गृह्णाति । गृह्णीते । जग्राह । ज
गृहे । ग्रहोऽलिटि दीर्घः । एकाचो ग्रहेर्विहितस्येटो दीर्घः न तु लिटि ।
ग्रहीता । गृह्णातु । हलः श्नः शानज्झौ । हलः परस्य श्नः शानजादेशो हौ ।
गृहाण । गृह्यात् । ग्रहीषीष्ट । ह्म्यन्तेति न वृद्धिः । अग्रहीत् । अग्रहीष्ट । अ
ग्रहीषाताम् । कुष निष्कर्षे । कुष्णाति । कोषिता । अश भोजने । अश्नाति । आ
श । अशिता । अशिष्यति । आशीत् । अशान । मुष स्तेये । मोषिता । मुषा
ण । ज्ञा अवबोधने । जानाति । जज्ञौ । वृङ् संभक्तौ । वृणीते । ववृषे । ववृ
ढ्वे । वरिता वरीता । अवरिष्ट । अवरीष्ट । अवृत । इति क्र्यादयः ॥ चुर स्तेये ।
सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेनालोमत्वचवर्मवर्णचू

मत्वचवर्णवर्णचूर्णचुरादिकरनत्वे परे णिच् स्यात् सार्थविवेचुरत्वे परे णिच् आपाणच्च इत्यादिभयाच्चुरतर्ईट्वा सनाद्यं॰
तात्ते धातुसंज्ञा भयात् धातुत्वे लट् इत्यादि भये तिन कोति पादिकभये णपुगन्ताया इगंतस्य से गुणं भयाच्च प
भयाचोरयति णिजन्तनेश्चान्ने च दहो क्रियाफलकर्तृनिष्ठो यो चोरयते भयाल्लङ्परतः चोरङ्ग इट्वा
विकोचङ्भयात् केरङ्वयाकोङ्ख भयाद्द्वित्व भयाच्च लादि शेषः भयात् दीर्घो लघोः सेदीर्घं भयात् रेफ निर्दिसे॰
णिलोप भयाच्च ह्रस्वत्व सिंहास्या गोणिलोप भया ह्रस्व भयाद्द्वित्व भयात् अभ्यास कोदीर्घ भयाच्च इत्यादि

चुरन् इत्यादिकथ्यालवाक्यप्रबन्धे यह विधि है कथ् के परे णिच् आया गुण भया शप् आया कथय यति सिद्ध परति र
मित्तो अच् का आदेश है सो स्थानिवत् हो स्थानिभूत अच् ते पूर्वत्व करके दृष्ट को विधि कर्त्तव्य होयँ स्थान
रके कथ के अकार स्थानी मन के हो हि नहीं भई अकलोपि त्वते दीर्घ सन्वद्भाव नहीं होता गण के अ॥
भ्यास की ईकार को चङ् परक णि परे अङ्ग दयाम जीगणत् भया इति चुरादिः ॥ क्रिया विवि स्वाधीनताक

णि चुरादिभ्यो णिच् स्वार्थे पुगन्तेति गुणः सनाद्यन्ता इति धातुत्व
म् तिप्शपौ गुणायादेशौ चोरयति णिचश्च णिजन्तादात्मनेपदं
कर्तृगामिनी क्रियाफले चोरयते चोरयामास चोरयिता चोर्यात्
चोरयिषीष्ट णिश्रीति चङ् णौ चङीति ह्रस्वः चङीति द्वित्वं हलादिशेषः
दीर्घो लघोरिति अभ्यासस्य दीर्घः अचूचुरत् अचूचुरत कथ वाक्य
प्रबन्धे अल्लोपः अचः परस्मिन् पूर्वविधौ परनिमित्तोऽयोनादे
शः स्थानिवत् स्थानिभूतादचः पूर्वत्वेन निर्दिष्टस्य विधौ
परनिमित्तोऽपोनाकर्त्रव्य इति स्थानिवत्त्वान्नोपधावृद्धिः कथय
ति अचकथत् अग्लोपित्वान्न दीर्घसन्वद्भावौ न गण संख्याने गण
यति ई च गणः गणतेरभ्यासस्य ईत्स्याच्चङ्परे णौ अजीगण
त् अजगणत् इति चुरादिः स्वतन्त्रः कर्ता क्रियायां स्वातन्त्र्येण
विवक्षितोऽर्थः कर्ता स्यात् तत्प्रयोजको हेतुश्च कर्तुः प्रयोजको
हेतुसंज्ञः कर्तृसंज्ञश्च हेतुमति च प्रयोजकव्यापारे प्रेषणादौ
वाच्ये धातोर्णिच् भवन्तं प्रेरयति भावयति ओः पुयण्ज्यपरे स
नि परे यदङ्गं तदवयवाभ्यासोत इत्स्यात् पवर्गयणजकारे

रके सो विवक्षित अर्थ रूप सो कर्त्ता संज्ञा होने को ईश्वर का कार्य कर दाऊ पसो कर्त्ता हृदय कर्त्ता का प्रयोजक हृदय सो
हेतु संज्ञक हो च पुनः कर्तृसंज्ञक हो कर्त्ता को कार्य विविध रूप कर न वाला नाम होवे सो प्रयोजक कहा हृदय प्र
योजक व्यापार जो प्रेरणा हृदय ति सम अर्थ विवि विधान ते णिच् होते सो भवति तिसको प्रेरयति इति भावयति
इहां णिच् आया उकार ते द्विस्व दे आदेशया उकार को गुण होय अव् प्रयोग उकार इहां प्रथम अकार मे मिल या
इसी तरा भावयतः भावयति इत्यादि नाम ने देव दत्तो भवति यत्र दर्शः प्रेरयति इति नाम विवक्षा याय ह

दत्तो देवदत्तं भावयतीति देवदत्तो भवयः नो यत्तदत्तौ प्रेरयतः इति यत्तदत्तौ देवदत्तौ भावयतः देवदत्तौ भवतिनस्तु
कृ० यत्तदत्ताः प्रेरयन्तीति यत्तदत्ताः देवदत्तान् भावयन्तीत्यहं देवदत्तो भवामि मां त्वं यत्तदत्तः प्रेरयसि इति यत्तदत्तः देव
दत्तं भावयसि आवां देवदत्तौ भवावः युवां यत्तदत्तौ प्रेरयथ इति यत्तदत्तौ देवदत्तौ भावयथः वयं देवदत्ताः भवा
मः यूयं यत्तदत्ताः प्रेरयथ इति यत्तदत्ताः देवदत्तान् भावयथ त्वं देवदत्तो भवसि अहं यत्तदत्तः त्वां प्रेरयामि इति
अहं यत्तदत्तः देवदत्तं भावयामि युवां देवदत्तौ भवथः आवां यत्तदत्तौ प्रेरयावः इति यत्तदत्तौ देवदत्तौ भाव

षवर्णपरे ऽपरतः अबीभवत् । णागमितिनिर्देशौ अर्तिह्रीव्लीरीक्नूयीक्ष्मा
य्यातां पुक् णौ । स्थापयति । तिष्ठतेरित् । उपधाया इत्स्याच्चङ्परे णौ । अतिष्ठिपत् ।
पत् घटू चेष्टायां । मितां ह्रस्वः । घटादीनां ज्ञपादीनां च ह्रस्वः स्यात् । घटयति
ज्ञपयति ज्ञापने ज्ञपयति । अजीगणत् इति णिच्प्रक्रिया ॥ धातो
कर्मणः समानकर्तृकादिच्छायां वा ॥ इषिकर्मणो धातोरिषिणैकक
र्तृकात् सन् प्रत्ययो वा स्यादिच्छायाम् [illegible] सम
[illegible] सनि [illegible] चोरे लोजादेः [illegible] द्वितीयस्य ।
सन्यतः पठितुमिच्छतीति पिपठिषति कर्मणः किं गमनेनेच्छति स ।
मानकर्तृकात्किं शिष्याः पठन्त्विति इच्छति गुरुः वा ग्रहणाद्वाक्यमपि ।
लुङ् सनोर्घस्लृ सस्य आर्धधातुके स्यतः स्यात् सात् वा इट् अतनं को ।
अत्तुमिच्छति जिघत्सति एकाच इति नेट् अज्झनगमां सनि अजन्ता
नां हन्तेरजादेशगमेश्च दीर्घः झलादौ सनि स्यात् कृञ्ग्नातृञ्ला हि
सन् किन्तु कर्तुमिच्छति चिकीर्षति सनीयह्गुदेश्च गृहूत्रुग्रहेरुगन्ता
च सन् रदनतु भवति धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे य

याबः स्वयं देवदत्तो भवथः यूयं यत्तदत्ताः प्रेरयथ इति यत्तदत्ताः देवदत्तान् भावयामः इसी रीति करके और लकार
के जाननेभावयांचकार इहाँ णिच् आयाया आम् आयान् कौ वृद्धि होयाया वृद्धि होयाणिको गुण होयाअय् होयापरे
श्र अयस् आयेहित्वादिक होये भावीत् इहाँ णिच् करके णिलोप भया अबीभवत् इहाँ अने परे लङ् आयाति
पादिक होये अके आगे णिआया अके परे द्वि को चङ् भया णिलोप भया ह्रस्व भया द्वित्व होया ओः पुयण्ज्य
परे करके उकार को रकार भयादीर्घ लघोः से दीर्घ भया अबीभवत् सिद्ध होयाअभावयिष्यत् स्यात् इति ।

विविश्चर्निहीझीरीकृपीत्मा प्यानांउहौश्राद॑नधानकोउकहोस्याययतिईहांघुकआया गुणादिकभयेतिष्ट।
कीउपथाकोरनृहोचङ्परनःश्नकौङ्स्वहोस्याकोतिश्भयातिष्टकोश्नूभयाश्चतिष्टयन् सिद्दम् यङ्देष्टवि
विदेर्घृदिकाकोवश्नः तयादिकाकोङ्स्वहोतयधानुतानविविचश्नजचानेविविदै धानुतेसन्वि॥
कत्यकारकेहोवैनीधानुहोवेरछ्याकाकमंहोवेरछ्यावाताकर्त्ताहोवेसरछ्या विविमैसेपरितंरकृतिदवः ५
ईहांपठधानुरछ्याकाकर्महयपठनकीरछ्यावीलाकर्त्ताहयऐसीपठधानुतेपरेसन्वश्चायासन्नेनकेघङ्तके

ङ्घोनःश्नेमृशार्थेघोत्येधानोरेकावोहलादेर्घृङ्गुणोयङ्लकोश्च
भ्यासस्यगुणःयङिलकिचपरतुःरिःदंनमासात्मनेपदंश्नःश्नरति
शायेनवाभवतिवोभूपतेवोभूयावकेश्चवोभूयिषनित्यकौटिल्येगतो
गत्यर्थात्कौटिल्यएवयङ्नतुक्रियासमभिहारेदीर्घोकितःश्चाकितो
भ्यासस्यदीर्घोयङ्यङ्लकोव्रजगतोकुटलंब्रजतिवाव्रजतेयस्य
हलःहलःपरस्ययस्यलोपःश्चाद्देधानुकेश्चादेःपरस्य श्चतोलोपः
वाव्रजांचके वाव्रजिता रीगृङपधासव ऋङपधस्यधातोरभ्या॥
सस्यरीगागमोयङ्यङ्लकोः वरीवृत्यते वरीवृतांचक्रे वरीव
र्तितातस्माद्दिश्चत्वश्चादावाह्कतिगुणोगणत्वंन नरीनृत्यते जरी
गृह्यते यङोविच यङोविप्रत्ययेलुक चकारात्विनापिकविन् ञ ८
त्वेमित्तकोयमंतरंगत्वादादौभवति ततःप्रत्ययल
क्षणेनयङंतत्वाद्द्वित्वे श्चभ्यासकार्य

कौ॰ मू॰

कैप्रथमएकाचृ द्वित्वहोयश्रनादिकाकेद्वितीयकोपठपठसईहांहला दिशेषःकरकेलोपभयाधानुसं
ज्ञाभयीतियादिकश्चायेश्चभ्यासकेश्चतकोश्कारहोसन्परेईदयाइनकरकेरकामहोयाहृह्याययावच
भयापिपठिषतिकर्मकोकिसवास्तेकहाहैगमनेनरछ्यानिईहांकर्मकौकिसेकैनहीकरणाहयकर्म
कर्त्तापदकैसीधानुहोवेयेकिसवास्तेकहाहैशिष्यःपठंतरकृतिगुरुःईहांशिष्यपठनकेकर्त्ताहैनगुरु
ईछ्याकाकर्त्ताहयईहांसन्नहीश्चावताबाहणानेवाक्यभीहोयविकल्पिकृतिऐसेवाक्यभयापिपठिषं

पिपदिष्यात् अपैपदिषीत् अपिपदिष्यत् लुङि अपत्पतूः अटकोगुरुत्को रसस्रे अटकोवस्तु भयासन् परतः च स्यवत्
द्वित्वभयाच वकारको न कार भयादेः सकारको न कारः होआर्द्धधातुकपरतः स्व भयात् चित्स्यति सिद्धं अजनोकोदन्
गमकोदीर्घ होसन् परतः इगंतेन भैकलादि सन् कित्वेदो चिकीर्षति रं हांक्षित्वं मे ने उगन्त होभयाच् अटुरूतेउ
न ४ गंततेसन् कोरत्व होदोत्वं भूषतिरतिसन् वरंवारं अर्थे ब्रुवेरयति शयअर्थे द्वेवाघका शतो अर्थे होकादिकं
पातुनेपरे यङ्लुक होयो अभ्यासकोगुण होभू भूपरे होसनायन्ताकारकेधातु संज्ञा होधीपरे निकादी

पोत्वन्वाच्चदादयः शेषात्कर्तरि परस्मैपदं चर्करीतं चेत्यदादौ पठितं।
अयोल्लुक् पक्षे बोयङ्लुगन्तस्य स्वरहलादेः पितः सार्वधातुकस्य
ईडा स्यात् भूसुवोस्तिङि गुणनिषेधो यङ्लुकि भाषायां न बोभूतेति
तेतिक्ते इति छन्दसि निपातनात् बोभवीति बोभोति बोभूतः बोभुवति
बोभवीषि बोभोषि बोभूथः बोभूथ बोभवीमि बोभोमि बोभूवः बोभूमः
बोभवांचकार बोभवांबभूव बोभवामास बोभविता बोभविता
बोभविष्यति बोभवीतु बोभोतु बोभूतात् बोभूतां बोभुवतु बो
भूहि बोभवानि अबोभवीत् अबोभोत् अबोभूतां अबोभुवुः बो
भूयात् बोभूयातां बोभूयुः बोभूयात् बोभूयास्तां बोभूयासुः गा
तिस्थेति सिचो लुक् यङो वेतीट्पक्षे गुणं बाधित्वा नित्यत्वाद्वुक्।
अबोभूवीत् अबोभोत् अबोभूतां अबोभूवुः अबोभविष्यत् इति य
ङ्लुक्प्रक्रिया ॥ सुप आत्मनः क्यच् ३।१।८ कर्मणः एषितुरात्मसंब।
धा धिनः सुबंतादिच्छायामर्थे क्यच् स्यात् सुपो धातुप्रातिपदिकयोः एतयो
रवयवस्य सुपो लुक् क्यचि च ७।४।३३ अस्य ईत्स्यात् आत्मनः पुत्रमिच्छति

दिक होये अभ्यासकोगुण होया अभ्यासे चर्त्वं लगा बोभूयते सिद्धं बोभूयांचक्रे बोभूयिता बोभूयिष्यते
बोभूयतां अबोभूयत बोभूयेत बोभूयिषीष्ट अबोभूयिष्ट अबोभूयिष्यत गत्यर्थे यातुको द्विरुक्त अर्थे नेवि ने
विलीयङ् होकियासमभिहारविशेषे नहीं होआ कित अभ्यासको दीर्घ होयङ् यङ्लुक भयावा वृत्ताने।
ईहारीर्घभयाकुटिलतायां होहि ये अर्थ भया हलन्तेपरे यकारको लोप होआर्द्धधातुकपरतः वाहुलांच
केरहां अंत्यलोपपायासीसोऽप्यादेशरस्वसेंपलोप भया अतो लोपसे अकारलोप भया अङ् इप धाषाः

धातु ने अभ्यास को रीक् का आगम होयो यावरीहत्यते रेरीह्यते नहत द्वित्व भया अनोन भया फेर हलादिशेषः
अ भया वकार के परे रीक आया इत्यादि यङ् का और पर इंदया सु क होय वकार ने अच् के बिना भी लघु क होय अनैमि
ईक त्तिक यङ् लुक् में अनेरंग अत्व नेयादि विवे होय फेर प्रयत्न लक्षण कर के द्वित्व होय अभ्यास कार्य हलादि को चवि न
के रीत इसको अदादि पाठ ने शप् का लुक होय यङ् लुगन्त ने परे हलादि क पित् को सार्वधातुक है तिसको ओ
विकल्प ने ईट होय के परे यङ् का लुक भया अभू द्वित्व भया पद लुगन्त विवे शप् लुक होता है तिश्च के

हलि च गीर्य्यति पूर्य्यति यानो नित्ये वनेह द्विः मिछति दिद्यातिकास्य
सा हलें विभाषे हलः परयोः क्यच्क्यङोर्लोपो वाऽऽर्द्धधातुके आदेः परस्य अ
तो लोपः तस्य स्थानिवत्त्वाल्लघूपधगुणो न समिधिता समिध्यता
मनुष्यक विषये काम्यच् पुत्रमात्मन इच्छति पुत्रकाम्यति पुत्रकाम्यि
ता उपमानादाचारे उपमानात्कर्मणः सुबन्तादाचारेऽर्थे क्यच् पुत्रमिवा २१ ग
चरति पुत्रीयति। छात्रं विष्णूयति द्विजं सर्वप्रातिपदिकेभ्यः क्विप्
वा वक्तव्यः अतो गुणे कृष्ण इवाचरति कृष्णति स्ववाचरति स्वति स्व
स्यौ अनुनासिकस्य क्विझलोः क्ङिति अनुनासिकान्तस्योपधाया।
दीर्घः कौ फलादेश्च क्ङिति इदमिवाचरति इदामति राजेवाचरति।
राजानति श्न्वह विनिनियमम् मा ज्ञात्वे लोपधातो दीर्घः पंथा इव पथीन
प ति कष्टाय क्रमणे चतुर्थ्यन्तात्कष्टशब्दादुत्साहार्थे क्यङ् कष्टाय क्रमते ग
कष्टायते पापं कर्तुमुत्सहत इत्यर्थः शब्दवैरकलहाभ्रकण्व।
मेघेभ्यः करणे एभ्यः कर्मभ्यः करोत्यर्थे क्यङ् शब्दं करोति शब्दा।
ह्वापनेतन्करोति तदाचष्टे इति णिङ् गुणाद्विष्टवन्तो तिपदिकस्य

दीर्घ आया अभ्यास चर्वे भया गुण भया अवू होया बोभवीति भया पद लुमे बोभोति तिन्के ईट होबोवेद
विवे गुण निपातन ने कीया है आगे इसी प्रकार जानने इति यङ् यङ्लुगन्त प्रक्रिया इच्छा का कर्म सुसीक्
मेकी इच्छा वाला कर्त्ता होवे आपने नाल संबंध वाला ये सो जो सुबंत हय तिसने परे क्यच् होविकल्प ना
का अर्थ विवे धातु प्रातिपदिक का अवयव सुप् को लुक होय यति सक का लुक होका पर रेइंद यावर्ण को ईकार
पव मा

होथ्याथकोऽत्र नृनोर हुआकरेसो उत्रीयतिकहीयेउचे सुंबंतनेक्यच्आया ककार वकार इत् भयेसुपोधातु
ऽरकेअम्लुक् होयाअकारकोइकारहोयाउत्रीयतिसिद्धं उत्रीपोचकार उत्रीपिनाउत्रीपिष्यति उत्रीयन्तु
अउत्रीयत् उत्रीयेत् उत्रीयथात् अपोत्रीपीत् अउत्रीपिष्यत् क्यच् क्यङ् परतः नांतहीपदहोराजानमिवाच
रतिराजीयतिईहांनलोपभयावाच्यतिईहांनांतपदनहीक्यच्नहीभयी वांतथातुकोहीदीर्घहोदिव्यति
येप्रातिपदिकहैहलंतनेपरेक्यच्क्यङ्कालोपहोआदेपुरस्सेपलोपभयाअतोलोपःसेअकारलोपभया।

इष्टेयथाप्रातिपदिकस्य पुंवद्भावरभावटिलोपविन्मतुल्लोपयण
सं दिलोपप्रस्थस्फाद्यादेशभसंज्ञास्तद्वत्सावपीत्यर्थः इत्यल्लोपः स्रुस्करो
त्याचष्टेवा स्रुटयति इति नामधातुप्रक्रिया कंड्वादिभ्यो यक् एभ्यो धा
तुभ्यो नित्यं यक् स्यात्स्वार्थे कंडूञ् गात्रविघर्षणे कंडूयति कंडूयते
इति कंड्वादिः कर्त्तरि कर्मव्यतिहारे क्रियाविनिमये द्योत्ये कर्त्तर्यात्म
नेपदं स्यात् व्यतिलुनीते अन्यस्य योग्यं लवनं करोतीत्यर्थः न गति
हिंसार्थेभ्यः व्यतिगच्छंति व्यतिघ्नंति नेर्विशः निविशते परिव्यवेभ्यः दि
क्रियः परिक्रीणीते विक्रीणीते अवक्रीणीते विपराभ्यां जेः विजयते
पराजयते समवप्रविभ्यः स्थः संतिष्ठते अवतिष्ठते प्रतिष्ठते विति
ष्ठते अपह्नवे ज्ञः शतमपजानीते अपलपतीत्यर्थः अकर्मकाच्च सर्पि
षोपायेन प्रवर्त्तत इत्यर्थः उदश्चरः सकर्मकात् धर्ममुच्चरते उल्लंघ्य
गच्छतीत्यर्थः समस्तृतीयायुक्तात् रथेन संचरते दाणश्च सा चेच्च
तुर्थ्यर्थे समोदाणस्तृतीयांतेन युक्तात्ङक्स्मात् तृतीया चेच्चतुर्थ्य

समिधिनाईहांअकारकोलोपहोविवक्तेगुणनहीभयासर्वोक्तअर्थविवेकाम्यच्होऽत्रकाम्यकीयातुसंज्ञाभा
वीपरेलटादिकभयेउपमानेआचारेअर्थविवेक्यच्होउपमानकैसाहोवेकर्मसोवेसवनहोवेऽत्रअश्वावर
तिउत्रीयतिईहांआयाशिष्यन्ऽत्रकीन्यायीआचरणकरताहैसर्वप्रातिपदिकानेपरेकिवप्रत्ययहैविकल्पनेहो
सरवआचरतिशश्वेअकारनालक्षनोशरोभयाअनुनासिकांतकीउपथाकोदीर्घहोस्रुतिईहांदीर्घभया
नाचकृते८

शब्द वैर कलह अभ्र कण्व मेघ इनोंते परे करोति अर्थ विषे शब्दापति हंग णिकृश्रायादि लोप भयानि।
त कुकर दाहै व्यहाक हिना है इस अर्थ विषे णिच आया है इह परे कं दया नैसे मानि पदिककोष्ठं वज्ञावरंभार
भाव दिलोपविन्मन्यत्लोप यण दिलोपप्रस्यास्याद्यादेश अभ संज्ञा होने है नतेसोणीपरतः भी होन इसने णिप
रतः शब्द पदकी दिक लोप मया इति नामधातुप्रक्रिया कंड्वादिकानेपरे यक होस्वार्थ विषे कंडूपति ड्र
कंडूयते इति कंड्वादिः जहां क्रियाका अदलाव दलाबो मध्यो वे प्रतिनिहोवेल्ल हां कर्त्ता विषे आत्मनेपद होश्रा

र्थे हास्यां संपश्यन्ते कामी पूर्ववत्सनः सनः पूर्वो यो धातुस्तेन तुल्यं सन्नन्ता
दात्मनेपदं स्यात् एदिधिषते शिशीषिषते निविविक्षते गंधनावक्षेप
णसेवनसाहसिक्यप्रतियत्नप्रकथनोपयोगेषु कृञः गंधनं हिंसा उत्कु
रुते सूचयतीत्यर्थः अवक्षेपणं भर्त्सनं श्येनो वर्तिकामुदाकुरुते भर्त्स
यतीत्यर्थः हरिमुपकुरुते सेवते परदारान्प्रकुरुते तेषु सहसा प्रवर्तते
एधोदकस्योपस्कुरुते गुणमाधत्ते कथाः प्रकुरुते प्रकथयति शतं प्रकुरुते
धर्मार्थं विनियुंक्ते एषु किं कटं करोति भुजोऽनवने ओदनं भुंक्ते इत्यात्म
नेपदप्रक्रिया अनुपराभ्यां कृञः कर्तृगे च फले गंधनादौ च परस्मैपदं
स्यात् अनुकरोति पराकरोति अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः क्षिप प्रेरणे स्वरि
तेत् अभिक्षिपति प्राद्वहः प्रवहति परेर्मृषः परिमृष्यति व्याङ्परि
भ्यो रमः रमु क्रीडायां विरमति उपाच्च यज्ञदत्तमुपरमति उपरमयती
त्यर्थः अंतर्भावितण्यर्थोऽयम् इति परस्मैपदव्यवस्था भावकर्मणोः
लस्यात्मनेपदं सार्वधातुके यक् भावकर्मवाचिनि धातोर्यक् सार्व
धातुके भावः क्रिया सा च भावार्थकलकारेणानूद्यते युष्मदस्मद्भ्यां फ

हिंसा को ह्रस्व होहै निपदे इकं दया व्यात्तिलु नीनेश्चन्यकोयोगलक्षणकरहा दया गति हिंसा होइ कथावने आत्मने
पद नहीं होनि सर्वकविषाने आत्मनेपद नहीं होपरि विश्रव एवं कथावने आत्मनेपद होविर्योंरिके परेत्रि
को आत्मनेपद होसम्अवप्रा विलेपरे आकी भीये संज्ञा होउदने परेचरको भी संज्ञा होन्तनी या उक्त संदर्भ
७ कर्ण धात्वनेने भी आत्मनेपद प्रक्रिया अनुने नेपरे से नं नते भीये संज्ञा होगंधनादिकअर्थो विषे कल्मनेशा।
त्मनेपद होइ आत्मनेपदप्रक्रिया अनुते नैपरे कृञ्धातु परेकं दया परस्मैपद होक्रियाफल पइक नी नि।

इहोवेत्यमिने प्रतिज्ञानातेऽभीपरस्मैपदहोयानेवह धानुपरे हुंदयापरस्मैपद होवी आङ्‌परी इनानेके धानुपरे
हुंदयापरस्मैपदहो ॥ भावकर्मविषेलकारकोआत्मनेपदहोयानुनेलुकहो भावकर्मवाचीसार्वधानुकपरेहुं
दयाभावक्याकहीयेक्रियासोक्रियाभावअर्थविषेजोलकारहूयानिसकरकेअनुक्केवार्‌करीहैहृयकथ्या
नसकथनंअनुवारेचकत्वकेअभावनेभूयतेईहो दःकथनकीयेकाजोकथनहुयसोअनुवादहूकहीयेप्रथम
इस्मदकरकारयकर्त्तावाचकत्वकेअभावनेभूयतेईहां मध्यमपुरुषहृयक्रियापदभावअर्थकोकेतीहय

सामानाधिकरण्याभावात् प्रथमपुरुषः तिङ्वाच्यक्रियाया अ
द्रव्यरूपत्वेन द्वित्वाद्यप्रतीतेर्न द्विवचनादि किंत्वेकवचनमेवोत्सर्गतः
त्वया मया अन्यैश्च भूयते बभूवे स्यसिच्सीयुट्तासिषु भावकर्म
णोरुपदेशेऽज्झनग्रहदृशां वा चिण्वदिट् च उपदेशे योऽच् तदन्ता
नां चिण्वद्वांगकार्यं वा स्यात् स्यादिषु भावकर्मणोर्गम्यमानयोः
स्यादीनामिडागमश्च चिण्वद्भावपक्षेऽयमिट् चिण्वद्भावाद्वृद्धिः भवि
ता भाविता भाविष्यते भविष्यते भूयतां अभूयत भूयेत भाविषी
ष्ट विषीष्ट भावकर्मणोः च्लेश्चिण् भावकर्मवाचिनि ते परे अभावि।
अभाविष्यत अभविष्यत अकर्मकोऽप्युपसर्गवशात्सकर्मकः अ
नुभूयते आनन्दश्चैत्रेण त्वया मया च अनुभूयेते अनुभूयन्ते त्वमनु
भूयसे अहमनुभूये अन्वभावि अन्वभाविषातां अन्वभविषातां।
भ अन्वभाविषत णिलोपः भाव्यते भावयाञ्चक्रे भावयाम्बभूवे भा
वयामासे भाविता चिण्वदिट् आभीयत्वेनासिद्धत्वाण्णिलोपः भा
वयिता भाविष्यते भावयिष्यते भाव्यतां अभाव्यत भाविषीष्ट अभा
वि अभाविषातां बुभूष्यते बुभूषाञ्चक्रे बुभूषिता बुभूषिष्यते बो

युष्मदस्मदकनीकेवाचकहोयेरसवाच्छेयकार्यवाचकत्वनहीभवसिभवामिइत्यादिकाविषेजिसको
क्रियाकेतीहयउसीकोयुष्मदस्मदकेनाहृयपराकापूर्वाचकनाहृयतिङ्‌करकरखाच्यजोक्रियाहृयसोअद्रव्यरूप
हृयक्यालिंगसंख्यारहितहृयनिसकरकरद्वित्वादिकीअप्रतीतेद्विवचनादिकनहीहोनेईहांभावनत्वहृयकिंतुकी ग
क एकवचनहीहोनास्वाभाविकभूयतेइहांसर्वधानुकपरेहुंदयायकआयाआत्मनेपदहोयाइसीनरांभूयसेभूयेई
हांभीएकवचनहोयेबभूवेस्यसिच्सीयुट्तासिपरेहुंदयाभावकर्मअर्थविषेउपदेशविषेअज्झनग्रहदृश।

इ भारत्नाको चिण की न्याई होत हैं इट् भी होहै स्यादिका को भाविनाभाविष्यति इत्यादिका विषे चिण्वद्भाव नहीं होहै हो
यीय ता विषे भविता भविष्यति होये भूयते अनुभूयते अनुभूयेन भाविषीष्ट हाहि होयी भविषीष्ट झे को चिण् हो भावकर्म।
वाची ते परे हं त्वयाचिणके परे अन्ययका लुक होत्र भा विइहं गुट्ठि को चिण् होया चकार एण कार लम भये भूको हाहि होयी
तका लोप भया अभाविष्यत अभविष्यत अकर्मक धातु भी उपसर्ग वशते सकर्मक होती इयत हा कर्म विषे यक आ
या कर्म उक्त होने ते कर्मक धातु भी उपसर्ग वशते वाचक पद प्रथमान्त होता है यह अनुक्तकर्त्ता विषे तृतीया होती है

भूष्यते बोभूय्यते॥ ष्टुञ् स्तुतौ अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः स्तूयते विष्णुः
स्ताविता स्तोता स्ताविष्यते स्तोष्यते अस्तावि अस्ताविषातां अस्तो ७८
षाताम् ऋ गतौ गुणोऽर्तीति गुणः अर्यते स्मर्यते सस्मरे उप
देशग्रहणाच्चिण्वदिट् च आरिता अर्ता स्मारिता स्मर्ता नलोपः स्रस्यते
इदितस्तु नन्द्यते संप्रसारणं इज्यते तनोतेर्यकि आदेशो वा तायते
तन्यते तपोऽनुतापे च तपश्चिण् वा स्यात् कर्मकर्तर्यनुतापे च अ
न्ववतप्त पापेन घुमास्थेति ईत्वं दीयते धीयते आतो युक् चिण्कृतोः आदंता
नां युगागमः स्याच्चिणि ञिति णिति कृति च दायिता दाता दायिषीष्ट दा
सीष्ट दासीष्ट अदायि अदायिषातां अदिषातां भज्यते भञ्जेश्च चिणि लोपो
वा अभाजि अभञ्जि लभ्यते विभाषा चिण्णमुलोः लभेर्नुम् अलम्भि
पदा कर्मवत्कर्तृत्वेन विवक्षिते सदा सकर्मकाणामप्यकर्मकत्वात्कर्त्त
रि भावे च लः कर्मवत्कर्मणा तुल्यक्रियः कर्मस्थया क्रियया तुल्यक्रि
यः कर्ता कर्मवत्स्यात् कार्यातिदेशोऽयं तेन यगात्मनेपदचिण्चिण्व =
दिटः स्युः पच्यते फलं भिद्यते काष्ठं कर्मकाभ्यां प्रतिषेधो वक्तव्यः ॥
अजां ग्रामं नयति अपो विश्वमेदि भावे भिद्यते काष्ठेन इति भावकर्म ॥

यअनु भूयते आनन्द चैत्रेण भावमें ईकारांत मनेयक आया गणलोप भया बुभूष्यते इहां सन के परे यङ् आया कि
त्वनेगुण नहीं भयो बोभूय्यते ईकारान्त गुणो यङ् लुको सेप्रभ्यासको गुण होना है यक परतः अन्यको भाका धीन देख
हो नष्ट यान्त ते परे इति को विणन ही होकर्म कर्त्ता विषे च पुनः अनुताप विषे या पन करके शोक करना पु
हो भाव में लकार आया अनुताप अर्थ विषे आदंत धातु को युक का आगम होना चिणि ञित णित कृत परतः लभ ने
नुम् विकल्प ने होवि णमुल परतः जब कर्म को कर्त्ता करके कहिन की इच्छा होवे तब सकर्मकाको भी अक

में होने से कर्त्ता विषे और भाव विषे लकार होता है न कर्म में जैसे दया जो कि या है यह कर्त्ता होयाँ भी जैसे सो कि या हो वै कर्त्ता कर्म की न्याई होके कर्त्ता को कर्मवत् मन्याय कर्मात्मनेपद विषे चि चिण् होते है न जैसे से देवदत्तः फलं पच ति ऐसा वाक्य था तहाँ फल जो कर्म तद् यह सो आप ही पक दा है यह कर्त्ता वनया फलं पचति कहनाय यान व कर्मवत् कर्मणा लगा फल को ऐसा कर्म की न्याई माना नव कर्म विषे प्र कर्या या ल लट् चिण् विषे चि लाया फलं पच्यते स्वयं ऐसा वनया जैमा व विषे यक आयान व कर्त्ता विषे नी या होयी देवदत्तेन फलं पच्यते ऐसा भया इति भावकर्मप्रक्रिया

अभिज्ञावचने लृट् स्मरति बोधयति उपपदे भूतानद्यतने धातोर्लृट् लङोऽप वादः वस निवासे स्मरसि कृष्ण गोकुले वत्स्यामः एवं बुध्यसे चेतयसे इत्यादि प्रयोगेऽपि न यदि यदि योगे उक्तं नेत्यभिजानासि यद्वने अभुञ्ज्महि लट् स्मे लिटोऽपवादः यजति स्म युधिष्ठिरः वर्तमानसामीप्ये वर्तमान वद्वा वर्तमाने ये प्रत्यया उक्तास्ते वर्तमानसमीपे भूते भविष्यति च वा स्युः कदागतोसि अयमागच्छामि अयमागमं वा कदा गमिष्यसि एष गच्छामि गमिष्यामि वा हेतुहेतुमतोर्लिङ् वा स्यात् कृष्णं नमेच्चेत् सुखं यायात् कृष्णं नमस्यति चेत् सुखं यास्यति वा स्यात् भविष्यत्येवेष्यते नेह हन्तीति प लायते विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनेषु लिङ् विधिः प्रेरणं भृत्यादेर्निकृष्टस्य प्रवर्त नं निमन्त्रणं नियोगकरणं आवश्यके श्राद्धभोजनादौ दौहित्रा

३ देः प्रवर्तनम् इह भुञ्जीत आमन्त्रणं कामचारानुज्ञा इहासीत अधीष्टः सत्कारपूर्वको व्यापारः पुत्रमध्यापयेद्भवान् संप्रश्नः संप्रधा रणं किं भो वेदमधीयीय उत तर्कम् प्रार्थनायाम् भो भोजनं लभेय एवं लोट् इति लकारार्थप्रक्रिया इति श्रीवरदराजविरचितायां लघुसि

ज्ञा स्मरति बोधयति यान सर्व होवा भूतानद्यतन अर्थ विषे धातु से लृट् होवे स्मरसि कृष्ण गोकुले वत्स्यामः इहाँ लृट् आया स्म परे अंदया लट् होय यजति स्म इहाँ लट् आया लिट् न होआया वर्तमान विषे जे प्रत्यय कहे हैं ते सो वर्तमान के समीप भू तभविष्यत् विकल्प नाल होन देन दे ते मान विषे लिङ् होवि कल्प नाल इति इति श्रीपं ... सारस्वत रूप वर्द्दे कृते व्याकरण प्रकाशे भाषार्थ व्याख्या प्रक्रिया समाप्ता ॥ ॥ ॥

कृत्प्रकृदन्ताः कृत अर्थ तेयस्य सः कृदन्तः कृत प्रत्यय अन्त जिसके सो है सो कृदन्त कहीये ॥ अथ कृदन्ताध्याय

तेव्यनीयर्प्रत्ययपर्यंत जेजे प्रत्यय हैं ते सो धातुतें परे होंय इस धातुअधिकारविषे समानरूपनेरहित ।
जो अपवादप्रत्यय है सो उत्सर्गका विकल्पकरके बाधक होय स्त्रीअधिकारनो विना ण्वुल्तृच् यो इस सूत्रतें
पूर्व जे प्रत्यय हैं ते सो कृत्यसंज्ञक होंय तिङ्‌भिन्न जो प्रत्यय है सो कृत् संज्ञक होय कर्ताविषे कृत् प्रत्यय
होय इसकी प्राप्तिहोयी सो तव कहा कृत्य क्त और खलर्थ ए ए प्रत्यय भाव कर्म विषे होंय तव्यत् तव्य
अनीयर् ए प्रत्यय धातुतें परे होंय भाव कर्म विषे एधतें एधितव्यं वा एधनीयं इहां करणको

कृत्याः ॥ धातोः ॥ आतृतीयाध्यायान्तं ये प्रत्ययास्ते धातोः परे स्युः ॥
वासरूपोऽस्त्रियाम् ॥ अस्मिन् धात्वधिकारे ऽसरूपोऽपवादप्रत्यय उत्सर्ग
स्य वा बाधकः स्यात् स्त्र्यधिकारोक्तं विना ॥ कृत्याः ॥ ण्वुल्तृचावित्यतः प्राक्
कृत्यसंज्ञाः स्युः ॥ कृदतिङ् ॥ कर्तरि कृत् इति प्राप्ते ॥ तयोरेव कृत्यक्त ख
लर्थाः ॥ एते भावकर्मणोरेव स्युः ॥ तव्यत्तव्यानीयरः ॥ धातोरेते स्युः ॥ ए
धितव्यं एधनीयं त्वया भावे औत्सर्गिकमेकवचनं क्लीबत्वं च ॥ चेत
व्यश्चेतव्यश्चयनीयो वा धर्मस्त्वया ॥ अचो यत् ॥ चेयं ॥ ईद्यति ॥ आतः
गुणः ॥ देयं ॥ पोरदुपधात् ॥ ह्रस्वस्य पिति कृति तुक् ॥ शप्यं लभ्यं ॥ तक्
शसत्यं तन्यः ॥ ऋहलोर्ण्यत् ॥ ऋवर्णान्ताद्धलन्ताच्च धातोर्ण्यत् स्यात् ॥ कृ
तिशिष्ट्यः ॥ हन्यः ॥ आर्त्तः ॥ जुष्यः ॥ ऋहलोर्ण्यत् ॥ ऋवर्णान्ताद्धलन्ताच्च ण्य
त् ॥ चजोः कु घिण्ण्यतोः ॥ चजोः कुत्वं स्यात् घिति ण्यति च निष्ठायाम
निट् इति वक्तव्यम् ॥ तेनेह न गर्ज्यः ॥ मृजेर्वृद्धिः ॥ मृजो रिको वृद्धिः स्या

योग्य होवे सो पचीनव्यकही येभ विष्यत् अर्थ होया भावविषे एकवचन और नपुंसकता स्वाभाविक
होती है यकर्त्ता वाचकतव्य नीयांन होनाहय यह यनें कर्म होवे चित्यतें चेतिनं वायोग्य है चेतव्यः चयनीयः इसे तव
है
तें ईहां विनव्य आया यावट् आया यानें तें वो आयो गुण होया अनीपर् परे ऊंदयागुणहोके अप्‌होया कर्मवा
वकपदप्रयो सांतहोयकर्त्ता वाचकतव्य नीयांनहोयांनयनें धर्म एक त्र करणो योग्य है यह अर्थः अजंत ५ ५७
है यावनें यत्‌ही भाव कर्म विषे चेतिनं योग्य चेयं ईहां वियातनें यत् आया गुण होया चेयं वेये वेपानि
धातुवनदे गये यत् परे हं दया आकारको ईकार गुण होदानं योग्य देयं ईहां दानें यत् होया आकारको
है

ईकार होके गुण एकार होया इण धातु कौ इस्त्र शास्त्र सूत्र से ताते परे क्यप् होय तिन् परे ह्रस्व दया हस्व को तुक होइ
गया तौ पर तुं योग्य: इत्य: ईहां क्यप्रत्यया का कार यकार हलं तं ल शक्ता इति नाम इत भये तु कप्रत्यया किन् होने
ते गुण नहीं होया गमन करणे योग्य हो वे सो इत्य: कहीये कित परे ह्रस्व दया ल्यो तु योग्य: स्तुत्य: शास की उपधा
को इकार होय हुं परे ह्रस्व दया शास अनु शिष्य हो शासितुं योग्य: शिष्य: ईहां आकार को ईकार होया वृ तितुं योग्य: ।
वृत्तने योग्य जो होवे सो वृत्य: कहीये आदत्तुं योग्य: आदृत्य: ईहां क्यप्रत्यया तुक प्रत्यया जुष्टुं योग्य: जुष्य: जु।
षीपीषौ तव गेला नते व प्रत्य: हस्त ते नते परे ल्यप् न हो व कार ज कार को कुत्व होयि तन् ल्यप् त परे ह्रस्व दया निपातने
कर पानि हो परे ह्रस्व यो जे ती ग्रनिर्दृ यान हृ यनि सको कुत्व व कत्व हय ॥ तिसकर के ईहां नहीं कुत्व होय भ

तयोर्मार्ग्यः ॥ भोज्यं भक्ष्ये ॥ भोग्यमन्यत् ॥ इति कृत्य प्रक्रिया ॥ ण्वुल् म
तृचौ ॥ धातोरेतौ स्तः ॥ कर्तरि कृदिति कर्त्रर्थे ॥ युवोरनाकौ ॥ युवुप्रत्य।
योरनुनासिकयोरेतौ स्तः ॥ कारकः कर्ता ॥ नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्यु।
णिन्यचः ॥ नन्द्यादेर्ल्युर्ग्रहादेर्णिनिः पचादेरच् स्यात् ॥ नन्दयती
ति नन्दनः जनार्दनः लवणः ॥ ग्राही ॥ आतो युक् चिण्कृतोः ॥ आद
न्तानां युगागमः स्याच्चिणि ञ्णिति कृति च ॥ स्थायी मन्त्री पचः ॥ आकृतिगणो
यं ॥ मूलविभुजादिभ्यः कः ॥ मूलानि विभुजति मूलविभुजो
रथः ॥ महीध्रः कुध्रः ॥ इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः ॥ बुधः क्षिपः कृ।
शः ज्ञः प्रियः किरः ॥ आतश्चोपसर्गे ॥ प्रज्ञः ॥ कर्मण्यण् ॥ कुंभकारः ॥

घनौ ग निर्नु योग्य गर्ग्य ईहां ग जन ने परे ण्यत् प्रत्यया गुण होया कुत्व नहीं होया निष्ठा परे आयांसे टू धातु हृया मृज
के रक " को ह हि हो प्रत्यय परे ह्रस्व दया मार्ष्टुं योग्य: मार्ग्य: ईहां कुत्व होया निष्ठा परे ह्रस्व दया ये आनिट हृयम
त्यय ध्री वि वि भोक्तुं योग्य भोज्य कुत्व नहीं होया पालन अर्थ विवि भोग्य तिस कुत्व होया एक हस्त प्रत्यय प्रक्रि
या त ते परे ण्वुल तृच प्रत्यय होन कर्ता अर्थ विवि युवु जो अनु नासिक ह यन तिना को अन अक आदेश होन ह
धातु ते ण्वुल प्रत्यया णकार लकार इत भये तु को अक भया क को ह हि होयी कार क: सिद्ध ताते ल्यु प्रत्यया
को अन होया कर्ता प्राह्व न पाके रक दं नमन के प्राति पदिक संतास भक दं ना की होयी स्वादि क प्रत्याये क
की इत्यादि क सिद्ध होये नन्द्यादि क धातु ते ल्यु होय ग्राहादि का ते णि च हो पचादि का ते अच होइ नन्दिस मृदी।

नद्नेपरे सुप्यात्वाल्शोककारके लकारश्च न भयाउ कोऽप्यनहोयाश्च दिनोनु मकस्यें नु मुआयानंदनः
द्धोयाम्प्रद्गानौजनात् अर्दयतीति जनार्दनः मृत्यतीतियाहीतुमानीतिल्वलः ईहांत्वप्रज्ञदनेनेयुअ
युकोऽपनहोयागुणहोके अत्रहोयाआदंतधातुनेपुक् होविणकृत्परेऽदपास्याथानुनेणिनुआयामध्ये
ह्रपा ४ युक् आयापिनुशहवनयातिशनीतिस्याधीमंत्रिशमुकथनेमनूनेणिनुआयानुमुआयामं चयतीतिमंत्रीप
नेअत्वायायवतीतिपवः मूलविभुजादिकानेकप्रत्ययहोमूलानि विभुजतिमूलानूनौपदेसोमूल
विभुजः कहीयेरथकानामकिन्तुनेगुणनहीहोता महीधरतिशतिमहीध्रः एनेकप्रत्ययश्च कोयणविल
८ गाकुंधरतिशतिकुध्रः शकृत्यथयानुनेत्वमीकृथानुनेकप्रत्ययहोउपूनेकआयाउयःहोयाकम

अधिकरणे उपपदे कुरुचरः। भिक्षासेनादायेषु च। भिक्षाचरः। सेनाच
रः। आदाये ति ल्यबन्तं। आदायचरः। कृञो हेतुताच्छील्यानुलोम्येषु ७ द
योत्येषु करोतेष्टः। अतःकृकमिकंसकुम्भपात्रकुशाकर्णीष्वनव्यय
स्य। अत उत्तरस्यानव्ययविसर्गस्य समासे नित्यं सादेशः करोत्यादि
षु। यशस्करी विद्या। श्राद्धकरः। एजेः खश्। ण्यन्तादेजेः खश्। अरुर्द्विष
दजन्तस्य मुम्। अरुषो द्विषदोऽजन्तस्य च मुमागमः। खिदन्ते न त्वव्ययस्य।
शित्वाच्छबादिः। जनमेजयतीति जनमेजयः। प्रियवशे वदः खच्। प्रियं
वदः। आत्ममाने खश्च। स्वकर्मके मनने वर्तमानान्मन्यतेः सुपि खश्

यशोँउणहद्दिनहीहोतेतिपनीतिःदिपःकृशातिशतिकपाःजामातीतिमःर्त्तनोलोपःइतिचमीणातिशतिप्रि
किरःआजानातिप्रज्ञः समप्रंतपदविविकर्मणीअणञ्च्यादिकाविविवाच्यत्वकारकरास्मितनोकुंभादिक
द्वैननहाबकनोपपदहयसोउपपदसंतकहोकर्मउपदे होयाधाउनेअणहोकुंभंकरोतीतिकुंभकारःईहां
होतेअणस्थापाहद्दिहोयीआदंतथानुनेउपसर्गभिन्नउपपदहोयाकप्रत्ययहोगोदंदातिशतिगोदः कंबा
लंददातिददातीतिशतिकंबलदः अधिकरणे उप पदहोयांचरधातुनेटप्रत्ययहोकुरुषुचरतीतिकुरुचरःग
ईहांटकारइत्भयावस्तुकारमेंमिलयाहैशिवतेडीशआवनाहयकुरुचरीहोनाहैभिक्षासेनाआदायह
वंभयांचरनेटप्रत्ययहोहेतुताच्छील्यआनुलोम्यअर्थविखेकृञ्नेटप्रत्ययहोअकारनेपरेअनव्यव

विसर्गको सकार आदेश होकरो णत्वादिक परे हुँदया यशःकाकार णविद्या है अवाहकर्मशीलं यसस स्याद्दधीकार्थ पर्यवद्दयानते वशहो ग्रहश्वस्तुअनं तकोनुम्का आगम हो वि दं णपरे हुँदया अव्ययको नहीं होणीव नेशपृह्वोपनिने विशर्धवायात्वपाकसे वकार र तमयाद तें त्यसे शकार हत्तू भयायुगम्भयाअ हो यजन्ना कपरे मुमभया जनमे जयः सिद्ध होय वशहर्व को घांवरते पूर्ण हो प्रियंवद गर्भीलवसस: प्रियवद: सकर्म कमनना विविध नेमान हाजो मनुयान्तु है तिसने विशहोनु श्वपूर्व होयां वकार ते णि नि हो या ततु नेम निपा दिक होनव शादिक कृत को इट् नहीं हो शोभनं भूणाति इति सुशर्मा ई हुंआ नेमनिच्या याश्वन् रतमयाश्व कोगुण भया भूटन हीञ्ञायाशात: प्रातिगच्छति इति प्रातरित्वा ईहुआ कृ निवृक्षा या गुक भया याप्ति व ते गण

वा णिनिः पण्डितमात्मानं मन्यते पंडितंमन्यः पंडितमानी अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते मनिन्क्वनिब्वनिपो विच्च धातोः स्युः नेड्वशि कृति वशादेः कृत इड् न स्यात् शृ हिंसायां सुशर्मा प्रातरित्वा विड्वनो रनुनासिकस्यात् अन्नासिकस्याऽऽदिति विजायते इति विजा वा ओण अपनयने अवावा रोट् रेट् सुगण क्विप् च अयमपि दृश्यते उ खास्रत् पर्णध्वत् वाहभ्रट् सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये अजात्यर्थे सुपि उपपदे णिनिस्ताच्छील्ये उष्णभोजी शीतभोजी मनः सुपि मन्यतेर्णि णिनिः दर्शनीयमानी पंडितमानी खित्यनव्ययस्य ह्रस्वः कालिंमन्या अ व्ययस्य तु दिवामन्या करणे यजः करणे उपपदे भूतार्थे यजेर्णिनिः क र्तरि सोमेनेष्टवान् सोमयाजी दृशेः क्वनिप् कर्मणि भूते पारं दृष्टवान्

नहीं भयाँ ईसकार के नकार को आकार भया है अवावा ई हुंआ ओण ने परे वनिप् आया णकार को आकार भया ओकार को आव आदेश भया दीर्घ भया अवा णतिः इति अवावा रोट् वनि: इति रोट् हुंआ इति रेति रेट् ईहुंआ विश्वा या स्वेगणायनि इति सुगण भया नलोप ङि ३ भी रेपी ढाहे ३ भयाः संसते इति उखास्रत् पर्ण ध्वंसते इति पर्णध्वत् ईहुंआ क्विप् आया नलोप भया वस्तु त्व सकार केदात्व भया वाहं भ्रंसते इति वाहभ्रट् ईहुंआ भ्रम से षत्व भया नत्व भया स्वपूर्व हो यां अजाति अर्थ विरवे घातु ने णीन् हो ना छील्य घोतन्य होयां ॥

श्री० सु० सि० कौ० पत्र १७८ कौ० टी० पृ० ७८

उत्तं भोक्तुं शीलं यस्य स उष्णभोजी तस्य प्रश्न वैषी होयां मनुष्यनेभी णिन् होय ऊिनं मानिनं शीलं यस्य सः पंडित
मानी णिनि विर्द न परें इंद्र यामन प्रत्यय को हस्व होता समस्त न उपपर्व होणा धातु नें ङप्रत्यय होरि. काम्रत्तुकहैसर सि
नेर्ई हंतु के अर्थ याँ विलोप भ याउपसर्ग हवं हौवियांसं ज्ञाविवे धातु नेकुहो प्रकर्षे णजाय ने इ विग्रह क्त व
तु विधूसं हकहोन भूताथी विविहाच्चि नो धातु हैनि सतेदरे निष्ठाप्रत्यय हो कर्ता विविक्तवत् भावकर्म। तौ
विविक्त प्रत्यय हो कर्ता विविक्तवत् हो अस्यापि इति सातें ईहां स्वा धातु ने भाव विविक्त प्रत्यय आया है अ
स्या विइ ति सूत्रनः ईहां कर्म विविक्त है विष्व अकृत इति विष्व क्तवान् ईहां कर्ता विविक्तवतु आया है २

यारद्ध्या राजा निष्ठुषिक्त नः क्त निष्ठ दुर्थें नभा वित णर्या: राजानं
यो दीन वान् राजनष्ट धा राजहत्वा स वेदमत्त उपास द्वत्वा सम
नुनेई: नमुहषेक्त निवरूलं डेर ल कृ स रा सिजं सरोज उपसर्गेन सं
क्तकवन्तु ष्ता यां मूत्या निष्ठा पनो निष्ठा सं तो न्न: निष्ठा भूताथे हच्चे थी तो निष्ठा
स्यान् नत्र नपो रे वेति भावकर्मणो क्तः कर्त्तरि क्तदिति कर्त्तरि क्त वा
ना तुः स्नाने मयात्लु न स्यपा विसो विस्व विष्य क्तवान् रदाभ्यां निष्ठातो
नः पूर्वस्य च दः रदाभ्यां परस्य निष्ठा तस्य नो निष्ठा पेत्याया एवं स्यथा
नः नो ईस्य च कृतर श्हानोर ति शी र्णः भिन्नः संयोगादेरातो धातोर्यण्वा
नः यण्वनः संयोगादेरातं नात् निष्ठा तस्य नः ग्लानः स्नानः ल्वादिभ्यः
प्राग्वत् लून: हादिज्याद लं श्रोगावयवाद् लभ्यर्य तस्य संप्रसारणं तन
तस्य गस्य दीर्घ: जीनः ओदितश्च निष्ठा या इदून स्यानू प्राग्वत् नू भुग्नो
भुग्न: ओश्चि ष्वी दितो निष्ठायां स्य पनेरी दित स्तुया नो निष्ठा पार उ

कार ह कार में परे निष्ठा का तीन कार है निस को न कार हो निष्ठा के एवं धातु के दकार को भी नकार हो प्रधात
१० ने ल आयाकार को भे ये दीर्घ भया नकार को नकार भया अर्थांरि इति इति शीर्णः अभेदि इति भिन्नः ईहां त
कार को नकार भया दकार को भी नकार भया यण्वन् संयोगादि कआदं नजो धातु है निसकांते परे निष्ठा
के तकार को नकार हो अद्वापि इति ग्लाणः अस्यापि इति ग्लानः ल्वादिकाने परे निष्ठा के तकार को नकार होय
लवि इति लूनः श्रोगावयव हल् ते परे जो संप्रसारणा तिस्के अंद लाग्रगको दीर्घ होय ज्यापि इति जीनः ईहां
य कार को इकार संप्रसारण भया इकार को दीर्घ भया उकाच पुनः दीर्घ होय दभवि इति दूनः भाग विइ.

धातो

ग्रहिज्येति स
प्रसारणं हलः

शिवु नः ऊठ् दिः ऊते परे निष्ठाको र इत्यनहीहोय भोजिरिति भुग्नः स्थाप्यापिरिति स्यूनः चक्राणः चक्रवान् ऋ उ इते परे नकारको
ककारहोऽपगोदिरिति शुष्कः पचुते परे तकारको वकार हो अपाविरिति पक्वः क्षै इते परे तकारको मकार होऽपत्ता पिरिति क्षा
मः ऊठ्मिपातनेहोनाहैयाकोदिति तोतादिक परें इत्यात्रु संतक दाकोदइ हो तादिकाकिन् परें इत्या लिट्को कानच्चच
प्रनः क्वसुहो विकल्पनेकरोतिस्म चकार वा इति चक्राणः ईहां लिट्को कानच्च भयाञ्चक्रे हि वेना दिभये वक्रवान्

क्षामः

मू॰ नस्यात् स्यूनः । गाति ह्वेञ् शुषः कः । निष्ठातस्य शुष्कः । पचो वः । क्षायो मः । यस्य पक्वः
विभाषा यस्य क्वचिद्देहिदिर्नस्मृतं निष्ठायामिडन्स्यात् शमे हैस्तयेनिष
यासेदिणोर्लोपः भावितृवान् ह ठ स्थूलबलयोः स्थूले बलवतिका
पनिपातनं ॥ दधातेर्हिः तादौ किति हितं दोदद्घोः । दत्तः । कस्या
इत्यस्य दद् तादौ किति चत्तं । दत्तः । लिटः कानज्वा । क्वसुश्च । लिटः कान
च्वसु वा स्तः । पचो ऽन्वानं गवानूलटः शतृशानचावप्रथमासमाना
धिकरणे । अप्रथमान्तेन समानाधिकरणे लटः पचौ वा स्तः । लौसन्तौ
शतृशानचौ सत् संज्ञौ स्तः । घवादिः पचन्तं चैत्रं पश्य पचमानं चैत्रं प
पश्य लडित्यनुवर्तमाने पुनर्लड् ग्रहणात् प्रथमासमानाधिकरणे
पि सन् तौ सत् तौ शतृशानचौ सत्संज्ञौ स्तः । लृटः सद्वा । करिष्यन्तं
करिष्यमाणं पश्य जल्पमिश्रका हलटहड ः पाकन् । षः प्रत्ययस्य प्रत्य
यादिषः इत्यत्र स्याकः समानांशं समिलडः पिपठिषुः आजभासधुर्वि
द्युतोर्जिपॄजुग्रावस्तुवः क्विप् विभ्राट् भाः । राल्लोपः । धूः विद्युत् ऊर्क् पूः
दृशाग्रहणस्यापकर्षाज्जवतेर्दीर्घः ज्यूः ग्रावस्तुत् । क्विब्वचिप्रच्छ्या कौ॰
यतस्तुकटप्रुजुश्रीणां दीर्घोऽसंप्रसारणं च । वक् । जौति वा कः छोः शूड् अनु

इहां क्वनस्या या नुमादिस्थायेल ट्को शतृ शानच् हो न अप्रथमासमानाधिकरणे विवेयपचनीति पचन्तं पचन्तं
चैत्रं पश्य पचतीति पचमानः सन्ः लृट् ग्रहणाने प्रथमा समानाधिकरणे विविभीशतृ भया अस्तीति सन् ईहां
अस्तेपरे लृट्को शतृ हो या नुम् आया अ सो रह्लोपः भया जल्पमित्त का हलटहड इनाने परे षाकन् हो ना छीला
विविधि प्रत्यया दिष कार इत्न होजल्पमिनशीलः जल्पाकः इत्यादि सन् आशंसमिलड इन ने परे उ हो ए ठि तं रह्वती

नपीलः

तिपिबतिष्ठः इत्यादि भ्राजादिकाने परे क्विप् इतो विभ्राजमीति विभ्राट् नपीलः इति जूः ईहा दृषत्के ष्यप कर्मणा सा
णो मध्यमे दीर्घ भयाव च्चादि को दीर्घ इत्यसंप्रसारणं जवनीति जूः अतः क्वीत्या यालेजू ईहा है ॥ ककवनुनि
ष्ठासंतकहोन भ्रनस्वर्थ वि विवक्षौ थानुने निपात्यहो भाव कर्म वि विवस्त्राशे चेभ्यस्त्राश्नेरतिस्नानमयने
५ स्नानकीयाद इति मूलतु नो ल्लनः ईहा कर्म वि विक्रभ्याया इत्यनयने विस्तुत्तनकीनाद यकर्त्रीवर्ग वि विक्रव
...नयहो विसंक्रतवान् ईहा कथानुने क्र वनूभ्रा याक्तल्लष्य स्रावनमह चरइनाने इत्यप्रत्ययहो गणहोया

८ नासिके मनुष्यत्व सचक्रमान् पा ३ ऊ पनावादेशो स्नोनुनासिके
कौ फलौ दौ फलादौ च क्विति ह्वति प्राह्वायनस्नौ ति भ्रायतनस्नुः क
इत्यवते कटपूः ... अपतिहरि श्रीः ... मृपुजल्लु नदास
सिच ... यति ... नहः करणे दावादेशनु कर्णे येदात्वमेन दार्वं
नदार्वंनेत्रं । अ ... वन्सह चरस्त्रः श्रीवेत्र इत्यादि ... वापीजि
मि स्वादि सा ... करोतीति कारुः वायुः पायुर्गहं जायुरो षधं
मायुः पित्तं स्वादुः साधुः आशु शीघ्रं उणादयो बहुलं । वर्तमाने संज्ञा
यां उणादयः स्युः केचिदविदिता अप्यूह्याः संज्ञासु धातुरूपाणि
प्रत्ययाश्च ततः परे कार्याद्विद्यादनूबंधमेतच्छास्त्रमुणादिषु । समय
एलौ कियायां क्रियार्थायां च संपूर्णयाति काल समय वेला सु तु ।
मन् कालः समयो । वेला याभो ... भावे सिद्धावस्थापत्रे थाल्व एव था
नो ... पाकः ... कारके च संज्ञायां चु ... भावकर्मणोः
॥ रंजेर्नलोपः रागः अनयोः किं रंजत्यस्मिन्निति रंगः निवासविति

अनेन ... यायथा ... नानि ... नेन लवित्रं यवित्रं सवित्रं खनित्रं सहित्रं मयेपम्नेमीत्व ... पवित्र
भयाक्रयात नेवाया जिमि स्वादि साध्य ... रनाने उणप्रत्ययहो कर्त्री विवि करोतीति कारुः ईहा उण्प्रत्यया
को हद्विहोयी वाने उणप्रत्यया आनो ... या वातीति वायुः जयति रोगं जायुः मिनोतीति मायुः स्वदतीति स्वा
दुः साध्नोति साधुः अश्नोति आशुः उणादिक वर्तमान विधि वि ... संज्ञा विधि व बहुल से होन के पीअ ... नप्र
व योगभीयानु प्रत्ययस्थ्येय व कल्पनातेजा ... सिद्धकरणे संज्ञा विधि कि सेनाम्न वि धिया ... रूप कल्प ।

१ कायवरेप्रत्ययकल्पनाकरणाजिसगौलकायोगवनानाहोवेकार्यनेअनुवंधनानन्नाहदिकरणीहोवेतनवणि
तृकिन्प्रत्ययस्वनाहुदिगुणनहीकरणाहोवेनाकिन्डित्प्रत्ययकरणडणादिगणविविधेरीतिहय सि
द्धावस्यान्नहायमहोयाहोवे यानर्थनिसवाच्यहोयायानुनेअन्होपचानेपचनंवापाकःपचनेअन्माया
ऋत्तअपघापाअदिहोयीवजोःकुधिणपनोःकरकेंहोयायानुनेतुमुन्एवुलहोनाकियार्थकक्रियासदेहोया कुन
अन्परेऊंदयांजकेनकोरकालोपहो इवर्णांतथानुनेअपहोभावविवेचीयनेचपनंवाचपःविकोगुण।

ना अयरोक्षणायाथानेषादेशः पञ्चविनोनेर्घञ् आदेश्च कः । उपस
माधाने राशीकरणे निकायः । कायः । गोमयनिकायः ।
ना एरच् इवर्णान्ताद् अच् । चयः । जयः । ऋदोरप् । ऋवर्णाद् उवर्णान्ताद् अप् स्या
त् । करः । पवः । लवः । यत्रणैकविधानं प्रस्तथः । विग्रहः । ड्वितः क्त्रिः ।
क्त्रेर्मम् नित्यं निवृत्तार्थे पाकेन निर्वृत्तं पक्त्रिमं डुवप् उप्त्रिमं ट्वितोऽथु पू ३
च् । टुवेपृ वेपथुः । श्वयथुः । यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षो नङ् ।
यज्ञः याच्ञा यत्नः छ्वोः शूडनुनासिके च मान्तस्य स्वप्नस्य व
स्य वकः मान्त शकुण्ठ यतो स्नः क्वावनुनासिके फलादो ङ्कि नि
व विश्नः प्रश्नः रक्ष्णः । स्वपो नन् । उपसर्गे घोः किः । प्रधिः । उ
पाधिः । स्त्रियां क्तिन् । स्त्रीलिङ्गे भावादौ क्तिन् स्यात् घञोऽपवादः । कृतिः ।
स्तुतिः । ऋल्वादिभ्यः क्तिन्निष्ठावद्वाच्यः । तेन नत्वं । कीर्णिः । गी

होकेअपहोयापोमिलयाजीयनेजयःऋवर्णानउवर्णानतनेअपहोभावविविकीर्यनेकरःपवलेयवः
लवनेलवःइनकोगुणहोयाअवहोया यत्रणैविविकविधानहैदिन्नेक्त्रिःहोदिकोमम्होनिवृत्तअर्थ
विवेद्विरनकोथुच्होथमादिकानेनङ्होमनुकछकारकोचपनःवकारकोक :ऊठ्आदेशहोन।
हिपअनुनासिकफलादिककितङितपरेमेंदयाविश्नःप्रश्नःईहांविच्छप्रच्छकेछकारकोशकारभ।
वगापाःचपनेनन्उपसर्गउपपदहोयाघुसंज्ञकानेकिप्रत्ययहोउपाधीयतेइतिउपाधिःईहांयाकेपरे।

क्रियाया अकार इत्यर्थः आतो लोपः भया ह्रीलिंगविवेक्षा भावादिकर्थयोर्विवक्षितेन्नास्तितस्यापवादेत्ते क्रि
यते इति कृतिः स्तूयते इति स्तुतिः क्त्यादि कान्ते परे क्तिन् निपातनं वक्तव्यसै तिसमेत कारणे कारभयाशी
र्यते इति गीर्णिः अत्र नत्वं भयासंपदादिकान्ते क्विप् इत्यादिकं निपातनेदेत्तेह संज्ञेयं पृष्ठोक्तं संज्ञाप
त्ययदेवकारनेक्तिन्नदेहके परे आयाश को सार्वधातुकमन्त्रके यकआयाति कशयककारके क्त कोरि

गीर्णिः लूनिः धूतिः ग्लानिः संपदादिभ्यः क्विप् संपत् विपत् क्वि
न्नपीष्यते संपत्तिः विपत्तिः आपत्तिः ऊतियूतिजूतिसातिहेति
कीर्तयश्च एते निपात्यन्ते कृञः श च क्रिया चात् क्तिन्
क्रिया कृतिः इच्छा अ प्रत्ययात् चिकीर्षा गुरोश्च हलः गुरुमतो हलन्ता
त्स्त्रियाम प्रत्ययः ईहा एधा ससंयोगस्तु अस्यापवादः कारणा
रणा आसनो श्रन्थना वर्णात्कारः ककारः नपुंसके भावे क्तः
हसितं हसनं तुमिसंस्थायां वः प्रायेण कादेर्विभक्तुपसर्ग
हीनस्य द्विभक्तुपसर्गहीनस्य कादेर्देः स्वो हेर्दने ह्वरः अवतस्तो
र्नेश्च वन्तः अवस्तारः जयनिकाहलश्चहलेनाकृच्छ्रः रमंते
योगिनो अस्मिन् इति रामः अपमृन्यते अर्थासिक अपमार्ग
गः ईषद्दुस्सुषु कृच्छ्राकृच्छ्रेषु खल् भावकर्मणोः कृते ईषत्करः
कर्तो भवता कृच्छ्रे ईषत्करः सुकरः आतो युच् ईषत्पानः सोमो भ
वता दुष्पानः सुपानः अलंखल्वोः प्रतिषेधयोः क्त्वा दोस्तेषो
अलंदत्वा समानकर्तृकयोः पूर्वकाले क्त्वा समानकर्तृकयोः धात्व
र्थयोः पूर्वकाले विद्यमानात् धातोः क्त्वा भुक्त्वा व्रजति द्वित्वमतंत्रं स्वा।

इः भया क्रियते या सा क्रिया सिद्ध भया इच्छा ईहा इत्युगमोक्षः भया ... ईहासनं ततेः अत्र व्ययस्यायाहे
गुरुमान् हलंतधातुनेभ्यः प्रत्ययदोईहा भयाएंतव्यापादश्रेयइनमेषु च लेउ को भवन भयाकार णान ठुंस
कविविभावमर्थविविक्तलोव पुनः स्तुत्तो विशेषकरके लिंगविविवत्तो दंतानक्त्वादवतिहितदंतव
दः अव सर्वकतल्कोपरेषुत्तोहल्यंतानेवत्तोईषत् डसउपपदेयाक कृच्छ्राकृच्छ्रार्थाविवेर्ष
कारः ईहा खल्यायायादंतानेघृत्तो ईषत्पानः ईहंय च आयायक्षोअनहो याअलंखल्पूर्वहोयाधा
को ख त्वतो

द्विवचनकथनयोग्यनहीं इसतें अनेकपदार्थभी एवं होवनतबभीकाम्आवनाहयस्मात्भुक्तापीत्वाव्रजतिअव्ययपूर्वंहोयानञ्भिन्नसमासविवेक्त्वाकोत्वपश्चादेशहोतुकहोप्रकाश्यईहांप्रहत्वासंतहांक्त्वाकोल्यपहोयाईहांउपसर्गहवंदयनञ्समासनहींत्वकारपकाररतभयेतुकयायाहूस्वस्यपितिकारकेवारंवारअर्थजहांप्रकाशहोवेतिसविवेक्त्वा।ेपयविवेणमुलहोआभीक्ष्ण्यविवेवीप्साविवेपदकोद्वित्वहोआभीक्ष्ण्यतिङंताविवेवउनःअव्ययसंस्कृतदंताविवेहोताहय स्मृथानुतेणमुलक्त्वायाउहकरकेणकारइतभयाहलंतंकरकेत्वकारइतभ

समासेनञ्पूर्वोक्त्वोल्यप् अव्ययपूर्वपदेनञ्समासेक्त्वोल्यप् नुकृमत्यकृत्य आभीक्ष्ण्येणमुलच पौनःपुन्येद्योत्येक्त्वाविषयेणमुलक्त्वाचनित्यवीप्सयोः आभीक्ष्ण्यवीप्सायांचद्योत्येपदस्यद्वित्वआभीक्ष्ण्यतिङनेषुअव्ययकृदंतेषुच स्मारस्मारंनमतिशिवंस्मृ॥
त्वास्मृत्वापायंपायं भोजंभोजं श्रावंश्रावं अन्यथैवंकथमित्थंसुसिद्धा।
प्रयोगश्चेत् एषुकृञोणमुल्स्यात्सिद्धअप्रयोगोयस्यस्यार्थत्वात्प्र।
योगानर्हः इत्यर्थः अन्यथाकारंकथंकारंइत्थंकारंभुंक्ते
सिद्धैतिकिं शिरोन्यथाकृत्वाभुंक्ते इतिकृदंतः प्रातिपदिकार्थ
लिंगपरिमाणवचनमात्रेप्रथमाप्रातिपदिकार्थमात्रेलिंगमा।
त्रायाधिक्येसंख्यामात्रेचप्रथमास्यात् प्रातिपदिकार्थमात्रेउच्चै
नीचैः कृष्णः श्रीःज्ञानंलिंगमात्रेतटःतटीतटंपरिमाणमात्रेद्रो
णोव्रीहिः वचनंसंख्याएकःद्वौबहवः संबोधनेच हेराम हे

याउपदेशेजनकरकेउकारइतभयाअमसेअरहास्मकोवृद्धिहोयीआवृस्मारंसिद्धहद्वित्वहोयास्मारंस्मारंनमतिशिवंस्मरकरकेवारंवारशिवाकोनमस्कारकरतादहयपकहेरक्त्वाहीआयाद्वित्वहोया स्मृत्वास्मृत्वाजया।तिणेवंअन्यथाएवंकथंइत्थंइनकेपूर्वहोयांकृञ्धातुतेणमुलहोअन्यथाकारं इत्यादिविवेकृञ्नेणमुलआयावृद्धिभयीअन्यथाकृत्वाईहांसिद्धवस्तुजोशिरहैतिसकेयोगहोयांणमुलनहींआया इतिकृदंताः
अवकारकाविवोदेहैनकिनामकारकतंक्रियान्वयित्वंकारकत्वंक्रियाकरकेजोयुक्तहोवेसोकारककहीये॥
कृतिकारकानिकितनेकारकहैनअर्थषट्कारकहैनकर्ताकर्मकरणसंप्रदानअपादानअधिकरणयेषट्हैनसंबंधषष्ठीविवेषष्ठीहोतीहयप्रातिपदिकार्थमात्रविवेलिंगमात्रविवेपरिमाणमात्रविवेसंख्यामात्रविवेप्रथमाहोतिनियतोपस्थितिकःप्रातिपदिकार्थः जिसशब्दकेउच्चारणकीयानियमकरजिसअर्थकोकहीनाहयउच्चैः।

नीचैः इनाम्रव्ययाकी प्रातिपदिकार्थ विषे प्रथमा है यहाँ सः श्रीः ज्ञानं इहाँ भी प्रातिपदिकार्थ विषे प्रथमा है यह नाके उच्चारण की नियावासुदेवादिअर्थ बोध होता है यथा तटः तटी तटं इहाँ लिंगमात्र विषे प्रथमा हय यथा इहाँ भी प्रातिपदिकार्थ हय नौ भी प्रातिपदिकार्थ पासो त्रिलिंगत्व विशेष हय द्रोणो व्रीहिः इहाँ परिमाण विषे प्रथमा हय इहाँ प्रातिपदिकार्थ विषे जे प्रथमा होती न वद्रोण मिश्रो व्रीहिः ऐसा अर्थ होता परिमाण विषे परिच्छेद्य परिच्छेदक संबंध वनयां इहाँ व्रीहिः जाति विशेष कवचन है एकः द्वौ बहवः इहाँ संख्या विषे प्रथमा हय जे कोई कहे एक एकवचन वाचक द्वय द्विवचन वाचक हि शाह बहुवचन वाचक बहुशब्द हय प्रथमा होवेगा संख्या न हण कि सवाले है उक्तार्थानामप्रयोगः कथित अर्थवाला या का प्रयोग नहीं होता न एकादि कोई इहाँ अन्वादिक विभक्ति हय हे राम इहाँ संबोध विषे प्रथमा हय ॥ आगे कारकपदका अधिकार हय

रामौ हे रामाः हरिनिष्ठ कर्मणो निरूपितं तच्चेत्थाने कोस्ता।
वाच्छिन्नदेवदत्तोपयकी प्रीत्युनात्वनुह्णलोस्थापोढः कर्तु
रीप्सिततमं कर्म कर्तुः क्रियया प्तुमिष्टतमं कारकं कर्म सं।
ज्ञं स्यात् कर्मणि द्वितीया अनुक्ते हरिं भजति अभिहिते तु
कर्मादौ प्रथमा हरिः सेव्यते लक्ष्म्या सेवितः हरिः ॥
दुह्याचपचदंडरुधिप्रच्छिचिब्रूशासुजिमथ्मुषां कर्मयु
क् स्यादकथितं तथा स्यान्नीहृकृष्वहां गोशेषिधपः बालिं।
याचते वसुधां तंडुलानोदनं पचति गर्गान् शतं दण्डयति व्रज

उत्तरोत्तर संबंधः अधिकारः आगे आगे जिस पद का संबंध होता हय सो अधिकारी कारक ही दाहे कर्ता को क्रियाकर के प्राप्त होने को जो इष्टतम कारक हय सो कर्म संज्ञक होइ अनुक्त कर्म विषे प्रथमा होइ अनुक्त कर्म विषे द्वितीया होइ जे कर्म विषे लकार होवन न वक कर्म वाचक पद प्रथमान्त होता हय जे कर्म विषे लकार होवन न वक कर्म वाचक पद द्वितीयान्त होता हय देवदत्त कर्त्ता को भजन क्रिया करके प्राप्त होने को इष्टतम कारक हरि हय तिसकी कर्म संज्ञा भयी तदा ॥ द्वितीया भयी अपादानादिक जो विशेष संज्ञा है तिनो कर के अविवक्षित जो कारक हय सो कर्म संज्ञक होइ दुह्याचरन्यादिक हि कर्म कथन है इनो धातु के अर्थ से भी हि कर्म कहता है अनीप्सित भी कर्म संयोक होता है अन्नं भक्षन विषं भुंक्ते उद्देश्य कोयो। गण को भी कर्म संज्ञा होती है काशीं गच्छति नगरं कर्तृकृत कर्म विषे प्रथमा होयी हरिः सेव्यते इहाँ कर्म विषे यक् आया हय लक्ष्म्या सेवितः हरिः इहाँ क्त प्रत्यय का प्रयोग है।

अन्यपदकर्म विविध्याथा इयस्तस्मा हरिहरै इहांकर्मविषे प्रथमा होयी स्वतंत्रः कर्त्तारी चौके कहा है कि यासिद्ध विषे
जो प्रकृष्ट उपकारी कारण इयसो करण संज्ञक हो रामेणा वाणीन वालीहमर्डहां वाणानो विना वालीन हीमारया
जानायारसवास्ते वाण बडाभारी कारण इय उसकी करण संज्ञा भयी न हांतृतीया होयी कर्त्ता विषेभी तृतीया हो
१० यी रामने वाणानासवाली मारहै ये अर्थ होयादानके कर्म करके जिसन्तृ उद्देश करे देनकी इच्छा करे सो संप्रदानसं
ज्ञक हो अनुक्त संप्रदान विषे चतुर्थी होवि प्राय गांददाति इहां देश का कर्म गौ इय तिसके देनकी इच्छा विप्रको।

जमवरुणद्धि गां माणवकं पंथानं पृच्छति वृक्षमवचिनोति फला
नि माणवकं धर्मं ब्रूते शास्ति वा शतं जयति देवदत्तं सुधां क्षी।
नि रनिधिं मथ्नाति देवदत्तं शतं मुष्णाति ग्राममजां नयति हरति कर्ष। प
ति वहति वा अर्थनिबंधनेयं संज्ञा बलिं भिक्षते वसुधां माणव २
कं धर्मं भाषते अभिधत्ते वक्तीत्यादि साधकतमं करणं क्रिया
सिद्धौ प्रकृष्टोपकारकं करणसंज्ञं स्यात् कर्तृकरणयोस्तृतीया
अनभिहिते कर्तरि करणे च तृतीया स्यात् रामेण बाणेन वाली हतः
कर्मणा यमभिप्रैति स संप्रदानं दानस्य कर्मणा यमभिप्रैति स संप्र १०
दानसंज्ञः स्यात् चतुर्थी संप्रदाने अनुक्ते विप्राय गां ददाति क्रि
ययायमभिप्रैति स संप्रदानं पत्ये शेते नमःस्वस्तिस्वा।
हास्वधालंवषड्योगाच्च चतुर्थी हरये नमः प्रजाभ्यः स्वस्ति
पितृभ्यः स्वधा अलमिति पर्याप्त्यर्थग्रहणं तेन दैत्येभ्यो हरि प
रलं प्रभुः ध्रुवमपायेऽपादानं अपायो विश्लेषस्तस्मिन् साध्ये ध्रु

फ करता इयसो संप्रदानसंज्ञक होया नत्र चतुर्थी भयी क्रिया करके जिसन्तृ प्राप्त होवे सो भी संप्रदानसंज्ञक हो
पत्येशेते इहांशयन क्रिया करके पतिन्तृ प्राप्त स्त्री होती है ये विषे चतुर्थी नमादियोग विषे चतुर्थी हो। नि
अपाय नाम विश्लेष इयविभाग इयसो साध्य होयां ध्रुव जो रामस्व अवधिभूत इय सो अपादानसंज्ञक हो अपादा
न विषे पंचमी होया ग्रामादायाति इहां ग्राम में ... का विभाग होता इय तिस विषे ध्रुव अवधिभूत ग्राम इय त।
हां पंचमी भयी कि दरेश्व ध्रुवका विषे भी पंचमी होती इय कहायावतोधावदयनन इहां अश्व से पंचमी होती इह
नेप

शेषविशेषणी होउक्तादन्यः शेषः विभक्ताके जे रे कर्म अर्थ हैं तिनातें जो भिन्न होवे सो शेष कहीये तिस वि
शेषणी होइ ता तो भिन्न संबंध अर्थ इय संबंध या विशेषणी हो कारकप्रातिपदिकार्थ तें रहित स्वस्वामिभाव
की आदि लेकर जो संबंध है यंत्र षष्ठी होसत्तः पुरुषः इहां राजा का पुरुष का संबंध इय तहां षष्ठी होयी
षष्ठी विशेषणते होती इय नवकर्मादिकाको भी संबंधमात्र के कथन की इच्छा होवे तिस विशेषणी ही
होसत्क्रियाने सेवा का त्याग नतान्तनीया के स्थान षष्ठी भयी सतां गतं मया मातरं स्मरति वाक्य यान्तहां भी

वमवधिभूतमपादानं। अपादाने पंचमी। ग्रामादायाति। धावतो
ऽश्वात्पतति। षष्ठी शेषे। कारकप्रातिपदिकार्थव्यतिरिक्तः स्व
स्वामिभावादिसंबंधः शेषस्तत्र षष्ठी। राज्ञः पुरुषः। कर्मादीनाम
पि संबंधमात्रविवक्षायां षष्ठ्येव। सतां गतं। सर्पिषो जानीते। मा
तुः स्मरति। एधोदकस्योपस्कुरुते। भजे शंभोश्चरणयोः। फला
नां तृप्तः। कर्तृकर्मणोः कृति। कर्तरि कर्मणि च षष्ठी कृ
त्सप्रकृतिः। जगतः कर्त्ता कृष्णः। आधारोऽधिकरणं। कर्तृक
र्मद्वारा तन्निष्ठक्रियाया आधारः कारकमधिकरणसंज्ञं स्यात्।
२ सप्तम्यधिकरणे च। चादूरान्तिकार्थेभ्यः। औपश्लेषिको वैषयिकोऽभिव्याप
१ कश्चेत्याधारस्त्रिधा। कटे आस्ते। स्थाल्यां पचति। मोक्षे इच्छा॥
ऽस्ति। सर्वस्मिन्नात्मास्ति। वनस्य दूरे अन्तिके वा। इति विभक्त्यर्थाः॥
तत्र समसनं समासः। सः पंचविधः। विशेषसंज्ञाविनिर्मु

मातुः स्मरति होया एधोदकं उपस्कुरुते यान तहां एधोदकस्योपस्कुरुते होया भजे शंभोश्चरणौ यान शंस
भजे शंभोश्चरणयोः फलैः तृप्तः यान तहां फलानां तृप्तः मयाकृ योग विवेक कर्ता विवेचयुतः कर्म विशेष
णी होय कृत्सप्रकृतिः इहां कृत्सेन कृतिः सर्व यान कृत्सेन इन्यके कर्ता विशेषणी होयी जगतः कर्त्ता कृष्णः
इहां जगत् कर्त्ता यान तहां जगतः षष्ठी कर्म विशेषणी होयी कृत् योग इय कर्तृ कर्म विशेषणी होयी कर्ता योग इय कर्त्
कर्म द्वारा कर्त्ता के निष्ठ क्रिया का जो आश्रय इय सो अधिकरण संज्ञक होय अधिकरण विशेष सप्तमी होय तब कालेत्

रसमीपादिकाकेयोगविवेभीहोयआधारत्रयप्रकारहाहय औपश्लेषिकवैषयिकअभिव्यापिकभेदकरके कटेआसनेईहांदेवदत्तहाहादेवदत्तनिष्ठजोस्थितिक्रियाहयतिसकाआधारकटहयतेसविवेसमीपहोयी उपश्लेषविवेसंयोगविवेस्थासोपश्लेषनिमंद्रूलान्रईहांकर्मद्वाराधाकक्रियाकाआधारस्थालीवतलदोयीहय तहांसमीपहोविषयविवेमोक्षेरच्छास्तिईहांभीविषयसमीपहोयीसर्वस्मिन्नात्मास्तिईहांअभिव्यापकसमीपहोयीवनस्पहर्ईहांसमीपहअनेकविविहोयी इतिविभक्त्यर्थाः अथसमासः पदाकोविभक्तिलोपकरकेजोएकीकरणहयसोसमासकौहीये सोसमासपंचप्रकारकाहयकेवलअव्ययीभावादिक पंचहैतिनाकेलक्षणयेहैनविशेषसंज्ञाकरारहितजोसमासहयसोकेवलसमासहयप्रथमविशेषक

तः केवलसमासः प्रथमः प्रायेणपूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावो द्वितीयः प्रायेणोत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुषस्तृतीयः तत्पुरुषभेदः कर्मधारयः कर्मधारयभेदो द्विगुः प्रायेणान्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिश्चतुर्थः प्रायेणोभयपदार्थप्रधानो द्वंद्वः पंचमः समर्थः पदविधिः पदसंबंधी यो विधिः स समर्थाश्रितो बोध्यः प्राक्कडारात्समासः कडाराः कर्मधारये इत्यतः प्राक् समास इत्यधिक्रियते सह सुपा सुप् सुपा सह वा समस्यते समासत्वात्प्रातिपदिकत्वे सुप्लुक सुपो धातुप्रातिपदिकयोः पदार्थाभिधा

रसर्वपदार्थजहांमुख्यहयसोअव्ययीभावहयद्वितीयवहुनकरकेउत्तरपदार्थजहांमुख्यहयसोतत्पुरुषसमासहयतृतीयतत्पुरुषकाभेदकर्मधारयहयकर्मधारयकाभेदद्विगुसमासहय वहुनजहां अन्यपदार्थमुख्यहयसोवहुव्रीहिसमासहयवहुनकरकेजहांउभयपदार्थहोवेपदार्थमुख्यहयसो द्वंद्वसमासहैयेपंचमपदसंबंधीजोविधिहयसोसमर्थकेआश्रयजाननीपरस्पराकांक्षत्वंसामर्थ्यअथप वीधजोपदाकोआकांक्षाहयसोसमर्थकहीजेहय कडाराःकर्मधारयेःइसकेसर्वसमासयेअधिकारकरीदाहयसुप्सुप्केसाथसमासकरीसहयविकल्पकरकेसमासहोनेतेप्रातिपदिकसंज्ञाहोयीसुपो धातुप्रातिपदिकयोःधातुप्रातिपदिककोअवयवजोसुप्हयतिसकालुककहीएपरायेअर्थकहतोजनांहै ना सोहत्तिकहीहैसोहत्तिपंचप्रकारकीहैहपरार्थकाअववोधकजोवाक्यहैसोविग्रहकहीताहै ॥ सर्वा

भूतः ईहां एकसुबंत सूर्व हय एक सुबंत भूतः हय दोवाका समास होया फलक्या होया प्रातिपदिकसंज्ञा होयी फेर सुपोकालुक होया भूतसूर्व वनया भूतसूर्वे वरट् इस सूत्र विषे भूत शब्द सूर्व रख्या हय इस ने सूर्व शब्द का सूर्व निपातन होया इव के साथ समास होविकल्प कर के विभक्ति का लोप न होहो वागर्थौ इव ईहां समास भया वागर्थौ का इव साथ विभक्ति लोप नहीं भया इति केवलः विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासंप्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चात् यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसंपत्तिसाकल्यान्तवचनेषु अर्थों विषे वर्तमान जो अव्यय हय सो सुबंत के साथ नित्य समास होनाकरीदा

नैकशेषस्त्रिः कृत्तद्धितसमासैकशेषसनाद्यन्तधातुरूपाः पंच वृत्तयः परार्थाभिधानं वृत्तिः वृत्त्यर्थावबोधकं वाक्यं विग्रहः पूर्वं भूतः भूतपूर्वः भूतपूर्वे चरडिति निर्देशात् पूर्वनिपातः इवेन समासो विभक्त्यलोपश्च वागर्थाविव वागर्थाविव इति केवलसमासः अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासंप्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसंपत्तिसाकल्यान्तवचनेषु विभक्त्यर्थादिषु वर्तमानमव्ययं सुबंतेन नित्यं समस्यते अविग्रहो नित्यसमासः अस्वपदविग्रहो वा नित्यसमासः अधिहरि प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनं समासशास्त्रे प्रथमानिर्दिष्टमुपसर्जनसंज्ञं स्यात् उपसर्जनं पूर्वं तस्मात् उपसर्जनं पूर्वं स्यात् ततः प्राक्प्रयोगः अव्ययीभावश्च

हय विग्रह हिन नित्य समास होना हय यहां विग्रह मे और पद होवे समास से और पद होवे सो नित्य समास करीदा हय वृत्त्यर्थावबोधकं वाक्यं विग्रहः समास हुए तिके अर्थ को जनावे सो विग्रह कहीदा है हरौ ङि अधि ईहां सप्तमी अर्थ विषे अधि अव्यय हय सो हरी ङि सुबंत साथ समास भया समासशास्त्र विषे प्रथमानिर्दिष्ट जो हय सो उपसर्जन संज्ञक हो॥ समास विषे उपसर्जन पूर्व होय समासशास्त्र अव्ययं विभक्ति समीप ये हय इस विषे प्रथमा कर के दिखाया अव्ययपद हय उसकी उपसर्जन संज्ञा होयी इस वास्ते अधिश ब्द का पूर्व प्रयोग भया नहीं तो ड़काकी नाम प्रयोग अधि का सप्तमी अर्थ अभ्यास प्रयोग होना था हरी ङि अधि यहां प्रातिपदिकयोः से विभक्ति का लुक भया अधिहरी अव्ययी इ उ॰

यसंज्ञक होने से इसको अव्ययत्व होयां भी समासत्व इस एकदेशविकृतमनन्यवत् इस परिभाषा करके फेर तस्या ऐसा।
तिपदिकसंज्ञा होयी फेर स्वादिक आये अव्यय ते परे को लुक होया हरौ इति अधिहरि नित्यसमास है अ।
दंत अव्ययीभावने सुप्का लुक नहीं होवे और तिसको पंचमी विना अम् का आदेश होवे कृस्नस्य सप्तमी पर्यं होसमी
पञ्चर्थ विषे उप अव्यय का कृस्नस्य इसस वंगनाल समास होया अदंत शब्द ते विभक्ति लुक नहीं होया अप
आदेश भया उपकी उपसर्जन संज्ञा होके पूर्वनिपात होया उपकृस्नं के जो समीप होवे सो उपकृस्नं कहीये ॥ कृस्न।
तृतीयासप्तमी विषे विकल्प करके अम् आदेश होवे कृस्नेन समीपं उपकृस्नेन ऐसा होया कृस्ने समीपं उप।

व्ययीभावः अव्यये संततः एकदेशविकृतस्यानन्यत्वात् प्रातिपदि।
कसंज्ञायां स्वाद्युत्पत्तिः हरौ इत्यधिहरि नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः अ
दंतादव्ययीभावात् सुपो न लुक् तस्य पंचमीं विना अमादेश।
कृस्नस्य समीपमुपकृस्नं तृतीयासप्तम्योर्बहुलम् अम्भावः
अदंतादव्ययीभावात् उपकृस्नं उपकृस्नेन मद्राणां समृद्धिः।
सुमद्रं एवं नाम्नो हरिः इदृष्वनैपद विभक्तिवा एवं निपाते विश्व।
ह्येत्वियत विभक्ति केतं उपसर्जनं न तु तस्य पूर्वनिपातः ॥
गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य उपसर्जनं योगो गोपाह्वः स्त्रीप्रत्ययांत चन
देतस्य ह्रस्वः मक्षिकाणाम् अभावो निर्मक्षिकं हिमस्यात्ययोऽति
हिमं निद्रा संप्रति न युज्यते इति निद्रं हरिशब्दप्रकाशः इति हरि

कृस्ने ऐसा भी भया आगे सूत्र विषे जे ये अर्थ कहे हैं तिन उनाअर्थों विषे अव्यय का समास भया पूर्वनिपात होता गया
विभक्ति को अकारांत ते परे अम् होया है पंचमी ए लुक भया मद्राणां समृद्धिः इहां समृद्धि अर्थ विषे सु एवं आया।
विभक्ति ते अम् होया समद्रं मद्रां की समृद्धि इत्यर्थ एवं नाम्नो हरिः इहां असंपदा अर्थ विषे इं अव्यय है एवं ॥
आया विभक्ति ते अम् होया इर्यवनं विग्रह विषे जो निपात विभक्ति कहते सो उपसर्जन संज्ञक होउ पसर्जन
गो गोपाह्व इत्यत्र पुनः स्त्रीप्रत्ययांत है तदंत प्रातिपदिक को ह्रस्व होवे मक्षिकाणां अभावः इहां अभाव अ
भावअर्थ विषे निर् इत्यसो पूर्व आया मक्षिका शब्द को ह्रस्व होया अम् होया निर्मक्षिकं भया हिमस्य अ
त्ययः इहां सा अर्थ विषे अति इत्य आया अम् होयी निद्रा संप्रति न युज्यते इहां वर्तमानकाल विषे निद्रा।

नहीं इस अर्थ विषे आनि अव्यय सर्वआयानिद्रापादकोहस्वहोयासुपकोअनू होयाआतिदं सिद्धं हरीशाद्
स्य अकापाः ईहां शाद कीय कहना विषे इति अव्ययरूप सो सर्व आयाविभक्ति लुक होया इति हरि सिद्धं विष्णोः
पश्चात् ईहां पश्चात् अर्थ विषे अनु अव्यय दय सो सर्वआया विभक्ति लुक भयाअनु विष्णु सिद्धं यथापदके
चारअर्थ हैं एक योग्यता एकवीप्सा दोवारी कथन एकपदार्थानतिवृत्ति पदार्थ नहीं लंघके नहीं रहिणा एक
सादृश्य तत्र ता रूप स्य योग्यं ईहां अनु अव्यय योग्यता अर्थ विषे सर्व आयासुपकोअमू होया अनुरूपं
सिद्धं अर्थं प्रति ईहां वीप्सा अर्थ विषे यथावाची प्रति अव्यय दय सर्व आयासुपकोअमू भया प्रत्यर्थं सिद्धं

विष्णोः पश्चादनु विष्णु योग्यता वीप्सा पदार्थानतिवृत्ति सादृश्यानि यथार्थाः रूपस्य योग्यमनुरूपं अर्थमर्थं प्रति प्रत्यर्थं शक्तिमनतिक्रम्य यथाशक्ति अव्ययीभावे चाकाले सहस्य सः स्यादव्ययीभावे न तु काले हरेः सादृश्यं सहरि कालेन तु सपूर्वाह्णं ज्येष्ठस्यानुपूर्व्येणेत्यनुज्येष्ठं चक्रेण युगपत्सचक्रं सदृशः सख्या ससखि क्षत्राणां संपत्तिः सक्षत्रं तृणमप्यपरित्यज्य सतृणमत्ति अग्निग्रन्थपर्यंतमधीते साग्नि हिनाः आ पव समासे अधिकारः अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः शरदादिभ्यः टच् समासान्तः शरदः समीपमुपशरदं प्रतिविपाशं अनश्च अन्नन्तादव्ययीभावाट्टच् नस्तद्धिते नान्तस्य भस्य टेर्लोपस्तद्धिते उपराजं अध्यात्मं इति अव्ययीभावः अथ तत्पुरुषः अधिकारः प्राग्बहुव्रीहेः द्विगु

शक्तिमनतिक्रम्य ईहां अनतिक्रमण अर्थ विषे यथा अव्यय दय सो सर्व आयासुपका लुक भया यथा
शक्ति सिद्धं अकाले अर्थ विषे अव्ययीभाव विषे सहको सकार होकाल विषे नहीं हो हरेः सादृश्यं
ईहां तुल्य अर्थ विषे सह दयतिसको सकार कोके सर्व आयाविभक्ति लुक भया सहरि सिद्धं काल विषे
विषपूर्वाह्णः सहर्षं सह सर्वाह्णं ईहां सहको सकार नहीं होया ज्येष्ठस्यानु सर्वेणाईहां क्रम अर्थ विषे अनु
अव्यय दय सर्व आयासुपको अम होया अनुज्येष्ठं सिद्धं चक्रेण युगपत् ईहां सकार एक काल विषे अर्थ
करिनारूप सो सर्व आयासुपको अम होया सचक्रं सिद्धं सदृशः सख्या ईहां सदृश अर्थ विषे सकार ...

गौ॰ व्याकरण पूर्वार्धं पत्रं १८

याविभक्तिलुक्भयासमस्वितत्राणोसंपन्निः ईहांसेपदासर्थविवेसकारस्सर्वव्याख्यासपूलुक्भयासत्तन्नेसिद्धंन्नृणा मध्यपरिनत्यायईहांसकारसकलनअर्थविवेएर्वव्याख्यासपूलुक्भयासन्नुणांसिद्धंमाग्रिंयपर्यंतंमधीनेईहांअंतेस्त्र थेविवेसकारएर्वव्याख्याविभक्तिलुक्तार्थिसिद्धं(प्र)यीभावविवेशरस्वादिकालोटचूहोसमासांतशरदः समीपंईहांस मीपअर्थविवेउपएर्वव्याख्याशरद्नेटचूव्याख्याटकारचकारइत्मयेअकारमेदंकोरमैदकारमिलयासम्भयाउपशार दंऐसेविपाशंप्रतिप्रतिविपाशंभयाअंत्रेनअव्ययीभावनेटचूहोनांतजोभसेत्तकहयतिसकीटिकालोपहोना। हिनपरेङंदयारातः समीपंईहांउपएर्वव्याख्याराजन्नेपरेटचूव्याख्याअन्कालोपभयाउपराजंसिद्धंव्यात्मनिअधि ईहांअधिएर्वव्याख्याम परेटचूव्याख्याअन्लोपभयायगहोयासुपकोअम्होमभयाअध्यात्मंसिद्धं इत्यव्ययीभा वः तत्पुरुषअधिकारहयबहुव्रीहितेएर्वद्विगुसमासकाअधिकारहयश्रितअतीतपतितगतअत्यस्तप्राप्तआप न्नइनासुबंतकेसाथद्वितीयांतसुबंतविकल्पकरसमासकरीदाहयकृष्णंश्रितः ऐसाथासमासभयासुपोधात

ग अनञ्तृषम्भेदः द्वितीयाश्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः
द्वितीयांतंसुबंतंश्रितादिप्रकृतिकैःसुबंतैःसहवासमस्यते कृ
ष्णंश्रितः कृष्णश्रितः तृतीयातत्कृतार्थेनगुणवचनेनशंकुल
याखंडः शंकुलाखंडः धान्येनअर्थः धान्यार्थः कर्तृकरणेकृता।
आ बहुलंहरिणात्रातः हरित्रातः नखैर्निर्भिन्नः नखनिर्भिन्नः चतुर्थी।
तदर्थार्थवलिहितसुखरक्षितैः यूपायदारु यूपदारु तदर्थेनप्रकृ
तिविकृतिभावएवगृह्यतेतेनेहनरंधनायस्थालीअर्थेननित्यस

कारकेविभक्तिलुक्सारेहोनागयाकृष्णश्रितः कृष्णकाआश्रयकीनाहयइसीतरामहंअतीतः इत्यादिका विवेसपूलुक्होकेसंधिहोनीगयीभवातीतः कूपंपतितः कूपपतितः ग्रामंगतः ग्रामगतः तरंगान्अ त्यस्तः तरंगात्यस्तः सुखंप्राप्तः सुखप्राप्तः दुःखंआपन्नः दुःखापन्नः तृतीयाकेअर्थनात्तकीयमनोगुणवचनह पतिससाथवपुनःअर्थपदकेसाथतृतीयांतसमासकरीदाहयशंकुलयाखंडः ईहांखंडअलहोययसोशं कुलानामसमेपहूनालकीयहयतृतीयांतकासमासभयासपूलुक्भयाशंकुलाखंडः सिद्धंधान्येनअर्थः ई हांअर्थपदसाथतृतीयाकृदन्तकेसाथसमासकरीदाहयहरिणात्रातः ईहांसिद्धंन्नातःकृदंतहयतृतीयासमास भयाहरित्रातः सिद्धंनखैः निर्भिन्नः ईहांनिर्भिन्नकृदंतनालसमासभयानखनिर्भिन्नः सिद्धंसमासविवे। विभक्तिलोपहोनाहै जोकोईकहेनिर्भिन्नकृदंतनतोनदीभिन्नकृदंतहयनबकहनाकनमहणविखेगति

कारकपूर्वपदकाभीग्रहणहइयचतुर्थीकाजोअर्थहइयतिसवालेजोहइयातिसकावाचीजोणइतिससाधवलिद्दि।
नसुवरादितरनासुवंतासाधवचतुर्थीसमासविकल्पकरीदाहइयश्रपादाहईदूंदारुजोतकारहइयश्रपवालेण
म्मवालेहइयश्रपकादारुजैंनानलसमासभयायुपलक भयाश्रपदारुसिद्धंनदर्थकमहातिविहातिभाव।
ग्रहणकरीदाहइयश्रपजोहइयदारुकाविकारहइयनहाचतुर्थीभयीरंधनायस्थालीईहांसमासनहींनया रं
धनायस्थालीईहांसमासनहीभयास्थालीचलतोहीरंधनकाविकारनहींअर्थशब्दसाथनित्यसमासहोविशे
ष्यलिंगतावक्तव्यहइयद्विजायअयंईहांसूपजोमुनतहइयपुल्लिंगहइविशेषणहइयअर्थशब्दभीपुल्लिंगभया।
पयशब्दनपुंसकहइयअर्थभीनपुंसकभयायवागूशब्दस्त्रीलिंगहइय अर्थशब्दभीस्त्रीलिंगभयागोभ्यः
वत्तिःगोवत्तिःगवेहितंगोहितंगवेसुखंगोसुखंगोभ्यःरक्षितंगोरक्षितंइत्यादिकाविकल्पसमासहोयासुपल
क्षभया॥ ॥ संबंधविवक्षाषष्ठीहोरातःपुरुषःईहांराजाकापुरुषकासंबंधहइयनहांषष्ठीसमासभयाराजपुरु

मासेविशेष्यलिंगताचेतिवाच्यंद्विजायअयंद्विजार्थःसूपः द्विजा
यइदंद्विजार्थंपयःद्विजायइयंद्विजार्थायवागूःपंचमीभयेनचौ
राद्भयंचौरभयं॥ षष्ठीशेषेराज्ञःपुरुषःराजपुरुषः सप्तमीशौं
डैःअक्षेषुशौंडःअक्षशौंडःद्वितीयातृतीयेतियोगविभागादन्यत्रा मा४
पिसमासोज्ञेयःतद्धितार्थोत्तरपदसमाहारेचदिक्संख्येप्राग्वत्
पूर्वस्याःशालायांभवःपौर्वशालःशतिसमासेसर्वनाम्नोवृत्तिमात्रे
पुंवद्भावःदिक्पूर्वपदात्संज्ञायांञः॥

वःसिद्धंशौंडादिकनवपूर्वइत्यादिकाकेसुवंताकेसाथसप्तमीसमासहोयहेअक्षेषुशौंडःईहांशौंडकाअक्षनासमासमा
सभयासुपलक्षभयाअक्षशौंडःयोगविभागअपर्थ्यानेतैरुनापदानालभीसमासहोनाहइयतद्धितार्थविषय
यविखेउत्तरपदपरेहुंदयावपुनःसमाहारवाच्यहोयांदिक्संख्यासमासकरीदेहैनपूर्वस्याःशालायांभवः
ईहांभवतद्धितार्थहइयसर्वशब्दकासमासहोयासर्वाशालावनयासर्वनामाकोवृत्तिमात्रविखेपुंवद्भावहोंदे
पूर्वशालावनयादिक्पूर्वपदतेभवादिअर्थविखेञप्रत्ययहोअवांकेआदिअक्षरकोवृद्धिहोयेंगुणीतत
द्धितपरेहुंदयाएदंशालातेञआयायसेनिचकरकेआकारलोपभयावृद्धिहोयीपौर्वशालःसिद्धंपंचगावो
धनंयस्यइसविपदवद्बहुव्रीहिविखेहंदेतत्पुरुषविखेनित्यसमासवचनहइयगोंतनत्पुरुषतेटचहोनद्वि।
तत्पुरुषविखेनहींहोंपंचानांगवांसमाहारःपंचगवंईहांटचप्रत्ययपंचगवधनयाधनशब्दनालबहुव्रीहि

कीनाननुरूपसमानाधिकरणकर्मधारयहयतद्धितार्थेइसीसूत्रविषेसेजयमकारनेकहाजसंख्यासर्वंद्विगुसंज्ञक होद्विगुएकवचनहोसमाहारविषेसोद्विगुहंदनपुंसकहोसमाहारविषेपंचानांगवांसमाहारः पंचगवं विशेषणविशेष्यजोएकजैसीविभक्तिवालाहयतिससाथसमासहोवऊलनेनीलमुत्पलंईहानीलविशेषणहय उत्पलविशेष्यहयसमासभयासुप्लुकभयानीलोत्पलंसिद्धंवहुलग्रहणनेकिदरेनित्यसमासहोयादिशेषणविशेष्यकाकृसज्ञासेसर्पःकृस्नःसर्पःचनस्रामःकिदरेसमासनहीहोनारामोजामदग्न्यःईहांविभक्ति लकनहीहोनसर्ववच्यथर्यउत्तरयेशब्दअवयवीकेसाथसमासकरीदेहैनअवयवीएकत्वसंख्याहोवेनो सर्वैकायस्यपूर्वकायःकायअवयवीहयतिसनालसर्वकासमासभयासुप्लुकभयापवंअपरकायः द्वा

तद्धितेष्वचामादेः द्विर्गिति गिनिति तद्धिते यस्येति च पौर्वशालः
पंचगावो धनं यस्येति त्रिपदे बहुव्रीहौ द्वंद्वतत्पुरुषयोरुत्तरपदे
नित्यसमासवचनं गोरतद्धितलुकि गोनान्नत्पुरुषाट्टच् स्यात् न त
द्धितलुकि पंचगवधनः तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः सं
ख्यापूर्वो द्विगुः द्विगुरेकवचनं स नपुंसकं पंचानां गवां समाहारः
पंचगवं विशेषणं विशेष्येण बहुलं नीलमुत्पलं नीलोत्पलं बहुल
ग्रहणात्क्वचिन्नित्यं कृष्णसर्पः क्वचिन्न रामः जामदग्न्यः पूर्वापराधरोत्तरमेकदे
शिनैकाधिकरणे अवयविना सह पूर्वादयः समस्यन्ते एकत्वसंख्या
विशिष्टश्चेदवयवी पूर्वं कायस्य पूर्वकायः सिद्धं एकाधिकरणे
किं पूर्वं छात्राणां अर्द्धं नपुंसकं समांशवाच्यर्द्धशब्दो नित्यं क्लीबे
प्राग्वत् अर्द्धं पिप्पल्याः अर्द्धपिप्पली शाकपार्थिवादीनां सिद्धय

त्राणां ईहांएकाधिकरणनहीसर्वपदविषेएकवचनहयछात्राणांबहुवचनहयतुल्यअंशवाचीजोअर्द्धशब्द हयसोनित्यनपुंसकलिंगविषेसमासकरीदाहयअर्द्धपिप्पलीईहांसमासकीनयाविभक्तिलुककह्योया॥ अर्द्धपिप्पलीसिद्धं जेकोईकहैपिप्पलीशब्दकीउपसर्जनसंज्ञापकविभक्तिवालाहर्वनिपातेकरकेमन्त्रके गोस्त्रियोरुपसर्जनस्यह्रस्वःकरकेनहीहोवेनवककहिनाअर्द्धपुंनवचनस्यवर्णवत्वेनेषष्ठीकोहृस्वका निषेधकीनाहयशाकपार्थिवादिकाकेउत्तरपदकालोपवर्णनकावहयशाकप्रियःपार्थिवःईहांशाक तेपरेप्रियपदकालोपहोयाशाकपार्थिवःसिद्धंदेवब्राह्मणःईहांमध्यमपदकालोपभयादे

पूजकोब्राह्मणः ईहांपूजकपदउत्तरस्तुप्साथसमासकरीदाहूयनञ्केनकारकालोपहोपरेपदहो
यानब्राह्मणः अब्राह्मणः ईहांनकारलोपहोयाअकाररहातमनकाररकेनञ्नेपरेअजादिकपदकोनुट्होन
अश्वः अनश्वः ईहांप्रथमनकारलोपभयाअअश्वःरहाफेरअश्वकेअकारकेपर्वेनुट्आयाअनश्वः सिद्धंतथ
कथानेकयाईहांनञ्साथसमानहीनकारमात्रनालसमासहूयरसतेनुट्नहीआयाकुओरगतिप्रादिक
समर्थसाथसमासकरीदाहैनकुपुरुषः सिद्धंभयाऊर्यादिकओरच्विओरडाचप्रत्यक्रियायोगविषेगतिसंज्ञ
कहोजऊरीकरोतीतिऊरीकृत्य ईहांऊरीकीगतिसंज्ञाहोकेसमासहोयाशुक्लीकृत्य ईहांच्विकीगतिसंज्ञा।

त्तलोपश्च शाकप्रियः पार्थिवः शाकपार्थिवः देवपूजको ब्राह्म
णः देवब्राह्मणः नञ्समुपामावत् नलोपो नञः नञो नस्य
लोप उत्तरपदे अब्राह्मणः तस्मान्नुडचि लुप्तनकारान्नञ उत्त
रपदस्याजादेर्नुट् अनश्वः कुगतिप्रादयः एते समर्थेन नित्यं स
मस्यन्ते कुत्सितः पुरुषः कुपुरुषः ॥ ऊर्यादिच्विडाचश्च क्रिया
योगे गतिसंज्ञाः स्युः ऊरीकृत्य शुक्लीकृत्य पटपटाकृत्य सुपुरु
षः उपपदमतिङ् उपपदं समर्थेन नित्यं समस्यते अतिङन्त
श्चायं समासः कुम्भं करोतीति कुम्भकारः अतिङ् किं मा भवान्
भूत् माङि लुङिति सप्तमीनिर्देशात् माङुपपदं अहः सर्वैकदेश
संख्यातपुण्याच्च रात्रेः एभ्यो रात्रेरच् स्यात् संख्याताव्ययादेः
रात्राह्नाहाः पुंसि एतदन्तौ द्वंद्वतत्पुरुषौ पुंस्येव अहश्च रात्रिश्च सि॰ कौ॰ ॥ १९४ ॥

होकेसमासकीहोया अशुक्लं शुक्लं करोतीति शुक्लीकरोति सिद्धं अभूततद्भावविषेच्विआवताहै पटपटाकृत्य ई
हांडाच्प्रत्ययकीगतिसंज्ञाहोयी उपपदमतिङ् नसाथसमासकरीदाहूय कुंभंकरोतीति कुंभकारः ईहांकुंभका
रः ईहांकुंभकीउपपदसंज्ञाहूयकारअतिङ् नहूयसमासहोयाअतिङ्काग्रहणकरनेहोगयाकुंभकारः सिद्धं अतिङ्
किं इसकाग्रहणकरनेविनामाभवान्भूत् ईहांतिङ् नहीहूय ईहांभीसमासमाङ्साथहोजानाअतिङ् नहीकहि
नेनमाङिलुङ् इसकथननेमाङ्कीउपपदसंज्ञाहूयअहः सर्वएकदेशसंख्यातपुण्य इनानेपरेरात्रिशब्द
नेअच्प्रत्ययहोकेकारनेसंख्याअव्ययनेपरेभीरात्रअहश्च अहरागणंद्वंद्वनोइंदनत्तपुरुषहूयसोपुंलिंगविषेहो

अह्नने परेरात्रिशब्दहैतेसेअच्प्रत्ययहोताहैऔर रात्र अह्न इनसे परे रात्रिशब्दके अकारान्तहोनेसे पुंलिंगहोताहैरात्रः सिद्धं ॥ सर्वाचासौरात्रिः सर्वरात्रिः इस्से परेरात्रिको अच् पूर्ववत् ॥ सर्वरात्रः संख्यातासौरात्रिः संख्यातरात्रः संख्यापूर्वकरात्रिशब्दकी नपुंसकलिंगहोताहै द्वयोः रात्र्योः स माहारः द्विरात्रं राजन् अहन् सखि इनशब्दोंके परे समासान्त टच् प्रत्यय होताहै परमश्चासौ राजा परमराजः ईहां राजन्के नकारका टच् परेलोप होताहै कारणकाइस न भयेरानन् टि विटिको अन्नकालोपभया जकारपरे मिलके परमराजः सिद्धं महत्शब्दकोआकार होसमानाधिकरण विशेषणजातीयपरेहुंदरयामहांश्चासौराजा महाराजः ईहां महत्केनकारकोआकारहोयाराजन्केटच्प्रत्ययामहाराजः सिद्धं प्रकारवचनविषेजातीयर् प्रत्ययहोताहै यमहाजातीय ईहां आकार होया द्वि अष्टन्शब्दकोआकारहोबहु व्रीहिविषै अशीति परेहुंदरयान होताहैद्वादश ईहां द्विकोआकार होया अष्टौ च विंशतिश्च ईहां अष्टन्के नकारकोआकार होया अष्टाविंशतिसिद्धं द्वंद्व तत्पुरुषविषै परके तुल्यलिंगहोकुक्कुटश्च मयूरीच कुक्कुटमयूर्यौ इमेईहां इमे जो परे स्त्रीलिंगहुयरसवाइसेऊरेमयूरीशब्द भी स्त्रीलिंगरख्याहुय मयूरीच कुक्कुटश्च मयूरीकुक्कुटाविमौ ईहां इमौ पुल्लिंगहुयरसवा

सर्वरात्रः पूर्वरात्रः संख्यातरात्रः संख्यापूर्वं रात्रं क्लीबं द्विरात्रं राजाहः सखिभ्यष्टच् एतदन्तात्तत्पुरुषाट्टच् परमराजः आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः महाराजः प्रकारवचने जातीयर् महाप्रकारो महाजातीयः द्व्यष्टनः संख्यायामबहुव्रीह्यशीत्योः आ। त्स्यात् द्व्यधिका दश द्वादश अष्टाविंशतिः परवल्लिंगं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः कुक्कुटमयूर्याविमे मयूरीकुक्कुटाविमौ अर्द्धं पिप्पल्या अर्द्धपिप्पली समासेन पुंसकं मृडपचति प्रातः कमनीयं इति तत्पुरुषः शेषो बहुव्रीहिः अधिकारोयं प्राग्द्वन्द्वात् अनेकमन्यपदार्थे अनेकं प्रथमान्तमन्यपदार्थे वर्त्तमानं वा समस्यते स बहुव्रीहिः सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ सप्तम्यन्तं विशेषणं बहुव्रीहौ पूर्वं स्यात् हलदन्तात्।

तात्सप्तम्याः संज्ञायां हलदन्तात् सप्तम्या अलुक् कण्ठेकालः अत एव ज्ञापकाद्व्यधिकरणपदो बहु।

व्रीहिः प्राप्तमुदकं यं प्राप्तोदको ग्रामः ऊढरथोनड्वान्

लेऊरेकुक्कुटशब्द भी पुल्लिंग रख्याहुयद्वंद्वविषै अर्द्ध पिप्पलीईहां भी स्त्रीलिंगहुय सामान्यविषैनपुंसकलिंग होमृडपचति ईहां मृड साधारणहुयविशेषविवक्षानहींकीनमृडहुयरसवास्तेनपुंसकलिंगहोयाप्रातः कमनीय ईहां भीइतितत्पुरुषः अनेकजोप्रथमान्तहुयअन्यपदकेअर्थविषैवर्त्तमानसोविकल्पकरकेसमासकरीयाहुयसोबहुव्रीहि कहीताहसप्तम्यंतजोविशेषणहुयसोबहुव्रीहिविषैपूर्वहोहलंतअदंतसेसप्तमीकाअलुक् होकालः कंठेयस्यसः कंठेकालः ईहां प्रथमांत कंठेकालः अन्यअर्थविषैशिवरूपअर्थविषैवर्त्तमानहुयबहु॥ व्रीहिसमासभयातिसविषैविभक्तिलुकपायासीनहींअदंतनेसप्तमीकालुकनहींहोया सप्तम्यंतपूर्वआया

केलेकाल्लः सिद्धं रसीने कीजानीदाहृयंयेव्यधिकरणसमासहृयरसविषेहाहृयएकनैसीविमक्तिनहीहोतीइसी नतरह अनेकपृथमांतअन्यपदार्थविषेवर्त्तमानजैसेभीबहुब्रीहिसमासजाननेजैसेप्राप्तंउदकंयंईहांप्रथमांत प्राप्तउद क हैनअन्यर्थी विषेयाम रूपअर्थविषेवर्त्तमानहैनसमासभयेविभक्तिलुकभयासंधिभयीप्राप्तोदकोग्रामः सिद्धंऊढोरथोयेन सः ऊढरथोनडान् उपहृतःपशुर्यस्मै सः उपहृतपशूरुद्रः उद्धृतमोदनंयस्याः साउद्धृतोदनास्था लीपीतानिअंबराणियस्यसः पीतांबरोहरिः वीराःपुरुषायस्मिन्सः वीरपुरुषोग्रामः इत्यादिकजाननेउक्त पुंस्कअइ केअभाववालोजोस्त्रीवाचकशाब्दहृयतिसकोपुंवाचकशाब्दकीनाईरूपहोसमानाधिकरणविषेस्त्रर्यर्थकनि यादिकपरेहुंदयांनहीहोविचारणाबोयस्वईहां विचारणाशब्दउक्तपुंस्कभीहयऊङ्गरहितभीहयस्त्रीलिंगउत्तरलिंगसे द्दोयाणोशाब्दकोहृस्वहोयाविचगुः सिद्धंरूपवतीभार्यायस्यसः रूपवद्भार्यःकल्याणिप्रियः ईहांप्रियपरेहृयउ बहावनहीहोयाबहुब्रीहिविषेसविधेप्रतिषेधतेसावहीनेपवहोअन्यपकाग्रादिनोषकारहृयसोरनहो

उपहृतपशूरुद्रः उद्धृतौदनास्थालीपीतांबरोहरिःवीरपुरुषोग्रा मः स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ्भाववोयत्रतथाभूतस्यस्त्रीवा चकशब्दस्यपुंवद्रूपंस्यात्समानाधिकरणेस्त्रीलिंगेउत्तरपदेनतुप्रियादौचवि ग्रहः रूपवद्भार्यःअप्रियादिषुकिंकल्याणीप्रियः बहुब्रीहौसक ध्यक्ष्णोःस्वांगात्षच् षःप्रत्ययस्यअदिरित् दीर्घसक्थः स्त्रियां नद्युत्वाभावित्वात् अप्रभृतिभ्यः कप् व्यूढोरस्कः प्रियसर्पिष्कःशेषाद्विभाषाअनुक्तसमासांताद्बहुब्रीहेःक बामहायशस्कःमहायशाः इतिबहुब्रीहिः चार्थेद्वंद्वः अनेकं सुबंतंचार्थेवर्त्तमानंवासमस्यतेसद्वंद्वः समुच्चयान्वाचयेतरेत रयोगसमाहारायश्चार्थाः तत्रेश्वरंगुरुंभजस्वेतिपरस्परनिरपेक्ष

स्यानेकस्यैकस्मिन्नन्वयः समुच्चयः भिन्नामदर्गांचा न येतिअन्यतरस्यानुषंगिकत्वेनान्वयः अन्वाचयः

तीर्थोसाकीनीयस्याः ईहांसाक्थिनेपरेषच्प्रत्ययषकारइत्संज्ञयाषिद्गौरादिभ्यःकरकेङीप्प्रयोग्यासीर्थसक्थीना रीसाक्थिपूलेकानामअंगवाचकहृयभदीर्घसपक्षाकटईहांषच्ङीअनहोअयाकामेअहिणीयस्याईहांषत् आयाङीप्प्रायुयस्येतिचहिलोपभयाकामाक्षीसिद्धंअनुक्तसमासांतबहुब्रीहितेकपविकल्पकरकेहोसमासां तवहुब्रीहितेकपविकल्पकरकैकैम्महत्यशोयस्यसः महायशस्कः ईहांकपअनकारकोआकारहोयाम हायशाइतिबहुब्रीहिः अनेकसुबंतचकारकेअर्थविषेवर्त्तमानसमासकरीदेहैनविकल्पनात्सोद्वंद्वकहीदा हयचकारकेअर्थचारहैनकेरेसमुच्चयअन्वाचयइतरेतरयोगसमाहारतत्रकैयेचवामपथ्यविषेईश्वरंगुरुंच भजस्वईहांप्रपथीदसारहिननेअनेककाएकक्रियाविषेअन्वयहपसोसमुच्चयकरीहीयेईश्वरगुरुस्यापथ्येनिरपे

[illegible]हेनएकभजनक्रियाविषेसंबंधयहयथेसमुच्चयहय ॥

मिलाकर गौणानर्थ ईहाय एक एककाल में अनतानल्भ न्व यहतलोम्र वाचक ही इन यों में मिलाकर कि यामें ग्रन्थ यहोंको
गौकाग्नानर्थ ईहा संबंध होया इनाको लोपहोने ने समान सनहीहोता पवयुग्राखरिम्पथरवदिरौ छिंधि ईहां यवखदि
रमिलयाको छिंधि क्रियाविशेष्यमन्वयहहयहस्तवाक्ते मिलनाकाजो ग्रन्वयहयसो इतरेतरयोगकहीये संज्ञा परिभाषा च
अनयोः समाहारः संज्ञापरिभाषं समहजो हत्पसो समाहारकहीये अस्त्र च पूर्ववर्तराजदंतादिकाविषे पूर्वप्रयोगा।
के योग्यहयसो परहो दंतानां राजा राजदंतः ईहां अल्प्यच्तरभी सीराजशब्द परवयाच्या राजदंत विषेयिसंज्ञक पूर्वहो हरीग्र
हस्व हरिहरो ईहां घिसंज्ञक हरीशब्द पूर्वप्राया पाणिहौर पूर्य सेनाके अंग हनाकांद एक वचन हो पाणिपादेच यथा।
णिपादं स्वपृ ल्कहोके एकं वचन होयायेप्राणिकाउदाहरण हय मार्दंगिकस्य पाणिविकच मार्दंगिकपाणविकं
येन्व यंकाउदाहरण रथिकस्य अश्वारोहस्य रथिकाश्वारोहं ये सेनाके अंग हैं न च वर्गान्त दकोरान्त षकारान्त हकारान्त द्वं
द्व ते टच्होसमाहारविषेषकच्त्वकचसमाहारे वाक्त्वचंटच्प्राया च कारके पर त्वक च स्रजत्वक स्रजं शमीचह

पवखदिरौ छिंधि मिलिता नामन्वयः इतरेतरयोगः संज्ञा च परिभा
षा च संज्ञापरिभाषं समूहः समाहारः राजदंतादिषु परं पूर्वम्
योगा ई परं स्यात् दंतानां राजा राजदंतः द्वन्द्वे घि पूर्वं स्यात् हरिश्च हरश्च हरिहरौ
अल्पाच्तरं पूर्वं शब्दरूपं स्याद् प्राणितूर्यसेनांगानामेकवत् स्यात्
पाणिपादं मार्दंगिकपाणविकं रथिकाश्वारोहं द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात्
समाहारे वाक्त्वचं त्वक्स्रजं शमीदृषदं वाक्त्विषं छत्रोपानहं स
माहारे किं प्रावृट्शरदौ इति द्वन्द्वः ऋक्पूरब्धूःपथामानक्षे
अनक्षे स्वरूपे ऋचोऽर्धं अर्धर्चः विष्णुपुरं विमलापं सरः विपथः

दृषद्युग्मभी दृषदं ईहां दकारने परे टच्प्राया वाक च त्विट च वाक्त्विषं ईहां चकारने परे टच्प्राया छत्रं उपानच्छत्रो
पानहं ईहां हकारने परे टच्प्राया समाहारे विषे कहिने ने प्राट वृशरत्तु इति प्रावृट्शरदौ ईहां दकारांत तत्पुरुषपरस
माहारनहीं इति द्वन्द्वः ऋक पूर अप धुर पथिपहतिनाके अंत न विषे है न ये सानो समासहयति नकोअंतमग्न वयवअकार
प्रत्ययहो अनक्ष पूर्व द्वंद्वयाधूशब्दको नहीं होअर्धो वासो ऋक अर्ध इर्च्च ईहां प्रत्यय प्राया ऋक शब्दने परे विसोः पुरः वि
ष्णुपुरं ईहां पुरने परे अकार प्राया विमलाआपः यास्मिन तत् विमलाप सरः ईहां अपशब्दने अकार प्राया राज्ञः धुः राजधुरा
ईहां धुरने परे अप्राया अक्षे तह पूर्व हो या अक्षस्य धूः होयाद्ध धूरत अक्ष परे है द्वयाअ पनहीं प्राया सखा पंथाय स्यसः स।
खिपथः रम्यः पंथायस्यसः रम्यपथः देशः ईहां पथिन्ने अप्राया अजनार्थी ने परे समासांत अप्रत्यय नहीं हो न शोभन स्या
सो राजा सुराजा अतिराजानं अतिक्रांतः अतिराजाई ईहां पूजनार्थी कराजन शब्दने प्रत्यय नहीं प्राया स्तति पूर्व द्वंद्वयाही प्रत्य।
य नहीं हो परम च असौ राजा परमराजः ईहां पूजनार्थक ने टच्होगयाय स्तति भिन्न हैं प्रयोदरादिक प्रयोगामें से हुए देश

ह्रिभयोयाहः सिद्धं वहिस्तनेई कहुहोटिलोपहोकिन्परेजंद्यामचोकेमाडिग्रहूकोवृद्धिहोईहिं होवदिसूतेई क
कमायादिलोपभयाहृद्धिभयोवाहीकः भयागोशहृकोमच्मत्ययकेमसंगविविधेयनहोगयंईहांयतमायीवीनोपि
संभ्रबूभयीसीपुंसत्नेनज्नस्नज्हेनस्त्रियःभावःस्रैणःपुंसोभावःपौंस्नःईहांनत्रूस्नत्नमायाहद्धिभयीषष्पंतक
नई सेथिनेमणादिकहोनउवर्णांतभसंत्तककोगुणहोउपगोःसषष्ठ्येतनेमणस्रोस्तुक्षेयातुकरकेषष्ठीलुक। १।
भयाउकारकोगुणभयाभवृद्धोयाहद्धिभयीऔपगवःभयागोत्रापत्य विवेमणमायाहै अरणत्वकरके
विवक्षेतनजोपौत्रादिकहैनसोगोत्रसंत्तकहोनगोत्रविवेएकप्रत्ययहोइसकरकेगोत्रसंत्ताभयीगर्गादि
कानेयत्रहोगर्गसंपत्यंगार्ग्यईहांगर्गनेयत्रमायाउरेमकारलोपसैनिचसें भयागोत्रविवेजोषत्रनयत्रै १७
नहैतिसकेमवयवजोयत्रमत्रहैतिसकालोपहोबहुत्वविवेगर्गाःईहांयत्रजोयत्रमत्रहैतिसकालो
उत्सादिभ्योऽञ्‌ औत्सः इत्यपत्यादिविकारान्ताः प्रोक्ताःपुंसोऽभ्यान्नञ्स्नञौ स्त्रैणः पौंस्नः तस्य ... स्त्रनो १
पत्यं षष्ठ्यन्तात्‌ सर्वेषां समर्थानां प्रथमादवा ... त्रैवैकाः वक्ष्यमाणाप्रत्ययाः
स्युः औपगवः उवर्णान्तस्य भस्य गुणः स्यात्तद्धिते उपगोरपत्यमौपगवः अ
पत्यं पौत्रप्रभृति गोत्रं अपत्यत्वेन विवक्षितं पौत्रादि गोत्रसंज्ञं स्यात्‌ एको
गोत्रे गोत्रे एक एव प्रत्ययः स्यात्‌ उपगोर्गोत्रापत्यमौपगवः गर्गादिभ्यो य
ञ्‌ गोत्रापत्ये गर्गस्य गोत्रापत्यं गार्ग्यः वात्स्यः यञञोश्च गोत्रे यदञन्तं यञन्तं
तैवतदवयवयोरेतयोर्लुक्‌ तत्कृते बहुत्वे न तु स्त्रियां गर्गाः वत्साः जी
वति वंश्ये पुत्रावश्ये पित्रादौ जीवति पौत्रादेर्यदपत्यं चतुर्थादि युवसं
ज्ञं स्यात्‌ गोत्राद्यून्यस्त्रियां यूनि अपत्ये विवक्षिते गोत्रप्रत्ययान्तादेव प्रत्ययः
स्यात्‌ स्त्रियां न युवसंज्ञा यञिञोश्च गोत्रे यञिञौ तदन्तात्फक्‌ स्यात्‌ यूनि।
नकौजीवतनहोयांपौत्रादिकोंकीतोमपत्यहैचतुर्थादिसोयुवसंत्तकहोयुवामपत्यविवक्षितभयांगोत्रप्रत्ययां
तनेहीप्रत्ययहोस्त्रीविवेयुवसंत्तानहीहोगोत्रविवेजोयञइञहैतदंतनेएकहोप्रत्ययकेमादिजोगर्गहैफ हैति
सकोमायनहोठकारकोएयहोखकारकोईनहोघकारकोइयहोछकारकोईयहो गर्गस्य युवापत्यंगार्ग्यायणःईहांगा
र्ग्यनेफकमायाककारकोमायनभयामकारांतनेरहोदत्तस्यापत्यंदाक्षिःईहांदत्तकेमरेइञमयोउरेमकारलोपभ १८
याबाह्वादिकानेइञकोहोवाहविंईहांइञमायाउगेगुणःऔरवृद्धिभयीलोमन्‌शहकोवहुवचनाविवेमकारव
कव्यादिउडुलोमाःभयाशिवादिकानेअपरेहोशिवस्यापत्यंशैवः अपि अपत्यकहोदिस्तिकहनेइतनेमणहोसं।
त्वादिहृवेकमानशहकोउनहोमणप्रत्ययहोहयोमोरपत्यंहैमातुरःमसंमानहणमपत्यंवाएम्मानुरः ईहांमणा
मायामकोउकारभयास्त्रीप्रत्ययांतनेठकहोविनतायामपत्यंहै नेयःकंधाशहकोकनीनमादेशहोम

शै

कीये है नतैसे ही साधु है न वर्णके आगमते हंसः हिंसि धातुका होना है यनुमके आवर्णके उलटाया सिंहः सिद्ध होयाव १ या॰
र्णविकारते षृत्रोम्या सिद्ध होया आत्माके आकारको उकार होया वर्णनाशते पृषोदरः सिद्ध होया पृषत् वत् उदरे यस्य स।
पृषोदरः ईहां तकार लोप भया इति समासाधिकारः ॥ अब तद्धितमात्रही सारकौमुदीके लिखीदे है ने अथाधिकार
करण है ने समर्थानां प्रथमाद्वा ईहां से नतीनों पदेको अधिकार करीदा है प्राग्दिशः सूत्र पर्यंत अधिकार है कन संधिका
र्य सामर्थ्य कीये संधिकार्यका नाम सामर्थ्य है ते सतेन हिन प्रत्यय आवना है मे कोई प्रश्न करे समर्थ ग्रहण क्यों किस वा
स्ते है न बकहिना सुउत्पत्तिन ईहां नव समर्थ पद है तें व दीर्घ कर के सत्त्वपन्य का पी बे प्रत्यय आवना है सको बहि।
होती है सो उत्पत्ति प्रयोग होना है अब जैसे विशुणः ईहां अक न संधि विशु पदते नहूं आया है ने से सउत्पत्ति न इसते
इत्याने मापुको बहि ते वेगी प्राव होवेगा साउत्पत्तिः अनिष्टप्रयोग होवेगा इस वास्ते समर्थ ग्रहण है जे कोई।
कहे सउत्पत्तिन ईहां हम के आयाभी प्रसिद्धं बहिरंगमंतरंगे ... परिभाषा करवे अंतरंग दीर्घ कीयाभी बहिरंग बहि

अथ तद्धिताः । समर्थानां प्रथमाद्वा ॥ इदमधिक्रियते प्राग्दिश इति यावत् । वा ८४
त् प्राग्दीव्यतोऽण् तेन दीव्यतीत्यतः प्रागणधिक्रियते अश्वपत्यादिभ्य
श्च प्राग्दीव्यतीयेष्वर्थेष्वण् स्यात् । अपत्यं गाणपतं दित्यदित्यादि
त्यपत्युत्तरपदाण्ण्यः दैत्यः अदितेरादित्यस्य वा अपत्यं आदित्यः प्राजापत्यः
देवताद्यञ्ञौ दैव्यं दैवं बहिषष्टिलोपो यञ्च बाह्यः ईकक् च कि।
ति च अचामादेरचो वृद्धिः स्यात् बाहीकः गोरजादिप्रसंगे यत् गव्यं।

सिद्धं होवेगी फेर समर्थ पद किस वास्ते है न बकहिना वार्णिंदा गव लीयः वेपरीभावा प्रसिद्ध परिभाषा की बाधक।
है इस तें वर्णकार्य दीर्घ ने अग कार्य बहिर्वली है सर्व बहि होवेगी इस वास्ते समर्थ पद है जे कोई कहै विइत्तमाण
कावैत्तमाणिः होना है इस भाष्योक्त प्रयोगतें ना दिनी दा है न हित विषय में इनका बाध्यबाधक भाव नहीं इस ते।
सर्व दीर्घ ही होवेगा समर्थ पद किस वास्ते है न बकहिना अकृत व्यूह परिभाषा से बहि होयां सावर्ण्य नाश होया
वे दीर्घ न ही होवेगा यत तद पी समर्थ पद है अवर्ण्य नुगभावार्थः यतः इस भाष्य से अनित्य भी है : तें न दीव्यतित इस।
ते एवं अण अधिकार करीदा है अश्वपत्यादिका ते अन् होम अश्वपतिं के परे अण आया यस्येति च सूत्र करके सारे अ
कार इकार को लोप होना है ईहां लोप भया अचो ञ्णिति करके वृद्धि भयी अश्वपते रपत्यम् आश्वपतं सिद्धं दितिते अदि
ति तें आदित्य ते पत्युत्तर पदते ण्य प्रत्यय होदि ने रपत्यं आदित्यः ईहां अण आया यारि लोप भया वृद्धि भयी आदि ते रपा।
त्यं आदित्यः प्रजापते रपत्यं प्राजापत्यः देवको यज अञ् होन देव स्यापत्या दि दैव्यं दैवं ईहां यज अञ् आया दि तो पा।
भया वृद्धि भयी बहिस् काति लोप हो वत नः बहिस न ने यज की बहिस ने यज आया दिका इस का लोप भया।

एतद्रोकानीनः ईहां अण् आयाथा कन्याको कनीन आदेश भयाहै द्विभयी राजन्य सरलेयन हो राजन्कोजा। निवि वे
पं० रातोजा तेरपत्ये राजन्यः यकारपरे अन् प्रकृति होअण् परे हंद या अन् प्रकृति हो राजनः भयात्तत्रिते चहोत्त
त्रियः ईहां यको इपभयारेवत्यादिकाते ठक् होठको इकहो रैवतिकः ॥ कुर्वादिकाते ण्यहोकुरुतेण्य
आयाणकारवृद्ध सेइत भयाओर्गुण सेंगुण भयाहै द्विभयी वानोपिसें अव् भयाकौरव्यः भया अन्नादिकतद्राज
संज्ञकहोनवहुत्वविषेतद्राजकालुकहोसो विषेनहीहोपंचालाः ईहां अन् लुक भयाकंवोजादिकातेपरेल

णीनीपियः फठवहुयोमन्नयादीनांमन्त्यकंयादेः फस्यायनूठ
स्यएयवस्याईनछस्यईयघृस्यरपृस्तुः गर्गस्यतुवापत्यंगार्ग्यायणः
यांश्चन रञ्यपत्येर्थेदातिवाह्वादिभ्यश्चवाह्वविः औडुलोमिःलो
म्नोपत्येषुकारोवक्तव्यः वाह्वादीनोपवादः उडुलोमाः शिवादि
भ्योणआपत्येशैवः ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यश्चवासिष्ठः वैश्वामित्रः
श्वाफल्कः वासुदेवः नाकुलः मातुरुत्संख्यासंभद्रपूर्वायाः सं
भद्रपूर्वायाः संख्यादेः पूर्वस्यमातृशब्दस्यउदादेशः स्याणप्रत्यय
श्चद्वैमातुरः षाण्मातुरः सांमातुरः भाद्रमातुरः स्त्रीभ्योढकं वैन
तेयः कन्यायाः कनीन च कानीनः व्यासः राजश्वशुराद्यत् राज्ञो
येजातावेवकं मालो अन् प्रकृत्याभवति राजन्यः रातः जातेरपत्ये
राजनः अन् प्रकृत्या णिषक् तत्राम श्वशुर्यः क्षत्रियः रेवत्यादिभ्यष्ठ
कः ठस्येकः ॥ कुर्वादिभ्यो ण्यः कौरव्यः तेतद्राजाः अञादय
स्तद्राजसंज्ञाः स्युः तद्राजस्य बहुषुतेनैवास्त्रियां बहुष्वर्थे तद्रा
जस्यलुक् स्यात्तत्कृतेबहुत्वेनतुस्त्रियांपंचालाः इत्यादि कंबोजादि
कंबोजादिभ्य इतिवक्तव्यं चोलः शकः केरलः यवनः इतिपन्था

द्राजकालुकवक्तव्य है कंबोजः चोलः इत्यादि विषे अनकालुक भयाहै इत्यपत्यादिविकारः तिस करके रंगकी याहै
इस अर्थ विषे रागको वाचीशब्द तेपरे अण् होइ ससे कषायके परेअण भया वृद्धि भयी कषायकरके ओयम
याहै सोकाषायं करी त्री येवस्त्र कानामहै नक्षत्र करके युक्त कालवाची ते अण् होति ष्यपुष्य नक्षत्रका अण्प
रतः पत्तोवद्धेउष्यनक्षत्रकरकेयुक्तजोहै सोपौषहै सोदिन है समस्यंत तेअण् होसंस्कृत अर्थ विषे जवसं
स्कृत भक्ष होवेभ्राष्टाः ईहां अण् आयाहै सोइस कादेवता है इस अर्थ विषे अण् होइंद्र है देवताजिसका सो

ईकरीयेहविकानामहैअणसोमतेयणहोवाउकतपितृउपसरनतेयप्रहोककोरीङ्‌होपितृव्यमातुलमा
तामहपितामहनियातनतेहोतेहैंतिसकेसमूहअर्थविषेअणहोकार्कईहांअणअयामितादिकानेअणहो
तत्रग्रामजनबंधुरनतेनतत्रहोनलतनसीलिंगविषेहोयमानोसमूहःग्रामतानाःग्रहत्रुनेखहोककअर्थविषे
ठहरकीटिकालोपहोठखपरतःयाविनेदलियेनुनेठकहोइसउसउकनयनदननेपरेठखपरतःयाविमेहे
लियेनेकोकहोसकनोसमूहःसाककईहांसनुकेपरेठकयायाठकोककारभयाकितिचसेहाहिमयीतिसन्रूप

ष्ठिकारः तेनरक्तंरागात् कषायेणरक्तंवस्त्रंकाषायंनतुचैत्रेणपुत्रकः ।
कालः । निष्पणुष्ययोर्नेत्वराग्नीपलोपः पुष्येणयुक्तंपौषमहः स
न्दकंतेनभक्ताःसमष्यंनातटास्यानत्कतेर्थंपमस्कंतेनभक्ताश्चेने
स्तुःभ्राष्ट्रेषुसंस्कृताभाष्टाःभक्ताःसास्यदेवताइंद्रोदेवतास्यऐंद्रं
हविःपाशुपतंवार्हस्पत्यंशुक्रासनृच्छक्रियंसोमाट्यणसौम्यंवाय
तुपितृषसोयन्नवायव्यमृतव्यंपीङ्क्तनःस्यकयकारेसार्वेयात्तुक
यकारेवोचपरेऋदंतोगस्यरीङादेशःयस्येतिचपित्र्यउषस्यंपितृ
व्यमातुलमातामहपितामहाः यतेतिपातयंतेपितृभ्रातापितृव्यः
मातुर्भ्रातामातुलःमातुःपितामातामहः पितुःपितापितामह।
हः तस्यसमूहः काकानांकाकंभितादिभ्योऽण् भैक्षंगार्भि
णीनांसमूहोगार्भिणंग्रामजनबंधुभ्यस्तल् तलंतानास्त्रियांग्राम
ताजनताबंधुतागजसहायाभ्यांचेतिवक्तव्यंगजतासहायता।
अह्नःखःक्रतौ अह्नष्टखयोरेवतिलोपः अहीनःअचिनहलितिये
नोष्टकरु समुक्तोनात्कः इसउकतपनदंतात्परस्यठस्यकःसा।
ङंकेअग्नापिकंसांलिकंयेनुकंनदथीनेतहेदनयाभ्यांपदांता
भ्यांपूर्वौतुताभ्यामेवपदंताभ्यांयवाभ्यांपरस्यनाडेःकिंतुना

ठनकरदाहैतिसन्रूनानहीहैइसअर्थमेअणहोपदंयकारवकारनेपरेवहिनहीहोकिंतुकीहोयकारवकारने
र्वपेकाआगमहोयेव्याकरणत्रूजोपठनकरेअथवाजानेसोवैयाकरणकहीयेईहांव्याकरणनेपरेअणआया
उसेअकारलोपभयाफेरयकरकेहर्वंअंजनयकारनेपरेऐकारआयाहैक्रमादिकानेहनहोकसंयथीनेक्रमकः
इत्यादिसोतिसदेशनामविषेइसअर्थविषेतिसकरकेनिर्हतहैतिसकानिवासहेतिसकेअहरभवहैइनोअर्थो

श्चानुकरणेयवतेदोषविवेडीदीयवननेलिपिविदिहोमानुलउपाध्यायकोविकल्पतेश्चानुकहोश्चाचार्यतेपरेण
नहीहोश्चवेदत्तचयनेविकल्पनेडीहोकरणश्चवेकेडीगनश्चदंननेडीशहोवस्वेणडीनावस्त्रीनीकिदरेकडीपडीनात
तेननहीहोश्चसंयोगोपधाउपसर्गजोस्वांगहैनदंननेडीशहोश्चतिकेशीयेउपसर्जनेहैईहांडीश्चाया.सयुक्तायेसंयोगो
पधहैईहांदाश्चायाशिखायेश्चसर्जनहैकोडादिकवहुश्चमजोस्वांगहैतिसनेडीशहोनखश्चखनेनहीडीशहोईहांसं.
ताविधिवहुवंपदस्यनिमित्तनेपरेकारकोणकारहोसंगविधेगकारमध्यहोयांनहीहोहर्यणखगौरमुखाईहांदाशहोश्चा.
नाम्नवतमुखंचयस्याःसानाम्नमुखेद्वन्यायेसंज्ञानजौनेवाचीहैवेसीलिंगविवेनियमनहीहोवेदेसानोश्चयोपधहैति
सनेडीपहोनदीईहांयकारउपधनेहीडीश्चायाउडाईहांजातिनहीवलाकासीविषयहैत्नवियायोपधहैयोपधा
कोडीपनिषेधविवेगवयादिकाधनिषेधनदीरवांनमनुष्यजातिनेडीशहोदादीईहांडीश्चायायकारलोपभयाइदं
नश्चयोपधमनुष्यजातिवाचीनेऊडहोसीलिंगविविकरूउदंननेपरेऊड.श्चायादीर्घभयाकरूःसिद्धश्चर्यचा

पवानालिप्यांपश्चानालिपिवानीमातुलोपाध्यायोराजुश्चवामातु.
लीमातुलीउपाध्यायानीउपाध्यायीश्चाचार्याणानचश्चाचार्यानीश्चर्य
त्रियाश्चर्याणीत्रियाक्रीणात्करणपूर्वान्क्रीतो
तीनादेःडीपवस्त्रक्रीतीकचिन्नधनक्रीतास्वांगाच्चोपस
र्जनादसंयोगोपधान्तश्चसंयोगोपधमुपसर्जनंयत्स्वांगंतदंतान्नडीप
केशानतिक्रान्ताअतिकेशीश्चतिकेशाचंद्रमुखीचंद्रमुखाश्चसंयोगोप
धात्किंसगुल्फानउपसर्जनेत्यकिं नक्रोडादिवहृचःक्रोडादेर्वहृचश्च
स्वांगात्न्नडीपकल्याणक्रोडाश्चाकृतिगणोयंसुजघनानखमुखात्सं
ज्ञायांनडीपसर्वपदास्याविमिन्नात्परस्यनस्याणः
संज्ञायांनतुगकाव्यवायेनेह्यर्यणखागौरमुखासंज्ञायांकिंगौरमुखी.
कन्याजातेरस्त्रीविषयादयोपधात्नजातिवाचिनवस्त्रियांनियतमयोप

पधहैपंगरेऊड.होयहूःभयाश्चरूकेउकारकारलोपहोवउनःऊड.होयवहूःभयाउपमानवाचीपूर्वपदहोवेऊ.
रूनरपदगीसकेहैतिसनेकरूहोकश्चौरूःरूऊडश्चायासंहितानशफलक्षणवामयेपदश्चादिहोयांकरूशहोतेऊ
ड.होसंहितोरूःईहांश्चादिलेयपश्चवाकातेयरेजोश्चन्यकारकारहैतदंनातिवाचीनेडीन्नहोशर्ङरवीईहांडी
न्नश्चाया२नरकोवृद्धितोवउनःडीनेनारईहांनकोश्चा२हवृद्धिभयीडीपश्चायाउवनूशाहनेविद्दोसीलिंगविखे.
पुदतिःसिद्धजातिदाश्चकारकीहैपकरखणादिकजोवंनकश्चवयवहैतिनकरकेव्यपहैहूफनेयोग्यहैसोगो.
त्वादिजातिहैवकउपदेशगम्यहैयाहमतदि इतिस्त्रीप्रत्ययाः होरशास्त्रविखेप्रविष्टजोबालकहैनातिनकोऽ.
उपकारकरणोकेरतीवालीबरदरामतेश्चइतकौमुदीकरीहै श्रभंभूयात्सर्वजगनाम्र ॥ राम ॥ राम

कौ॰ १॰ टी॰

गोस्त्रुपं गृहस्थ गुरस्योकाराकारलोपश्चश्वश्रूः ऊरू नरपदादौ स्येउपत्वान्नुवादिष
वेपदस्मुक्तनरपदं यत्प्रातिपदिकं तेन तस्मादूङ्कारभोरूः संहितासाफललक्षणावामा
देश्चश्वनोपम्यार्थं सूत्रं संहितोरूः शफोरूः लक्षणोरूः वामोरूः शार्ङ्गरवाद्यञोङीन्
शार्ङ्गरवादेरञोकारस्तदंताच्च जातिवाचिनो ङीन् शार्ङ्गरवी बैदी ... लिनी नरयोर्हृदि
स्वनारीहत्वल्लिंगुवन् शाङ्गाम्लियोतिः स्यात् युवतिः इति स्त्रीप्रत्ययाः शास्त्रान्तरे प्रविष्ट
नां बालानां बोधकारिका कृता वरदराजेन लघुसिद्धान्तकौमुदीयम् ॥ इति श्रीमद्गु
यवंशोद्भवपंडित हनुमानरामात्मज पंडित देवीसहायसुतस्यावे इकृते व्याकरणप्र
श्रीस्त्रीप्रत्ययाः समाप्ताः खत्तोगीनंदश्रौमार्गगते विक्रमीयाऽयने ऊर्जमास सिते
पक्षे विश्वेतिथ्यां भृगोर्दिने । श्रीदीनानाथशास्त्रा हि बालानां सूपकारिका
मुरादाबादनिवासी पान्नुरूपार्थभावबोधिनी । धीराः ... द्यैवाशे सन्तु
विशेषु शिष्य ... तिश्रोवराशिषः संतु दीनानाथमहात्मने ॥
बालानेगवंदस्यम्हायंत्रालयेमय लाशिरूप
वंद्रेशानुलसीरामस्यसाक्षिपिः । सर्वेषा
त्वमनाभिलं हिजनानो हिजाश्यम् ।
राजामान्यं हं वन्दे राजदानं सुरं
तडिनम ॥ ॥

वाधादृयास्तुः सरशा पिरन्नगवी शुकाशापमवस्तुत्वमीप्रराजद्राजस्यनिशाम्यकीर्तिं दीना
दिनायस्याहिपानदोषं लौकिकभाषायां सधीभिः शुद्धाशुद्धविज्ञानकार्यः परंतु दुर्जनानां
स्वभावोऽयं दोषारोपप्रवीणता काकः सर्वरसान्पीत्वा विनाऽमेध्यं उष्यति ॥ ८ ॥ ४

सन् १८५२ संवत् १९१० कार्त्तिक प्रतिपद्यां
बुधवासरे लिखितं शुभमस्तु वगतो